

अथ भाषा महाभारते कर्णपर्वणि ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दबन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणम स्तकमाल्यलालितपदं बन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाक वीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंबन्देवादराय णम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ बिप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधा नः ॥ कथानुगंमंजुलकर्णपर्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ कर्णपर्व्वणिभाषावार्त्तिक मारम्भ ॥

वैशंपायन बोले कि हे राजा इसके अनन्तर द्रोणाचार्य्य के मरनेसे अत्यन्त व्याकुलचित्त दुर्य्योधनादिक राजालोग अश्वत्थामाजी के पासगये १ । २ फिर द्रोणाचार्य्य के शोचकरनेवाले मूर्च्छावान् महाघायल पराक्रमों से थकेहुये शोक से पीड़ितहोकर वह सब राजालोग अश्वत्थात्माजी के चारोंओर बैठगये ३ फिर एकमहूर्त्ततक शास्त्रके अनुसार अनेक हेतुओं से अश्वत्थामाजी को समाश्वा-सन करके सब राजालोग सायंकालके समय अपने २ डेरोंको गये ४ हे कौरव फिर दुःखशोक में भरे कठिननाश को शोचतेहुये उन राजाओं ने डेरों में भी जाकर सुख नहीं पाया ५ विशेष करके कर्ण वा राजादुर्य्योधन वा दुश्शासन

और सौबलके पुत्र महाबली शकुनिने महाखेदकिया ६ यहसब राजालोग म-हात्मा पाण्डवोंके कष्टोंकी चिन्ता करतेहुये रात्रिको दुर्य्योधनकेही डेरेमें निवासकरनेवालेहुये ७ जो द्रौपदी को द्यूत में कष्ट दियागया और सभामेंभी लाई गई उसको स्मरणकरते और शोचतेहुये अत्यन्त व्याकुल चित्तहुये ८ हे राजा इसप्रकार द्यूतमें प्रत्यक्षहोनेवाले उन दुःखोंको चिन्ता करनेवाले उनलोगों की रात्रि सैकड़ों बर्षके समान व्यतीतहुई ९ उसकेपीछे निर्मल प्रभातके होतेही वेदोक्तरीतिके अनुसार आवश्यक नित्यकर्म्मोंको करके दैवकी आज्ञामें नियत हुये १० अर्थात् आवश्यक कर्मोंसे निवृत्तहोकर बड़ी सावधानीसे सेनाको तैयारहोजानेकी आज्ञादी और युद्धकरनेके निमित्त बाहर निकले ११ मंगल कौतुककरनेवाले कर्णको अपना सेनापतिकरके दधिपात्र घृतआदि पदार्थोंसे १२ और सुवर्णमाला युक्त उत्तम बस्त्रादिकों से उत्तम २ ब्राह्मणोंको पूजनकरते हुये सूत मागध बन्दीजन आदिसेभी स्तूयमानहुये १३ और हे राजा इसीप्रकार से प्रातःकालके कर्मकरनेवाले युद्धमें निश्चयकरनेवाले पाण्डवलोग भी शीघ्र अपने डेरोंसे तैयारहोकर बाहर निकले १४ इसके पीछे परस्परमें विजयाभिलाषी कौरव और पाण्डवोंका महा रोमहर्षण युद्ध प्रारम्भहुआ १५ हे राजा कर्ण के सेनापतिहोनेसे उस कौरवी और पाण्डवी सेनाओंका देखने के योग्य दो दिन तक अपूर्व्व युद्धहुआ १६ इसकेपीछे हज़ारों शत्रुओंको मारकर कर्ण वा धृत-राष्ट्रके पुत्रोंके देखतेहीदेखते अर्जुनके हाथसे मारागया १७ फिर शीघ्रही हस्ति-नापुर जाकर यह सबवृत्तान्त लोगोंने धृतराष्ट्रसेकहा वह वृत्तान्त कौरव जांग-ल देशोंमें प्रसिद्ध हुआ १८ जन्मेजय बोले कि श्रीगंगाजीके पुत्र भीष्मपिता-महको और महारथी द्रोणाचार्य्यजी कोभी मृतकहुआ सुनकर अंबिकाके पुत्र वृद्ध राजाधृतराष्ट्रने बड़ा खेदकिया १९ हे ब्राह्मण फिर उसदुःखी धृतराष्ट्र ने दुर्य्योधन के हितकारी कर्ण कोभी मराहुआ सुनकर कैसे अपने प्राणों को धा-रणकिया २० जिसने कि अपने पुत्रों के विजयकी इसी कर्णमें आशा निश्चय करके कररक्खी थी ऐसे कर्ण के मरने पर इस कौरव ने कैसे अपने जीवनको रक्खा २१ ऐसे स्थानमें कर्णको मृतक सुनकर जो राजाने अपने प्राणोंका त्याग नहीं किया इससे मैं निश्चय जानताहूं कि दुःखमें वर्त्तमान मनुष्य बड़ी कठि-नतासे मरताहै २२ हे राजा इसीप्रकार वृद्धभीष्म बाह्लीक द्रोणाचार्य्य सोमदत्त-

और भूरिश्रवाको २३ और अन्य मित्रोंसमेत गिरायेहुये पुत्र और पौत्रोंको भी सुनकर जो प्राणोंका त्याग नहीं किया इसीसे हे ब्राह्मण मैं उसको महा कठिन मानताहूं २४ हे महामुनि इससब बृत्तान्तको आप मूलसमेत बर्णन कीजिये मैं अपने प्राचीन वृद्ध लोगों के चरित्रों के सुनने से तृप्त नहीं होताहूं २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले हे महाराज कर्ण के मृतक होने से महादुःखी संजय सायंकालके समय वायुकेसमान शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारी से हस्तिनापुरको गया १ और बड़ीब्याकुलतासे हस्तिनापुरमें पहुंचकर उस धृतराष्ट्रके स्थानकोगया जो बांधवों का नाशकारी था २ वहां मूर्च्छा से शोभाहीन राजाको देखकर बड़ी नम्रतापूर्व्वक हाथजोड़ मस्तकसे चरणों में दण्डवत् करके ३ न्यायके द्वारा राजा धृतराष्ट्रको पूजके हाय बड़ाखेदहै ऐसा बचन कहकर वार्त्तालाप करना प्रारम्भ किया ४ और कहनेलगा कि हे राजा मैं संजयहूं क्या आप प्रसन्नता से हैं और आपत्तिपाकर अपने अपराधों से आप विस्मरण तो नहीं होतेहो ५ विदुर द्रोणाचार्य्य भीष्मपितामह और केशवजी के महाउपकारी वा हितकारी बचनों को जो तुमने अंगीकार नहीं किया उनको स्मरण कर २ तो आप पीड़ित नहीं होतेहो ६ सभाके मध्यमें परशुराम नारद और कण्वादिक मुनियों के हितकारी बचनोंको भी स्वीकार नहीं किया उसको स्मरणकरके तो तुम दुःखी नहींहोतेहो ७ आपके हितकरने में प्रवृत्त भीष्म द्रोणाचार्य्य आदि मित्रों को युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मरेहुये स्मरणकरके तो खेद नहीं करते हो ८ तबतो दुःख से महापीड़ित राजाधृतराष्ट्र बहुत लम्बी श्वास लेलेकर इसप्रकारसे कहने वाले संजयसे बोले ९ कि हे संजय दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता भीष्मपितामह और बड़े बाणप्रहारी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर मेराचित्त अत्यंत पीड़ित है १० और बसुदेवताओं के अंशसे उत्पन्नहोनेवाले महातेजस्वी पितामहने प्रतिदिन दशहजार शस्त्रधारी रथियों को मारा ११ पाण्डव अर्ज्जुनसे रक्षित द्रुपदके पुत्र शिखण्डी के हाथ से मरेहुये उस भीष्मपितामहको सुनकर मेरा चित्त पीड़ामानहुआ १२ जिसके लिये भार्गव परशुरामजी ने महायुद्धमें परम अस्त्रदिया और बाल्यावस्था

में उन्हीं साक्षात् परशुरामजी ने अपने शिष्य करने के लिये अंगीकार किया १३ और जिसकी कृपासे महारथी राजपुत्र पांडवों ने और अन्य राजाओं ने महारथीपने को पाया १४ उस सत्यसंकल्प महाधनुर्बाणधारी द्रोणाचार्य्यको धृष्टद्युम्न के हाथसे मराहुआ सुनकर मेराचित्त अत्यन्त पीड़ित होरहाहै १५ इस लोक में चारों प्रकारकी विद्या और अस्त्रविद्या भीष्म और द्रोणाचार्य्य के सिवाय और किसीमें नहीं है उन दोनों महात्माओं के मरने से मैं महा खेदितहूं १६ तीनोंलोकों में अस्त्रविद्या का ज्ञाता जिसके समान कोई नहीं ऐसे महात्मा द्रोणाचार्य्य को मृतक सुनकर मेरे पुत्रों ने क्या २ किया १७ महात्मा अर्ज्जुन ने पराक्रमकरके संसप्तकों की सेनाको मारकर यमलोक में पहुंचाया १८ बुद्धिमान् अश्वत्थामा के नारायणास्त्रके निष्फलहोने और सेनाके भागनेपर मेरे पुत्रों ने क्या क्या कामकिया १९ मैं द्रोणाचार्य्य के मरनेपर सबको भगाहुआ वा शोकसमुद्र में डूबाहुआ जीवनकी आशासे ऐसा चेष्टा करनेवाला देखताहूं जैसेकि समुद्र में नौकाके टूटजानेपर उसपर चढ़ेहुये मनुष्यों की चेष्टाहोती है २० हे संजय सेना के भागजानेपर दुर्य्योधन कर्ण भोजबंशी कृतबर्म्मा मद्रदेशका राजा शल्य द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और मेरे शेष बचेहुये पुत्रादि और समेत अन्यलोगों के मुखका बर्ण कैसा होगया २१।२२ हे संजय इस वृत्तान्तको और पाण्डव वा मेरे पुत्रों के पराक्रमको यथार्थ जैसाहुआ वैसा मुझसे वर्णनकरो २३ संजय बोले हे श्रेष्ठ कौरव लोगों में आपके अपराधसे जो देखने में आया उसको सुनकर तुम खेद मतकरो क्योंकि बुद्धिमान मनुष्य होनहार बिषय में दुखी नहीं होते हैं २४ जैसा कि मनुष्यमें सुखदुख संबंधी प्रयोजन होताहै उसकी प्राप्ति वा अप्राप्ति में कोई बुद्धिमान दुखी नहीं होताहै २५ धृतराष्ट्र ने कहा कि हे संजय इससे अधिक मुझको कोई पीड़ा नहीं है मैं उसको प्राचीनहोनहार मानताहूं इससे तुम अपनी इच्छाके अनुसार बर्णन करो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़े बाणप्रहारी महातेजस्वी द्रोणाचार्य्य के मरनेपर आपके महारथी पुत्रों के मुख शोभा से रहित हुये और चित्त से ब्याकुल होकर वह

सब अचेत भी होगये १ हे राजा उस समय सब नीचामुख करनेवाले शोचग्र-
स्त महापीड़ित उन शस्त्रधारियों ने परस्पर में वार्त्तालाप भी नहीं करी २ अने-
क प्रकारसे दुःखसे पीड़ित आपकी सेनाओं को और उनलोगों को व्याकुल
चित्त देखकर सबने स्वर्ग जानेकाही विचार किया ३ हे राजेन्द्र फिर युद्ध में द्रो-
णाचार्य्य को मराहुआ देखकर इन सबलोगों के रुधिर से भरेहुये शस्त्र हाथों से
गिरपड़े ४ उससमय वह बँधे लटके और गिरेहुये शस्त्र ऐसे देखने में आये जैसे
कि आकाश में नक्षत्र दिखाई देते हैं ५ इसके पीछे उस आपकी सेनाको हटा-
हुआ पराक्रमहीन देखकर राजा दुर्योधन बोला ६ कि मैंने आप लोगोंके परा-
क्रम में रक्षितहोकर पाण्डवों से युद्धकरना प्रारम्भकिया ७ अब द्रोणाचार्य्य के
मरने से वह सब सेना व्याकुलहुईसी दिखाई देती है और युद्धमें युद्धकर्त्तालोग
सबप्रकार से मरते हैं ८ युद्धमें युद्ध करनेवाले की विजय और पराजय दोनों
होती हैं इसमें क्या आश्चर्य्य है आपलोग सब ओरको मुखकरके युद्धकरो ९
बाणविद्यामें अद्वितीय दिव्य अस्त्रों के ज्ञाता महाबली सूर्य्य के पुत्र महात्मा
कर्ण को देखो १० कि युद्धमें जिसके पराक्रम को देखकर कुन्तीका पुत्र अल्प-
बुद्धी अर्ज्जुन ऐसे भाग जाताहै जैसे कि सिंह को देख छोटा मृग भगजाता
है ११ जिसने दशहजार हाथी के समान बली भीमसेन को मानुषी युद्ध करके
परास्त किया १२ और उसी कर्ण ने दिव्य अस्त्रों के जाननेवाले शूर मायावी
भयानक गर्जना करनेवाले घटोत्कचको अपनी अमोघ शक्तीसे युद्धमेंमारा १३
अब युद्धमें उस दुर्जय पराक्रमी सत्यसंकल्पी महाबुद्धिमानके भुजाओं के बल
को देखोगे १४ विष्णु के वा इन्द्रके समान अश्वत्थामा और कर्ण इन दोनों के
पराक्रमको पाण्डवलोग देखेंगे १५ तुम सबलोग युद्धमें सब सेना समेतपांडवों
के मारने को समर्थ हो फिर सबके साथ मिलकर कैसे समर्थ नहोगे अब परा-
क्रमी और अस्त्रज्ञ तुमलोग परस्पर में देखोगे १६ संजय बोले कि हे निष्पाप
आपके महाबली पुत्रने अपने भाइयों को इसप्रकारसे समझाकर कर्णको सेना-
पति बनाया १७ हे राजा युद्धदुर्मद महाबली कर्ण ने सेनापति होकर बड़ेशब्दसे
सिंहनादोंको कर करके युद्ध करना प्रारंभ किया १८ और सब सृंजय पाञ्चाल
विदेह और केकय लोगोंको विध्वंस करके युद्ध में अपने धनुष से ऐसी बाणों
की वर्षा करी कि सबको व्याकुल करदिया १९। २० फिर वह वेगवान पाण्डव

और पांचाल लोगोंको पीड़ित करता युद्धमें अर्जुन के हाथसे मारागया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंजयबाक्यवर्णनेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र यह सुनकर दुर्य्योधनको मृतककेही समान मानताहुआ १ महाव्याकुलता से अचेत होकर हाथी के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा उस राजाको अचेत होकर पृथ्वीपर गिरने से २ रणवासमें से स्त्रियोंका बड़ा शोककारी शब्दहुआ उसशब्द से सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होगई ३ दुःख शोक से पीड़ित अत्यन्त व्याकुलचित्त भरतवंशियों की स्त्रियां महाघोर शोकसागर में डूबकर रुदन करने लगीं ४ । ५ इसके पीछे संजय ने उन शोकसे मूर्छित नेत्रों से अश्रुपात डालनेवाली स्त्रियोंको बिश्वास देकर समझाया ६ जैसे कि केलेके बृक्ष चारोंओरकी बायुसे कंपायमान होते हैं इसी प्रकार बारंबार कंपतीहुई वह सब स्त्रियां बिश्वास युक्त हुईं ७ तब जलसे कौरवों के सींचनेवाले बिदुरजीने भी उस बुद्धिरूपी नेत्र रखनेवाले राजाधृतराष्ट्र को बिश्वास कराया ८ हे राजेन्द्र उनके बचनोंसे वह राजाधृतराष्ट्र बड़े धीरेपने से सचेतहोकर उनस्त्रियोंको देखके उन्मत्तके समान फिर मौनहोगया ९ फिर बारंबार श्वास लेतेहुये धृतराष्ट्र ने बहुतसमयतक ध्यानकरके अपने पुत्रोंकी निन्दा करी और पाण्डवोंकी प्रशंसा करी १० फिर अपने और सौबलके पुत्र शकुनी की बुद्धिकी निंदा करताहुआ बारंबार कांपकर ध्यानको करके ११ मनको थांभकर धैर्य्यतासे धृतराष्ट्रने संजयसे पूछा कि १२ हे संजय तुमने जो बचन कहा वह तो मैंने सुना परन्तु यह तो बताओ कि दुर्य्योधन तो यमपुर नहीं गया १३ सदैव बिजयाभिलाषी मेरापुत्र बिजयसे निराश होगयाहै हे संजय इस कहीहुई कथाको फिर भी मुख्यतासे बर्णनकरो १४ हे जन्मेजय धृतराष्ट्र के इस बचनको सुनकर संजय बोले हे राजा सूर्य्यका पुत्र महारथी कर्ण बड़े बाणप्रहारी शरीरके त्यागनेवाले सूतका पुत्र अपने सब भाइयोंसमेत मारागया और यशस्वी पाण्डवके हाथ से आपकापुत्र दुश्शासन भी मारागया और उसी युद्धमें भीमसेनने उसके रुधिर को भी पान किया १५ । १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रशोकबर्णनेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि हे जन्मेजय शोकसे महाव्याकुल अम्बिकाकापुत्र धृत-राष्ट्र इस बातको सुनकर संजयसे बोला १ हे तात थोड़ेजीवनवाले मेरे पुत्रकी दुर्बुद्धिसे कर्ण के मरणको सुनकर मेरा प्रबल शोक मेरे अङ्गोंको काटेडालताहै सो हे सूत मुझ दुःखसे पारहोनेके इच्छावान् के सन्देहोंको निवृत्तकरो २ अब कौरव और सृंजियों में कौन २ जीवते बाकी हैं और कौन २ मरगये ३ संजय बोले हे राजा महाप्रतापी, अजेय भीष्मजी दश दिनमें पाण्डवों के एक अरब शूरबीरों को मारकर मारेगये ४ इसीप्रकार बड़े धनुर्धारी दुराधर्ष सुवर्ण के रथपर चढ़नेवाले द्रोणाचार्य्य युद्धमें पांचालों के असंख्य रथ समूहोंको मारकर आप भी मारेगये ५ महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्य के मरने से शेष बचीहुई सेना के अर्धभागको मारकर सूर्य्यकापुत्र कर्णभी मारागया ६ और महाबली राजपुत्र बिविंशति भी आनर्त्तदेशी सैकड़ों शूरबीरोंको मारकर युद्धमें मारागया ७ इसी प्रकार आपकापुत्र महाबली विकर्णभी घोड़े और शस्त्रों के नाश होजाने से क्षत्री वर्णको स्मरणकरता शत्रुओं के सन्मुख नियत हुआ ८ दुर्य्योधनके किये हुये घोररूप अनेक क्लेशोंको और अपनी प्रतिज्ञाके स्मरण करनेवाले भीमसेन को स्मरण करताहुआ उसी भीमसेनके हाथसे युद्धमें मारागया ९ और अवन्ति देशके राजा राजकुमार बिन्द अनुबिन्द बड़े २ कठिनकर्म्मोंको करके यमलोक को गये १० सिन्धके देशों में बड़ेउत्तम जो दशदेश वीरजयद्रथके स्वाधीन हैं और वह जयद्रथ आपके आधीनहोकर आपका आज्ञावर्त्तीथा ११ वह महापरा-क्रमी जयद्रथ अर्जुनके हाथसे विजयहुआ तीक्ष्णबाणों से ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओंको विजय करके और इसीप्रकार दुर्य्योधनकापुत्र महावेगवान युद्धमें वीरोंका मर्द्दन करनेवाला और पिनाकीशास्त्र का ज्ञाता राजकुमार लक्ष्मण अ-भिमन्युके हाथसे मारागया १२।१३ इसीप्रकार दुश्शासनका पुत्र बाहुशाली रण में उसीउत्कृष्ट अभिमन्युके साथ लड़कर मृत्युके बशहुआ १४ सागर और अनु-पदेशवासी किरातोंका राजाधर्मात्मा देवराज इन्द्रका प्यारा और अङ्गीकार किया हुआ मित्र १५ सदैव क्षत्री धर्म में प्रीति रखनेवाला राजा भगदत्त अर्जुनके परा-क्रमसे यमलोकमें पहुँचायागया १६ हे राजा इसीप्रकार कौरववंशी बड़ायशी शूर

बीर भूरिश्रवा युद्धमें सात्वकी के हाथ से मारागया १७ और क्षत्रियों के भारके धारण करनेवाले श्रुतायु और अम्बष्ट भी युद्धमें निर्भयतासे घूमतेहुये अर्जुन के हाथ से मारेगये १८ हे महाराज सदैव क्रोधरूप अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्मद आपका पुत्र दुश्शासन भीमसेनके हाथसे मारागया १९ और जिसकी हाथियों की सेना अपूर्व्व और असंख्यथी वह सुदक्षिण खड्गके युद्ध में अर्जुनके हाथसे मारागया २० कोशल देशियों का राजा बड़े २ अंगीकृत शत्रुओं को मारकर अभिमन्यु से महापराक्रम करने के द्वारा यमलोकबासी हुआ २१ शत्रुओं के भयको बढ़ाने वाला महाशूर जयद्रथका पुत्र पृथ्वीपर ढाल तरवारका रखनेवाला श्रीमान अर्जुनके हाथसे मारागया २२ और आपका पुत्र चित्रसेन महारथी भीमसेन से अच्छी रीतिसे युद्धको करके उसीके हाथसे मारागया २३ युद्धमें कर्णकी समान बड़ा तेजस्वी अस्त्रोंको शीघ्रता से चलानेवाला दृढ़ पराक्रमी वृषसेन २४ बड़ा पराक्रम करके अर्ज्जुन के हाथ से कालबश हुआ अभिमन्यु के बधको सुनकर अपनी प्रतिज्ञाको करके जो राजा सदैव पाण्डवोंसे शत्रुता करताथा वह श्रुतायु शत्रुताको सुनाकर अर्जुनके हाथसे मारागया २५ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र सहदेव ने अपने मामा शल्यके पुत्र पराक्रमी भाई रुक्मरथ नामको युद्धमें मारा २६।२७ वृद्ध राजा भगीरथ और वृहच्छत्र केकय यह दोनों बड़े बली महाप्रतापी भी मारेगये २८ हे राजा बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान भगदत्तका पुत्र युद्धमें बाजकी समान घूमनेवाले नकुल के हाथसे मारागया २९ इसीप्रकार महाबली शस्त्रधारी आपके पितामह बाह्लीक अपने बाह्लीक लोगों समेत भीमसेन के हाथ से मृत्यु वश कियेगये ३० और जरासन्धका पुत्र महाबली जयत्सेन मगधका राजा युद्धमें महात्मा अभिमन्युके हाथसे मारागया ३१ हे राजा आपके पुत्र महारथी दुर्मुख और दुस्सह शूरोंमें प्रशंसनीय भीमसेनकी गदासे मारेगये ३२ और महारथी दुर्मर्षण दुर्बिष और महारथी दुर्जय यह तीनों कठिनकर्मों को करके यम के स्थानको गये ३३ और युद्ध में दुर्मद कलिंग और वृषक दोनोंभाई कठिनकर्मी होकर यमलोक को सिधारे ३४ आपका शूरबीर पराक्रमी मन्त्री बृषबर्मा भीमसेन के हाथसे कालके बसीभूत हुआ ३५ इसीप्रकार दशहजार हाथी के समान पराक्रमी महाराज पौरव युद्धमें बड़ेपराक्रमी अर्जुनके हाथसे मारागया ३६ और प्रहार करनेवाले दो हजार बशातय और पराक्रमी शूरसेन यहसब युद्धमें

मारेगये ३७ कवचधारी प्रहारकरनेवाले युद्ध में उद्भट महारथी अभीषाह शिवय यह दोनों कलिंग देशियों समेत मारेगये ३८ जो कि गोकुलमें सदैव बड़ेहुये युद्धमें महाक्रुद्धरूप युद्धसे मुख न मोड़नेवाले वीरथे वहभी अर्जुन के हाथ से मारेगये ३९ हजारों संसप्तकों समेत घूमनेवाले जो गोपालथे वह सब भी अर्जुनके हाथसे यमलोकको गये ४० हे महाराज आपके निमित्त बड़ा पराक्रम करनेवाले आपके साले वृषक और अचल भी अर्जुनके हाथसे मारेगये ४१ इसीरीतिसे नाम और कर्मसे उग्रकर्मी बड़ा धनुर्धारी महाबाहु राजा शाल्व भीमसेनके हाथसे मारागया ४२ हे राजा मित्रके निमित्त युद्धमें पराक्रम करनेवाले ओघवान और बृहन्त दोनों एकसाथही यमलोकको गये ४३ इसीरीति से महा धनुर्धर रथियों में श्रेष्ठ क्षेमधूर्त्तीभी युद्धमें भीमसेनके हाथकी गदासे मारेगये ४४ ऐसेही बड़ाधनुषधारी महाबली जलसन्ध युद्धमें कठिन कर्मोंको करके बड़ेशब्दों को करताहुआ सात्विकीके हाथसे मारागया ४५ गधोंका रथ रखनेवाला राक्षसों का राजाअलंबुष पराक्रमकरके घटोत्कचके हाथसे यमलोकको पहुँचा ४६ कर्ण के पुत्र और भाई महारथी और सब केकयलोगभी अर्जुनके हाथसे मारेगये ४७ बड़े कठिन कर्मी मालव मद्रक और द्रविड़ यौधेय ललित्थ क्षुद्रक उशीनर ४८ मावेल्लकतुंडिकेर सावित्री के पुत्र और पश्चिमोत्तरीय वा पूर्वीय दक्षिणीय राजा लोग ४९ पतियोंके और घोड़ोंके लाखों समूह रथ हाथियोंके झुंडोंसमेत मारडाले ५० ध्वजा शस्त्र कवच और वस्त्रोंसे अलंकृत शूरबीर जो बहुतकालसे बुद्धिमान लोगोंके द्वारा सबबातोंमें कुशल और पोषणकियेगये ५१ वह सुगमकर्मी युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारेगये इसी प्रकार अन्य सेनाके लोग जो परस्पर मारनेकी इच्छा रखतेथे मारेगये ५२ हे राजा इनके बिशेष बहुतसे अन्य हजारों राजालोग अपनी सेनाओं समेत युद्ध में मारेगये ५३ इस रीतिसे कर्ण और अर्ज्जुनकी सन्मुखता में यह ऐसा घोर नाशहुआ जैसे कि इन्द्रके हाथ बृत्रासुर और श्री रामचन्द्रजी के हाथसे रावण मारागया ५४ और जैसे श्री कृष्णजी के हाथसे नरक और मुरनाम दैत्य युद्धमें मारेगये और जैसे श्री भार्गव परशुरामजी के हाथसे राजा कार्त्तिवीर्य्य अर्थात् सहस्राबाहु मारागया ५५ इसीप्रकार वह युद्धमें दुर्मद शूरबीर कर्ण अपनी जाति और बांधवोंसमेत युद्धमें तीनोंलोकों के मोहन करनेवाले महाघोर संग्राम को करके मारागया ५६ जैसे स्वामिकार्त्तिक जी ने

महिषको रुद्रजी ने अन्धकको माराथा उसीप्रकार युद्धमें दुर्मद प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ द्वैरथकर्ण अर्जुनके साथ युद्ध करके मन्त्री और बांधवों समेत मारागया जिससे धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी विजयकी आशा और शत्रुताका सुख उत्पन्न हुआ था ५७ । ५८ हे राजा पाण्डव लोग उसदोष से निवृत्तहुये जो पूर्व्व समय में भलाई चाहनेवाले बांधवों के समझाने से तुमनहीं समझे ५९ इसीकारण राज्य के चाहनेवाले पुत्रोंकी वृद्धिके चाहनेवाले तुमने बड़ानाशकारी यह महाघोर दुःखपाया और जो दुष्कर्मकिये उनका यहयोग्य फल पाया ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात संजय युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेहुये मेरे शूरबीर लोग और हमारे वर्णनकियेहुये शूरबीरों के हाथसे मरेहुये पाण्डवों के शूरबीरों का वर्णनकरो १ संजय बोले युद्धमें बड़े पराक्रमी बलवान कुंतदेशी मन्त्री और बांधवों समेत श्री गांगेय भीष्मजी के हाथसेमारेगये २ और नारायण वा बाल-भद्रनाम अन्य शूरबीरलोग जो बड़े भगवद्भक्त थे युद्धमें वह सबभी बीर भीष्म के हाथसे मारेगये ३ और वह सत्यजित जोकि बड़ाबली युद्ध में सत्य संकल्प अर्जुन के समान था लड़ाई में द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ४ और युद्धमें कुशल बड़ेधनुषधारी सब पांचाल देशीलोग युद्ध में सन्मुख होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे यमलोकको गये ५ इसीप्रकार मित्रके लिये पराक्रम करनेवाले राजा बिराट और द्रुपद दोनों बृद्धभी युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथ से मारेगये ६ हेस-मर्थ धृतराष्ट्र जो अर्जुन केशव जी और बलदेवजी से भी अजेय महारथियों में श्रेष्ठ मन्दमुसकान करनेवाला बालक अभिमन्यु शत्रुओं के बड़ेभारी नाशको करकेमुख्य उत्तमरथी जो अर्ज्जुन के पराजय करने में असमर्थ थे उन छःमहा-रथियों ने घेरकर मारडाला हे महाराज क्षत्रीधर्म में वर्त्तमान रथ से हीन शत्रु-हन्ता बीर अभिमन्यु को युद्ध में दुश्शासन के पुत्रनेमारा शत्रु हननेवाली सेना संयुक्त राजाअम्बष्ट का पुत्र श्रीमान मित्रके निमित्त पराक्रम करताहुआ युद्धमें दुर्योधनके पुत्र बीर लक्ष्मणको पाकर ७ । ११ और बड़े भारी नाशको करके यमलोक को गया बड़ाधनुषधारी अस्त्रज्ञ युद्धमें दुर्म्मद बृहन्त दुश्शासन

के साथ पराक्रम करके यमलोक को सिधारा और युद्ध में दुर्मद राजा मणिमान और दण्डधार १२ यह दोनों मित्रके निमित्त पराक्रम करनेवाले युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये और महारथी अंशुमान और भोजराज सेना समेत १३।१४ पराक्रम करके द्रोणाचार्य्य के हाथसे कालवशहुये और पुत्रसमेत१५ सामुद्र और चित्रसेन समुद्रसेन के पराक्रम से यमलोक को पहुँचाया गया अनूपवासी राजा नील और पराक्रमी व्याघ्रदत्त १६ यह दोनों अश्वत्थामा और विकर्ण के हाथसे यमपुरकोगये चित्रायुध चित्रयोधी यह दोनों भी बड़े नाशको करके १७ और चित्रमार्ग से पराक्रम करतेहुये युद्ध में कर्णके हाथसे मारेगये युद्ध में भीमसेन के समान और केकयदेशी शूरबीरों से संयुक्त १८ महापराक्रम करके अपने भाई कैकेय के हाथसे मारागया हे महाराज गदासेयुद्ध करनेवाला पर्वत निवासी महाप्रतापवान तेजस्वी १९ आपके पुत्र दुर्मुखके हाथसे मारागया ग्रहों के समान प्रकाशित नरोत्तम रोचमान नाम दोनों भाई २० एकवार में द्रोणाचार्य्य के बाणों से स्वर्ग को पठायेगये हे राजा सन्मुख युद्धकरनेवाले पराक्रमी राजालोग २१ कठिनकर्मको करके यमकेलोकोंको सिधारे हे राजा सन्मुख युद्ध करनेवाले सव्यसाची अर्ज्जुन के मामा पुरजित और कुन्तभोज युद्ध में पराजयहोकर द्रोणाचार्य्य के बाणों से यमके लोकोंको प्राप्तहुये २२ अभिभूनाम काशीकाराजा काशीके अनेक शूर बीरों समेत युद्धमें बसुदान के पुत्रके हाथसे मारागया और बड़ा तेजस्वी युधामन्यु और महापराक्रमी उत्तमौजा २३। २४ युद्धमें सैकड़ों शूरबीरों को मारकर हमारे बीरों के हाथसे मारेगये और पांचाल देशी मित्रवर्मा और क्षत्रवर्मा यह दोनों महाधनुषधारी द्रोणाचार्य के हाथसे यमलोकको भेजेगये २५। २६ शूरबीरों में प्रधान शिखंडी का पुत्र क्षत्रदेव आपके पौत्र लक्ष्मणके हाथसे मारागया चित्रवर्मा और सुचित्र महारथी महाबली दोनों पिता पुत्र युद्धमें घूमतेहुये महाबीर द्रोणाचार्य के हाथसे मारेगये २७ हे महाराज जैसे कि पर्व में समुद्र शांती को पाता है उसीप्रकार वार्धक्षेमी ने शस्त्रों के नाश होनेपर परमशांती को पाया २८ हे राजा शस्त्रधारी युद्ध में श्रेष्ठ सेनाविन्दुका पुत्र कौरवेन्द्र बाह्लीकके हाथ से मारागया और चंदेरीदेशियों में अत्यन्त उत्तम रथी धृष्टकेतु २९। ३० कठिन कर्मको करके यमलोकको गया इसीप्रकार बड़ा बीर सत्यधृती युद्धमें बहुतोंको नष्टकरके ३१ पांडवों के निमित्त पराक्रम करने-

वाला यमके लोककोगया वह कौरवों में श्रेष्ठ सेनाबिन्दुभी युद्धमें अनेकों को मारकर कालवशहुआ ३२ फिर शिशुपालका पुत्र राजासुकेतु युद्धमें कठिन कर्मी होकर द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३३ इसरीति से पराक्रमी सत्यधृती बीर मादिराश्व और महाबली सूर्य्यदत्त द्रोणाचार्य्य के शायकों से मारेगये ३४ और युद्धकर्त्ता पराक्रमी श्रेणीमान् कठिन कर्म करके मारागया ३५ इसीप्रकार युद्ध में पराक्रमी परमअस्त्रज्ञ राजा मगधभी भीष्मजी के हाथसे मारागया और वह शत्रुहन्ता अब पड़ाहुआ सोताहै ३६ और विराटके पुत्र महारथी शंख और उत्तर दोनों बड़े कर्मको करके यमलोकको सिधारे ३७ और बसुवान् युद्धमें कठिन कर्मको करताहुआ पराक्रम करके द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारागया ३८ हे राजा जिसको तुम पूछतेहो उस द्रोणाचार्य्य ने पराक्रम करके पाण्डवों के अनेक महारथीमारे ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय प्रधान पुरुषों का नाश होजाने से उस मरने से शेष बचीहुई अपनी सेनाको नहीं देखताहूं १ मेरे प्रयोजन से मरनेवाले उन दोनों महाधनुषधारी अतुलपराक्रमी कौरवों में श्रेष्ठ भीष्म और द्रोणाचार्य्यको सुनकर जीवनको मैं नहीं चाहताहूं २ मैं युद्धको शोभित करनेवाले मरेहुये कर्णको नहीं शोचताहूं जिसकी भुजाओंका पराक्रम दशहजार हाथीका था ३ हे संजय इस हेतुसे जैसे कि मेरी सेनाके मरेहुओंका तुमने बर्णनकिया वैसेही यहभी कहो कि मेरी सेनामें कौन २ जीवताहै ४ अब आपके बर्णन कियेहुये इन बड़े २ शूरबीरों के मरजाने से शेष बचेहुये भी मरों के सदृश मुझको जानपड़ते हैं ५ संजय बोले हे राजा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य ने जिसको अपने उत्तम दिव्य अस्त्र समर्पण करदिये ६ वह महारथी कर्मकर्त्ता हस्त लाघव करनेवाला दृढ़धनुष बाणों से युक्त पराक्रमी वेगवान् तेरे निमित्त युद्धाभिलाषी अश्वत्थामा अचल होकर बिद्यमान है ७ यह आनर्त्त देश बासी हृदिक का पुत्र यादवों में श्रेष्ठ महारथी भोजबंशी कृतबर्म्मा आपकेही निमित्त युद्धकी इच्छा करनेवाला अभी विद्यमानहै ८ युद्ध में दुराधर्ष आपके पुत्रोंका पूर्व्व सेनापति शल्य जो अपना

बचन सत्य करने को अपने भानजे पाण्डवों को त्यागकर ६ जिसने युधिष्ठिर के आगे युद्धमें कर्ण के पराक्रम के नाश करने की प्रतिज्ञा को पूर्ण किया वह अजेय इन्द्र के समान पराक्रमी आपके निमित्त लड़ने की इच्छा करनेवाला नियत है १० और अपने कुल समेत राजा गान्धार, आजानेय, सिन्धदेशी, पर्बती काम्बोजदेशी सिंधी बनायुजनदीज इत्यादि ११ अनेकप्रकार के घोड़ों समेत तेरे लिये युद्धाकांक्षी बर्त्तमानहै १२ हे कौरवेन्द्र राजा कैकेयका पुत्र महारथी उत्तम घोड़ों समेत पताका युक्त रथपर चढ़कर आपके निमित्त युद्धका अभिलाषी अभी बर्त्तमान है १३ इसीप्रकार कौरवों में बड़ाबीर पुरमित्रनाम आप का पुत्र अग्नि और सूर्य्यकेबर्ण रथपर सवार होकर ऐसा बर्त्तमान है जैसे कि बादलों से रहित स्वच्छ आकाश में सूर्य्य प्रकाशमान होता है १४ भाइयों में नियत दुर्य्योधन सिंहकेसमान स्वभाववाला युद्धाभिलाषी सुवर्ण जटित रथकी सवारी में नियतहै १५ वह पुरुषों में बड़ाबीर सुवर्ण जटित कवचधारी कमल के समान प्रकाशित निर्धूम अग्नि के समान तुल्य राजाओं में ऐसा शोभायमान हुआ १६ जैसे कि बादलों में सूर्य्यका प्रकाश होताहै इसीप्रकार प्रसन्न चित्त युद्धाभिलाषी ढाल तलवार धारणकिये आपकेपुत्र सुषेण, चित्रसेन और सत्यसेन यह तीनों नियतहैं १७ हे भरतर्षभ शीलवान् उग्रशस्त्रधारी शीघ्रभोजी राजकुमार जरासन्धका प्रथमपुत्र अदृढ़ चित्रायुध श्रुतवर्मा जय शल्य सत्यब्रत दुःशल यह सब नरोत्तम सेनासमेत नियतहैं १८ और प्रत्येक युद्धमें शत्रुओं का हन्ता शूरों में प्रतिष्ठित कैतवोंका राजा राजकुमार रथ घुड़चढ़े हाथी और पत्तियों समेत चढ़ाई करनेवाले १९ और आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीर श्रुतायु धृतायु चित्रांगद और चित्रसेन भी अभी युद्धमें नियत हैं २० यह सब युद्धाभिलाषी प्रहारकर्त्ता प्रतिष्ठावान् सत्यप्रतिज्ञ नरोत्तम नियतहैं और कर्णकापुत्र सत्यप्रतिज्ञ युद्ध करने का उत्सुकभी अभी नियतहै २१ और कर्णकेदूसरे दो पुत्र उत्तम शस्त्रधारी हस्त लाघवी महाबली हैं वह आपके निमित्त युद्धाभिलाषी बीरोंके बँधेहुये व्यूहमें बर्त्तमानहैं वह भी साधारण अल्प पराक्रमियों से कठिनता पूर्व्वक बिजय होनेवाले हैं २२ हे राजा इन अनेक असंख्य प्रभाववाले मुख्य २ बीरों से संयुक्त कौरवों का राजा दुर्य्योधन हाथियोंके समूहों के बीच महेन्द्रके समान बिजय करने के निमित्त उपस्थितहै २३ धृतराष्ट्र बोले कि हमारे और पाण्डवों के जो शूर

बीर शेष बचेहुये जीवते हैं उनका तुमने वर्णनकिया इसको सुनकर मुझको बड़ा शोक होताहै परन्तु जो होनहारहै वह मिट नहींसक्ती २४ बैशम्पायन बोले कि इसरीति से बचनों को कहताहुआ अम्बिका का पुत्र धृतराष्ट्र अपनी उस सेना को जिसके बड़े २ बीर मारेगये और नाशको प्राप्तहुये उसमें से कुछ शेष बचेहुये सुनकर २५ दुःखसे ब्याकुल होकर महामोहके बशीभूतहुआ और मोहितहोकर बोला कि हे संजय एक मुहूर्त्तठहरो २६ हे तात इस बड़ी अप्रिय बार्त्ताको सुनकर मेरा चित्त व्याकुलहै और मैं अंगोंसे भी शिथिल होगया हूं २७ वह अम्बिका सुत धृतराष्ट्र ऐसे बचन को कहकर भ्रान्तिसे युक्त होगया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ बैशम्पायनजी युद्धमें कर्णको मृतक और पुत्रोंको नियत बर्त्तमान सुनकर उस महाब्याकुल राजा धृतराष्ट्रने क्या कहा १ पुत्रकी आपत्तियोंसे उत्पन्न होनेवाले महाकष्टको प्राप्तहोकर जो २ वर्णनकिया उसको मुझसे ब्यौरेवार कहिये २ बैशम्पायन बोले हे महाराज उसकर्णके मरनेको सुनकर जो कि श्रद्धा के अयोग्य और जीवोंके अपूर्व मोहका करनेवाला महाभयानक था जिसप्रकार कि मेरुपर्व्वतका चलायमान होना ३ और जैसे भार्गव परशुरामजी का अनुचित मोह और जैसे कि शत्रुओं के भयकारी इन्द्र देवताकी पराजय ४ और जैसे महातेजस्वी सूर्य्यका स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरना और जैसे अबिनाशी समुद्रकाजल सूखजाना बुद्धिसे बाहर अर्थात् असंभवहै ५ और जैसे पृथ्वी और आकाशकी नाशकारक अपूर्व्व बायु और जैसे शुभाशुभ दोनों कर्मोंकी निष्फलता होय ६ उसीप्रकार राजाधृतराष्ट्र युद्धमें कर्णके मरजानेको बुद्धिसे बिचारकर और सेना नहीं है यह निश्चय करके ७ दूसरे जीवोंका भी नाशहोगा यह शोचकर शोकाग्निसे जलताहुआ ८ चित्तसे कम्पायमान ढीले अंग महादुःखी लम्बी दुःख की श्वासालेनेवाला होकर हाय हाय शब्दको कहता बिलाप करनेलगा ९ धृतराष्ट्र बोले हे संजय सिंह और हाथी के समान पराक्रमी वृषभ के से स्कन्धवाला शीघ्रगामी महातेजस्वी शूरबीर कर्ण घूमने लगा १० जो उत्तम बज्र के समान दृढ देह महातरुण अपनेशत्रु महाइन्द्रके भी युद्धमें बली बर्द्धके समान

नहीं लौटता ११ और युद्धमें जिसके धनुषकी टंकारको सुनकर और बाणोंकी बर्षाको देखकर युद्धमें रथ घोड़े हाथी और मनुष्य नहीं ठहरसक्तेथे १२ और दुर्य्योधनने शत्रुओंके विजयकी इच्छासे जिस महाबाहुकी शरणलेकर पाण्डवों से शत्रुताकरी १३ वह असह्य पराक्रमी रथियोंमें श्रेष्ठ पुरुषोत्तमकर्ण युद्धमें अर्जुनके हाथसे कैसे मारागया १४ जिसअहंकारीने अपनेही भुजबलसे श्रीकृष्ण अर्जुन वा यादव और अन्य किसी क्षत्री को ध्यान नहीं किया अर्थात् किसी को कुछमाल नहींजाना १५ अर्थात् यही कहताथा कि मैं अकेलाही युद्धमें उन अजेय शार्ङ्ग धन्वा और गांडीव धनुषधारीको एक साथही उनको दिव्य रथ से गिराऊंगा यह अपनी प्रतिज्ञा उस लोभ से बिस्मर्णचिन्तासे अधोमुख राज्य के लोभी रोगग्रस्त दुर्य्योधनसे बारम्बार बर्णनकरी १६। १७ और उस कर्णने पूर्व्व समय में काम्बोज देशी अवन्तदेशी कैकयदेशी गान्धार मद्रक मत्स्य त्रिगर्त्तगण १८ शक पाञ्चाल बिदेह काशी कोशल सुम्हल अंग बंग निषाद पुण्ड चारक १९ वत्स, कलिंग, तरलअश्मक और ऋषिक देशियों को भी युद्ध में जीतकर बलिभृत् अर्थात् कर देनेवाला करदिया २० वह रथियों में श्रेष्ठ दिव्य अस्त्रोंकाज्ञाता महातेजस्वी धर्मरूप परम अस्त्रज्ञ अत्यन्त तीक्ष्णधार कंकपक्षसे युक्त सैकड़ों बाणोंकी बर्षासे दुर्य्योधनकी बृद्धिकेलिये सेनाका रक्षक सूर्य्यका पुत्र कर्ण कैसे २ युद्धोंको करके पाण्डव अर्जुनके हाथसे मारागया २१। २२ और जैसे कि देवताओं में इन्द्र बर्षा करनेवाला है उसीप्रकार कर्ण भी धनकी वृष्टिसे मनुष्यों पर बर्षा करनेवाला है इनदोनों के सिवाय लोकमें किसी तीसरे बर्षा करनेवालेको नहीं सुनते हैं जैसे घोड़ोंमें उच्चैश्श्रवा राजाओंमें कुबेर २३।२४ देवताओं में महाइन्द्र उत्तम है इसीप्रकार शस्त्र प्रहार करने में पृथ्वीपर कर्ण सब से उत्तमहै ऐसेसमर्थ पराक्रमसे शोभित शूरबीर राजाओं से अजेयकर्णने २५ दुर्य्योधनकी वृद्धिकेलिये संपूर्णपृथ्वीको बिजय किया २६ और जिसको प्राप्तहोकर मगधके राजा जरासंधने यादव और कौरवों के सिवाय अन्य सब राजाओं को आधीनकरलिया उसकर्णको द्वैरथ युद्धमें अर्जुनके हाथसे मराहुआ सुनकर मैं शोकसमुद्रमें ऐसे डूबरहाहूं जैसे कि समुद्रमें टूटीनौका डूबती है २७ उसधनकी वृष्टि करनेवाले और रथियोंमें श्रेष्ठ कर्णको द्वैरथ युद्धमें मराहुआ सुनकर २८ मैं शोक समुद्रमें ऐसे डूबनेको होरहाहूं जैसे कि समुद्रमें बिना नौकाके मनुष्य होजाते हैं

हेसंजय जो मैं ऐसे २ दुःखोंसेभी नहींमरूंगा २६ तो निश्चय करके मेरा हृदय बज्रसे भी कठोर शोकचिन्तासे फटजाने के योग्यहै और हे सूत संजय ज्ञातवाले और मित्रोंकी इस पराजयको सुनकर ३० मेरेसिवाय कौन सा पुरुषहै जो प्राणों को नहीं त्यागकरे मैं बिषखाना अग्निमें प्रवेशहोना वा पर्व्वतके ऊपरसे गिरना चाहताहूं परन्तु मैं इन कठिन दुःखों के सहनेको समर्थ नहीं होसक्ता ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रवाक्येऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अब सन्तलोग तुमको लक्ष्मीसे कुलसे यशसे तपसे और शास्त्रज्ञतासे नहुषके पुत्र ययातिके समान मानते हैं १ हे राजा शास्त्र में तुम महर्षि के समान कृतकृत्यहो आप अपनेको सावधान करो और ब्याकुलताको त्यागो २ धृतराष्ट्र बोले मैं दैवको श्रेष्ठ मानताहूं निरर्थक उपायकरने को धिकार है जहां कि शालबृक्षके समान उन्नत महाबली कर्ण युद्ध में मारागया ३ वह महारथी युधिष्ठिर की सेना और पाञ्चालोंके रथसमूहों को मारकर और बाणों की बर्षा से सब दिशाओं को सन्तप्त करताहुआ ४ जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों को मोहित करता है उसीप्रकार युद्ध में पाण्डवों को मोहितकरके इस प्रकार से मृतक होकर सोता है जैसे कि बायुसे टूटाहुआ बृक्ष पृथ्वीपर पड़ा होता है ५ मैं शोक समुद्र के अन्त को नहीं देखता हूं मेरी चिन्ता की वृद्धि और मरने की इच्छाभी उत्पन्न होती है ६ हे संजय मैं कर्ण के मरने को और अर्ज्जुनकी विजयको सुनकर कर्ण के मारेजाने को श्रद्धा विश्वाससे अयोग्य जानताहूं ७ निश्चयकरके मेराहृदय बज्रके समान दुःखसे फटनेवाला है जो पुरुषोत्तम कर्णको मृतक सुनकर भी नहीं फटता है ८ पूर्व्वसमयमें देवताओं ने मेरी आयु बहुतबड़ी बिचारकरी है इसहेतुसे कि कर्णको भी मृतक सुनकर अभी पृथ्वीपर महादुःखी जीवताहुआ वर्त्तमानहूं ९ हे संजय मुझ सुहृदजनोंसे रहित के इस जीवनको धिकारहै जिससे कि मैंने इस दुर्द्दशाको पाया १० मैं निर्बुद्धी सबके शोच के योग्य होकर दुःखी रहूंगा और पूर्व्वकाल में सबलोक में मान्य होकर ११ शत्रुओं से तुच्छ कियाहुआ मैं कैसे जीवनको समर्थहूंगा हे सूत संजय मैंने भीष्म द्रोणाचार्य्य के मरणसे उत्पन्न होनेवाले शोकसे महादुःखदायी

आपत्तिको पायाहै १२ युद्धमें कर्ण के मरनेपर भीष्म द्रोणाचार्य्य और महात्मा कर्ण के मरने से मैं शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखताहूं १३ क्योंकि वह शूरबीर कर्ण मेरे पुत्रोंको युद्धरूपी नदी में नौकारूप होकर बीरोंकी लड़ाई में अनेक शायकों को बरसाताहुआ मारागया १४ उस पुरुषोत्तमके बिना मेरा जीवन वृथाहै निश्चयकरके शायकों से पीड़ित होकर अतिरथी कर्ण रथसे ऐसे गिर पड़ा १५ जैसे कि बज्रके पातसे पर्व्वतका टूटाहुआ शिखर पृथ्वीपर गिरता है निश्चयकरके वह रुधिर में भराहुआ पृथ्वीको शोभितकरके ऐसा सोता है जैसे कि मतवाले हाथी से गिरायाहुआ हाथी होताहै यही धृतराष्ट्रके पुत्रका बलथा जिससे कि पाण्डवों को बड़ा भयथा १६ । १७ वह धनुषधारियों का ध्वजारूप कर्ण अर्ज्जुन के हाथसे मारागया हाय वह धनुषधारी मित्रोंका निर्भय करनेवाला बीर कर्ण मराहुआ ऐसा सोताहै १८ जैसे कि देवताओं के इन्द्रका घात कियाहुआ पर्व्वत होता है जैसे कि पंगु मनुष्यका मार्ग चलना और कंगाल निर्द्धनकी धनकी इच्छा करना वृथाहै १९ इसीप्रकार दुर्य्योधन के मनकी इच्छा कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहै जैसे कि जलके अंबुकण श्वासके दुःखसे उल्लंघनके योग्यहै अहंकारी नीच दुःखी मन और पराक्रमहीन २० । २१ क्या मेरा पुत्र दुश्शासन भी मारागया हे तात क्या उसने युद्धमें भयकारी कर्म्मोंको नहीं किया २२ जैसे कि अन्य क्षत्रिय मारेगये उसीप्रकार कहीं शूरबीर दुर्य्योधन तो नहीं मारागया युधिष्ठिर सदैव कहतारहा कि युद्ध मतकरो २३ परन्तु दुर्य्योधन ने उसको ऐसे नहीं स्वीकार किया जैसे कि अज्ञान मनुष्य नीरोग करनेवाली औषधीको नहीं अंगीकार करताहै बाणशय्यापर सोनेवाले महात्मा भीष्मजी ने जलकी इच्छाकरी २४ तब उस अर्ज्जुन ने पृथ्वी के तलको तोड़ा उस अर्ज्जुनके हाथसे उत्पन्नहुई जलधाराको देखकर २५ उस महाबाहुने कहा कि हे तात पाण्डवों के साथ सन्धिकर निश्चयकरके सन्धिसे सुखहोगा और तुम्हारा युद्ध मेरेही अन्ततकहोय २६ तुम सजातियों समेत प्रीतिपूर्व्वक पृथ्वीकोभोगो परन्तु उसने न माना और उसके बचनको शोचताहै २७ हे संजय वह दूरंदेशी बचन अब आगे दिखाई देते हैं और मैं मन्त्री वा पुत्रों से रहितहुआ २८ और द्यूतखेलने से ऐसे बन्धन में पड़ा जैसे कि परकेंच पक्षी होताहै हे संजय जैसे कि अत्यन्त प्रसन्न बालक पक्षीको पकड़कर पक्षकाटकर २९ मारतेहुये छोड़देते हैं

और वह अपने पक्ष टूटजाने से चल नहीं सक्ताहै ३० इसीप्रकार सब मनोरथों से रहित और बांधवआदि से पृथक् मैंभी टूटेपक्षवाले पक्षी के समान वर्त्तमान हूं ३१ महादुःखी शत्रुके आधीन होकर मैं किस दशाको पहुँचूंगा ३२ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रशोकेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले कि इसरीतिसे महादुःखी व्याकुल चित्त धृतराष्ट्र इसरीतिसे बिलापकरके फिर संजयसे कहनेलगे १ कि जिसने सब काम्बोज अंबष्ठ गांधार और विदेहोंको कैकयलोगोंसमेत बिजयकिया और युद्धमें प्रयोजनके निमित्त बिजयकराके २ जिसने दुर्य्योधन के लिये पृथ्वी को विजयकिया वह बाहुशाली शूरबीरशल्य युद्धमें पाण्डवों के हाथसे बिजय कियागया ३ हे संजय उसबड़ेधनुष सन्तोषही के अर्थ होते हैं उसीप्रकार दूसरे प्रकारसे बिचार कियाहुआ कर्म और ही प्रकारसे होताहै दैव बड़ा बलवान्है और कालधारी कर्णके मरनेके पीछे युद्ध में कौन २ से बीर सन्मुखहुये वह मुझ से कहो ४ कहीं अकेलाही युद्ध करता हुआ पाण्डवोंके हाथसे तो नहीं मारागया हे तात जैसे वह बीर मारागया उसका वृत्तान्त तुमने प्रथमही कहा सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शिखण्डी ने अपने सन्मुख न होनेवाले भीष्मपितामहको युद्धमें उत्तम २ बाणोंसे मारा ५ । ६ इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने युद्धमें शस्त्र त्यागनेवाले महाधनुषधारी योगाभ्यासमें नियत द्रोणाचार्य्यको बहुत बाणोंसे घायलकिया ७ हे संजय वह द्रोणाचार्य्य खड्गकेद्वारा धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये यह दोनों बीर समयपाकर छलसेही मारेगये ८ मैंने इन गिरायेहुये भीष्मको सुना मैं निश्चय जानताहूं कि आप बज्रधारी इन्द्रभी युद्ध में भीष्म और द्रोणाचार्य्यको नहीं मारसक्ताथा जब कि यह दोनों न्यायके अनुसार युद्धकरें मैं इसबात को सत्य २ कहता हूं कि युद्ध में बड़ेदिव्य अस्त्रों के छोड़नेवाले इन्द्रके समान बीर कर्ण को कैसे बहुतोंने पकड़ा इन्द्रने बिजली के समान प्रकाशित दिव्य सुवर्णसे अलंकृत ९ । १० । ११ शत्रुओंके मारनेवाली शक्ती जिसको कुंडलों के बदले में दी और जिसका बाण सर्पमुख दिव्य और सुवर्णसे जटित १२ शत्रुओंका मारनेवालाथा वह चंदनसे चर्चितहोकर पृथ्वीपर सोताहै जिसने भीष्म द्रोणाचार्य आदि बड़े २ बीर महारथियोंका भी अपमान

किया और श्रीपरशुरामजी से महाघोर ब्रह्मास्त्रको सीखा और जिस महाबाहु ने द्रोणाचार्य्य आदिको मुख मुड़ाहुआ बाणों से पीड़ित देखकर १३ । १४ अभिमन्युके धनुषको अपने तीक्ष्णबाणोंसे काटा और जिसप्रकार दशहजार हाथी के १५ समानबली बज्रके समान बेगवान् दुराधर्ष भीमसेनको अकस्मात् रथसे बिरथकरके हँसताहुआ गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से सहदेव को विजयकरके १६ धर्म और कृपालुताके ध्यान से बिरथकरके नहीं मारा जिसने बिजयाभिलाषी महामायावी १७ राक्षसोंके राजा घटोत्कचको इन्द्रकी शक्ती से मारा इतने दिनतक उससे भयभीत अर्जुनने १८ युद्धमें जिसके द्वैरथ संग्रामको प्राप्त नहीं किया वह बीरपुरुष कैसे युद्धमें मारागया जिसका न रथटूटा न धनुषटूटा और अस्त्रोंका भी नाश न हुआ वह कर्ण शत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया उस बड़े धनुष के चढ़ानेवाले घोरबाण और दिब्यअस्त्रोंको युद्धमें छोड़नेवाले सिंहकेसमान बेगवान् पुरुषोत्तम कर्ण के बिजय करनेको कौन समर्थ है १६ । २० । २१ उसका धनुष अवश्य टूटा वा रथ पृथ्वीपर गिरा अथवा शस्त्रों का नाश होगयाथा जिससे कि उसको मराहुआ मुझसे बर्णन करताहै २२ उसके नाश होनेसे मैं अन्य सबको भी नाशमान देखता हूं उसका प्रणथा कि जबतक अर्जुनको नहींमारलूंगा तब तक नतो अपने चरणोंको धोऊंगा न युद्धमें पैदलहोकर चलूंगा। जिसमहात्मा का यह महाघोर प्रणथा कि जिसके भयसे भयभीत धर्मराज पुरुषोत्तम युधिष्ठिर ने २३ । २४ तेरहवर्षतक सदैव आनन्दसे जीवनको नहीं पाया जिस पराक्रमी महात्माके पराक्रममें मेरेपुत्रने आश्रयलेकर पांडवोंकी स्त्री द्रौपदीको बड़ेबलसे सभामें बुलाया वहांभी सभाके मध्यमें पांडवोंके देखतेहुये २५ । २६ कौरवों के सन्मुख द्रौपदी से बोला हे दासकी भार्या कृष्णा तेरे पति नहीं हैं किन्तु सबके सब षंडतिल अर्थात् थोथे तिलके समानहैं २७ हे सुन्दरी तू दूसरेपतिकेपास वर्त्तमानहो जिस कर्णने सभाके मध्यमें ऐसे २ असभ्य और रूखे दुर्बचन द्रौपदी से कहे वह शत्रुओं के हाथसे कैसे मारागया २८ उसने यहभी कहाथा कि हे दुर्योधन जो युद्धमें प्रशंसनीय भीष्म और युद्धदुर्म्मद द्रोणाचार्य पक्षपात करके कुन्तीके पुत्रोंको नहीं मारेंगे तो मैं सबको मारडालूंगा तू अपने मनकी चिन्ताको दूरकरदे २६।३० गांडीव धनुष और अविनाशी दोनों तूणीर इस उत्तमचन्दनसे लिप्त सन्मुखदौड़नेवाले मेरेबाणका क्या करसक्ते हैं ३१ वह महादोषयुक्त कर्ण नि-

श्रयकरके अर्जुनके हाथसे कैसे मारागया गांडीवधनुषसे छूटेहुये बाणोंके उदग्र-स्पर्शकी चिन्तारहित द्रौपदी से यहकहतेहुये कि हे कृष्णा तू बिनापतिकी है जिस कर्ण ने पांडवों को देखा और अपने भुजाका आश्रयलेकर जिसको श्रीसमेत सपुत्र पाण्डवोंसे जराभी भयनहींहुआ हे संजय उसका मारना देवताओं समेत इंद्रसेभी कठिनथा ३२।३३।३४ हे तात उसको सन्मुख दौड़नेवाले पाण्डवलोग कैसे मारसक्तेहैं धनुषज्याके स्पर्श करनेवाले अथवा हस्तत्राणकेद्वारा पकड़नेवाले कोई धनुषधारी मनुष्य कर्ण के सन्मुख होने को समर्थ नहीं हैं पृथ्वी चन्द्र और सूर्य्य चाहौ अपनी किरणों से रहितहोजायँ ३५।३६ परन्तु युद्धमें मुख न मोड़ने वाले पुरुषोत्तमका मरण नहीं है जिसके कारण प्रारब्धहीन दुर्बुद्धी दुर्योधन ने सदैव भाई दुश्शासन समेत ३७ वासुदेवजी के उत्तरहीको अंगीकार किया मैं यह जानताहूं कि वह मेरा पुत्र दुर्योधन बड़े दोषयुक्त कर्णको पराजय और दु-श्शासनको मराहुआ ३८ देखकर शोचको करताहै हे संजय द्वैरथ युद्धमें अ-र्जुनके हाथसे कर्णको मराहुआ सुनकर ३९ और बिजय करनेवाले पाण्डवोंको देखकर दुर्योधनने क्याकहा वा दुर्मर्षण और वृषसेनको युद्धमें मृतकदेखकर ४० और अपनीसेनाको महारथियोंसे घायलहोकर भागतीहुई देखकर और भागनेकी इच्छावान् मुखमोड़नेवाले राजाओं और रथियों को घायल देखकर शोचकरता है ४१ अथवा दुर्योधनने उस शासनाके अयोग्यपलायमान इन्द्रियों के बशीभूत ४२ सेनाको उत्साहसे रहित देखकर क्या कहा और जिनके बहुत मनुष्य मारेगये उन राजाओं से घिरेहुये आप शत्रुता करनेवाले दुर्योधनने क्याकहा और युद्ध में रुधिर पीनेवाले भीमसेनके हाथसे मरेहुये भाई दुश्शासनको देखकर क्याकहा और सभामें जो राजागान्धारकेसन्मुख कहाथा कि कर्ण युद्धमें अर्जुनको अवश्य मारेगा उस कर्णके मरनेपर क्या कहा ४३।४४।४५ पूर्व्वसमयमें सौबलके पुत्र शकुनीने द्यूतरचकर पाण्डवोंको ठगकर ४६ कर्णके मरनेपर क्या कहा यादवोंमें महारथी हार्दिक्यकेपुत्र बड़े धनुषधारी कृतबर्माने ४७ कर्णको मृतक देखकर क्या कहा क्षत्रिय बैश्य धनुर्वेदके जाननेके आकांक्षी जिस बुद्धिमान् अश्वत्थामाकी शिक्षाको प्राप्तकरते हैं उस बड़े प्रतापी यशस्वी तरुण बयवाले धनुर्द्धारी अश्व-[त्था]मा ने कर्ण के मरनेपर क्या कहा ४८।४९ जो गौतमकेपुत्र महाधनुर्द्धारी [...]के आचार्य्य कृपाचार्य्य हैं हे तात उन्होंने कर्ण के मरनेपर क्या कहा

और रथियों में श्रेष्ठ मद्रदेशाधिपति पराक्रमी युद्धमें शोभायमान राजा शल्यने अपने सारथीपने में कर्णको मृतक देखकर क्याकहा ५०।५१।५२ इनके सिवाय और सब दुराधर्ष धनुषधारी राजाओं ने युद्ध में कर्णको मरा देखकर क्या कहा और जो २ इसपृथ्वी के राजा यहां युद्धकरने को आये उन सबोंने ५३ कर्णको मराहुआ देखकर कौन २ से बचनकहे हे संजय उस रथियों में श्रेष्ठ नरोत्तमवीर कर्ण के मरनेपर ५४ कौन २ सेनाके सेनाध्यक्ष हुये और रथियोंमें श्रेष्ठ मद्रदेश का राजा शल्य कर्णके सारथ्य कर्ममें कैसे नियत कियागया यह सब वृत्तान्त मुझसे ब्योरे समेत वर्णनकरो ५५ युद्धकरनेवाले कर्णके दाहिने रथके चक्रकी किसने रक्षाकरी और बायें चक्रकी और पृष्ठभागकी किस २ ने रक्षाकरी ५६ किसने कर्ण का संग न छोड़ा और कौनसे नीच भागगये और तुम्हारे भाग जाने से महारथी कर्ण कैसे मारागया ५७ और जिसप्रकार बादलों से जल की धारा गिरती हैं उसीप्रकार बाणोंकी बर्षाकरते हुये महारथी शूरबीर पाण्डव कैसे सन्मुखहुये ५८ हे संजय उसयुद्धमें बाणोंमें श्रेष्ठ कर्णका वहदिव्य बाण कैसे निष्फलहुआ उसको मुझसे कहौ ५९ प्रधान पुरुषके न होनेसे मैं अपनी शेष बचीहुई सेनाको नहीं देखता हूं ६० उन बीर धनुर्धारी मेरेलिये जीवनके त्यागने-वाले भीष्म और द्रोणाचार्य्यको मृतक देखकर अब मेरा जीवना निरर्थकहै ६१ मैं पाण्डवों के हाथसे मरेहुये कर्णको बारम्बार स्मरण करके शान्तीको नहींपाता हूं जिसकी कि भुजाओंका बल दशहजार हाथियों के समान था ६२ हे संजय द्रोणाचार्य्य के मरनेपर युद्धमें शत्रुओं के हाथसे नरोत्तम कौरवोंका जो वृत्तांत हुआ वह मुझसेकहौ ६३ और जैसे कर्ण कुन्तीके पुत्रोंसे युद्ध करने को प्रवृत्त हुआ और युद्धमें जैसे मारागया उसको भी ठीक २ कहौ ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिधृतराष्ट्रप्रश्नेदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले हे भरतबंशी महाराज उस दिन बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य्य के मरने और महारथी अश्वत्थामा के निष्फल संकल्प करने १ और कौरवों की समुद्ररूपी सेनाके भागनेपर अर्जुन अपनी सेनाको व्यूहित करके भाइयोंसमेत युद्ध में नियतहुआ २ उस समय आपके पुत्र ने उस सन्मुख नियत होनेवाले

अर्जुनको जानकर अपनी भागतीहुई सेनाको भागने से रोंका ३ और अपने भुजबल से सेनाको रोंककर दुर्य्योधन पाण्डवों के साथ बिलम्बतक युद्ध करके ४ संध्यासमय जानकर बिजयी और बिलम्बतक बिचारनेवाले शत्रुओंसमेत अपनी सेनाको बिश्राम कराया ५ सेनाके विश्रामको कर अपने डेरे में पहुँचकर कौरवों ने परस्परकी निर्बिघ्नता का बिचार किया ६ बहुमूल्य आस्तर्ण वा शय्या और आसनों पर बैठेहुये उन लोगों ने ऐसे सलाहकरी जैसे कि देवता लोग सुखशय्याओं पर ७ बैठेहुये सलाहों को करते हैं इसकेपीछे राजादुर्य्योधन प्यार और मृदुभाषणसे उन धनुषधारियों के सन्मुखहोकर समयके अनुसार इन बचनों को बोला कि हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ तुम सब अपनी २ राय को शीघ्रता से कहो बिलम्ब मतकरो हे राजालोगो ऐसी दशा में क्या करना उचित है और कौनसी बात अवश्यकरने के योग्यहै ८ । ९ संजयनेकहा कि इसप्रकार महाराज दुर्य्योधन के कहने पर सिंहासनों पर बर्त्तमान युद्धाभिलाषी नरोत्तमों ने अनेक प्रकारकी चेष्टाओं को किया १० युद्ध में प्राणों के होमकरने के अभिलाषी उन लोगोंकी चेष्टाओंको देखकर और बालसूर्यके समान तेजस्वी राजाके स्वरूपको देखकर ११ शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धिके स्वामी वार्त्तालापके जाननेवाले अश्वत्थामाजी ने वर्णनकरना प्रारंभकिया कि स्वामीकी भक्ति और देश कालका पहिचानना और बल वा नीति से प्रयोजन की सिद्ध करनेवाले १२ उपाय पण्डितों ने कहे हैं वह उपाय दैवके आधीन हैं हमारे जो महारथी बीर देवताओं के समान १३ नीतिमान भक्तिमान और सावधानता में योग्यथे वह तो मारेगये परन्तु हमलोगोंको बिजय से निराश होना भी न चाहिये १४ इस लोक में अच्छी रीति से कियेहुये नीति आदि सब अर्थों से दैव भी अनुकूल किया जाता है हे राजा वह लोग हम सबों में अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से भरेहुये १५ कर्णकोही सेनापति के अधिकार पर अभिषेक करावेंगे और कर्ण को सेनापति करके शत्रुओं को मारेंगे १६ निश्चय करके यह बड़ा पराक्रमी शूर बीर अस्त्रज्ञ युद्ध में दुर्म्मद यमराज के समान असह्य लड़ाई में शत्रुओं के बिजय करनेको इन्द्रकेही समानहै १७ हे राजा अश्वत्थामाके इस बचनको सुनकर आपके पुत्रने कर्णमें यह बड़ा भरोसा किया १८ कि भीष्म और द्रोणाचार्य के मरनेपर यही पाण्डवोंको मारेगा इस आशा को हृदय में धारण करके बड़ा

विश्वासयुक्त होकर १६ प्रसन्नचित्त दुर्योधन उस प्रीति सत्कारसे युक्त प्रियतम अपनी वृद्धि करनेवाले बचनको सुनकर २० अपने मनको अच्छीरीतिसे दृढ़करके अपनी भुजाओं के बल में रक्षितहोकर कर्ण से यह बचनबोला २१ कि हे कर्ण मैं तेरे पराक्रम को और अपने ऊपर जो तेरी प्रीति है उसको अच्छी रीति से जानताहूं हे महाबाहो मैंभी तुमसे सुन्दर फलयुक्त बचन कहूंगा २२ मेरे सेनापति अतिरथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य मारेगये उनसे भी अधिक आप पराक्रमीहोकर सेनापति हूजिये २३। २४ वह दोनों वृद्ध महाधनुषधारी अर्जुन से मेलरखते थे हे कर्ण मैंने तेरेकहने से दोनोंकी बड़ीप्रतिष्ठा करीथी २५ हेतात भीष्मजी ने अपनेको बाबा समझकर बड़ेयुद्ध में दशों दिनतक पाण्डवोंकी रक्षाकरी २६ आपके शस्त्ररहित होने पर शिखण्डी को आगेकरके अर्जुन के हाथसे भीष्मपितामह मारेगये २७ हे पुरुषोत्तम उस पुरुषसिंह के मरने और शरसय्यापरबिराजमान होनेपर तेरे कहने से द्रोणाचार्य्य संग्राम में सन्मुख हुये २८ उन्होंने भी अपना शिष्य जानकर पाण्डवों की रक्षाकरी वह वृद्धभी शीघ्रतासेही धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये २९ इन दोनों प्रधान पुरुषोंके मरनेसे चिन्तायुक्तहोकर मैं तुझबड़े पराक्रमी के समान किसी शूरबीरको नहीं देखताहूं हमलोगों के बीचमें आपही आदि मध्य और अन्तमें बिजय करनेको समर्थहो और जिसरीति आपने सदैव मेरा हितकियाहै ३०। ३१ उसीप्रकार आप बैलके समान धुरके उठाने के योग्यहो मैं आपको सेनापतिके अधिकारपर अभिषेक करूंगा ३२ जैसे कि देवताओं के सेनापति प्रभु अबिनाशी स्वामिकार्त्तिकजी हैं उसीप्रकार आप मेरी सेनाकी रक्षाकरो ३३ जैसे कि महाइन्द्र युद्धमें दानवों को मारताहै उसीप्रकार आपभी हमारे शत्रुओंको मारिये तुमको सन्मुख देखकर महारथी पाण्डव और पांचाललोग ऐसे युद्ध में से भागेंगे जैसे कि विष्णुजी को देखकर दानव भागते हैं इसहेतुसे हे पुरुषोत्तम तुम इस बड़ीसेनाको अपनी रक्षा में करो ३४। ३५ आपको युद्धमें उपाय करताहुआ देखकर मंत्रियों समेत पांडव सृंजय और पांचालदेशी यह सब भागेंगे ३६ जैसे उदयहुआ सूर्य्य अपने तेजसे तपाताहुआ महाघोर अन्धकारको बिध्वंस करताहै उसीप्रकार तुमभी शत्रुओंको तपाओ ३७ संजयबोले हे राजा आपके पुत्रकी यही आशा प्रबलहुई कि भीष्म और द्रोण के मरनेपर यह कर्ण पाण्डवों को अवश्य मारेगा ३८ इस आशाको हृदय में

धरकर इसप्रकार कर्ण से बोला हे कर्ण वह अर्ज्जुन तेरे सन्मुख युद्ध करनेकी इच्छा नहींकरताहै ३९ कर्णबोला हेगांधारी के पुत्र मैंने प्रथमही यह तुझसे कहा है कि मैं पुत्र पौत्र और श्रीकृष्णजीसमेत सबपांडवोंको बिजयकरूंगा४०मैं निस्सं-देह तेरा सेनापति बनूंगा हेमहाराज आप तय्यार हूजिये और पाण्डवोंको बिजय कियाजानो ४१ संजय बोले हे महाराज इसबातके सुनतेही राजादुर्य्योंधन अपने राजाओं समेत ऐसा उठा जिसप्रकार देवताओं समेत इन्द्र उठता है ४२ अर्थात् सेनापति बनाने के लिये कर्ण के सत्कार करनेको ऐसा उठा जैसे कि स्वामिका-र्त्तिकके अभिषेक कराने को देवताओं समेत इन्द्र उठाथा इसके पीछे बिजया-भिलाषी उन सब राजाओं ने जिनका अग्रगामी दुर्य्योधन था सुबर्ण के कलश और अभिमंत्रित मृण्मयपात्र हाथी के दांतके पात्र गैंड़ेके सींगके पात्र वा अन्य यज्ञपशुओं के दांतों के पात्र मणि मोतियोंसे आच्छादित वा बहुतसी सुगन्धित द्रव्यों से युक्त जलपूरित पात्र और गंधाक्षत आदि अभिषेक की बस्तुओं से बेदोक्त मन्त्रों के द्वारा कर्णका अभिषेक कराया ४३ । ४४ । ४५ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और अंगीकार कियेहुये शूद्रों ने भी उस महात्मा कर्णको प्रसन्न किया जो कि शास्त्रोक्त बुद्धिकी श्रेष्ठरीतिसे इकट्ठे कियेहुये सामानों समेत स्नान कियेहुये रेशमी बस्त्रों के बिछौनों से युक्त तांबेके उत्तम आसनपर बिराजमानथा ४६।४७ हे राजेन्द्र फिर अभिषेक होजानेपर शत्रुहन्ता कर्ण ने निष्क और गोधन देकर ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराया ४८ उससमय बन्दीजन और ब्राह्मणों ने उस पुरुषोत्तमसे यह कहा कि तुम गोविन्दजी आदि सब साथियों समेत पाण्डवों को बिजयकरो ४९ हे कर्ण तुम हमारी बिजयके निमित्त पांचालोंसमेत सब पा-ण्डवों को ऐसेमारो जैसे कि सदैव होनेवाला सूर्य्य बड़े अन्धकारको दूर करता है ५० आपके बाणोंको केशवजी समेत पाण्डवलोग देखनेको भी ऐसे समर्थ न होंगे जैसे कि सूर्य्यकी प्रकाशित किरणों के देखनेको उलूक पक्षी नहीं समर्थ होसक्ताहै ५१ युद्धमें तुझ शस्त्रधारी के सन्मुख पाण्डव नियतहोनेको ऐसेसमर्थ नहीं हैं जैसे कि महाइन्द्र के सन्मुख दैत्य दानब नियत नहीं होसक्ते ५२ अभि-षेक कियाहुआ वह कर्ण बड़े तेजसे दूसरे सूर्य्य के समान प्रकाशमानहुआ ५३ तब काल से प्रेरित आपके पुत्र ने कर्ण को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराके अपनेको सिद्धमनोरथ समझा ५४ हे राजा बिजयी कर्णनेभी सेनापति

होकर सूर्य्योदयके समय सेनाके तय्यार होनेकी आज्ञादी ५५ फिर वहां आपके पुत्रों समेत वह कर्ण ऐसा शोभितहुआ जैसे कि तारकासुर के युद्धमें देवताओं समेत स्वामिकार्त्तिकजी शोभित हुयेथे ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णाभिषेकेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जब सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सेनापति पदवीको पाकर राजा दुर्य्योधन से भाई के समान मृदुभाषणको सुनके १ सूर्य्योदय के समय असंख्य सेनाकी तैयारीकेलिये आज्ञादेकर क्या कामकिया हे संजय उसको मुझे समझाके कहौ २ संजयबोले हे भरतर्षभ आपके पुत्रोंने कर्णके अभिप्रायको जानकर सेनाकी तैयारी के लिये आज्ञा करी जिसमें आनन्दमंगल सूचक बाजे आगे चले ३ और पिछलीरात्रि में अकस्मात् आपकी सेनामें तैयारी करनेका शब्द आधिक्यतासे हुआ ४ इसकेपीछे अलंकृत उत्तम हाथी रथ मनुष्य पदाती घोड़े ५ और शीघ्रता करनेवाले और परस्परमें बोलनेवाले शूरबीरों के महाकठिन शब्द आकाशतक ब्याप्तहुये ६ इसके पीछे श्वेतपताका और हंसके बर्ण घोड़े सुबर्ण पृष्ठी धनुष नागकुक्षीध्वजा ७ सैकड़ों तूणीरों से युक्त बाजूबन्द और कवचों को धारणकरनेवाले शतघ्नी किंकिणी शक्ति शूल और तोमरोंसे भरेहुये धनुषोंसे युक्त निर्मल सूर्य के समान प्रकाशमान बायु के विपरीत होने से सन्मुख पताका वाले रथकी सवारियोंसे ८ । ९. और स्वर्णमयी जालोंसे अलंकृत शंखको बजाता स्वर्णमयी धनुषको हिलाताहुआ कर्णचला हे श्रेष्ठ नरोत्तम वहां कौरवोंने उसबड़े धनुषधारी रथारूढ़ सूर्य्यके समान प्रकाशित असह्य तेजसे अन्धकारको दूरकरतेहुये १० । ११ कर्णको देखकर किसीनेभी भीष्म द्रोणाचार्य्य और अन्य २ बीरोंके दुःखोंको नहीं माना १२ इसके पीछे शंखध्वनि के द्वारा शूरबीरों को चैतन्य करतेहुये कर्णने कौरवोंकी बड़ीसेना को आकर्षण किया १३ इसरीति से महाधनुषधारी शत्रुसंतापी कर्ण मकरब्यूह को रचकर पाण्डवों के बिजय की इच्छासे सन्मुखचला १४ हे राजा उस मकरब्यूह के मुखपर तो कर्ण नियतहुआ नेत्रों के समीप महारथी शकुनी और शूरबीर उलूक नियतहुये शिरपर अश्वत्थामा और ग्रीवापर सब सगेभाई और कटिभागपर बड़ी सेनासमेत आप राजा

दुर्य्योधन नियतहुआ १५। १६ और बामपादपर नारायण और गोपालनाम सेनासे युक्त दुर्मद कृतबर्मा नियतहुआ और बड़े धनुषधारी त्रिगर्त्तदेशी सत्यपराक्रमी कृपाचार्य जी दक्षिण चरणके समीप नियतहुये १७। १८ और मद्रदेशी बड़ी सेनासमेत राजा शल्य बांयें चरण के पीछे और हजाररथ और तीनसौ हाथियों समेत सत्यसंकल्प सुषेण दक्षिण चरणके पीछेहुआ १६। २० बड़ी सेना समेत बड़े पराक्रमी दोनों भाई राजाचित्र और चित्रसेन पुच्छपर नियतहुये २१ हे राजेन्द्र इसरीति से नरोत्तम कर्ण के चलनेपर धर्मराज युधिष्ठिर अर्जुनकी ओर देखकर यहबोले २२ कि हे बीर अर्जुन देखो जैसे जैसे इसयुद्धमें शूरबीर महारथियों से रक्षित दुर्योधनकी सेना कर्णने अलंकृतकरी २३ वह दुर्योधनकी बड़ी सेना वही है जिसके बड़े २ बीर मारेगये हे महाबाहो यहशेष बचीहुई है आशय यह है कि यह सेना मेरी बुद्धिसे तृणोंकी समानहै २४ इस सेना भरमें अकेला धनुषधारी कर्णही प्रकाशितहै यह रथियों में श्रेष्ठ कर्ण देवता असुर किन्नर गंधर्व नाग पिशाच और २५ तीनों लोकोंके स्थावर जंगमों से महादुर्जयहै हे महाबाहु अर्जुन अब इसकेही मारनेपर तेरी पूर्ण बिजयहै २६ इसके मरनेपर बारहबर्षका मेरा कंटक उखड़जायगा हे महाबाहु ऐसा जान और समझकर ब्यूहको जैसा चाहो वैसा तैयार करो २७ पाण्डव अर्जुनने भाई के उस बचनको सुनकर अपनी सेनाको अर्द्धचन्द्र ब्यूहसे अलंकृतकिया २८ उसके बामभागपर भीमसेन और दाहिने भागपर बड़ा धनुषधारी धृष्टद्युम्न बर्त्तमान हुआ २६ और ब्यूह के मध्यमें राजा युधिष्ठिर और अर्जुन नियत हुये और धर्मराज के पीछे नकुल सहदेव हुये ३० और पांचाल देशी उत्तमौजा और युधामन्यु रथके पहियों के रक्षकहुये अर्जुनसे रक्षित उन दोनोंनेभी युद्धमें अर्जुन को नहीं त्यागा ३१ हे राजा शेष शूरबीर राजा लोग शस्त्रादि से अलंकृत अपनी २ युक्ति के अनुसार ब्यूहमें नियतहुये ३२ पांडव और अन्य शूरबीरों ने इसरीति से अपने ब्यूह को रचकर तैयार किया हे राजा इसरीतिसे पांडव और आपके पुत्रोंने अपने २ ब्यूह को रचकर युद्ध करने को उत्साह किया ३३ दुर्य्योधन ने कर्णकी रचितकी हुई अपनी सेनाको युद्धमें देखकर भाई बन्धुओं समेत पांडवोंको मृतक रूप जाना ३४ उसी प्रकार राजा युधिष्ठिर ने भी अपनी पांडवी सेनाको अलंकृत देखकर कर्ण समेत धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मृतक रूपमाना ३५ इसके पीछे शंख भेरी ढोल

दुन्दुभी डिमडिम आदि बाजेभी चारों ओरसे बजे ३६ हेराजा उस समय दोनों सेनाओंमें बड़े शब्दायमान बाजे गाजे बजे और युद्धाभिलाषी शत्रुहन्ता शूर बीरों के भी महासिंहनाद हुये ३७ हे राजा घोड़ों के हींसने और हाथियों के चिग्घाड़ने के और रथकी नेमियोंके महाकठोर शब्द उत्पन्न हुये ३८ फिर ब्यूह के मुखपर नियत बड़े धनुषधारी कर्ण को देखकर किसी ने भी द्रोणाचार्य्य के दुःखकोनहीं जाना ३९ उस समय अत्यन्त उत्तम मनुष्यों से भरीहुई युद्धाभिलाषी दोनों सेना पराक्रम से परस्पर मारने को नियत हुई ४० वहां पर सावधान और क्रोध से भरे हुये एक दूसरे को नियत देखकर कर्ण और पाण्डव अर्जुन सेना के मध्यमें फिरने लगे फिर वह दोनों सेना नाचती हुई सी परस्पर में भिड़ गईं उनके भाग वा विभाग कोणोंसे युद्धाभिलाषी लोग सेनासे बाहर निकले इसके अनन्तर परस्परमें युद्धकर्त्ता लोग हाथी घोड़े और रथोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त हुये ४१ । ४२ । ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिव्यूहनिर्माणेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

संजयबोले कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त घोड़े हाथी और मनुष्योंवाली उनदोनों सेनाओंने जो कि देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशमानथीं परस्पर में एकने एकको सन्मुखपाकर अत्यन्त प्रहार किये १ इसके पीछे बड़े पराक्रमी मनुष्य रथ घोड़े हाथी और सेनाके पतियोंने शरीर और प्राणोंके नाशकरनेवाले अनेक प्रहार किये २ और चन्द्रमा सूर्य और कमलोंके समान प्रकाशमान सुगन्धि से भरे नृसिंहोंके शिरोंसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ३ अर्द्धचन्द्र भल्ल क्षुरप्र खड्ग पट्टिश और परश्वधोंसे युद्धकरनेवालोंके शिरोंको काटा ४ तब लम्बी स्थूल बाजूआदिसे अलंकृत शस्त्रधारी भुजाओंसे बड़े २ दीर्घ भुजवाले शूरबीरोंकी भुजा पृथ्वीपर पड़ीहुई शोभायमानहुईं ५ रक्तअंगुष्ठ और हथेलीसमेत फड़कतीहुई उन भुजाओं से पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि गरुड़जीके छोड़े हुये उग्र पंचमुखवाले सर्पोंसे शोभित होती है ६ शत्रुओंके हाथसे मारेहुये बीर हाथी घोड़े और रथोंसे ऐसेगिरे जैसे कि क्षीण पुण्य होनेसे स्वर्गबासी जीव अपने अपने बिमानों से गिरते हैं ७ युद्धमें बड़े बड़े बीरों की भारी गदा परिघ

और मूसलोंसे भी मारेहुये अन्य हजारों बीर पृथ्वीपर गिरे ८ रथी रथियोंसे मतवाले हाथी मतवाले हाथियोंसे अश्वारूढ़ अश्वारूढ़ोंसे उसकठिन युद्धमें मर्दित कियेगये ९ रथोंसे मनुष्य और हाथियोंसे रथ वा पतियों से रथी और हाथियोंसे रथपति घोड़े और सवार और हाथी दोनों रथोंसे मथेगये १० । ११ मनुष्य घोड़े हाथी और रथियोंने हाथ पांव शस्त्र और रथोंसे रथ घोड़े हाथी और मनुष्योंका बड़ा विनाशकिया १२ इसरीतिसे शूरवीरोंके हाथसे सेनाके घायल और मारे जानेसे वह पांडव जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा हमारे सन्मुख आये १३ धृष्टद्युम्न शिखण्डी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक नामक्षत्री सात्यकी चेकितान द्रविड़ देशी सेना समेत १४ बड़े व्यूहसे युक्त और बड़े वक्षस्स्थल लम्बीभुजा दीर्घनेत्री वेगवान् आभूषणोंसे अलंकृत १५ रक्तदंत मतवाले हाथीके समान पराक्रमी नाना प्रकारके रंगोंकी पोशाकों से भूषित चन्दनादि से चर्चित देहवाले खड्ग भिंदिपालोंको हाथमें लिये हाथियोंके हटानेवाले एकसी मृत्युवाले पांड्य चौल और केरल लोगोंने परस्परमें त्याग नहीं किया १६ । १७ तूणीर धनुष भिंदि हाथमें लिये लम्बेकेश रखनेवाले प्रियभाषी घोर पराक्रमवाले अन्य पति और अश्वारूढ़ोंने भी परस्परमें त्याग नहींकिया इसके पीछे दूसरे शूर चन्देर पांचाल केकय कारूष कौशल कांच्य और मगधशूरवीर सन्मुखदौड़े १८ । १९ उन्हीं के रथघोड़े हाथी और अत्यन्त भयानक पतिलोग नानाप्रकारके बाजे बजानेवालोंके साथमें बड़े प्रसन्न चित्त हँसते नाचते और गातेथे २० अत्यन्त उत्तम रथोंसे युक्त हाथीके कन्धोंपर सवार भीमसेन बड़ी सेनाके मध्यमें आपके शूरबीरों के सन्मुख गये २१ अत्यन्त उत्तम महाभयानक बुद्धिके अनुसार अलंकृत कियाहुआ वह हाथी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्योदयवाला उदयाचलका भवन शोभायमान होताहै २२ उसका लोहमयी रत्नोंसे जटित कियाहुआ कवच इसप्रकारका प्रकाशमान था जैसे कि नक्षत्रों समेत शरद ऋतुका आकाश शोभित होताहै तोमर संयुक्त चपलभुज और सुन्दर मुकुटधारण कियेहुये महाअलंकृत सूर्य्यके समान प्रकाशमान वहभीमसेन अपने तेजसे शत्रुओंको भस्मकरताहुआ युद्धमें नियतहुआ २३ । २४ वहां हाथीपर चढ़ाहुआ क्षेमधूर्त्ति दूरसे उसहाथीपर सवार बड़े साहसी भीमसेनको देखकर पुकारता और बुलाताहुआ सन्मुखगया २५ प्रथम तो इनदोनोंके हाथियोंमेंही परस्पर ऐसायुद्धहुआ जैसे कि दैवइच्छासेवृक्षों

समेत दो पर्ब्बतोंका युद्धहोताहै २६ उनहाथियोंके बड़ेयुद्ध होनेके पीछे वहदोनों बीर सूर्य्यकी किरणरूप तोमरों से परस्पर एकएकको घायल करतेहुये बड़े वेगसे गर्जे २७ फिर वहदोनों हाथियोंकेद्वारा हटकरके मण्डलोंमें घूमे और धनुषोंको पकड़कर परस्परमें एकने दूसरे को घायलकिया २८ फिर उनदोनों ने भुजा और बाणोंके शब्दोंसे मनुष्योंको प्रसन्नकरके बड़े२ सिंहनादोंको किया २९ और फिर वहदोनों महाबली ऊंची सूंडवाले हाथियों और बायुसे उड़तीहुई पताकाओं समेत युद्ध करनेलगे ३० उनदोनोंने परस्पर में एकने दूसरे के धनुष को काटकर शक्ति और तोमरों की बर्षासे परस्परमें ऐसे घायलकिया ३१ जैसे कि बर्षाऋतु में बादल जलोंसे ब्यथित करतेहैं उससमय महागर्जना करतेहुये क्षेमधूर्त्तीने अत्यन्त वेगवान् दूसरे छः तोमरों से भीमसेन को छातीपर घायलकिया ३२ क्रोध से भराहुआ भीमसेन शरीर में लगेहुये तोमरों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि बादलों से सूर्य्य शोभितहोता है ३३ इसके अनन्तर उपाय करनेवाले भीमसेनने सूर्य्यकेसमान प्रकाशित सीधा चलनेवाला लोहेका तोमर उसशत्रुके ऊपर फेंका ३४ फिर राजा कुलूतने धनुषको नवाकर दशबाणोंसे तोमरको काटकर भीमसेनको घायलकिया ३५ इसके अनन्तर गर्जना करते भीमसेनने बादलके समान शब्दायमान धनुषको लेकर बाणोंसे शत्रुके हाथीको घायल और पीड़ित किया ३६ युद्धमें भीमसेनके बाणोंसे वह हाथी पीड़ितहोकर थँभाहुआ भी ऐसे नहीं ठहरसका जैसे कि बायुसे उड़ाहुआ बादल नहीं ठहरसक्ता है ३७ और भीमसेनका गजराज हाथी उसहाथीपर ऐसा दौड़ा जैसे कि बायुसे उड़ाहुआ बादल बड़ीबायुसे उड़ेहुये बादलके पीछे दौड़ता है ३८ फिर प्रतापी क्षेमधूर्त्तीने अपने हाथीको अच्छी रीतिसे रोककर शीघ्रही अपने बाणोंसे भीमसेनके हाथीको घायलकिया इसके पीछे अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये टेढ़ेपक्षवाले क्षुरप्रसे शत्रुके धनुषको काटकर प्रतिपक्षवाले शत्रुको पीड़ामानकिया ३९ । ४० इसके अनन्तर क्रोधयुक्त क्षेमधूर्त्तीने भीमसेनको घायल करके उसके हाथीको सब मर्मोंमें अपने नाराचोंसे घायलकिया ४१ हे भरतबंशी उसघायल करने से वह भीमसेनका हाथी पृथ्वीपर गिरपड़ा और भीमसेन हाथीके गिरनेसे पूर्ब्बही हाथी से कूदकर पृथ्वी पर नियतहुआ ४२ फिर भीमसेनने भी उसके हाथीको गदासे मारा तब उस गदासे मथेहुये हाथीसे उतरेहुये ४३ और शस्त्र उठाकर आनेवाले क्षेमधूर्त्ती को

भीमसेनने गदासे मारा और गदाकेलगतेही मृतकहोकर खड्गसमेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ४४ जैसे कि बज्रसे टूटाहुआ पर्ब्बत वा बज्रसे मराहुआ सिंह पृथ्वीपर गिरताहै हे भरतर्षभ उसकुलूतों के यशस्वी राजाको मृतकहुआ देखकर आपकी सेना भयभीत और पीड़ितहोकर भागी ४५ । ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिक्षेमधूर्त्तिवधेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे बड़ेधनुषधारी शूरबीर कर्णने टेढ़ेपक्षवाले बाणों से युद्धमें पांडवोंकी सेनाको मारा १ हे राजा उसीप्रकार क्रोधयुक्त उनपांडवों के महारथियोंने कर्णके देखतेहुये आपकेपुत्रकी सेनाको मारा २ हे राजा फिर कर्ण नेभी सूर्यकी किरण के समान प्रकाशित चतुरकारीगरोंके साफ कियेहुये नाराचोंसे उस युद्धमें पांडवी सेनाको मारा ३ तबतो कर्णके नाराचों से घायलहुये हाथी चिग्घारैं मारनेलगे और महापीड़ित होकर दशोंदिशाओंमें घूमनेलगे ४ हेश्रेष्ठ कर्णके हाथसे उससेनाके घायल होनेपर शीघ्रही नकुल उस युद्धमें कर्ण के सन्मुखगया ५ उसीप्रकार भीमसेन ने कठिन कर्म्म करनेवाले अश्वत्थामा को और सात्यकीने बिन्द अनुबिन्दनाम केकयों को रोका ६ और राजा चित्रसेनने आतेहुये श्रुतकर्माको और प्रतिविन्ध्यने अपूर्ब्बध्वजाधारी राजाचित्रको रोका फिर राजा दुर्य्योधनने धर्मपुत्र युधिष्ठिरको रोका और क्रोधयुक्त अर्जुनने संसप्तक गणोंको जा रोका ७ । ८ उसउत्तम बीरोंके नाशमें धृष्टद्युम्न कृपाचार्य्य से लड़नेलगा और शिखण्डी के सन्मुख अजेय कृतबर्मा नियत हुआ ९ हे महाराज इसीप्रकार श्रुतकीर्त्तिने शल्यको और माद्रीकेपुत्र सहदेवने आपके पुत्र दुश्शासनको रोका १० दोनों कैकेयोंने युद्धमें प्रकाशित बाणोंकी बर्षासे सात्यकीको आघेरा सात्यकी ने बाणों से केकयों को ढक दिया ११ हे भरतबंशी उन दोनों बीर भाइयों ने उसको हृदय पर ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि बनमें सन्मुख आनेवाले दो हाथी अकेले हाथीको अपने दांतों से घायल करते हैं १२ हे राजा बाणों से टूटेहुये कवचवाले सात्यकी को दोनों भाइयों ने बड़ा घायल किया १३ फिर सात्यकी ने हँसते हुये बाणों की बर्षा करके उन दोनों को सब ओरसे रोका १४ इसके पीछे सात्यकी के बाणों से रुके हुये उनदोनों ने शीघ्रही

बाणों से सात्यकी के रथको ढक दिया १५ फिर इस बड़े यशस्वी सूरबंशी सात्यकी ने उन दोनों के छत्र और धनुषों को काटकर उन दोनों को अपने तीक्ष्ण शायकों से रोका १६ तबतो उनदोनों ने दूसरे छत्र और बाणोंको लेकर सात्यकी को ढकदिया और बहुत शीघ्रही शोभायुक्त होकर फिरनेलगे १७ और कंक और मोरपक्षों से शोभित दोनों के छोड़ेहुये प्रकाशित बाण सब ओरको गिरे १८ हे राजा उस महाभारी युद्ध में उनदोनों के बाणों से अन्धकार सा छागया उससमय उन महारथियोंने परस्पर में एकने दूसरे के धनुषको काटा १९ इसके पीछे क्रोधभरे युद्धमें दुर्मदसात्यकी ने दूसरे धनुषको लेकर और तय्यारी करके युद्धमें बड़े तीक्ष्णक्षुरप्र से अनुबिन्दके शिरको काटा हे राजा वह कुंडलों से अलंकृत महाभारी शिर २०। २१ बड़े युद्धमें मरेहुये सम्बर के शिरके समान सब कैकेय लोगोंको शोचताहुआ पृथ्वीपर गिरा २२ उस शूरबीरको मृतक देखकर उसके भाई महारथी ने दूसरे धनुष को तैयार करके सात्यकी को रोका २३ वह सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले साठबाणों से सात्यकी को घायल करके तिष्ठ तिष्ठ बचनके साथ बड़े वेगसे गर्जा २४ इसके पीछे कैकेयों के महारथी ने हजारों बाणोंसे बहुत शीघ्रता पूर्वक भुजा और छातीपर घायल किया २५ हे राजा बाणों से बिदीर्ण सर्बांग सात्यकी युद्धमें ऐसा शोभितहुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुकका वृक्ष होताहै २६ युद्धमें महात्मा कैकेय के हाथ से घायल और हँसते हुये सात्यकी ने कैकेयको पच्चीस बाणों से घायल किया २७ वह रथियों में श्रेष्ठ युद्धमें एक दूसरे के शुभ धनुषको काटकर बड़ी शीघ्रतासे घोड़े और सारथियों को मारकर २८ रथसे उतरकर युद्धमें खड्गों से प्रहार करने के लिये सन्मुख हुये वह सुन्दर भुजा और उत्तम खड्ग धारण करनेवाले दोनों शूरबीर चन्द्रसूर्य्य के चित्रवाली ढालोंको लेकर उसमहायुद्धमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि देवासुर युद्धमें महाबली इंद्र और जंभशोभित हुयेथे २९। ३० इसके पीछे युद्धमें मंडलों को घूमते शीघ्रही परस्पर में सन्मुख हुये ३१ और एक २ ने दूसरे के मारने में बड़े२ उपायकिये इसके पीछे सात्यकी ने कैकेयकी ढालके दो खंडकिये ३२ इसी प्रकार वह राजाभी सात्यकीकी सैकड़ों नक्षत्रों से चिह्नित ढालको काटकर ३३ दाहिने और बांयें मंडलोंसे घूमा फिर सात्यकीने उस बड़ेयुद्धमें शीघ्रतासे घूमने वाले कैकेयको तिरछेहाथसे मारडाला हे राजा वह कैकेय उस घोरयुद्धमें कवच

समेत दो खंड होकर ऐसे पृथ्वी में गिरपड़ा ३४।३५ जैसे कि बज्रसेघायल पर्व्वत गिरताहै इसरीतिसे रथियोंमें श्रेष्ठ शूरबीर सात्विकीने उसयुद्धमें उसकोमारा ३६ फिर वह शत्रुहन्ता शीघ्रही युधामन्यु के रथपर सवार हुआ और थोड़े समय पीछे सात्विकी ने बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर बाणोंसे कैकेयों की बड़ी सेनाको मारा युद्ध में वह कैकेयों की बड़ी सेना महाघायल होकर उस सात्विकी को छोड़कर दशोंदिशाओं को भागी ३७ । ३८ । ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिबिन्दअनुविन्दबधोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके पीछे युद्ध में क्रोधभरे श्रुतिबर्मा ने राजाचित्रसेन को पचास बाणों से घायल किया १ फिर चित्रसेन ने टेढ़े पुंखवाले नौ बाणों से श्रुतिबर्मा को घायल करके पांच बाणों से उसके सारथी को घायल किया २ इसके अनन्तर सेनामुखपर क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने चित्रसेनको अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से मर्मस्थल में घायल किया ३ हे महाराज उस महात्मा के नाराचसे अत्यन्त घायल होकर वह बीर मूर्च्छायुक्त होकर निश्चेष्ट होगया ४ इसी अन्तरमें बड़े यशस्वी श्रुतिकीर्त्ति ने नब्बे ९० बाणों से इस राजाको भी ढकदिया ५ इसके पीछे महारथी चित्रसेनने सावधान होकर भल्लसे उसके धनुषको काटकर सातबाणों से उसको घायल किया ६ फिर उसने वेगके नाशकरनेवाले स्वर्ण से भूषित सोम धनुषको लेकर बाणोंकी तरंगों से चित्रसेनको बिचित्ररूपधारी किया ७ वह युवावस्थायुक्त बाणों से वेधित होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि गौशालामें अच्छा अलंकृत बड़ा बैलहोताहै ८ फिर उस शूरने वेगसे श्रुतिकर्माको नाराचसे छातीपर बिदीर्णकर तिष्ठतिष्ठ शब्द उच्चारणकिया ९ वहां नाराचसे घायल होकर श्रुतिकर्मा ने भी युद्ध में रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि पर्वतीय धातुओं से संयुक्त पर्व्वत रक्तबर्ण के जलको डालताहै १० इसकेपीछे वह रुधिरसे भरे शोभाहीन शरीरसे युद्ध में ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलाहुआ किंशुकका वृक्षहोताहै ११ इसके पीछे शत्रुसे अघात पानेवाले क्रोधयुक्त श्रुतिकर्मा ने शत्रुके हटानेवाले धनुषके दश खण्डकिये १२ तदनन्तर हे राजा इसटूटे धनुषवाले को श्रुतिकर्मा ने सुन्दर पक्षवाले तीनसौ नाराचों से

घायलकर बड़े तीक्ष्ण धारवाले १३ भल्लसे उसके शिरसमेत धड़कोकाटा १४ तब चित्रसेनका वह प्रकाशमान शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरा मानों देवइच्छा से स्वर्ग से पतितहोकर चन्द्रमा गिरताहै १५ हे श्रेष्ठ चित्रसेनकी सेनाके सबलोग उस अभयसारदेश के राजा को मृतक देखकर बड़ी तीव्रता से सन्मुख दौड़े १६ इसके पीछे वह क्रोधयुक्त महाधनुषधारी बाणोंकी बर्षा करताहुआ उस सेनापर ऐसे दौड़ा जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवोंपर क्रोधभरे यमराज दौड़ते हैं १७ अग्निसे भस्मीभूत वृक्षों के समान युद्ध में आपके पौत्र उस धनुषधारी से घायलहोकर चारों ओरको भागे १८ शत्रुके जीतने में असाहसी और भागनेवाले उनलोगों को देखकर श्रुतिकर्मा तीक्ष्णबाणों से उनको भगाताहुआ अत्यन्त शोभायमान हुआ १९ इसके पीछे प्रतिबिन्ध्य ने पांच बाणों से चित्रको तीन बाणों से सारथी को घायल करके एक बाणसे ध्वजाकोभी खंडित करदिया २० और चित्रसेन ने सुनहरे पक्ष तीक्ष्ण नोक कंक और मोरके पक्षों से जटित नौ भल्लोंसे उसकी दोनों भुजा और छातीपर घायल किया २१ हे भरतबंशी प्रतिबिन्ध्य ने शायकों से उसके धनुष को काटकर उसको तीक्ष्ण पांचबाणों से घायल किया २२ इसके पीछे सुनहरी घण्टे रखनेवाली महाअसह्य अग्नि की शिखा के समान प्रकाशमान शत्रु को आप के पोते पर फेंका २३ तब हँसते हुये प्रतिबिन्ध्य ने उस उल्कारूप अकस्मात् आतीहुई शक्ति को देखकर युद्ध में दो खण्ड किये २४ प्रतिबिन्ध्य के तीक्ष्ण बाणों से टुकड़े टुकड़े होकर वह शक्ति ऐसे गिरपड़ी जैसे प्रलय के समय सबजीवों की भयकी करनेवाली अश्विनी होती है २५ चित्रने उस शक्ती को कटाहुआ देख बड़ी गदालेकर प्रतिबिन्ध्य के ऊपर फेंका २६ उस गदा के आघात से उसके सारथी समेत घोड़े मारेगये और बड़ी तीव्रता से रथको मर्द्दन करके पृथ्वी पर गिरपड़े २७ हे भरतबंशी उससमय उसने रथ से उतरकर सुनहरी दण्डवाली सुनहरी शक्ति को चित्रके ऊपर फेंका २८ फिर उस महासाहसी चित्रने उस आतीहुई शक्ति को पकड़लिया और उसी शक्ति को प्रतिबिन्ध्य के ऊपर फेंका २९ वह बड़ी प्रकाशमान शक्ति युद्धमें शूर प्रतिबिन्ध्य को पाके दक्षिणभुजा को घायलकर के पृथ्वीपर गिरपड़ी ३० अश्विनीके समान गिरीहुई उस शक्तिने उस स्थानको प्रकाशितकिया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतिबिंध्यने ३१ सुवर्ण से मंडित

तोमरको चित्रके मारने को चलाया वह तोमर उसके कवच और हृदयको छेद कर ३२ पृथ्वी में ऐसे समागया जैसे बड़ाभारी सर्प बिलमें समाजाताहै उस तोमरसे घायल वह राजा ३३ परिघके समान बड़ी और मोटीभुजाओंको फैलाकर पृथ्वी में गिरपड़ा तब चित्रसेनको मराहुआ देखकर आपकी शोभायमान सेना वेगसे प्रतिबिन्ध्य के चारोंओर सन्मुखताके लिये गई ३४ और वहां जाकर नानाप्रकारके बाण और शक्तियोंकी बर्षासे प्रतिबिन्ध्य को ऐसाढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य्यको ढकलेतेहैं ३५ फिर उस महाबाहुने बाणों से उन सब को पृथक् २ करके आपकी सेनाको ऐसे भगाया जैसे कि बज्रधारी इन्द्र असुरों की सेनाको भगाताहै ३६ हे राजा युद्ध में पाण्डवों के हाथ से घायल शूरबीर अकस्मात् ऐसे छिन्न भिन्न होगये जैसे कि हवासे हटायेहुये बादल तिर्रिबिर्र हो जातेहैं ३७ उस सेनाको चारोंओरसे घायलहोकर भागजानेपर अकेले अश्वत्थामाजी शीघ्रही महाबली भीमसेनके सन्मुख गये ३८ इसके पीछे अकस्मात् उन दोनोंका परस्परमें भिड़ना ऐसा महाभयकारी हुआ जैसा कि देवासुरों के युद्धमें वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिचित्रबधेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे बड़ी शीघ्रतायुक्त अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाते हुये अश्वत्थामाने बाणसे भीमसेनको घायल किया १ फिर मर्मज्ञ हस्तलाघवी अश्वत्थामा ने सबमर्मों को जानकर तीक्ष्ण धारवाले नब्बे बाणों से भीमसेन को घायलकिया २ हे राजा अश्वत्थामाके तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिदाहुआ भीमसेन युद्धमें अंशुमान् सूर्यके समान शोभायमान हुआ ३ इसके पीछे भीमसेनने अच्छीरीति से फेंकेहुये हजारबाणोंसे अश्वत्थामाको ढककर बड़ाभारी सिंहनादकिया ४ इसके अनन्तर मंदमुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने बाणोंको रोककर भीमसेनको नाराचों से ललाटपर घायलकिया ५ तब भीमसेनने ललाट पर वर्त्तमान बाणोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि गंडकनाम अहंकारी पशुसिंह को धारणकरताहै ६ फिर मन्दमुसकान करते पराक्रमी भीमसेनने युद्धमें उपाय करनेवाले अश्वत्थामाको तीननाराचोंसे ललाटपर बेधा ७ तबयह ब्राह्मण ललाट

पर नियतहुये बाणोंसे ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि जलसे सींचाहुआ तीन शिखर रखनेवाला उत्तम पर्व्वत होता है ८ इसके पीछे अश्वत्थामा ने सैकड़ों बाणोंसे भीमसेन को पीड़ित किया परन्तु उसको ऐसे कम्पायमान न करसका जैसे कि वायु पर्व्वत को नहीं कंपासक्ती ९ फिर अत्यन्त प्रसन्न पांडुनन्दन भीमसेनने भी इसको ऐसे कंपायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्व्वत को कंपायमान नहीं करसक्ता १० परस्पर घोरबाणों से ढकतेहुये उत्तम रथोंपर सवार पराक्रमसे मतवाले वह दोनों महारथी शूरबीर महाशोभायमानहुये ११ फिर वह दोनों सूर्य्यके समान प्रकाशित लोकके नाशक अपने तेजों समेत उत्तम २ बाणों से परस्पर संतप्त करनेवालेहुये १२ इसके पीछे वह दोनों युद्धमें अशंक के समान बदलालेने में उपाय करनेवाले हुये १३ वह दोनों नरोत्तम युद्धमें व्याघ्रों के समान भ्रमण करनेवाले हुये बाणरूप जिनकी डाढ़ें और भयानक धनुषही जिनका मुखथा १४ वह दोनों बाणोंके जालसे सबओरसे ऐसे गुप्तहोगये जैसे कि बादलके जालों से ढकेहुये आकाशमें चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं १५ इसके पीछे वह शत्रुहंता दोनों एकमुहूर्त्तमेंही ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि बादलों के जालसे निकलेहुये मंगल और बुध होतेहैं १६ इसकेपीछे अत्यंत भयकारी युद्धजारी होने पर वहां अश्वत्थामा ने भीमसेन को सैकड़ों उग्रबाणों से ऐसे ढकदिया १७ जैसे कि धाराओं से बादल पर्व्वतको ढकदेताहै फिर भीमसेनने भी शत्रुके उस बिजय के लक्षण को नहीं सहा १८ इसके पीछे पाण्डवने भी दाहिने और बायें मंडलों के भागों में जाना आनाकिया १९ और दोनों पुरुषसिंहों में बड़ातुमुल युद्ध हुआ २० फिर हरएक ने कानतक खैंचेहुये बाणों से परस्परमें एकने दूसरे को घायल किया और एकने दूसरे के मारने में बड़े २ उत्तम उपाय किये २१ युद्धमें एकने दूसरेको बिरथकरना चाहा इसके पीछे महारथी अश्वत्थामाने युद्ध में महाअस्त्रों को प्रकट किया २२ पाण्डवने उन अस्त्रों को अपने अस्त्रों सेही दूरकिया इसके पीछे अस्त्रोंका ऐसा घोरयुद्ध जारीहुआ जैसे कि जीवोंकी प्रलय में ग्रहोंका घोरयुद्ध हुआथा २३ हे भरतवंशी उन दोनों के छोड़ेहुये वह बाण चारोंओर से सब दिशा और आपकी सेनाको अच्छे प्रकारसे प्रकाशित करने लगे और बाण समूहों से व्याप्त आकाश महाभयानक रूपहुआ २४ । २५ हे राजा जैसे जीवों के प्रलयमें उल्कापातों से संयुक्त युद्धहुआथा वैसेही वहां बाणों

के आघात से ऐसी अग्नि उत्पन्न हुई जैसे कि फुलिंगरखनेवाली प्रकाशमान अग्नि की ज्वाला होती है २६ फिर अग्नि ने दोनों सेनाओं को भस्म किया तब वहां सिद्धलोग आकर कहनेलगे २७ कि सबयुद्धों में यहभी युद्ध बड़ा है और सबयुद्ध इसयुद्धके षोड़शांश कलाकेभी समान नहीं हैं २८ ऐसा युद्ध फिर कभी न होगा बड़ा आश्चर्य्य है कि यह ब्राह्मण और क्षत्री दोनों पूर्णहैं २९ यह दोनों पराक्रमी अपनी २ उग्रशूरताओं से संयुक्तहैं और भीमसेन भयानक पराक्रमी है और इसकी अस्त्रज्ञताभी पूर्ण है ३० इन दोनों की प्रतिष्ठा और बड़े २ साहस अपूर्व्वहैं यहकाल और मृत्युकेसमान दोनों युद्धमें नियतहैं ३१ यह दोनों रुद्रकेसमान प्रकटहुये दोनों सूर्य्यके समान हैं अथवा दोनों पुरुषोत्तम घोररूप यमराजके रूप हैं ३२ यह सिद्धोंके बचन बारंबार सुनेगये और भागनेवाले देवताओं के सिंहनाद प्रारंभहुये ३३ युद्धमें उन दोनोंके अपूर्व्व बुद्धिसे बाहर कर्म को देखकर सिद्ध और चारण लोगों के समूहको बड़ा आश्चर्य्य हुआ ३४ तब देवता सिद्ध और परमऋषियों ने प्रशंसाकरी कि हे महाबाहु अश्वत्थामा और हे महाबाहु भीमसेन तुम दोनोंको धन्यहै ३५ हे राजा परस्पर अपराध करनेवाले उन दोनों शूरोंने युद्ध में क्रोध से आंखों को फाड़कर परस्पर में देखा ३६ वह दोनों क्रोधसे रक्त नेत्रहो क्रोधसेही ओठोंके चाबनेवाले होकर दांतों के किटकिटानेवाले हुये ३७ बाणरूप जलधारा और शस्त्ररूप बिजली से प्रकाश करनेवाले दोनों महारथियों ने बाणोंकी बर्षा से परस्पर में ढकदिया ३८ फिर उन दोनों ने परस्पर की ध्वजा और सारथीको बेधकर प्रत्येकने दूसरे के घोड़ोंको घायल करके परस्परमें घायल किया ३९ हे महाराज इसके पीछे परस्पर मारने के इच्छावान् क्रोध भरेहुये उन दोनों ने युद्ध में बाण को लेकर शीघ्रही एकने दूसरे के ऊपर फेंका ४० उन बज्रके समान वेगमान बिजयी और सेनामुखपर प्रकाशमान दोनों ने सन्मुख पाकर परस्पर में शायकों से घायल किया ४१ तब परस्परकी तीव्रता और बाणोंसे घायल बड़े पराक्रमी वह दोनों रथोंके बैठने के स्थानों में गिरपड़े ४२ इसके अनन्तर सारथी अश्वत्थामा को अचेत जानकर सब सेनाके देखते हुये युद्धसे दूर लेगया ४३ हे राजा इसीप्रकार भीमसेनका सारथी भी उस बारंबार शत्रुओं के तपानेवाले पाण्डव भीमसेनको युद्धमें रथकेद्वारा दूरलेगया ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाभीमसेनयुद्धेषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले जिसप्रकार अर्जुनका युद्ध संसप्तक लोगोंकेसाथ और अन्य राजाओंका युद्ध पांडवोंके साथहुआ उसको मुझसेकहो १ हे संजय अश्वत्थामा और अर्जुनका जो युद्धहै और पांडवोंकेसाथ जो अन्य २ राजाओंका युद्धहै वह सब मुझसेकहो २ संजय बोले हे राजा मैं कहताहूं आप सुनिये जिसप्रकार प्राणों का नाशकारक शत्रुओंसे बीरोंका युद्धजारीहुआ ३ शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुन ने समुद्र के समान संसप्तकों की सेनाओं में घुसकर ऐसे छिन्नभिन्न करदिया ४ जैसे कि तीव्र बायु समुद्र को उथल पुथल करदेता है अर्ज्जुन ने अपने तीक्ष्ण भल्लों से पूर्ण चन्द्रमासे प्रकाशित ५ सुन्दरमुख नेत्र भृकुटी और दांतरखनेवाले बीरों के शिरोंको काटकर शीघ्रता पूर्व्वक ऐसे पृथ्वीको आच्छादित करदिया ६ जैसे कि कमलनालसे कमलों को काटकर हाथी सरोवरको आच्छादित करता है अर्जुन ने युद्ध में बड़ेलम्बे मोटे चन्दन अगरसे लिप्त शस्त्र और हस्तत्राण-धारी पांच मुखधारी सर्पोंके समान शत्रुओं की भुजाओं को क्षुरप्रों से काटा ७ और घोड़े घोड़ेके सवार और सारथीलोगों के ध्वजा धनुष शायक और अँगूठी धारण किये बीरों के हाथोंको भी बारम्बार भल्लों से काटा ८ हे राजा इसीप्रकार से अर्ज्जुन ने युद्ध में अपने हजारोंबाणों से रथ हाथी और घोड़ों को उनके सवारों समेत यमलोक में पहुँचाया ९ जैसे कि मदसे मतवाले गर्जनेवाले बैल गौके निमित्त सिंहों के सन्मुख जाकर प्रहार करें उसीप्रकार उन क्रोधसे भरे बड़े २ शूरबीरों ने उस क्रोधयुक्त और प्रहार करनेवाले को बाणों से घायल किया उसका और सबलोगोंका वह घोरयुद्ध ऐसा रोमहर्षण करनेवाला हुआ १०।११ जैसे कि तीनोंलोकों के बिजयके लिये दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ हुआथा उस अर्जुन ने अपने अस्त्रों से शत्रुओं के अस्त्रों को रोककर बहुत शीघ्र बाणों से बिदीर्ण करके १२ प्राणोंका हरणकिया जिनके तूणीर चक्र और रथके अंग टूट गये और सारथियों समेत घोड़े भी मारेगये १३ और धनुष वा ध्वजाटूटीं और रथकी बागडोरें टूटीं रथसे कूबर जुदेहुये १४ और स्यन्दनों के जुयें पहिये आदि भी गिरपड़े उन रथोंको खण्ड२ करताहुआ ऐसे चला जैसे कि बड़े२ बादलोंको खण्ड २ करता बायुचलताहै १५ आश्चर्य्य उत्पन्न करानेवाले अर्जुनने शत्रुओं

को भय करनेवाले दर्शनीय हजारों महारथियों के समान बल किया १६ सिद्ध देवर्षि और चारण लोगों ने भी इसकी प्रशंसाकरी देवताओंने दुन्दुभी बजाकर पुष्पों की बर्षाकरी १७ वह पुष्प श्रीकृष्ण और अर्जुन के मस्तकपर गिरे और आकाशबाणी ने सदैव चन्द्रमा बायु अग्नि और सूर्य्यकी कान्ति और तेजको पुष्टकिया १८ वह ब्रह्मा और शिवजी के समान श्रीकृष्ण और अर्जुन एक रथ पर नियत सबजीवों में श्रेष्ठ दोनों नर नारायण रूप बीरहैं १६ हे भरतबंशी इस बड़े आश्चर्य्यको देखकर बड़े सावधान अश्वत्थामाजी युद्धमें श्रीकृष्णजी के सन्मुखगये २० फिर जिनकी नोकें शत्रुओं के मारनेवालीथीं उन बाणोंके चलाने वाले पांडव अर्जुन से बाण पकड़नेवाले हाथकेद्वारा बुलाकर २१ यह बचन बोले हे बीर जो यहां बर्त्तमान मुझ अतिथि रूपको पूजनके योग्य मानताहै २२ तो तुम सब आत्मासे युद्धरूप अतिथि मुझको जानो इसप्रकार युद्धाभिलाषी आचार्य्यके पुत्रसे बुलायेहुये अर्जुनने अपने को बहुत कुछ माना २३ और श्रीकृष्णजी से कहा कि मैं संसप्तकों को मारसक्ताहूं और अश्वत्थामाजी मुझको बुलाते हैं २४ इस स्थानपर जो उचितहोय वह आप मुझसे कहिये जो आप मानतेहैं तो उठकर अतिथिकर्म कीजिये २५ ऐसे कहेहुये श्रीकृष्णजीने बुद्धि के अनुसार बुलाये हुये अर्जुनको बिजयी रथकी सवारी के द्वारा अश्वत्थामा के समीप ऐसे पहुँचाया जैसे कि बायु इन्द्रको यज्ञमें पहुँचाताहै २६ केशवजी उस एक चित्त अश्वत्थामा को सम्बोधन करके बोले कि हे अश्वत्थामा शीघ्र नियत होकर घात करो और क्षमा करो २७ स्वामी के अर्थ निमकहलाली करनेका यह समयहै ब्राह्मणों का सम्बाद बड़ा सूक्ष्महै और क्षत्री सम्बन्धी बिजय और पराजययोग्यहै २८ तुम अज्ञानतासे अर्जुनके जिस दिव्य और उत्तमकर्म को चाहतेहो अब उसके अभिलाषी होकर तुम नियत होकर पाण्डवों से युद्ध करो २६ श्रीकृष्णजी के इसप्रकारके बचनों को सुनकर अश्वत्थामाजीने बहुत अच्छा कहकर आठ नाराचों से केशवजी को और तीन बाणों से अर्जुनको घायल किया ३० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने उसके धनुष को तीनबाणों से काटा ३१ तब अश्वत्थामाने बड़े घोर दूसरे धनुषको लिया और क्षणभरमेंही श्रीकृष्ण और अर्जुनको घायल किया तीनसै बाणोंसे बासुदेवजीको औरहजार बाणोंसे अर्जुन को घायलकिया ३२ इसके पीछे उपाय करनेवाले अश्वत्थामा

ने युद्धमें अर्जुनको रोककर हजारों बाणोंकी बर्षाकरी ३३ हे श्रेष्ठ उस ब्रह्मबादी अश्वत्थामाके तूणीर धनुष कवच ध्वजा हाथ छाती ३४ नाक मुख नेत्र कान शिर और अंग देहकेरोम और रथसे बहुतसे बाण निकले ३५ प्रसन्नचित्त बीर अश्वत्थामा बाण समूहोंसे अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायल करके बड़े बादलों के समान शब्दों से गर्जा ३६ उसके शब्दको सुनकर अर्जुन श्रीकृष्ण जी से बोले कि हे माधवजी गुरुपुत्र के आन्तरीयद्वेषको मेरेऊपर देखो ३७ यह हम दोनोंको बाण पिंजरमें प्रविष्ट करके मराहुआ जानताहै मैं इसके बाण पिंजरको अपने पराक्रमसे नाश करूंगा ३८ फिर उस भरतर्षभने अश्वत्थामा के चलायेहुये बाणोंको छःछः खण्डकरके इधर उधर करदिया ३९ इसकेपीछे अर्जुनने उग्रबाणोंसे घोड़े सारथी रथ हाथी ध्वजा और पतियों समेत संसप्तकों को घायलकिया ४० उससमय जिस २ रूपके जो २ मनुष्य वहां दिखाई दिये वहां उन्होंने अपनेको बाणों से घायलमाना ४१ और युद्धमें गांडीवधनुषसे छूटे हुये वह नानाप्रकारके बाण एककोस से अधिक दूरपर वर्त्तमान हाथी और मनुष्यों को भी मारतेथे ४२ मदोन्मत्त हाथियों की सूंड़ भल्लोंसे कटकर ऐसे गिर पड़ी जैसे कि फरसोंसे कटेहुये बनके बड़े २ वृक्ष होते हैं ४३ इसकेपीछे सवारों समेत वह हाथी ऐसे गिरपड़े जैसे कि इन्द्रके बज्रसे कटेहुये पर्वतोंके समूह गिरपड़ते हैं ४४ युद्धमें दुर्मद अर्जुन गन्धर्व नगरके समान अच्छे अलंकृत शीघ्रगामी सुशिक्षित घोड़ोंसे युक्त रथपर नियतहोकर ४५ बाणोंकी बर्षा करताहुआ शत्रुओंके सन्मुखगया वहांजाकर अर्जुनने अश्वारूढ़ोंको और पतियोंको मारा ४६ अर्जुनरूपी प्रलयकालीन सूर्यने कठिनतासे सूखनेवाले संसप्तक रूप समुद्रको अपने तीक्ष्ण बाणों से अत्यन्त शोषण किया फिर बड़ी शीघ्रता करनेवाले ने अश्वत्थामाको बड़ेबज्रके समान वेगवान् बाणोंसे घायलकिया ४७। ४८ क्रोध युक्त युद्धाभिलाषी आचार्यके पुत्र अश्वत्थामाजी बाणों के द्वारा घोड़े और सारथी समेत अर्ज्जुनसे लड़नेको आये अर्ज्जुन ने उनके बाणों को काटा ४९ इसके पीछे बड़े क्रोधसे भरे अश्वत्थामाने अर्ज्जुनके ऊपर अस्त्रोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि अतिथि के लिये शिष्टाचारी करीजाय फिर अर्ज्जुन संसप्तकों को छोड़कर अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसे गये जिसप्रकार दान करनेवाला मनुष्य पंक्तिके अयोग्य लोगोंको छोड़कर पंक्तिके योग्य मनुष्यों के पास जाता है ५० । ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाअर्ज्जुनयुद्धेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे शुक्र और वृहस्पतिजी के समान तेजस्वी उन दोनोंका युद्ध ऐसे अच्छेप्रकारसे हुआ जैसे कि नक्षत्रमंडलके पास आकाशमें शुक्र और वृहस्पतिका युद्धहुआथा १ एकने दूसरेको प्रकाशित बाणोंकी किरणों से अच्छीरीति से संतप्त किया और अपने मार्ग से हटकर चलनेवाले ग्रहों की समान लोकोंका भय उत्पन्न करनेवालेहुये २ उसके पीछे अर्जुनने नाराचसे दोनों भृकुटियों के मध्य कठिन घायल किया वह अश्वत्थामाजी उस घाव से ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि ऊपरकी ओर किरण रखनेवाला सूर्य्य होताहै ३ इसके अनन्तर अश्वत्थामा के सैकड़ों बाणों से अत्यन्त पीड़ामान् श्रीकृष्ण और अर्जुन भी ऐसे प्रकाशमान हुये जिसप्रकार अपनी किरणों से प्रकाशित प्रलयकाल के दो सूर्य होते हैं ४ तदनन्तर बासुदेवजी के व्याकुल होनेसे अर्जुन ने सब ओर से अस्त्रों की धाराओं को छोड़ा बज्र अग्नि और यमराज के दण्ड की समान बाणों से अश्वत्थामा को घायल किया ५ उस बड़े तेजस्वी और भयानककर्मी अश्वत्थामाजीने अच्छेप्रकारसे चलाये महाकठोर और वेगवान् बाणोंसे अर्जुन और केशवजी को मर्मस्थलों पर घायलकिया वह ऐसे बाणथे जिनकेमारे मृत्युभी व्याकुल होजाय ६ फिर अर्जुन उस उपाय करनेवाले अश्वत्थामा के उन बाणोंको उससे द्विगुणित अपने बाणोंसे अच्छीरीति से रोककर उस बड़े मुख्य बीरको घोड़े सारथी और ध्वजा समेत अपने सुंदर पुंखवाले दूने बाणों से ढककर संसप्तकोंकी सेनाके सन्मुखगया ७ अर्जुनने अच्छीरीतिसे चलायेहुये बाणों से मुख न मोड़नेवाले सन्मुखतामें नियत शत्रुओं के धनुष बाण तूणीर और कवच हाथ भुजा व हस्तगतशस्त्र और शस्त्र ध्वजा घोड़े और रथ और अनेक बस्त्रादिक वस्तु माला भूषणों समेत मर्मस्थल और चित्तरोचक प्यारेकवच और अनेक प्रिय बस्तुओं समेत शिरों को काटा और उपाय करनेवाले नरोत्तमों समेत अच्छीरीति से रथ घोड़े और हाथियों समेत नियत और अलंकृत सैकड़ों शूरबीरोंको भी अर्जुनने सैकड़ोंबाणों से गिराया तब उनके साथ बड़े २ उत्तम मनुष्यभी गिरपड़े ८।९।१० कमल सूर्य और पूर्णचन्द्रमा के समान बिशाल मुख मुकुटमाला और आभूषणों से प्रकाशमान शिर और भल्ल अर्द्धचंद्र

और क्षुरप्र नाम बाणों से घायल मनुष्यों के भी शिर बारंबार पृथ्वीपर गिरे ११ फिर कलिंग अंगबंगदेशी निषाद जातिके असुरों के गर्भ प्रहारी बीरलोग जो बड़े उग्ररूप अर्जुन के मारने के अभिलाषीथे उनके गज और असुरों के समान हाथियों के कवच सूंड़ सारथी ध्वजा और पताकाओं को काटा इस के पीछे वह ऐसे गिरपड़े जैसे कि वज्रके प्रहार से पर्व्वतों के शिखर गिरते हैं १२। १३ उन-के पराजय और छिन्न भिन्न होने पर अर्जुन ने सूर्य बर्ण के बाणजालों से गुरू के पुत्रको ऐसा ढकदिया जैसे कि बड़े बादलों के जालोंसे वायु उदय हुये सूर्य को ढकता है १४ इसके पीछे अश्वत्थामाजी अपने बाणों से अर्जुनके बाणोंको काटकर बड़े तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजीको ढककर ऐसे गर्जे जैसे कि बर्षाऋतु में चन्द्रमा और सूर्य्यको ढककर बादलगर्जताहै १५ फिर अर्ज्जुन ने भी अश्वत्थामाजी को और अन्यलोगों को ढककर शस्त्रों से घायलहुये ने समीप जाकर शीघ्रही बाणों के अन्धकार को दूरकर सुन्दर पुङ्खवाले बाणों से सबको घायल किया १६ फिर अर्ज्जुन रथ के ऊपर बाणों को लेता चढ़ाता और मारता हुआ भी युद्धमें दृष्ट न पड़ा फिर बाणोंसे छिदेहुये रथ हाथी घोड़े और पदातियों को अर्जुन ने मृतक देखा १७ तब शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने शीघ्रही दश उत्तम नाराचों को चढ़ाकर एकहीके समान छोड़ा उनमें से पांच उत्तम बाणों ने श्रीकृष्णजी को और पांचने अर्जुनको घायलकिया १८ अन्यमनुष्यों ने ऐसे धनुर्वेदके ज्ञाता अश्वत्थामाजी से पराजित और रुधिर डा-लनेवाले नरोत्तम इंद्रके समान श्रीकृष्ण और अर्जुनको युद्धमें मृतकसमझा १९ इसके पीछे श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले कि क्या भूलमें पड़ाहै इस युद्धकर्त्ताको मार नहींतो यह बीर अपूर्व दोषको उत्पन्नकरेगा और इसका बदला न लेने वाला शूरबीर कठिन रोगीके समानहोगा २० फिर सावधान अर्जुनने श्रीकृष्ण जी से बहुतअच्छा यह शब्द कहकर बड़े उपायके साथ अश्वत्थामाको घायल किया चंदनकेसारसे पीठ भुजा छाती शिर और जंघावोंको २१ क्रोधयुक्त अर्जु-नने गांडीवधनुष से छोड़ेहुये विकर्णनाम बाणों से घायलकिया और बागडोरों को काटकर उसके घोड़ोंको भी घायलकिया फिर वहघोड़े व्याकुलहोकर उसको युद्धसे दूरलेगये २२ उनवायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे हटायेहुये और अर्जुन के बाणोंसे पराजित बुद्धिमान् अश्वत्थामाजी ने बिचार कर फिर लौटकर अ-

र्जुनके साथ लड़नानहींचाहा २३ अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी निश्चय बिजय को जानतेहुये वह बेगवान् उत्साहसे भ्रष्ट नाशमान बाण और अस्त्र योगवाले अंगिरा बंशियों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी कर्ण की सेना में गये २४ अर्थात् वह अश्वत्थामाजी घोड़ों को स्वाधीन करके बहुत बिश्वासित कर रथ घोड़े और मनुष्यों से पूर्ण होकर कर्णकी सेनामें जापहुंचे २५ जैसे कि मंत्र वा औषधी वा कर्मके करनेसे रोग शरीरसे जाता रहताहै उसीप्रकार घोड़ों के द्वारा उस बिरोधी अश्वत्थामाके हटजानेपर २६ अर्जुन और श्रीकृष्णजी बायुसे उड़ाईहुई पताका और बादलके समान गर्जतेहुये रथकी सवारीसे संसप्तकों के सन्मुख गये २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामापराजयोनामअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

संजय बोले इसके पीछे पाण्डवोंकी सेनामें उत्तर दिशाकी ओर दण्डधार के हाथसे घायल रथी हाथी घोड़े और पतियों के शब्द उठे १ तब गरुड़ और बायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको चलाते केशवजी रथको लौटाकर अर्जुनसे बोले २ कि बल और शिक्षामें भगदत्त के समान मगध देशी दण्डधार भी नाश करने वाले हाथी समेत कठिन युद्ध करनेवालाहै ३ इसको मारकर तू फिर संसप्तकोंको मारेगा श्रीकृष्णजीने यह कहकर अर्जुनको दण्डधारके समीप पहुंचाया ४ वह मगधदेशियों के मध्यमें अंकुश धारण हाथियों के युद्धमें ऐसा अत्यन्त उत्तम और असह्यथा जैसे कि ग्रहोंकेमध्यमें धूम्रकेतु ग्रहहोताहै उस भयानकरूपने शत्रु की सेनाको ऐसा मर्द्दनकिया जैसे कि धूम्रकेतु उपग्रह सम्पूर्ण पृथ्वीको मर्द्दन करताहै ५ फिर वह राजा अच्छेप्रकार से अलंकृत गजासुरके समान बड़े बादल की समान शब्द करनेवाले शत्रुहन्ता हाथीपर सवार बाणोंसे हजारों हाथी घोड़े और रथोंके समूहों को मारताहै ६ वह श्रेष्ठ हाथी घोड़े सारथी मनुष्य और रथों को दबाकर चरणों से हाथियों को मलता सूंड़से मारताहुआ चक्रकेसमान भ्रमण करनेलगा ७ फिर उसने उसबली पराक्रमी उत्तम हाथीकेद्वारा लोहेके कवचोंसे अलंकृत मनुष्यों को और पतियों समेत घोड़ोंकोभी गर्जना पूर्व्वक ऐसे शब्दायमान स्थूल नर्सलके समान गेरकर मारा ८ इसके पीछे अर्जुन धनुषकी प्रत्यंचाके शब्द मृदंग भेरी और बहुत से शंखोंसे शब्दायमान हजारों घोड़े रथ

और हाथियों से संकुलित युद्धभूमिमें उत्तम रथकी सवारी से उत्तम हाथी के सन्मुखगये ६ वहां उस दण्डधारने अर्जुनको दश उत्तमबाणों से और श्रीकृष्णजीको सोलह बाणोंसे व्यथित करके तीन२ बाणोंसे घोड़ोंको घायलकिया इनको घायल करके बड़े शब्दको करके बारंबार हँसा और गर्जा १० इसके पीछे अर्जुनने भल्लोंसे प्रत्यंचा समेत उसके धनुषको काटकर उसकी अलंकृत भुजाको भी काटा फिर रक्षकों समेत सारथियों को मारा इसकारण वह महा क्रोधितहुआ इसके अनन्तर उस मतवाले घातक वायुकेसमान तेजस्वी हाथीकेद्वारा अत्यन्त व्याकुल करने के अभिलाषी उस राजाने तोमरों से अर्जुन और श्रीकृष्णजीको घायलकिया ११। १२ इसकेपीछे इसकी हाथकी सूंड़केसमान भुजाओंको और पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखको तीनक्षुरप्रसे एकबारमें छेदा और सैकड़ों बाणोंसे हाथीको घायल किया १३ स्वर्णमयी अर्जुन के बाणोंसे संयुक्त वह स्वर्णमयी कवचधारी हाथी सायंकाल के समय ऐसा प्रकाशमानहुआ जैसे कि दावानल अग्निसे ज्वलित औषधियों समेत वृक्षोंवाला पर्ब्बत प्रकाशित होताहै वह बादलके समान गर्जता चलता घूमता दुःखसे पीड़ित चलते २ सवार समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बज्रसे टूटाहुआ पर्व्वत गिरपड़ताहै १४। १५ उसके मरने के पीछे उसका दूसरा भाई द्वन्द युद्धमें भाई के मरनेपर श्रीकृष्ण अर्जुन के मारने का अभिलाषी स्वर्णमयी मालाधारी हिमाचलके शिखर के समान हाथी की सवारीसे सन्मुखआया १६ वह सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित तीक्ष्ण तीन तोमरों से श्रीकृष्णजीको और पांचसे अर्जुनको घायल करताहुआ गर्जा इसके अनन्तर अर्जुनने उसकी भुजाओं को काटा १७ सुन्दर तोमर और बाजूबंद रखनेवाले चन्दन से चर्चित और क्षुरप्रबाण से कटीहुई दोनों भुजा हाथीपर से गिरतीहुई ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि अत्यन्त सुन्दर दो बड़े सर्प पर्व्वतसे गिरतेहोयँ १८ इसीप्रकार अर्जुनके अर्द्धचन्द्र बाणसे कटाहुआ दंडका शिर हाथी के ऊपरसे पृथ्वीपर गिरते समय ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि सूर्य्य अस्ताचलसे पश्चिम दिशामें गिरता है १९ इसके पीछे अर्जुनने सूर्य्यकी किरणरूप उत्तम बाणोंसे उसके श्वेत हाथीको भी छेदा वहभी शब्द करताहुआ ऐसे गिरा जैसे बज्रसे टूटा हिमाचलका शिखर गिरता है २० उसके सिवाय उसीके समान अन्य उत्तम २ हाथी विजयाभिलाषी हुये और वह भी उसीप्रकार से अर्जुन के

हाथसे मरे जैसे कि वह दोनों हाथी मारेगये थे इसकेपीछे शत्रुओंकी बड़ीभारी सेना छिन्नभिन्न होगई २१ युद्धमें परस्पर मारनेवाले हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूह चारोंओरसे परस्परमें अत्यन्त घायलहोकर गिरपड़े और बहुतसे अत्यन्त बकनेवाले मनुष्यभी मारेगये २२ इसकेपीछे पाण्डवी सेनाके मनुष्य अर्जुनको घेरकर ऐसे बोले जैसे कि देवताओं के समूह इन्द्रको घेरकर बोलेथे कि हे बीर अर्जुन हमलोग जिससे कि मृत्युके समान भयभीत थे वह शत्रु प्रारब्धसे तुम्हारे हाथसे मारागया २३ जो इसप्रकार पराक्रमी शत्रुओंसे पीड़ामान इनमनुष्योंकी तुम रक्षानहीं करते तौ शत्रुओं की वैसीही प्रसन्नता होती जैसी कि हम लोगों को हुईहै २४ इसके अनन्तर शुभचिन्तकों के इन बचनों को सुनकर वह प्रसन्न चित्त संसप्तकों का मारनेवाला अर्जुन प्रत्येक को उनकी योग्यता के अनुसार प्रसन्न करके चलदिया २५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदंडधारबधेएकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन ने वहां से लौटकर मंगल ग्रहके समान बक्र और अतिवक्र गतियों से हजारों संसप्तकों को मारा १ हे भरतबंशी अर्जुन के बाणों से घायल मनुष्य घोड़े रथ हाथी सब के सब इधर को तितिर बितिरहोकर घूमनेलगे और घूम २ कर गिरे और मृतक होकर नष्ट होगये २ युद्ध में सन्मुख लड़नेवाले बीरों के उत्तम घोड़े रथ हाथी रथी ध्वजा धनुष शायक हाथ वा हाथ में लिये शस्त्र भुजा और शिरोंको अर्जुन ने अपने भल्ल क्षुरप्र अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणों से काटा ३। ४ जैसे कि गौके निमित्त युद्धाभिलाषी अनेक बैल दूसरे बैलके सन्मुख जाते हैं उसी प्रकार हजारों शूरबीर अर्जुन के ऊपर गिरते थे ५ उन सब बीरोंके साथ अर्जुनका युद्ध ऐसा बड़ाभयकारी रोम हर्षण करनेवाला हुआ जैसे कि तीनोंलोकों की बिजय के वास्ते दैत्योंका युद्ध इन्द्रके साथ में हुआ था ६ उग्रायुधके पुत्रने सर्पों के समान तीन बाणों से उस अर्जुन को घायल किया और अर्जुन ने उसके शिरको धड़से जुदा किया ७ फिर क्रोधित होकर उन लोगों ने सब ओर से अर्जुन के ऊपर नानाप्रकार के शस्त्रों की ऐसी बर्षाकरी जैसे कि बर्षा ऋतुमें मरुत् देवता के प्रेरित किये हुये

बादल हिमालयपर जलकी वृष्टिको करते हैं ८ अर्जुनने शत्रुओं के अस्त्रों को सब ओरसे अपने अस्त्रों से रोककर अच्छी रीतिसे चलायेहुये बाणों से अनेक शत्रुओं को मारा ९ और उनके रथोंको भी बाणों से रथियों समेत ऐसीदशाका करदिया कि जिनके घोड़े और सारथी मरजाने से हाथों से तरकस और ध्वजा पताका गिरपड़ीं बागडोर हाथसे छूटगईं पहिये टूटे दांतुये और जुये और शरीर के कवच भी टूटे १० । ११ वहां टूटेहुये बहुमूल्य रथ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि अग्नि बायु और जलसे टूटेहुये धनीलोगों के घरहोते हैं १२ फिर बज्र और बिजली के समान बाणों से टूटेहुये हाथियों के कवच ऐसे टूटपड़े जिसप्रकार बज्रपात और अग्निसे पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं १३ फिर अर्जुन के हाथसे घायल होकर बहुत से घोड़े सवारों समेत गिरपड़े उन घोड़ों की जीभ और नेत्र निकल पड़े थे इसहेतु से वह पृथ्वी पर पड़ेहुये रुधिर से लिप्त देखने के अयोग्य मालूम होते थे १४ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र अर्जुन के नाराचों से छिदे हुये मनुष्य घोड़े और हाथी गर्ज २ कर घूमते और मलिन मन हो २ कर पृथ्वी पर गिरपड़े १५ अर्जुन ने बड़े स्वच्छ बिजली और बिष के समान बहुतसे बाणों से उनको ऐसे मारा जैसे कि महाइन्द्र दानवों को मारताहै १६ अर्जुनके हाथसे मरेहुये जो बीर रथ और ध्वजाओं समेत पृथ्वी पर शयन करनेवाले हुये वह बीर बड़े मूल्य के कवच भूषण और नाना प्रकारकी पोशाकों समेत शस्त्रों के धारण करनेवाले थे १७ वह पवित्रकर्मी वा उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ युद्धकर्त्ता अर्जुनके बाणों से पराजय होकर पृथ्वी पर गिरपड़े और अपने उत्तम कर्म के द्वारा स्वर्ग को गये १८ इसके पीछे भिन्न २ देशों के स्वामी क्रोधयुक्त शूरबीर आपके युद्धकर्त्ता अपने समूहों समेत रथियोंमें श्रेष्ठ अर्जुनके सन्मुख गये १९ रथ घोड़े और हाथियों पर सवार मारने के अभिलाषी वह पतिलोग भी नाना प्रकार के शस्त्रों को चलातेहुये शीघ्र सन्मुख दौड़े २० जिनको अर्जुनरूपी बायु ने शीघ्रता पूर्व्वक छोड़ेहुये बाणों से उस शस्त्ररूपी बड़ी बर्षा को जो कि युद्धकर्त्ता रूपी बड़े २ बादलों से छोड़ी हुईथी पृथक् २ करदियाथा २१ वह घोड़े हाथी और पतियों से युक्त बड़े २ शस्त्रों से पूर्ण अर्ज्जुन के शस्त्र और अस्त्र रूपी पुलसे हटकर साथमें पार होने के अभिलाषी थे २२ इसके अनन्तर बासुदेवजी ने कहा कि हे निष्पाप अर्जुन क्या खेल करता है इन संसप्तकों को मार

कर फिर कर्ण के मारनेका उपाय शीघ्रता से कर २३ तब अर्जुनने श्रीकृष्णजी से बहुत अच्छा यह शब्द कहकर श्रेष्ठ संसप्तकोंको तुच्छ करके शस्त्रों के बल से ऐसामारा जैसे कि दैत्योंको इन्द्रमारताहै २४ अर्जुन बाणों को लेता चढ़ाता और मारताहुआ किसी को दिखाई नहीं दिया और सावधान बीरों ने उसको शीघ्रतासे बाणोंको छोड़ताहुआ भी देखा २५ हे भरतबंशी उन श्रीकृष्णजीने बड़ा आश्चर्य्य किया कि हंसोंकेसमान उज्ज्वल वह बाण सेनामें ऐसे पहुँचे जैसे कि सरोवर में हंसपक्षी पहुँचते हैं २६ इसके अनन्तर मनुष्यों की प्रलय बर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले २७ हे अर्जुन दुर्य्योधन के कारणसे यह भरतबंशी और अन्य राजाओं की प्रलय पृथ्वी पर बर्त्तमानहै २८ हे भरतबंशी बड़े धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठवाले धनुषधारियोंको वा आभूषणों समेत तूणीरोंको टूटाहुआ देखो २९ और टेढ़े पर्व्व और सुनहरी पुंखवाले तेलसे सचिक्कण कांचलीसे छुटे सर्पों के समान नाराचनाम बाणोंको देखो ३० हे भरतबंशी सुवर्ण से अलंकृत चित्रबिचित्र तोमरोंको भी देखो और धनुषसे टूटेहुये सुवर्ण पुंखवाले बाणोंको देखो ३१ सुवर्ण से अलंकृत बाण वा कंचनसे शोभित शक्तियों को वा सुनहरी बस्त्रोंसे मढ़ीहुई गदाओंको देखो ३२ सुनहरी दुधारे खड्ग पट्टिश और डंडोंसमेत कटेहुये फरसों को देखो ३३ और बहुमूल्यके पड़ेहुये परिघ भिन्दिपाल भुशुंडी कुणप और अपरकुन्तोंको देखो ३४ बिजयाभिलाषी वेगमान शूरबीर नानाप्रकार के शस्त्रोंको लेकर निर्जीवहोकर जीवतेसे दिखाई देतेहैं ३५ गदाओं से मथित अंगवाले हाथी घोड़े और रथों समेत मूशलोंसे कूटेहुये मस्तकवाले हजारों युद्धकर्त्ताओंको देखो ३६ हे शत्रु-हन्ता बाण शक्ति दुधारे खड्ग तोमर पट्टिश प्रास नखरल गुड़आदि अनेक शस्त्रोंसे अत्यन्त घायल मनुष्य हाथी घोड़ोंके समूह रुधिरमें भरेहुये निर्जीव देहों से पड़े युद्धभूमि में बर्त्तमानहैं ३७ । ३८ और बाजूबंद आदि शुभभूषण हस्तत्राण और केयूरको धारण करनेवाली चन्दनसेलिप्त भुजाओंसे पृथ्वीशो-भायमानहै ३९ और वेगवान् शूरबीरोंकी टूटीहुई उत्तम भुजाओंसे वा हाथीकी सूंड़के समान टूटीहुई जंघाओंसे और उत्तम चूड़ा बांधनेवाले कुंडलधारी शि-रोंसे युद्धभूमि अत्यन्त शोभादेरही है सुनहरी घंटे रखनेवाले उत्तम रथोंको भी अनेक प्रकारसे टूटाहुआ देखो ४० । ४१ और रुधिरमें भरेहुये बहुतसे घोड़ोंको

देखो वा अनुकर्ष उपासंग पताका और नानाप्रकारकी ध्वजाओंको देखो ४२ युद्धकर्त्ताओं के फैलेहुये श्वेतरंग के महाशंखों को और जिह्वा निकले पर्व्वत के समान पड़े सोतेहुये हाथियोंको देखो ४३ बैजयन्तीनाम बिचित्र मालाओं से और मरेहुये हाथियों के सवार और अनेक कालेकंमलों से युक्त परिस्तोमों से ४४ अच्छी कृष्ण और बिचित्र अद्भुतरूप कुथाओंसे और हाथियोंसे टूटकर गिरेहुये घंटाओंके चूर्णोंको देखो ४५ बैडूर्य्य मणिके डण्डेवाले पृथ्वीपर पड़ेहुये अंकुशोंको और घोड़ों के जुये पीठ और रत्नजटित छिद्रों को देखो ४६ सवारों की ध्वजाओं की नौकापर टूटेहुये सुवर्ण से चित्रित घंटाओं को और बिचित्र मणियों से जटित सुवर्ण अलंकृत ४७ पृथ्वीपर पड़ेहुये मृगचर्मसे बनेहुये घोड़ों के जीनपोशों को और राजाओंकी चूड़ामणि और सुनहरी बिचित्र मालाओंको देखो ४८ धनुषसे छिदेहुये छत्र चामर और बैजयन्तियोंको देखो चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशित सुन्दर कुंडलधारी ४९ अलंकार युक्त डाढ़ी मूछोंसे संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखों से बिछीहुई पृथ्वीको देखो ५० इसी प्रकार कुमुद उत्पल नाम कमलों के समान रूपी राजाओं के मुखों से इस पृथ्वी को नक्षत्र समूहों समेत निर्मल चन्द्रमा से शोभित आकाश के समान सदैव बाणरूप नक्षत्रोंकी मालाओं के रखनेवाली को देखो हे अर्ज्जुन इस महायुद्ध में यह कर्म तेरेही योग्यहै ५१। ५२ चाहै वह कर्म जो तुमने स्वर्ग के युद्धमें इन्द्र का किया इसरीति से वह युद्धभूमि अर्ज्जुन को दिखाते ५३ और चलतेहुये श्रीकृष्णजी ने दुर्य्योधनकी सेनामें शंख दुन्दुभी भेरी और पणवों के बड़े शब्दों को सुना ५४ और रथ घोड़े हाथी और शस्त्रों के भयानक शब्दोंको भी सुना फिर श्रीकृष्णजी ने बायुके समान घोड़ों के द्वारा उस सेना में प्रवेशकरके ५५ राजा पाण्ड्यके हाथसे आपकी सेनाको पीड़ित देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया बाण और अस्त्रविद्या में अत्यन्त श्रेष्ठ उस पांड्यने युद्धमें अनेक प्रकारके बाणों से ५६ शत्रुओं के समूहों को ऐसे मारा जैसे कि मृत्यु निर्जीव मनुष्योंको मारती है घात करनेवालों में श्रेष्ठ पांड्यने तीक्ष्ण बाणों के द्वारा हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को ५७ छेदकर उन निर्जीवोंको गिराया फिर पाण्डवों ने शत्रुओं के चलाये अस्त्र और नानाप्रकार के शस्त्रों को शायकों से काटकर उन शत्रुओं को ऐसे मारा जैसे कि इन्द्र असुरोंको मारता है ५८। ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेविंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तुमने प्रथमही लोक में विख्यात पाण्ड्य बड़ा बीर बर्णन किया परन्तु तुमने युद्धमें इसके कर्म को बर्णन नहीं किया १ अब उस बड़े बीरके पराक्रम और शिक्षाके प्रभाव बल बड़प्पन और अहंकारको ब्यौरेवार कहो २ संजय बोले कि तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य अश्वत्थामा कर्ण अर्ज्जुन और श्रीकृष्ण आदि जिन रथियों को सर्व्वविद्या सम्पन्न और धनुष विद्या में सबसे श्रेष्ठ मानतेहो और जो इन सब महारथियों को भी अपने पराक्रमसे तुच्छ समझताहै जिसने अन्य किसी राजाको अपने समान नहीं माना ३। ४ और जो भीष्म द्रोणाचार्य्य के साथमें अपनी समानताको भी नहीं सहता है और जिसने अपने को बासुदेवजी और अर्जुन से कम नहीं जाना ५ उस राजाओं में और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ राजापाण्ड्यने अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर यमराजके समान कर्णकी बड़ी सेनाको मारा ६ बड़े रथ घोड़ों समेत अत्यंत उत्तम पतियों से व्याप्त और पांड्यके पराक्रमसे घायल होकर वह सेना कुम्हार के चक्रके समान घूमतीहुई इधर उधर फिरनेलगी ७ पांड्यने घोड़े ध्वजा और सारथियों से रहित रथोंको और कठिन युद्धसे मारेहुये हाथियों को अच्छीरीति से चलाये बाणों से ऐसे हटादिया जैसे कि वायु बादलोंको हटाता है ८ पताका ध्वजा और शस्त्रों से रहित हाथियों को हाथियों के सवारों समेत पीछे के रक्षकों को ऐसे मारा जैसे कि शत्रुहन्ता इंद्र अपने बज्रसे पर्वतोंको विदीर्ण करताहै ९ उसने शक्ति प्रास और तूणीरों समेत अश्वारूढ़ और घोड़ों को भी मारकर पुलिंद, खस, वाह्लीक, निषाद अंधककुंतल १० दक्षिणात्य और भोजोंको और युद्धमें निर्द्दयी शूरोंको बाणोंके द्वारा शस्त्र और कवचों से रहित करके निर्जीव किया ११ युद्ध में बाणों से मारनेवाले रुधिर से उत्पन्न होनेवाले व्याकुलता से पृथक् पाण्ड्य को देखकर अश्वत्थामाजी भय से उत्पन्न होनेवाली व्याकुलता से रहित चतुरंगिणी सेना समेत उसके सन्मुख गये १२ वहां प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ अश्वत्थामाजी ने निर्भयता के समान इसको मीठे वचनों से समझाकर कहा १३ और बड़ी मंद मुसकान समेत युद्धके निमित्त बुलाया और कहा कि हे कमलदललोचन उत्तम कुलीन शास्त्रज्ञ बज्रके समान दृढ़ शरीर और बल

में बिख्यात राजापाण्ड्य १४ आपके धनुष की प्रत्यञ्चा पृष्ठस्थान में चिपटीहुई दिखाईदेती है और बड़े भुजदण्डों से बहुत बड़े धनुषको बड़े बादल के समान कठिन टंकारतेहुये दृष्टि पड़तेहो १५ बड़े वेगवान् बाणों की बर्षा से शत्रुओं के सन्मुख मुझ बाणवर्षा करनेवाले के सिवाय आपके सन्मुख होनेवाला शूरबीर युद्धमें नहीं देखताहूं १६ तुम अकेलेही बहुतसे हाथी घोड़े रथ और पतिलोगों को ऐसे मथतेहो जैसे कि निर्भय और भयानकरूप पराक्रमी सिंह बनमें मृगों के समूहों को मथन करताहै १७ हे राजा रथके बड़े शब्दसे पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करतेहुये ऐसे दिखाई देतेहो जैसे कि बर्षाके अन्तमें खेती का हानि करनेवाला गर्जताहुआ बादल होताहै १८ बिषैले सर्पकी समान तीक्ष्ण बाणोंको तूणीरसे निकाल २ कर मुझ अकेले से ऐसे युद्धकरो जैसे कि अन्धकने शिवजीके साथ युद्धकियाथा १६ प्रहार करो ऐसे कहेहुये घायलहुये उस मलयध्वजपांड्यने बहुत अच्छा ऐसा शब्द कहकर करणीनाम बाणसे अश्वत्थामाको घायलकिया २० आचार्य्यों में श्रेष्ठ मन्द मुसकानकरते अश्वत्थामाने मर्मभेदी अत्यन्त उग्र अग्निशिखा के समान बाणों से पांड्यको घायल किया इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने अत्यन्त तीक्ष्ण मर्मभेदी अन्य नाराचों कोभी फेंका२१।२२पांड्यने उन बाणोंको अपने तीक्ष्ण धारवाले नौबाणों से काटा और चार बाणोंसे घोड़ों को घायलकिया और घायल होतेही वह शीघ्र मरगये २३ इसकेपीछे सूर्य्य के समान तेजस्वी पांड्यने तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे अश्वत्थामाके उन बाणोंको काटकर धनुषकी बड़ी प्रत्यंचाको काटा २४ इसकेपीछे शत्रुहन्ता ब्राह्मण अश्वत्थामाजी ने दिव्य धनुषको तैयार करके और शीघ्रही रथ में जुटेहुये दूसरे उत्तम घोड़ों को देखकर २५ उसमें बैठे हजारों बाणों को चलाया आकाश और दिशाओं को बाणों से व्याप्त करदिया २६ इसके पीछे बाण फेंकनेवाले अश्वत्थामा के उन सब बाणों को अबिनाशी जानकर उस पुरुषोत्तम पांड्य ने उनको काटकर गिराया २७ फिर पांड्य ने अश्वत्थामाजी के उन बाणों को काटकर युद्ध में अपने तीक्ष्णधार बाणों से उनके दोनों चक्र रक्षकों को मारा २८ इसके पीछे शत्रुकी हस्तलाघवता को देखकर धनुषको मण्डलरूप करनेवाले अश्वत्थामाजी ने ऐसे बाणों को छोड़ा जैसे कि पूषा का छोटा भाई पर्य्यन्य नाम जलकी बर्षाको छोड़ताहै २६ हे श्रेष्ठ जिन शस्त्रों को

आठ २ बैलवाले आठ छकड़े ले चलते हैं उनको अश्वत्थामाजी ने आधीघड़ी में चलाया ३० उस यमराज के समान क्रोधरूप और मृत्यु के सदृश को जिन्हों ने वहां देखाथा उनमें से बहुधा तो अचेत होगये ३१ जैसे कि बर्षाऋतु में बादलों के समूह पर्व्वत वृक्ष रखनेवाली पृथ्वीपर बर्षा करते हैं उसीप्रकार आचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उस सम्पूर्ण सेनापर बाणों की बर्षा करी ३२ पांड्यरूपी बायु ने उस अश्वत्थामारूप बादल से छोड़ेहुये बड़े दुःख से सहने के योग्य उस बाणरूपी बर्षा को बड़ी प्रसन्नतासे अपने बायुरूप अस्त्रसे हटाकर नाश करदिया ३३ अश्वत्थामाजी ने उस गर्ज्जनेवाले पाण्ड्य की ध्वजा को जो कि चन्दन अगरसे चर्चित मलयाचलके स्वरूपथी काटकर चारों घोड़ोंको मारा ३४ फिर एक बाण से सारथी को मारकर और अर्धचन्द्र से बड़े बादलकी समान शब्दायमान धनुषको काटकर रथको टुकड़े२ करदिया ३५ अश्वत्थामा ने अस्त्रों को अस्त्रों से रोककर और सब शस्त्रों को काटकर आधीन होनेवाले शत्रुको युद्धाभिलाषी होकर युद्धमें नहीं मारा ३६ इसी अन्तरमें कर्ण हाथियों की सेनामें गया और वहां उसने जाकर पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको भगाया ३७ हे भरतबंशी उसने टेढ़े पर्व्ववाले बहुतसे बाणों से रथियों को बिरथ करके हाथी और घोड़ों को अचेत करदिया ३८ इसके पीछे बड़े धनुषधारी अश्वत्थामाने शत्रुहन्ता रथियोंमें श्रेष्ठ रथसे रहित पांड्यको युद्धकी इच्छाकरके नहींमारा ३९ अच्छा अलंकृत शीघ्रगामी शब्द पर चलनेवाला अश्वत्थामाके बाणोंसे घायल पराक्रमी हाथी जिसका कि स्वामी मारागयाथा बेगसे हाथियोंको मलता हुआ शीघ्र उस पांड्यकी ओर गया ४० हाथियों के युद्धमें कुशल मलयध्वज पांड्य बड़ी शीघ्रताको करताहुआ उस पर्वतके शिखरकी समान श्रेष्ठ हाथीपर ऐसे सवारहुआ जैसे कि गर्जताहुआ सिंह पर्वतके शिखरपर चढ़ताहै ४१ उस मलयाचलके स्वामी गर्जते और अंकुशसे हाथीको क्रोधयुक्त करवानेवाले पांड्य ने पराक्रम और अस्त्रचलानेके उपायजाननेके अभिमानसे शीघ्रही सूर्यकी किरणके समान तोमरको गुरूके पुत्रपर छोड़कर ४२ माराहै माराहै ऐसेआनंदपूर्वक शब्दों को करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा और अश्वत्थामा के उस मुकुटको तोमर से तोड़ा जो कि मणियों से जटित उत्तम हीरोंसे और सुवर्ण से शोभित बहुमूल्य के वस्त्र और मालाओं से अलंकृत था ४३ सूर्य चन्द्रमा ग्रह और अग्निकेसमान

प्रकाशित वह मुकुट कठिन आघात से ऐसे चूर्णहोकर गिरपड़ा जैसे कि इन्द्रके वज्रसे घात कियाहुआ बड़े शब्द युक्तहोकर पर्वतका शिखर पृथ्वीपर गिरे ४४ उसकेपीछे अश्वत्थामाजीने यमराजदण्डके समान शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले चौदह बाणोंको हाथमेंलिया ४५ तब उस उत्तम तेजस्वीने हाथीके चारों पैर और सूंड़ पांच बाणों से राजाकी दोनों भुजा और शिरको तीनबाणों से और राजा पांड्यके पीछे चलनेवाले छः महारथियों को छः बाणोंसे मारडाला ४६ राजाकी दोनों भुजा जो बहुत लम्बी चन्दनसे चर्चित सुवर्ण मुक्ता हीरे और अन्य अन्य मणियों से अलंकृतथीं पृथ्वीपर गिरपड़ीं और गरुड़ से व्याकुल सर्पोंकी समान फड़फड़ानेलगीं ४७ वह पूर्णचन्द्रमाके समान प्रकाशमान और क्रोधसे बड़ी २ लाल आंख रखनेवाला कुण्डलधारी शिरभी पृथ्वीपर गिराहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि दोनों विशाखों के मध्यमें चन्द्रमा वर्त्तमान होताहै ४८ फिर वह हाथी पांच उत्तम बाणोंसे छःभाग कियागया और राजाभी तीनबाणोंसे चार खण्डकियागया उस सावधान युद्धकर्त्ता ने इसप्रकार से दशभाग किये जैसे कि दश देवताओं से संबंध रखनेवाला हव्यहोताहै ४९ वह पांड्य घोड़े हाथी और मनुष्योंको जो कि राक्षसों के भोजनथे टुकड़े २ कराके अश्वत्थामा के बाणोंसे ऐसे शांतहोगया जैसे कि पितरों की प्रिय अग्नि मृतकदेहरूप हव्यको पाकर जलप्रबाहसे शांत होजाती है ५० फिर सुहृदजनों समेत आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने उस युद्ध कर्ममें विशारद और निवृत्त कर्म गुरूके पुत्रसे मिलकर प्रसन्नता से ऐसे उनका धन्यबादकिया जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्रने बलिके बिजय होनेपर विष्णुको धन्यबाद दियाथा ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपांड्यबधेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि हे संजय पांड्यके मरने और एकबीर कर्णके हाथसे शत्रुओं के भागनेपर अर्जुनने युद्धमें क्याकिया १ वह विद्यामें पूर्ण पराक्रमी योग्य बीर अर्जुन महात्मा शंकरजीसे भी विजय नहीं कियागया २ उस शत्रुहन्ता अर्जुनसे बड़ाभारी कठिन भयहै उस अर्जुनने जो २ वहां कर्मकिये हे संजय उन सबको मेरे आगे वर्णनकरो ३ संजय बोले कि पांड्यके मरजानेपर शीघ्रता क-

रनेवाले श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह हितकारी बचन कहा कि मैं राजा युधिष्ठिर को और हटेहुये पांडवों को नहीं देखताहूं ४ लौटेहुये पाण्डवसे शत्रुकी फिर बड़ी सेना पराजयहुई परन्तु अश्वत्थामाके संकल्पसे कर्णके हाथसे संजय मारेगये ५ इसप्रकारसे घोड़े हाथी और रथोंके नाश करनेवाले बड़ेवीर बासुदेवजीने अर्जुन से सब वृत्तान्तकहा ६ भाई युधिष्ठिरके उस बड़े भयको देख और सुनकर पाण्डव अर्जुनने श्रीकृष्णजीसे कहा कि शीघ्र घोड़ोंको चलाइये ७ इसके अनन्तर श्री-कृष्णजी रथकी सवारी के द्वारा उसके सन्मुख शीघ्रगये जिसका कि कोई सन्मु-खता करनेवाला न था फिर बड़ी कठिन सन्मुखताहुई ८ तदनन्तर निर्भय कौरव पाण्डव अर्थात् कुन्तीकेपुत्र भीमसेन आदि और कर्णआदिक कौरव और हम सबलोग परस्परमें सन्मुखहुये हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे कर्ण और पांडवों का युद्ध यमराज के देशका बढ़ानेवाला फिर जारीहुआ ९। १० धनुषबाण परिघ खड्ग पट्टिश तोमर मूशल भुशुण्डी शक्ति दुधारा खड्ग फरसा ११ गदा प्रास तीक्ष्ण कुन्त भिन्दिपाल और बड़े बड़े अंकुशों को हाथ में लेकर परस्पर मारने की इच्छासे चढ़ाई करनेवाले हुये १२ बाण और धनुषों की प्रत्यञ्चा के शब्दों से दिशा बिदिशाओं समेत पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करते हुये शत्रुओं के सन्मुख गये १३ बड़े शब्दों से अत्यन्त प्रसन्न युद्धसे पारहोने के अ-भिलाषी बीरों ने शत्रुओं के बीरों के साथ महाघोर युद्धकिया १४ तब धनुषकी प्रत्यञ्चा के शब्द और चिंघाड़ते हाथी और गिरतेहुये मनुष्यों का महाघोर शब्द हुआ १५ फिर वहां पर सेना के मनुष्य सन्मुख गर्ज्जते हुये शूरबीरों के नानाप्रकारों के शब्दों को सुनकर अत्यन्त भयभीत और अचेत होकर गिरप-ड़े १६ उनके गर्ज्जते और बाणों की वर्षा करतेहुये वीर कर्ण ने पाञ्चालदेशी बीरोंके बीसरथियों को घोड़े सारथी और ध्वजाओंसमेत अपनेबाणों से स्वर्गको पठाया १७। १८ युद्धमें पाण्डवोंके बड़ेपराक्रमी उत्तम युद्धकर्त्ताओं ने शीघ्रता पूर्व्वक अस्त्रों के चलाने से आकाश को व्याप्तकरके कर्णको चारोंओर से घेर लिया १९ इसके पीछे कर्णने बाणों की वर्षासे शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ऐसा व्यथित किया जैसे कि पक्षियों से व्याप्त कमलों के बनोंको गजराज मथन करताहै २० कर्णने शत्रुओं में घिरकर उत्तम धनुषकोले तीक्ष्णबाणों से उन शत्रुओंके शिरोंको काटकर दूर गिराया २१ तब मृतक बीरोंकी टूटीहुई ढालें

और कवच पृथ्वीपर गिरपड़ीं २२ धनुषसे छोड़ेहुये मर्म देह और प्राणोंके घातक बाणोंसे धनुषोंकी प्रत्यंचा और तूणीरोंको ऐसा घायलकिया जैसे कि चाबुकसे घोड़ोंको घायल करते हैं २३ कर्णने बाणके लक्षमें वर्त्तमान पांड्य सृंजय और पांचालों को बड़ेवेगसे ऐसे मर्द्दनकिया जैसे कि मृगोंके समूहोंको सिंह मर्द्दन करताहै २४ हे श्रेष्ठ इसके पीछे पांचाल और द्रौपदीके पुत्र नकुल और सहदेव सात्यकी समेत एक साथही कर्णके सन्मुखगये २५ उन कौरव पांचाल और पांडवोंके उपाय करनेपर युद्धमें बड़े २ युद्ध करनेवालोंने अपने प्रियप्राणोंको त्याग करके परस्परमें घायलकिया २६ अच्छे अलंकृत कवचधारी आभूषणोंसे युक्त महाबली कालदण्डके समान गदा मूशल और परिघोंको उठायेहुये गर्जते और एकएकको पुकारते शीघ्रसन्मुखगये २७।२८ इसके पीछे एकने एकको घायल किया और घायलहो होकर गिरपड़े और कोई शूरबीर अङ्गोंसे रुधिर गेरते मस्तक नेत्र और शस्त्रों से हीनहोकर २९ शस्त्रों से युक्त और दांतों से पूर्ण रुधिरमें भरेहुये अनारके वृक्षकी समान मुखोंसे जीवतेहुये से नियतहुये ३० इसीप्रकार दूसरोंने फरसा पट्टिश खड्ग शक्ति भिंदिपाल प्रास और तोमरों से ३१ काटा छेदा और घायलकरके फेंका गिराया मारा और क्रोधयुक्त बीरों ने युद्धरूपी महासमुद्रमें घायलकिया ३२ परस्पर में मारेहुये निर्जीव रुधिरसे भरेहुये सुन्दर रथवाले रुधिरको गिरातेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि चन्दनके कटेहुये वृक्ष गिराये जाते हैं ३३ रथोंसे रथीमारेगये हाथियोंसे हाथी मारेगये मनुष्योंसे मनुष्य और घोड़ों से मारेहुये हजारों घोड़े ३४ क्षुरप्र भल्ल और अर्द्धचन्द्रोंसे कटेहुये भुज शिर छत्र और हाथियों की सूंड़ोंसमेत मनुष्योंकी भुजा पृथ्वीपर गिरपड़ीं ३५ हाथियों ने रथोंसमेत घोड़े और मनुष्योंको मर्द्दनकिया अश्वारूढ़ोंके हाथसे शूरबीर मारे गये ३६ और पताका ध्वजाओंसमेत कटीहुई सूंड़ोंसमेत हाथी ऐसे गिरे जैसे टूटेहुये पर्व्वत गिरते हैं वह हाथी रथ पतियों के सन्मुख जाकर मरे और मरकर गिरपड़े ३७ और शीघ्रता करनेवाले अश्वसवार सन्मुखहोकर पतियों के हाथसे मारेगये ३८ और युद्धमें अश्वसवारोंके हाथसे मारेहुये पतियोंके समूह ऐसेनष्ट होगये जैसे कि मर्द्दन कियाहुआ कमल और मुरझाई हुई मालाहोयँ ३९ इसी प्रकार उस बड़े युद्धमें मृतकोंके मुख भंगहोगये और मनुष्यों के अत्यन्त प्रकाशमान रूप औरहाथियोंने ऐसे कुरूपताको पाया जैसे कि म्लानवस्त्र होते हैं ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि आपके पुत्रके कहने से हाथियोंके सवार अपने हाथियों के द्वारा मारनेके इच्छावान् पर्षतके पोते क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्नके सन्मुखगये १ हे भरतवंशी अत्यन्त उत्तम हाथियों के सवार शूरबीर पूर्व दक्षिणकेबासी अंग बंग पुंड्र मागध ताम्र लिप्तक २ मेकल कोशल मद्र दशार्ण निषध कलिंगोंसमेत गजयुद्धमें कुशल ३ बाण तोमर और नाराचों से बादलकी समान बाण वृष्टि करनेवाले उन सबने पांचालदेशी सेनाको अपने बाणरूप वृष्टी से सींचा ४ एंड़ी अंगुष्ठ और अंकुशों से अत्यन्त तेज किये हुये उन हाथियों को मर्दन करनेका अभिलाषी धृष्टद्युम्न बाण और नाराचों से बर्षा करनेवाला हुआ ५ हे भरतबंशी उन पर्व्वताकार हरएक हाथीको फेंके हुये दश छः और आठ बाणों से घायलकिया जैसे कि बादलों से सूर्य्य ढक जाताहै उस रीति से धृष्टद्युम्नको हाथियों से घिरा हुआ देखकर तीक्ष्ण शस्त्रधारी पाण्डव और पांचाल लोग गर्जतेहुये गये ६।७ प्रत्यंचा के शब्दों से शब्दायमान बाणों से हाथियों के सन्मुख बाण वृष्टि करने वाले नकुल और सहदेव और द्रौपदी के पुत्र वा प्रभद्रक ८ सात्यकी शिखंडी चेकितान नाम पराक्रमी बीरों ने चारों ओरसे ऐसे सींचा जैसे कि जलकी धाराओं से बादल पर्वतोंको सींचताहै ९ बरछों से भिदेहुये उन अत्यन्त क्रोधयुक्त हाथियों ने मनुष्य घोड़े और रथों को भी सूंड़ों से पकड़ २ पटक पटक कर पैरों से मर्द्दनकिया और किसी २ को दांतोंकी नोकों से घायल कर करके घुमाकर दूर फेंकदिया और दांतों में चिपटेहुये अन्य भयानकरूप जीवभी गिरपड़े १०। ११ सात्यकी ने सन्मुख वर्त्तमान राजा अंगके हाथीको उग्रवेगी नाराचसे मर्मस्थलों में छेदकर गिरादिया १२ फिर सात्यकी ने उन प्रहारों से बचेहुये शरीरवाले हाथी से उछलने के अभिलाषी राजा अंगकी छातीको नाराच से घायल किया तब वह पृथ्वी पर गिरपड़ा १३ सहदेव ने पुण्ड्र के राजा के हाथी को चलायमान पर्वत के समान आतेहुये को बड़े उपायसे चलाये हुये तीन नाराचों से घायल किया १४ सहदेव उस हाथीको पताका हाथीवान कवच और ध्वजा समेत मार कर राजा अंगके सन्मुखगया १५ फिर नकुल ने सहदेवको रोककर यमराज के दण्डके समान तीन नाराचोंसे हाथी को और सौसे उस राजा अंगको घायल

करके व्यथित किया १६ फिर राजा अंगने सूर्यकी किरणों के समान प्रकाशित आठसौ तोमरों को नकुल के ऊपर फेंका तब नकुल ने प्रत्येक तोमरके तीन २ खंडकरदिये १७ और अर्द्धचंद्रसे उसके शिरको काटा तब वह मृतक होकर अपने हाथी समेत गिरपड़ा १८ फिर हाथीकी शिक्षामें कुशल इस अंगदेशी राजपुत्र के मरनेपर अत्यन्त क्रोध में भरेहुये अंगदेशी हाथी सवार अपने हाथियों समेत नकुलके सन्मुख गये १९ चलायमान सुन्दर मुख रखनेवाली पताका और सुवर्ण के कवचधारी हाथियों समेत नकुलके पीड़ा करने के अभिलाषी होकर अत्यंत प्रकाशमान पर्वतों के समान उसके सन्मुख गये २० फिर वह मारने के आकांक्षी मेकल उत्कल कलिंग निषद ताम्र लिप्तक देशी युद्धकर्त्ता बाण और तोमरोंकी बर्षा करतेहुये सन्मुखगये २१ जैसे बादल से सूर्य ढकजाताहै उसीप्रकार हाथियों से ढकेहुये नकुल को देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पांचाल युद्ध करने को उपस्थित हुये २२ उसके पीछे हजारों तोमर और बाणोंकी बर्षा करनेवाले रथियोंका वह युद्ध हाथियों के साथहुआ २३ जिसमें अत्यंत घायल हाथियों के कुंभ और नानामर्मांग वा दांत वा आभूषणों को नाराचों से काटा २४ सहदेवने उन हाथियों मेंसे बहुत बड़े २ हाथियों को मारा वह सब मरेहुये हाथी अपने २ सवारों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े २५ फिर नकुल ने बड़े उपाय से उत्तम धनुषको चढ़ाकर सीधे चलनेवाले बाणों से हाथियों को मारा २६ इसके पीछे धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र प्रभद्रक नाम क्षत्री और शिखंडी ने बाणोंकी बर्षा से बड़े २ हाथियोंको व्यथित किया २७ वह शत्रुओं के पर्वताकार हाथी पांडवी युद्धकर्त्ता रूपी बादलोंकी बाणरूप बर्षा से ऐसे गिरपड़े जैसे कि बज्रोंकी बर्षा से पर्वत गिरते हैं २८ इसप्रकारसे उन पाण्डवों के हाथी और रथियों ने आपके हाथियों को मारकर सेनाको ऐसे भागता देखा जैसे कि टूटा किनारा भागती हुई नदीको देखता है २९ पाण्डवों की सेनाके मनुष्य उस सेनाको छिन्नभिन्न करके कर्ण के सन्मुख गये ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअन्योन्ययुद्धेत्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज भाई दुश्शासन उस आपकी सेना के नाश करने

वाले क्रोधयुक्त भाई सहदेव के सन्मुख गया १ वहां महायुद्ध में भिड़ेहुये उन
दोनों को देखकर सिंहनाद किये और दुपट्टों को फिराया इसके पीछे क्रोधयुक्त
आपके पुत्र के तीन बाणों से महाबली सहदेव छातीपर घायल हुआ २ । ३ हे
राजा तबतो क्रोधकरके सहदेव ने नाराचसे आपके पुत्रको छेदकर सत्तरबाणों
से पीड़ामान किया ४ और तीन बाणों से सारथी को हे राजा इसके पीछे दु-
श्शासन ने उस बड़े युद्ध में धनुषको काटकर सहदेव की दोनों भुजाओं को
तिहत्तर बाणों से छाती समेत घायल किया ५ फिर अत्यंत क्रोधयुक्त सहदेवने
उस महायुद्ध में खड्ग को लेकर अत्यंत शीघ्रतासे घुमाकर आपके पुत्रके ऊपर
छोड़ा ६ वह बड़ा खड्ग उसके प्रत्यंचा समेत धनुषको काटकर पृथ्वी पर ऐसे
गिरपड़ा जैसे कि आकाशसे सर्प गिरताहै ७ उसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने
दूसरे धनुषको लेकर फिर नाश करनेवाले बाणको दुश्शासन के ऊपर फेंका ८
तब उस कौरव दुश्शासन ने यमदंड के समान प्रकाशमान आतेहुये बाणको
अपने तीक्ष्ण धारवाले खड्ग से दो टुकड़े करदिया इसके पीछे शीघ्रता करने
वाले महापराक्रमी सहदेव ने उस तीक्ष्णधार खड्ग को घुमाकर और दूसरे ध-
नुषको लेकर बाणको हाथमें लिया ९ । १० फिर युद्ध में हँसतेहुये सहदेवने उस
अकस्मात् आतेहुये खड्गको तीक्ष्ण बाणों से गिराया ११ हे भरतवंशी इसके
पीछे उस महायुद्ध में आपके पुत्रने शीघ्रही चौंसठ बाणों को सहदेव के रथपर
चलाया १२ उन वेगसे आतेहुये बाणों को देखकर सहदेव ने पांच बाणों से
काटा १३ फिर उसने आपके पुत्रके चलायेहुये वेगवान् बाणों को हटाकर युद्ध
में उसके ऊपर बहुतसे बाणों की बर्षाकरी १४ आपका पुत्रभी उन प्रत्येक बा-
ण को तीन बाणों से काटकर पृथ्वीको फाड़ता हुआ बड़े शब्दों से गर्जा १५
हे राजा इसके पीछे दुश्शासन ने युद्ध में सहदेव को घायलकरके उसके सार-
थीको नौ बाणों से घायल किया १६ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी
सहदेव ने मृत्युकाल और कालदंड के समान घोर बाणको हाथ में लिया १७
और अपने पराक्रम से धनुषको खैंचकर आपके पुत्रपर फेंका वह बाण उसको
छेद के कवचको काटकर पृथ्वी में ऐसे समागया १८ जैसे कि बामी में सर्प्प
समाजाता है हे महाराज इसके पीछे आपका महारथी पुत्र अचेत होगया १९
अत्यंत भयानक तीक्ष्ण बाण से घायल रथको चलाता हुआ सारथी उसको

अचेत जानकर शीघ्रही दूर लेगया २० पांडुनन्दन ने इस कौरव को बिजयकरके और दुर्य्योधन की सेनाको देखकर चारों ओरसे मर्द्दन किया २१ हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र जैसे कि मनुष्य क्रोधयुक्त होकर चैंटियों की पंक्तियों को मर्द्दन करता है उसीप्रकार उसके हाथ वह कौरवी सेना मर्द्दन करीगई २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनयुद्धोनामचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा सूर्य्यके पुत्र कर्णने क्रोधसे युद्धसे सेनाको भगानेवाले वेगवान् नकुलको रोका १ उसके पीछे हँसताहुआ नकुल कर्ण से यह बोला कि बड़े दुःखकी बातहै कि देवताओं ने बहुतकाल के पीछे मुझको अपनी कृपादृष्टि से देखा हे पापी युद्धमें नेत्रोंके सन्मुख आयेहुये मुझको देखा २ तूही शत्रुता उपद्रव और अनर्थोंका मूलहै ३ तेरेही अपराध से कौरव परस्पर सन्मुख होकर नाशवान् होगये अब मैं युद्धमें तुझको मारकर कृतकृत्यहोकर तपसे निवृत्तहूं इस प्रकारके वचनोंको सुनकर कर्णने नकुलको उत्तर दिया ४ कि अधिकतर धनुषधारी राजकुमारके योग्यहै हे बीर तू मुझपर प्रहार कर मैं तेरीबीरताको देखूंगा हे शूर प्रथम युद्धमें अपने शूरतारूपी कर्म को करके फिर अपनी प्रशंसा करने को योग्यहै ५। ६ हे तात शूरबीर युद्धमें कुछ न कहकर सामर्थ्य से लड़ते हैं तू अपनी सामर्थ्य से मेरे संग युद्धकर मैं तेरे अभिमान को दूरकरूंगा ७ कर्णने यह कहकर शीघ्रही नकुल पर प्रहार किया अर्थात् युद्धमें इसको तिहत्तरबाणों से घायल किया ८ हे भरतबंशी इसके पीछे कर्ण के हाथ से घायल नकुलने सर्पके समान अस्सी बाणों से सूर्य्य के पुत्रको छेदा ९ कर्ण ने सुनहरी पुंख और तीक्ष्णधारवाले बाणों से उसके धनुष को काटकर तीस बाणों से नकुलको पीड़ित किया १० उन बाणों ने उसके कवच को काटकर रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि बिषधर सर्प पृथ्वी को छेदकर जलको पीताहै ११ इसके पीछे नकुल ने सुवर्ण पृष्ठवाले असह्य दूसरे धनुष को लेकर कर्ण को सत्तर बाण से और सारथी को तीनबाण से घायल किया १२ फिर क्रोधयुक्त शत्रु के बीरों के मारनेवाले नकुल ने बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे कर्णके धनुषको काटा १३ फिर हँसतेहुये बीर नकुल

किया १४ हे श्रेष्ठ तब तो नकुल के हाथ से पीड़ामान कर्णको देखकर रथियों ने देवताओं समेत बड़ा भारी आश्चर्य्य किया १५ तब सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने दूसरे धनुषको लेकर नकुलको पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया १६ वहां जत्रुस्थानमें नियत होनेवाले बाणोंसे नकुल ऐसा शोभायमान हुआ १७ जैसे कि संसारमें प्रकाश करताहुआ सूर्य्य अपनी किरणों से शोभायमान होताहै हे श्रेष्ठ इसकेपीछे नकुलने शीघ्रगामी सातबाणोंसे कर्णको छेदकर फिर उसके धनुषकी कोटिकोकाटा १८ इसकेपीछे उसने बड़े वेगवान् दूसरे धनुषकोलेकर युद्धमें बाणों करके नकुलकी दिशाओं को ढकदिया १९ अकस्मात् कर्ण के बाणोंसे घिरेहुये उस महारथीने अपने बाणोंसे ही कर्णके बाणोंको काटा २० इसके पीछे आकाश में बाणोंका जाल फैलाहुआ ऐसा दिखाई दिया जिसप्रकार पटबीजनोंके समूहों से व्याप्त आकाश होताहै २१ हेराजा उन छोड़ेहुये सैकड़ों बाणों से नकुल ऐसा ढकगया जैसे कि शलभाओं के समूहों से कोई ढक जाताहै २२ वह सुवर्ण से चित्रित बारंबार गिरतेहुये पंक्तिरूप बाण ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि पंक्तिरूप क्रौंचनाम पक्षीहोते हैं २३ बाणजालसे आकाश को व्याप्त होजाने और सूर्य्यके ढकजाने से कोई अन्तरिक्षगामी जीव पृथ्वीपर नहींगिरा २४ बाणों के समूहों से चारों ओरके मार्गोंके रुकजानेपर दोनों महात्मा उदयमान काल सूर्य्यकेसमान शोभायमान हुये २५ हे राजेन्द्र कर्णके धनुषसे गिरेहुये बाणों के समूहों से घायल दुःखसे दुःखित और अत्यन्त पीड़ामान सब सोमक पृथक् २ होगये २६ इसीप्रकार नकुलके बाणोंसे घायल आपकी सेनाभी दिशाओं में ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायुके वेगसे बादलों के समूह तिर्रबिर्रहोजाते हैं २७ तब उन दोनों के दिव्य और बड़े बाणोंसे घायल वहदोनों सेना बाणोंकी आधिक्यता को बिचारकर चित्रलिखीसी खड़ी रहगई २८ कर्ण और नकुल के बाणोंसे उन मनुष्यों के समूहों के हटजानेपर उनदोनों महात्माओंने बाणोंकी बर्षा से परस्पर में घायल किया २९ परस्पर मारने के अभिलाषी वह दोनों अकस्मात् सेनाके मस्तकपर दिव्य शस्त्रोंके दिखानेवाले और सेनाओं के ढकनेवाले हुये ३० नकुल के छोड़े कंकपक्षसे जटितबाण कर्णको ढककर आकाश में नियतहुये ३१ इसीप्रकार कर्णके चलाये हुये बाण नकुलको ढककर आकाश में नियतहुये ३२ हे राजा बादलों से ढकेहुये सूर्य्य और चन्द्रमा के समान बाणपिंजरमें प्रविष्ट हो-

कर वहदोनों किसीको दिखाई नहींदिये ३३ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण ने शरीरको बड़ाघोर करके ३४ बाणोंकी बर्षासे नकुलको चारों ओरसे ढकदिया हे महाराज कर्णके बाणोंसे ढकेहुये उस नकुलने ऐसे पीड़ाको नहीं माना जैसे कि बादलों से ढकाहुआ सूर्य्य पीड़ाको नहीं मानताहै ३५ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्ण ने हँसकर युद्धमें हजारों बाणजालों को उत्पन्न किया ३६ उस महात्मा के बाणों से सब संसार छायामान हुआ और गिरते हुये उत्तम बाणों से अभ्र के समान छाया उत्पन्न होगई ३७ हेमहाराज इसके पीछे हँसतेहुये कर्ण ने महात्मा नकुलके धनुष को काटकर सारथी को रथकी नींड़से गिरादिया ३८ हे भरतबंशी इसके अनन्तर तीक्ष्णधार चार बाणों से उसके चारों घोड़ों को शीघ्र ही मारकर यमपुर को भेजा ३९ इस के पीछे फिर तीक्ष्ण बाणों से इसके उस दिब्यरथ पताका और चक्रके रक्षकों समेत गदा और खड्गको भी तिलके समान खंड २ करदिया ४० और सूर्य्य चन्द्रमा के चित्रवाली ढाल और अन्य सब प्रकारके अस्त्र शस्त्रोंको भी काटडाला हे राजा वह रथ और कवचसे बिहीन शीघ्रही रथसे उतरकर ४१ परिघको लेकर नियतहुआ तब कर्ण ने उसके उठायेहुये उस महाघोर परिघ को ४२ अत्यन्त तीक्ष्ण भारवाहक बाणोंसे तोड़ डाला तबतो कर्णने उसको शस्त्रहीन देखकर टेढ़े पर्ववाले ४३ अनेकबाणों से उसको घायल किया परन्तु इसको अधिक पीड़ामान नहीं किया युद्धमें उस शस्त्रज्ञ पराक्रमी कर्णसे घायल ४४ होकर महाब्याकुल नकुल अकस्मात्भागा तबतो बारंबार हँसतेहुये कर्णने उसके पासजाकर ४५ अपनी प्रत्यंचा समेत धनुषको उसके कण्ठमें डालदिया इसकेपीछे वह नकुल कण्ठमें लगेहुये उस धनुषसे ऐसाशोभायमान हुआ ४६ जैसे कि आकाशमें चन्द्रमा अपने मण्डलसे युक्त होताहै और जैसे कि श्याममेघ इन्द्रधनुष से शोभित होताहै ४७ इसकेपीछे कर्णने कहाकि तुमने मिथ्या कहाथा अब बारंबार घायल हुये प्रसन्नचित्तहोकर फिर कहो ४८ हे पराक्रमी पाण्डव तुम कौरवों के साथ मतलड़ो हे तात अपने समानवालों से लड़ो हे पाण्डव लज्जा मतकरो ४९ हे माद्रीकेपुत्र घरकोजावो अथवा जहां श्रीकृष्ण और अर्जुनहैं वहां जावो हेमहाराज ऐसा कह कर उसको छोड़ दिया ५० तब उस धर्मज्ञ शूरबीरने मारनेके योग्यको नहीं मारा हेराजा कुन्तीके बचनको स्मरण करके उसको छोड़दिया ५१ फिर धनुषधारी कर्ण

से छोड़ाहुआ नकुल लज्जा युक्त शीघ्रही युधिष्ठिरके रथके पासगया ५२ कर्ण से अत्यन्त सन्तप्त कियाहुआ घटमें बन्दहुये सर्प के समान दुःखसे दुःखी बारंबार श्वास लेताहुआ रथके ऊपरभी सवारहुआ ५३ कर्ण भी उसको बिजयकर के शीघ्रही बड़ा पताकावाले चन्द्रबर्ण घोड़े रखनेवाले रथकी सवारी से पांचालों के सन्मुखगया ५४ वहां पांचालों के रथ समूहों पर जातेहुये सेनापतिको देखकर पाण्डवों में बड़ा शब्दहुआ ५५ हे महाराज महाचक्रके समान घूमतेहुये कर्ण ने मध्याह्नके समय शूरबीरों का नाशकिया ५६ उससमय हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वहांपर हमने टूटीहुई ध्वजा पताका फूटी आंखके मृतक घोड़े और सारथियों समेत कितनेही रथोंसे ५७ हटेहुये पांचालों के रथ समूहों को देखा वहां भ्रांति युक्त हाथी और रथ जहां तहां ऐसे घूमतेथे ५८ जैसे कि महाबनमें दावानलसे जलेहुये हाथी होते हैं टूटेहुये कुम्भ रुधिरसेभरे खण्डितहाथ ५९ अंगभंग आदि और कोईपूंछकटेहुये हाथी महात्माके हाथसे घायल टूटेहुये बादलों के समान गिरपड़े ६० नाराचबाण और तोमरों से भयभीत हाथी उसके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि शलभानाम पक्षी अग्निके सन्मुख जाते हैं ६१ जल डालनेवाले पर्ब्बतोंकी समान अंगोंसे रुधिरकी रक्षा करतेहुये अन्य बड़े २ हाथी शब्द करते हुये दृष्टपड़े ६२ वहां हमने उरःछिदवाले बालबन्दों से बियुक्त घोड़ों को सुवर्ण चांदी और कांसे के भूषणों से पृथक् ६३ और अन्य २ भूषण और लगामों के बिना चामर जीनपोश और गिरेहुये तूणीर ६४ और युद्धमें शोभादेनेवाले शूरबीर सवारों सहित युद्धभूमि में घूमते हुओंको देखा ६५ हे भरतबंशी हमने प्रास खड्ग और दुधारे खड्ग से रहित लोहे के कवच और दिस्तारों के धारण करनेवाले अश्वारूढ़ों को देखा ६६ और मरे वा मरनेवाले अथवा कांपते हुये नानाप्रकार के अंगोंसे रहित युद्ध करनेवालोंकोभी जहां तहां देखा ६७ हमने रथियों के मरनेपर सुवर्णसे जटित शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त शीघ्रघूमतेहुये रथों को देखा ६८ हे भरतबंशी हमने अक्ष कूबर और पायेवाले पताका ध्वजा से रहित कितनेही अन्य रथों को देखा ६९ वहां कर्ण के तीक्ष्ण बाणों से घायल मृतकरूप जहां तहां दौड़नेवाले रथियों को देखा ७० इसीप्रकार शस्त्रों से खाली बाणरखनेवाले बहुतसे मृतकों को देखा और तारका जालों से ढकेहुये उत्तम कण्ठोंसे शोभायमान ७१ नानाप्रकारकी बिचित्र पताकाओं से अलंकृत चारों

ओरसे दौड़नेवाले हाथियों को देखा ७२ इसीप्रकार चारोंओरको कर्ण के धनुषसे निकलेहुये बाणों से टूटेहुये शिर भुजा और जंघाओंको देखा ७३ कर्णके बाणों से घायल और तेजबाणों से लड़नेवाले युद्धकर्त्ताओं का बड़ा भयानक दुःख वर्त्तमानहुआ ७४ युद्धमें कर्ण के हाथसे घायल वह संजय उसके सन्मुख ऐसे जातेथे जैसे कि अग्निके सन्मुख पतंग जाते हैं ७५ प्रलयकालकी अग्नि के समान जहां तहां सेनाओं के भस्मकरनेवाले उस महारथी कर्णको क्षत्रियों ने त्यागकिया ७६ जो पांचालोंके महारथी बीरलोग मरनेसे बाकी रहे थे उन शीघ्रगामी पृथक् २ होनेवाले महारथियों के पीछेसे बाणोंको छोड़ताहुआ कर्ण सन्मुख दौड़ा ७७ उसमहाबली सूतपुत्रने उन टूटेकवच ध्वजावाले दुःखी बीरों को बाणोंसे ऐसे संतप्तकिया ७८ जैसे कि मध्याह्नके समय सूर्य्य जीवधारियों को तपाताहै ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णयुद्धेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आपके पुत्र युयुत्सूकी सेनाके भगानेवाले उलूकके सन्मुख गया और तिष्ठतिष्ठ इस बचनको कहा १ हे राजा उसके पीछे युयुत्सूने बज्रकी समान तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे महाबली उलूकको घायलकिया २ फिर क्रोध युक्त उलूकने युद्ध में आपके पुत्रके धनुषको क्षुरप्रसे काटकर करणीनाम बाण से उसको घायलकिया ३ फिर लालनेत्र करनेवाले युयुत्सूने उस टूटे धनुष को डालकर दूसरे बड़े वेगवान् उत्तम धनुषको हाथमें लिया ४ उसके पीछे शकुनि के पुत्रको सात बाणों से और तीनबाणों से सारथी को घायल करके बारम्बार छेदा ५ फिर उलूकने उसको सुवर्ण से चित्रित बीसबाणों से घायलकरके महा क्रोधमें भरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ६ हे राजा वह टूटीहुई बड़ीभारी सुवर्ण की ध्वजा युयुत्सूके सन्मुख गिरपड़ी ७ फिर क्रोध से मूर्च्छित युयुत्सू ने ध्वजाको टूटीहुई देखकर पांच बाणों से उलूक को छाती पर घायल किया हे श्रेष्ठ राजा फिर उलूकने युद्धमें तेलसे स्वच्छ कियेहुये भल्लोंसे उसके सारथी के शिरको काटा ८ । ९ तब युयुत्सूके सारथी का वह कटाहुआ शिर पृथ्वीपर ऐसा गिरा जैसे अपूर्व्व तारा आकाशसे पृथ्वीपर गिरता है १० चारों घोड़ोंको

मारा और उसको पांचबाणोंसे भेदा फिर इस पराक्रमीके हाथसे घायल वह युयुत्सू दूसरे रथपर चलागया। ११ हे राजा युद्धमें उलूक उसको विजय करके शीघ्रतासे तीक्ष्णबाणों को फेंकता पांचालों और सृंजियोंको मारताहुआ सृंजियों के सन्मुखगया १२ हेमहाराज भयसे उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलतासे रहित आपके पुत्र श्रुतकर्माने अर्द्धनिमेष मारनेमें ही शतानीकको घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया १३ फिर मृतक घोड़ेवाले रथपर नियत अत्यन्त क्रोध युक्त शतानीकने आपके पुत्रके ऊपर गदाको फेंका १४ वह गदा रथ घोड़े सारथी समेत रथको भस्मकर कवचको फाड़तीहुई शीघ्र पृथ्वीपर गिरपड़ी १५ रथसे बिहीन परस्पर में देखनेवाले कौरवोंकी कीर्त्ति के बढ़ानेवाले दोनों बीर युद्धमें हटगये १६ फिर भयसे उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलता से रहित आपका पुत्र रथ पर सवार हुआ और शीघ्रता करनेवाला शतानीक भी प्रतिविन्ध्य के रथपर गया १७ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से सुतसोम को ऐसे कम्पायमान नहीं किया जैसे कि जलका समूह पर्ब्बतको कंपित नहीं करसक्ता १८ हे भरतबंशी सुतसोमने पिताके बड़े शत्रु शकुनीको देखकर बहुत हजारों बाणोंसे ढकदिया १९ तेज अस्त्र और मित्रके अर्थ लड़नेवाले बिजयसे शोभायमान शकुनीने शीघ्रही दूसरे बाणोंसे उनबाणोंको काटा २० और क्रोध युक्तहोकर युद्धमें उन बाणोंकोभी तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे रोककर तीन बाणों से सुतसोमको घायलकिया २१ हेमहाराज आपके सालेने बाणोंसे उसके घोड़े ध्वजा और सारथीको तिलके समान खण्ड खण्ड किया इस हेतुसे सब मनुष्य बड़े शब्दसे पुकारे २२ हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र वह मृतक घोड़े और टूटी ध्वजावाला रथसे रहित होकर उत्तमरथको लेकर रथसे पृथ्वीपर खड़ाहुआ २३ सुनहरी पुंख वाले तीक्ष्ण धारवाले बाणोंको छोड़ताहुआ युद्धमें आपके साले के उसरथको ढकदिया २४ वह महारथी शकुनी शलभनाम पक्षी के समूहोंकी समान रथके समीप वर्त्तमान बाणोंके समूहोंको देखकर पीड़ामान नहीं हुआ २५ और बड़े यशस्वी ने अपने बाणों के समूहों से उसके बाणों को मथडाला उस स्थानपर युद्ध करनेवाले आकाशबासी सिद्ध भी प्रसन्न हुये २६ सुतसोमके उस अद्भुत और श्रद्धाके योग्य कर्मको देखकर प्रसन्न हुये और बहुत से पदाती और रथ सवार शकुनी के साथ युद्ध करनेवाले हुये २७ हे राजा तीक्ष्ण वा बड़े वेगवान्

टेढ़ेपर्व्ववाले भल्लों से उसके धनुष और सब तूणीरोंको तोड़ा २८ फिर वह टूटे धनुष रथ से बिहीन वैडूर्य्य और नील कमलके बर्ण हाथीदांत के मूठ रखनेवाले खड्गको उठाकर बड़ी ध्वनिसे गर्जा २९ उसके पीछे बुद्धिमान् सुतसोमके घुमाये हुये निर्मल आकाशके समान उस खड्गको कालदण्डके समानसमझा ३० हे महाराज वह शिक्षायुक्त पराक्रमी खड्गधारी एकाएकी हजारों प्रकारसे चौदह मंडलोंको घूमा ३१ उनके नाम भ्रांत, उद्भ्रांत, आविद्ध, आप्लुत, विप्लुत, सृतसंपात समुदीर्ण इन मंडलोंको युद्धमें दिखाया यह सातमंडल लोम विलोमके बिभागसे द्विगुणितहोकर चौदह होजाते हैं ३२ फिर उसके पीछे पराक्रमी शकुनी ने बाणों को उसके ऊपर फेंका उसने उन आतेहुये बाणों को उत्तम खड्गसे काटा ३३ हे महाराज इसके अनन्तर क्रोधयुक्त शकुनी ने फिरभी सर्पके बिषकेसमान बाणों को सुतसोमके ऊपर फेंका ३४ युद्धमें गरुड़जी के समान पराक्रमी सुतसोम ने अपनी हस्तलाघवताको दिखातेहुये खड्गकी शिक्षाके पराक्रमसे उन बाणोंको काटा ३५ हेराजा तब दायेंबायें मण्डलोंके घूमनेवाले उस सुतसोमके प्रकाशमान खड्गको बड़े तीक्ष्ण क्षुरप्रसे काटा और रुकाहुआ खड्ग एकबारही पृथ्वीपर पड़ा और उस श्रेष्ठ खड्गका आधाभाग उसके हाथमें नियतरहा ३६। ३७ महारथी सुतसोमने खड्ग को टूटा जानकर और छः चरण हटकर फिर उस आधे खड्ग को प्रहार किया ३८ वह सुवर्ण और हीरों से अलंकृत खड्ग उस महात्माके डोरी समेत धनुषको काटकर शीघ्रही पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ फिर सुतसोम श्रुतिकीर्त्ति के बड़े रथपर चलागया और शकुनीभी बड़े कष्टसे बिजय होनेवाले दूसरे घोर धनुष को लेकर ४० शत्रुओं के बहुत से समूहों को मारताहुआ पाण्डवी सेना के सन्मुख गया हे राजा युद्ध में निर्भय के समान घूमनेवाले शकुनी को देख कर पाण्डवों के बड़े शब्द हुये महात्मा शकुनी के हाथ से वह अहंकारी शस्त्रों की धारण करनेवाली सेना भागतीहुई दृष्ट पड़ी जैसे कि देवराज इन्द्र ने दैत्यों की सेनाको मर्द्दन किया इसीप्रकार शकुनी ने भी पाण्डवों की सेना का नाश किया ४१। ४२। ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसुतसोमसौबलयुद्धेषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे राजा कृपाचार्य ने युद्धमें धृष्टद्युम्नको ऐसे रोका जैसे कि बन में हाथीको सिंह रोकताहै १ हे भरतवंशी वहां उसपराक्रमी गौतम कृपाचार्यजीसे रुकाहुआ धृष्टद्युम्न एकचरण चलनेकोभी समर्थ नहींहुआ २ कृपाचार्यके रथको धृष्टद्युम्न के रथके समीप देखकर सब जीवमात्र भयभीत होकर नाशको मानने लगे ३ वहांपर चित्तसे उदास होकर रथी और अश्वारूढ़ कहनेलगे कि निश्चय करके द्रोणाचार्य के मरने से द्विपादों में श्रेष्ठ ४ बड़े तेजस्वी दिव्यास्त्रों के जाननेवाले बड़े बुद्धिमान् शार्दूलरूप कृपाचार्य अत्यन्त क्रोधयुक्तहैं अब कृपाचार्य्य के हाथसे धृष्टद्युम्नकी कुशल ५ और इस सब सेनाकाभी भयसे निवृत्त होना और हम सब भागने वालोंकाभी इस ब्राह्मणसे बचना कठिन बिदित होताहै ६ क्योंकि यह आचार्य्य रूप कालके समान दृष्ट पड़ताहै हे कृपाचार्य्य अब द्रोणाचार्य्य के मार्गपर चलेंगे ७ यह कृपाचार्य्य सदैव हस्तलाघव करके युद्धमें बिजयका पानेवाला अस्त्रज्ञ पराक्रमी होकर क्रोधयुक्त है ८ अब धृष्टद्युम्न युद्ध में मुखको फेरनेवाला दिखाई देता हे महाराज वहां उनदोनों के सन्मुख होने में आपके पुत्रों के नानाप्रकारके शब्द दूसरों के साथमें कहे हुये सुनेगये ९ इसके पीछे शार्दूल कृपाचार्य्य ने क्रोधसे बड़ी २ श्वासें लेकर १० सदैव चेष्टाकरनेवाले धृष्टद्युम्नको सबअंगों पर पीड़ामान किया फिर महात्मा कृपाचार्य्य से घायलहोकर बड़े मोह में ब्याकुल होके उसने युद्ध में ११ करने के योग्य कर्म को नहीं जाना इस के पीछे सारथी ने कहा हे धृष्टद्युम्न कुशल है १२ मैंने कहीं तेरे ऐसे समयको नहीं देखाथा दैवयोग से सब ओर में तेरे मर्म्मस्थलों को लक्ष करके इस उत्तम ब्राह्मणके फेंकेहुये बाण तेरे मर्म्मों के छेदने वाले मर्म्मों पर पड़े हैं जो तुमकहो तो रथको शीघ्रही ऐसे लौटाऊं जैसे कि समुद्र से नदीके वेग को हटाते हैं १३ । १४मैं ब्राह्मणको अबध्य मानताहूं इसीसे तेरा पराक्रम नष्ट होगया है हे राजा यह सारथी के बचन को सुनकर धृष्टद्युम्न बड़े धीरेपनेसे यहबचन बोला १५ हे तात मेराचित्त अचेत होताहै और अंगोंपर पसीना उत्पन्न होताहै और शरीरमें कंप और रोमांच खड़े हैं १६ युद्धमें ब्राह्मणको त्यागकरके उधरको बड़ेधीरे २ चल जहां कि अर्ज्जुन है हे सारथी अबयुद्धमें अर्ज्जुनको या भीम-

सेनको पाकर १७ कुशलहोगी यही मेरा दृढ़ बिश्वासहै हे महाराज इसके पीछे वह सारथी घोड़ों को मारता हुआ १८ बड़ी शीघ्रता से वहां गया जहां बड़ा धनुर्द्धर भीमसेन आपकी सेनाके मनुष्यों से युद्ध कररहाथा हे श्रेष्ठ तब गौतम कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्न के रथको भागाहुआ देखकर १९ सैकड़ों बाणों को छोड़ते हुये उसके पीछे गये और शत्रु के बिजय करनेवाले ने बारम्बार शंखको बजाया २० और धृष्टद्युम्न को ऐसे भयभीत किया जैसे कि इन्द्रने नमुचिको भयभीत कियाथा फिर भीष्मजी के मृत्युरूप बिजयी शिखण्डीको २१ बारम्बार मंद मुसकान करतेहुये कृतबर्मा ने रोका तबतो शिखण्डी ने भी हार्दिक्यों के महारथी को पाकर तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणों से जत्रुस्थानपर घायलकिया फिर हँसतेहुये महारथीकृतबर्मा ने साठबाणों से २२।२३ शिखण्डीको घायलकरके एकबाणसे उसके धनुषकोकाटा फिर पराक्रमी द्रुपदकेपुत्रने दूसरे धनुषको लेकर २४ अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर कृतवर्म्मासे तिष्ठ २ ऐसाबचनकहा हेराजा इसके अनन्तर सुनहरी पुंखवाले नौबाणोंको उसके ऊपर चलाया २५ वहबाण उसके कवचपर लगकर गिरपड़े उन निष्फल पृथ्वीपरगिरेहुये बाणोंको देखकर २६ अत्यन्त तीक्ष्ण क्षुरप्र से धनुषकोकाटा फिर टूटे धनुषवाले कृतबर्मा को २७ शिखण्डी ने क्रोधयुक्त होकर अस्सी बाणों से छाती और भुजापर घायल किया तब अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतबर्मा ने अंगों से ऐसे रुधिरको डाला जैसे कि मटके से जल डालाजाताहै फिर रुधिरसे भराहुआ कृतबर्मा ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि बर्षा से धातु रखने वाला पर्वतहोताहै इसकेपीछे प्रभुकृतबर्मा ने बाणसमेत धनुषको लेकर २८।२९।३० बाणों के समूहों से शिखण्डी को स्कंधस्थान में घायल किया फिर शिखण्डी स्कंधपर लगेहुये बाणों से ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि छोटी बड़ीशाखाओं से बड़ावृक्ष शोभित होताहै ३१ वह दोनों परस्परमें अत्यन्त घायल और रुधिर में भरेहुये ऐसे शोभितहुये ३२ जैसे कि परस्पर सींगों से घायल दो बैल होते हैं परस्परमें मारने की इच्छा करनेवाले वहदोनों महारथी ३३ वहां हजारों मंडलोंको घूमे हे महाराज कृतबर्म्मा ने शिखण्डी को ३४ तीक्ष्णधार सुनहरी पुंख वाले सत्तर बाणों से घायल किया इसके पीछे शीघ्रता युक्त युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ भोजबंशी कृतबर्मा ने युद्धमें ३५ मृत्युकारी घोरबाणको उसके ऊपर छोड़ा हे राजा वह शिखण्डी उस बाणसे घायल होकर शीघ्र मूर्च्छा युक्त होगया ३६

और मूर्च्छा से अचेत होकर अकस्मात् ध्वजा की यष्टीका आश्रयलिया और सारथी इस महारथी को शीघ्रही युद्धसे दूर लेगया ३७ इस शूरबीर शिखण्डीके परास्त होनेपर कृतबर्मा के बाणसे दुःखी बारम्बार श्वास लेनेवाली चारों ओरसे घायल वह पाण्डवी सेना भागी ३८ । ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे अर्ज्जुन ने आपकी सेना को पाकर चारों ओरसे छिन्न भिन्न ऐसा करदिया जैसे कि बायु रुईको तिर बिर कर देताहै १ तब त्रिगर्त्त, शिवी, शाल्व, संसप्तक और कौरवों की नारायणी सेना उसके सन्मुख गई हे भरतबंशी सत्यसेन, चन्द्रदेव, मित्रदेव, शत्रुञ्जय, सौश्रुति, चित्रसेन, मित्रबर्म्मा और बड़े धनुर्द्धारी अपने पुत्र भाइयों समेत राजा त्रिगर्त्त ने २ । ३ । ४ बाणों के समूहों को छोड़ा और युद्ध में अर्ज्जुन पर एकाएकी बाणों की बर्षा करतेहुये सन्मुख वर्त्तमान होकर ऐसे बिलायमान होगये जैसे कि गरुड़ को देखकर सर्प बिलायमान होते हैं ५ । ६ हे महाराज युद्ध में घायल उन युद्धकर्त्ताओं ने पाण्डवों को ऐसे त्याग नहीं किया जैसे कि घायलहुये शलभ अग्निको नहीं त्याग करते हैं ७ सुतसेन ने तीन बाणसे मित्रदेवने तिरेसठ बाणों से चन्द्रसेन ने सात बाणों से युद्धमें पाण्डवोंको घायल किया ८ मित्रबर्माने तिहत्तर बाणों से सौश्रुतिने सातबाणों से शत्रुंजयने बीस बाणोंसे सुशर्माने नौबाणों से ९ घायलकिया बहुतोंके हाथसे घायल उस अर्जुनने इसक्रमसे युद्धमें उन राजाओंको घायलकिया कि सौश्रुतिको सातबाणोंसे सुतसेनको तीन बाणों से शत्रुंजयको बीसबाणों से चन्द्रसेनको आठबाण से मित्रदेवको सौबाणसे श्रुतिसेनको तीन बाणसे १० । ११ मित्रबर्माको नौबाणों से सुशर्मा को आठबाण से घायलकिया और राजा शत्रुंजय को बाणों से मार कर १२ सौश्रुतिके शिरको धड़समेत शरीरसे जुदाकरदिया और शीघ्रही चन्द्रदेवको बाणोंके द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १३ हे महाराज इसीप्रकार उपाय करनेवाले अन्य महारथियों कोभी पांच २ बाणोंसे रोका १४ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतिसेनने युद्धमें श्रीकृष्णजीको लक्ष्यकर उनके ऊपर बड़े तोमरको फेंक सिंह-

नादसे गर्जा वह सुवर्ण दण्डवाला लोहेका तोमर महात्मा माधवजी की बाम भुजाको छेदकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १५ । १६ उससमय उस बड़ेयुद्ध में घायल माधवजीके हाथसे चाबुक और घोड़ोंकी रस्सियां छूटगईं १७ हे राजा तब कुंती के पुत्र अर्जुनने बासुदेवजी को अंगसे घायल देखकर बड़ा क्रोधकिया और श्रीकृष्णजी से कहनेलगा १८ हे महाबाहो प्रभु घोड़ोंको सुतसेन के पास पहुंचाओ मैं उसको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे यमलोकमें पहुंचाऊंगा १९ फिर श्रीकृष्णजीने पूर्व्वके समान दूसरेचाबुक और घोड़ोंकी डोरीको पकड़कर उनघोड़ों को सुतसेनके रथपरचलाया २० कुन्तीकेपुत्र महारथी अर्जुनने श्रीकृष्णको घायल देखकर तीक्ष्णबाणों से सुतसेन को रोककर २१ सेनाके मध्यमें अत्यन्त तीक्ष्णधारवाले भल्लों से उसराजाके कुण्डलोंसमेत बड़ेशिरको देहसे काटा २२ उसको मारकर तीक्ष्णबाणों से मित्रबर्माको और मत्स्यदंतनाम तीक्ष्णबाणों से उसके सारथीको मारा २३ हे श्रेष्ठ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी अर्जुनने सैकड़ों बाणोंसे संसप्तकों के हजारों समूहोंको गिराया २४ हे राजा उसके पीछे उसमहारथीने सुवर्ण पुंखवाले क्षुरप्रसे महात्मा मित्रसेनके शिरकोकाटा २५ और अत्यन्त क्रोधसे सुशर्माको जत्रुस्थानपर घायलकिया इसके पीछे क्रोधमें भरे दशों दिशाओं को शब्दायमान करनेवाले सब संसप्तकों ने अर्जुनको घेर कर शस्त्रोंके समूहोंसे घायलकिया इन्द्रकी समान पराक्रमी बड़े साहसी संसप्तकोंसे पीड़ामान महारथी अर्ज्जुनने २६ । २७ ऐन्द्रअस्त्रको प्रकट किया हे राजा उस ऐन्द्रास्त्रसे हजारोंबाण प्रकटहुये हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहांतहां टूटीहुई ध्वजा धनुष और पताकासमेत रथ बाजुओं के समेततूणीरोंके बड़े शब्दसुनेगये २८।२९ युद्ध में गिरनेवाले अक्ष चक्र बागडोर पोक्करबरूथ और पार्षदों के शब्द सुने गये ३० गिरतेहुये घोड़े प्रास दुधारा खड्ग गदा परिघ शक्ति तोमर और पट्टिशोंके भी बड़े २ शब्दसुनेगये ३१ चक्र शतघ्नी और जंघाओंसमेत भुजा कंठ सूत्र बाजूबन्द समेत केयूरों के शब्द सुनेगये ३२ हे भरतबंशी हार निष्क कवच छत्र ब्यजन और शिरोंके मुकुटोंसमेत जहांतहां बड़ाभारी शब्द सुनागया सुन्दर कुण्डल नेत्रवाले पूर्णचन्द्रमाके समान मुखोंसेयुक्त शिरोंके समूह पृथ्वी में गिरे हुये ऐसे शोभायमानथे जैसे कि आकाशमण्डल में तारागण चमकते हैं सुन्दर माला बस्त्रालंकार आदि चन्दनोंसे लिप्त ३३ । ३४ । ३५ मृतकोंके शरीर पृथ्वीपर

गिरेहुये दृष्टपड़े तब युद्धभूमि गंधर्व नगरके समान घोररूपहोगई ३६ वह सबपृथ्वी राजकुमार और महाबली क्षत्री और पड़ेहुये हाथी घोड़ों से ३७ युद्धमें ऐसीदुर्गम होगई जैसे कि पर्ब्बतोंके गिरनेसे होती है, वहां महात्मा पाण्डव अर्जुनके रथका मार्गनहींरहा ३८ इससे हे राजा भल्लों से शत्रुओंको और घोड़े हाथियोंको मारते हुये रथों के पाये बड़े पीड़ित होतेथे ३९ उन रुधिररूप कीच रखनेवाले युद्धमें उस घूमनेवाले अर्जुनके पीड़ामान पायोंको घोड़ों ने अच्छेप्रकारसे चलाया ४० मन और वायुके समान सदैव शीघ्रगामी वह घोड़े बहुत थकगये फिर धनुषधारी अर्जुनके हाथसे घायल वह सबसेना ४१ बहुधा मुखफेरकर सन्मुख नियत नहीं हुई तब वह कुन्तीनन्दन अर्जुन युद्धमें संसप्तकोंके बहुत समूहोंको बिजय करके निर्द्धूम अग्निके समान प्रकाशमान होकर शोभायमान हुआ ४२।४३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहासंसप्तकयुद्धेअष्टविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज निर्भय होनेवाले के समान आप राजा दुर्य्योधनने बहुत बाणोंके छोड़नेवाले युधिष्ठिर को रोका १ धर्मराजने उस अकस्मात् आते हुये आपके पुत्र महारथीको शीघ्र घायलकरके तिष्ठ तिष्ठ इसबचनको कहा २ फिर उसने तीक्ष्णधारवाले नौबाणोंसे उसको घायल किया और अत्यन्त क्रोध युक्त होकर उसने भल्लसे उसके सारथी को घायल किया ३ इसकेपीछे युधिष्ठिरने सुनहरी पुंखवाले तेरह बाणों को दुर्य्योधन के ऊपर फेंका ४ फिर महारथीने चारबाणों से उसके चारों घोड़ों को मारकर पांचवें बाणसे उसके सारथी का शिर शरीरसे जुदाकरदिया ५ फिर छठे बाण से राजाकी ध्वजाको सातवेंसे धनुषको और आठवें से खड्गको पृथ्वीपर गिराया फिर धर्मराजने पांचबाणोंसे राजा को अत्यन्त पीड़ित किया ६ तब वह उस मरेसारथी और घोड़ेवाले रथसे कूदकर बड़ी आपत्तियों में फँसाहुआ आपकापुत्र पृथ्वीपरही नियतहुआ फिर कर्ण अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य आदि उस आपत्ति में फँसेहुये राजाको देख कर ७।८ उसको चाहतेहुये अकस्मात् सन्मुख आनकर बर्त्तमान हुये फिर सब लोगोंने युधिष्ठिरको चारोंओरसे घेरकर युद्धमें पीछे २ चले हे राजा इसके पीछे युद्धजारीहुआ और उस महायुद्ध में हजारों बाजेबजे ९।१० और कलकला

शब्द प्रकटहुआ जिसस्थानपर पांचाल कौरवों से युद्ध कररहे थे ११ वहां मनुष्य मनुष्यसे हाथी हाथीसे रथी रथियों से घोड़े घोड़ेसे अश्वसवार अश्वसवारसे १२ हे महाराज उसयुद्धमें देखनेके योग्य बुद्धिसे बाहर शस्त्रों से संयुक्त नानाप्रकार से उत्तम द्वन्द्वयुद्ध हुये १३ युद्धमें बड़े वेगवान् परस्पर मारने के इच्छावान् उन सब सवारोंने अपूर्व तीव्रता पूर्वक चित्तरोचक युद्धकिया १४ और युद्धकर्त्ताओंकी वृत्तिमें नियत होकर उन लोगोंने युद्धमें परस्पर शस्त्रोंके प्रहारकिये और किसी दशामें भी मुखको न मोड़ा १५ हे राजा वह युद्ध एकमुहूर्त्तपर्यन्त देखने में बड़ा प्यारा हुआ इसके अनन्तर उन्मत्तों के समान बेमर्याद युद्ध वर्त्तमान हुआ १६ तीक्ष्ण धारवाले बाणों से चीरते हुये रथी ने हाथी को पाकर टेढ़ेपर्व्व वाले बाणों से मारकर यमपुरको भेजा १७ युद्धमें बहुतसे युद्धकर्त्ताओं को फेंकते हुये हाथियों ने जहां तहां घोड़ों को सन्मुख पाकर अत्यन्त भयकारक दशासे चीरडाला १८ बहुतसे घोड़े रखनेवाले अश्वसवारों ने उत्तम घोड़ों को घेरकर इधर उधर दौड़कर तलके शब्द किये १९ इसकेपीछे अश्वसवारोंने उस दौड़ते और भागतेहुये हाथियोंको बगल और पीठकी ओरसे घायलकिया २० हे राजा मतवाले हाथी बहुतसे घोड़ोंको भगाकर किसीने दांतों से किसीने पैरों से मलकर मारा २१ और क्रोधयुक्त होकर सवारोंसमेत घोड़ोंको दांतों से घायल किया फिर दूसरे पराक्रमियों ने अत्यन्त वेग से एकने एकको पकड़कर फेंक दिया २२ पदातियों के हाथसे इन्द्रियोंपर घायल हाथियों ने चारोंओरसे पीड़ा के घोर शब्द किये और दशों दिशाओं को भागे २३ फिर उस महायुद्ध में एकाएकी छोड़कर भागनेवाले पदातियों के आभूषणों को झुककर उस युद्धभूमि में से उठालिया २४ बिजय के चिह्न पानेवाले बड़ेबड़े हाथियों के सवारों ने हाथीको झुकाकर अपूर्व २ भूषणोंको लेलिया और उनको छेदा २५ वहां उन बड़े वेगवान् पराक्रमसे मदोन्मत्त पदातियों ने उन युद्ध करनेवाले हाथियों के सवारों को घेरकर मारा २६ बड़े युद्धमें अच्छे शिक्षित हाथियों की सूंड़ोंसे आकाश को फेंकेहुये अन्य युद्धकर्त्ता पृथ्वीपर गिरतेहुये दांतोंकी नोकोंसे अत्यन्त घायलहुये २७ कितनेही अकस्मात् पकड़कर दांतोंसे मारेगये और कितनेही पदाती सेनाके मध्यको पाकर २८ बड़े हाथियों से बारम्बार उछालेहुये होकर घायलहुये और कितनेही युद्धमें पंखेकेसमान घुमा २ कर मारेगये २९ हे राजा

कोई २ मनुष्य जो हाथियों के सन्मुखथे उनके शरीर उस युद्धभूमि में जहां तहां अत्यन्त घायलहुये ३० और कितनेही हाथी प्रास तोमर और शक्तियों से दोनों दांतोंके मध्यमें कुंभ और दन्तवेष्टोंपर कठिन घायलहुये ३१ बगलमें नियत बड़े भयानकरूप युद्धकर्त्ताओं के हाथसे घायलहोकर कितनेही हाथी रथ और रथके सवार वहां शरीर से घायल होकर गिरपड़े ३२ उस महायुद्धमें घोड़ोंसमेत सवारों ने ढाल बांधनेवाले पदातियों को बड़ी शीघ्रतासे अपने तोमरों से मर्द्दनकिया ३३ हे श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्र जहां तहां हाथियों ने आभूषणों से अलंकृत कितनेही रथियों को पाकर और पकड़कर ३४ अकस्मात् उस घोररूप युद्धमें फेंकदिया और नाराचों से घायल होकर बड़े २ पराक्रमी हाथी भी जहां तहां गिरपड़े ३५ युद्धमें शूरोंने शूरोंको पाकर मुष्टिकाओं से ब्यथितकिया ३६ और परस्पर शिरके बालों को पकड़कर एकने दूसरे को गिरादिया और घायलकिया और किसीने ध्वजाओं को उठाके पृथ्वीपर गिराकर ३७ चरण से छातीको दबाकर फड़कते हुये शिरोंको काटा ३८ इसीप्रकार दूसरोंनेभी शस्त्रको जीवते शरीरमें प्रवेश करदिया हे भरतबंशी वहां युद्धकर्त्ताओं का मुष्टियुद्ध अच्छे प्रकार से हुआ ३९ इसी प्रकार शिरकेबालों का पकड़ना उग्रहुआ और भुजाओं का महायुद्ध बड़ा भयकारीहुआ इसीरीति से एक दूसरे से भिड़ेहुये युद्धमें नानाप्रकारके शस्त्रों से बहुतप्रकारसे एकने एकके प्राणोंको हरणकिया युद्धकर्त्ताओं के भिड़ने और संकुल युद्ध होनेपर ४० । ४१ हजारों कबंध अर्थात् धड़ उठखड़ेहुये और रुधिर से भरेहुये शस्त्र कवच ४२ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बड़े रंगोंसे रंगीनबस्त्र इन भयानक शस्त्रोंसे ब्याकुल ४३ बड़े युद्ध में उन्मत्त गंगाकेसमान शब्दों से जगत्को पूर्ण किया बाणोंसे पीड़ामान अपने और दूसरोंके कुछनहीं जानेगये ४४ विजयके लोभी राजालोग युद्ध करनाचाहिये ऐसा समझकर युद्ध करते हैं हे महाराज भाइयों ने भाइयोंको और भिड़ेहुये शत्रुओं को भी मारा ४५ दोनों सेना बीरोंसे ब्याकुल युद्धमें वर्त्तमानहुई हे राजा टूटेरथ और गिरायेहुये हाथियों से ४६ और वहांपर पड़ेहुये घोड़ों से वा गिरायेहुये मनुष्यों से वह पृथ्वी क्षण भरही में दुर्गम होगई ४७ हे राजा एकक्षणमेंही रुधिररूप जलकी बहनेवाली नदी होगई वहां कर्ण ने पांचालोंको और अर्जुनने त्रिगर्त्त देशियोंको मारा ४८ और भीमसेनने कौरवलोगोंको और हाथियों की सेनाको सब रीतिसे मारा इस

रीतिसे दिनके तीसरे भाग में सूर्य्य के होतेहुये बड़े यशकी चाहनेवाली कौरवी और पाण्डवी सेनाका यह बड़ा नाशहुआ ४९। ५०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनत्रिंशत्तमोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मैंने बड़े असह्य और कठिन बहुतसे दुःखोंको और पुत्रोंके नाशको तुझसे सुना १ हे सूत जैसे कि तू मुझसे कहताहै और जैसे युद्ध बर्त्तमानहुआ वैसे नहीं है यह मुझको अपनी बुद्धिसे दृढ़ बिश्वासहै २ वहां महारथी दुर्य्योधन बिरथकियागया फिर धर्मपुत्रने किसरीतिसे उससे युद्धकिया ३ उसके पीछे फिर तीसरी बार रोमहर्षण करनेवाला युद्ध कैसेहुआ हे संजय उसको मूलसमेत मुझसे बर्णनकर ४ संजय बोला हे राजा सेनाके भिड़ने वा बिभागियों के घायल होनेपर बिषैलेसर्प के समान क्रोधयुक्त आपकेपुत्र दुर्योधनने दूसरेरथपर सवारहोकर धर्मराजयुधिष्ठिरको देखकर सारथीसे कहा कि शीघ्रतापूर्वक मुझको वहींपहुँचा जहांपर पांडवलोगहैं ५।६।७ वहराजा युधिष्ठिर कवच और छत्रधारण कियेहुये शोभायमान है राजाकी आज्ञा पातेही सारथीने उसके उत्तम रथको ८ युद्ध में युधिष्ठिर के सन्मुख पहुँचाया उसके पीछे मतवाले हाथी की समान युधिष्ठिर ने सारथी को आज्ञाकरी कि जहां दुर्य्योधन है वहीं चल वह रथियों में श्रेष्ठ शूरबीर दोनों भाई परस्पर में सन्मुखहुये ९।१० उन क्रोधयुक्त युद्ध दुर्म्मद महाधनुषधारी दोनोंबीरोंने युद्धमें परस्पर बाणोंकी बर्षाकरी ११ तदनन्तर राजा दुर्य्योधनने युद्ध में तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उस धर्माभ्यासी युधिष्ठिर के धनुष को काटा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त युधिष्ठिरने उस अपने अपमानको नहींसहा इसहेतु से क्रोधयुक्त लालनेत्र होकर दूसरे धनुषको लेके सेना मुखपर दुर्य्योधन की ध्वजा और धनुष को काटा १२। १३। १४ फिर उसने भी दूसरे धनुषको लेकर युधिष्ठिर को बहुत घायल किया तब तो उन अत्यन्त क्रोधयुक्तों ने परस्परमें शस्त्रोंकी बर्षाकरी १५ सिंहोंके समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बैलोंकी समान गर्जने वाले दोनों ने बिजयाभिलाषी होकर परस्पर में घायल किया १६ फिर वह दोनों महारथी अवकाशको ढूंढ़ते हुये फिरनेलगे इसके पीछे कर्ण पर्य्यन्त खैंचेहुये बाणोंसे घायल दोनों १७ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि फूलेहुये

किंशुकके वृक्ष शोभित होते हैं इसके पीछे बारम्बार सिंहनादों को करते १८ उन दोनों नरोत्तमोंने उस बड़े युद्धमें तलधनुष और शंखोंके शब्दोंको किया १९ हे राजा उन दोनों ने परस्परमें एकने एकको बहुत पीड़ामान किया फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर ने आपके पुत्र को २० बज्रके समान वेगवान महा असह्य तीनबाणों से छातीपर घायल किया फिर राजा दुर्य्योधनने सुनहरी पुंख युक्त तीक्ष्ण धारवाले पांचबाणोंसे शीघ्रही उसको घायलकिया २१ इसके पीछे राजा दुर्य्योधनने तीक्ष्ण बड़ीभारी उल्कारूप लोहेकीशक्ति को फेंका २२ उस अकस्मात आतीहुई शक्ति को देखकर धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने तीन तीक्ष्ण बाणों से काटा और उसको भी पांचबाणों से घायल किया २३ इसके पीछे सुनहरी दंड वाली महाशब्द करनेवाली वह शक्ति गिरपड़ी और अग्नि रूप बड़ी उल्काके समान गिरकर शोभायमान हुई २४ हे राजा फिर आपके पुत्रने शक्तिको टूटा हुआ देखकर तीक्ष्ण धारवाले नौ बाणों से युधिष्ठिरको घायलकिया २५ पराक्रमी शत्रुके हाथसे अत्यन्त घायल शत्रुहन्ता युधिष्ठिरने दुर्य्योधनको बिचार करके शीघ्रही बाणको लिया २६ हे राजा उस क्रोधयुक्त महाबली युधिष्ठिर ने उसबाणको धनुषमें चढ़ाकर छोड़ा २७ फिर उसबाणने आपके महारथी राजा को पाकर अचेतकिया और पृथ्वी को फाड़ा २८ इसके पीछे युद्धकी इतिश्री करने का अभिलाषी क्रोधयुक्त दुर्य्योधन शीघ्रतासे गदाको उठाकर धर्मराजके सन्मुख गया धर्मराजने यमराजके समान गदाउठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर आपके पुत्रपर उस शक्तिको चलाया जो कि बड़ी वेगवान अग्निके समान देदीप्यमान उल्काके समानथी २९।३० उसगदासे कवच कटकर हृदयपर घायल रथपर सवार अत्यन्त अचेतहोकर गिरपड़ा और अचेतहोगया ३१ उसके पीछे अपनी प्रतिज्ञाको स्मरण करनेवाले भीमसेन ने उनसे कहा कि हे राजा यह आपके हाथसे नहीं माराजायगा। यह सुनकर युधिष्ठिर लौटगये ३२ इसके पीछे कृतबर्मा ने शीघ्रआकर आपके पुत्र राजा दुर्य्योधन को आपत्तिके समुद्र में डूबाहुआ पाया ३३ और भीमसेनभी सुबर्ण बस्त्रोंसे अलंकृत गदाको लेकर युद्धमें बड़े वेगसे कृतबर्माके सन्मुखगया ३४ हे महाराज तीसरे पहर युद्धमें बिजयाभिलाषी आपके पुत्रोंका युद्ध पाण्डवों के साथ इस रीतिसेहुआ ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिद्वन्दयुद्धेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसकेपीछे युद्धमें दुर्मद आपके युद्ध कर्त्ताओं ने कर्णको आगे करके फिर भी लौटकर देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध किया १ मनुष्य रथ हाथी घोड़े और शंखों के शब्दों से प्रसन्न नानाप्रकार के शस्त्रों की आधिक्यतासे क्रोधयुक्तहो उन हाथी रथी और सवारों के समूहों ने सन्मुख होकर प्रहार किये २ उत्तम पुरुषों के श्वेत फरसे खड्ग पट्टिश और नानाप्रकार के भल्लों से हाथी रथ और घोड़े उस महायुद्धमें मारेगये और अनेक २ प्रकारकी सवारियों से मनुष्य चूर्णहोगये ३ कमल सूर्य्य और चन्द्रमा के समान श्वेत दांत सुन्दर आंख नाक समेत मुख और अद्भुतकुण्डल मुकुटवाले मनुष्यों के कटेहुये शिरों से आच्छादित वह युद्धभूमि बड़ीही शोभायमान हुई ४ तब सैकड़ों परिघ मूशल शक्ति तोमर नखर भुशुंडी और गदाओं से घायल हजारों हाथी घोड़े मनुष्य रुधिरकी नदी के जारी करनेवाले हुये ५ मृतक घायल भयानक और अत्यन्त घायल रथ मनुष्य घोड़े हाथीवाली शत्रुओं से घायल वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि संसारके नाश करनेमें यमराजकादेश होताहै ६ हे राजा इसके पीछे आपकी सेनाके मनुष्य और देवकुमारों के समान आपके पुत्रों समेत उत्तम कौरवलोग जिनकेआगे चलनेवाली असंख्य सेनाथी सब मिलकर सात्विकी के सन्मुखगये ७ रुधिर से अत्यन्त भय उत्पन्न करनेवाले उत्तम पुरुष घोड़े रथ और हाथियों से व्याप्त और उठेहुये समुद्र की समान शब्दायमान वह सेना देवता और असुरोंकी सेनाके समान प्रकाशित होकर शोभायमानहुई ८ इसके पीछे इन्द्रके समान पराक्रमी युद्धमें बिष्णुके समान सूर्य्य के पुत्र कर्ण ने सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित प्रषत्कनाम बामबाणों से शूरों में बड़ेबीर सात्विकी को घायल किया ९ तब शीघ्रता करनेवाले सात्विकी ने विषैले सर्पकी समान नानाप्रकारके बाणों से पुरुषोत्तम कर्णको रथ घोड़े और सारथी समेत ढक दिया १० आपके शुभचिन्तक अतिरथी हाथी रथ घोड़े और पदातियों समेत शीघ्रही उस रथियों में श्रेष्ठ सात्विकीके बाणोंसे पीड़ामान सुषेणके पास गये ११ बड़े शीघ्रगामी शत्रुओं से दबाई हुई समुद्र के रूप वह सेना भागी तब धृष्टद्युम्न आदिके हाथसे मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों का बड़ा बिनाश हुआ १२

इसके पीछे नित्यकर्म से निवृत्त होकर बुद्धि के अनुसार प्रभु शिवजी के पूजने-वाले और शत्रुओं के मारने में निश्चय करनेवाले पुरुषोत्तम अर्जुन और केशवजी शीघ्रही आपकी सेनाके ऊपर चले १३ तब टूटेहुये चित्तवाले शत्रुओं ने बादल के समान शब्दायमान बायुसे कंपित पताका ध्वजावाले श्वेत घोड़ों से युक्त सन्मुख आनेवाले रथको देखा इसके पीछे रथपर नाचतेहुये अर्जुनने गांडीवधनुषको टंकारकर आकाश और दिशा बिदिशाओं को बाणों से आच्छादित किया १४। १५ और बिमानरूप रथोंको शस्त्र ध्वजा और सारथियों समेत बाणों से ऐसा मारा जैसे कि बायु बादलों को ताड़ित करता है १६ फिर उसने हाथी हाथीवान और बैजयन्ती शस्त्र ध्वजा अश्वारूढ़ और पत्तियोंको बाणों से यमलोक में पहुँचाया १७ सीधे बाणों से मारताहुआ अकेला दुर्य्योधन उस यमराज के समान क्रोधयुक्त मुख न मोड़नेवाले महारथी अर्ज्जुन के सन्मुख गया १८ अर्ज्जुनने सातबाणोंसे उसके धनुष और ध्वजाको काटकर सारथी घोड़ों को मारकर एकबाणसे उसके छत्रको काटा १६ और प्राणों के नाशकरनेवाले उत्तम नवें बाणको धनुषपर चढ़ाकर दुर्य्योधनके ऊपर छोड़ा उस बाणके अश्वत्थामाने आठ टुकड़े करडाले २० इसके पीछे अर्जुन ने बाणों से धनुषको काट रथके घोड़ोंको मारकर कृपाचार्य्य के उस उग्रधनुषको भी काटा २१ तब कृतबर्मा के धनुष और ध्वजाको काटकर घोड़ोंको मारा और दुश्शासनके धनुषको काटकर कर्ण के सन्मुख गया २२ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने सात्वकी को छोड़कर तीन बाणसे अर्जुनको और बीसबाणसे श्रीकृष्णको घायल करके फिर अर्जुनको बारंबार घायलकिया २३ युद्धमें बहुत शायकों को छोड़ते शत्रुओं को मारतेहुये कर्णकी ऐसी ग्लानि नहीं हुई जैसे कि क्रोधयुक्त इन्द्रकी हुई २४ इसके पीछे सात्विकी ने आकर तीक्ष्ण बाणों से कर्णको घायल करके एक सौनिन्नानवे उग्रबाणों से घायल किया २५ इस के पीछे पांडवों के इन सबबीरों ने कर्णको पीड़ामान किया जिनकेनाम युधामन्यु शिखंडी द्रौपदीके पुत्र प्रभद्रक २६ उत्तमौजा युयुत्सु नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न चंदेर कारुष मत्स्य और कैकय देशियों की सेना २७ पराक्रमी चेकितान सुन्दर ब्रतवाले धर्मराज युधिष्ठिर इनसबोंने उग्रपराक्रमी कर्ण को रथघोड़े हाथी और पत्तियों समेत घेरकर २८ युद्धमें नानाप्रकारके अस्त्रों और शस्त्रोंसे ढकदिया और उग्रबचनोंसे बार्त्तालाप

करतेहुये सब कर्णके मारनेमें प्रवृत्त चित्तहुये २९ कर्ण ने उस अस्त्रोंकी बर्षाको अपने तीक्ष्ण बाणोंसे अनेकरीतिसे काटकर अस्त्रोंके बलसे ऐसे हटादिया जैसे कि बायुवृक्षको काटकर हटादेताहै ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णरथी और सवारों समेत हाथी घोड़े और अश्वसवारों समेत सहायकों के समूहों को मारताहुआ दिखाईदिया ३१ कर्णके अस्त्रोंसे घायल वह पाण्डवीसेना शस्त्र बाण शरीर और प्राणों से रहितहोकर बहुधालोग मुखोंको मोड़गये ३२ इसके पीछे मन्द मुसकान करतेहुये अर्जुनने कर्णके अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरकरके दिशाबिदिशाओंसमेत पृथ्वी और आकाशको बाणोंकी बर्षासे ढकदिया वह बाण फिर मुशल और परिघोंके समानगिरे कितनेही शतघ्नियोंके समान और कोई २ उग्रबज्रोंके समान आकाशसे पृथ्वीपर गिरे पति घोड़े रथ और हाथियोंसे संयुक्त वह सेना उन बाणोंसे घायल आंखोंको बंदकरनेवाली होकर बहुतघूमी ३३। ३४। ३५ तब घोड़े हाथी और मनुष्योंने उस युद्धको पाया जिसमें मरना निश्चय होगयाथा तब बाणोंसे घायल पीड़ामान और भयभीत होकर भागे ३६ युद्धमें प्रवृत्त बिजयाभिलाषी आपके युद्धकर्त्ताओंके बाणोंसे ऐसीदशाहुई और सूर्य्य अस्ताचलको प्राप्तहुआ ३७ हे महाराज फिर हमने अधिक अंधकार और धूलीके गुब्बारोंसे अँधेरेमें कुछ अच्छा बुरा नहीं देखा ३८ हे भरतबंशी रात्रिके युद्धसे भयभीत बड़े २ धनुषधारी बर्त्तमानलोग सब शूरबीरों समेत युद्धभूमिसे अलगहुये ३९ हे राजा दिनके समाप्तहोनेपर सायंकाल के समय कौरवोंके हट जानेपर प्रसन्नचित्त पाण्डव बिजयको पाकर अपने २ डेरोंकोगये ४० और नाना प्रकारके बाजे और सिंहनादों समेत गर्ज २ कर शत्रुओंका हास्यकरते अर्जुन और श्रीकृष्णजीकी प्रशंसा करते चलेगये ४१ उनबीरों के बिश्राम करनेपर उन सब सेनाके लोगोंने और राजाओं ने पाण्डवोंको अशीर्बाद दिया ४२ उसके पीछे वहां बिश्रामके करनेपर अत्यन्त प्रसन्नयुक्त होकर पाण्डव और अन्य राजा लोग रात्रिमें अपने २ डेरों में जाकर विश्राम युक्तहुये ४३ इसके पीछे राक्षस पिशाच और भेड़िये आदि मांसाहारी पशुओं के समूह उस युद्धभूमि में गये जोकि रुद्रजीकी क्रीड़ाके स्थानरूप थी ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिप्रथमयुद्धेएकत्रिंशोऽध्यायः ३१॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि यह प्रत्यक्ष है कि अर्जुनने अपनी इच्छासे हम सबको मारा इसशस्त्रधारीके युद्धमें मृत्युभी मरनेसे न छूटे १ अकेले अर्जुनने सुभद्राको हरणकिया अकेलेनेही अग्निको तृप्तकिया और अब इसी अकेलेने इसभारी पृथ्वीको विजयकरके भेजदेनेवाली किया २ दिव्य धनुधारी अकेले ने किरात रूप धारी शिवजीसे युद्धकिया और निवात कवचोंको मारा ३ अकेलेनेही भरतबंशियों की रक्षाकरी अकेलेनेही शिवजीको प्रसन्न किया उस उग्रतेजवाले ने सब राजालोगोंको बिजयकिया ४ और हमारे शूरबीरभी निन्दाके योग्य नहीं हैं किंतु प्रशंसाके योग्यहैं जो उन्होंने किया उसको भी कहो हे सूत इसके पीछे दुर्य्योधनने क्याकिया ५ संजय बोले उन घायल और टूटे अंग सवारियोंसे गिरे हुये कवच शस्त्र और सवारियों से रहित दुःखित शब्दकरते शत्रुओं से कंपायमान पराजित अहंकारी उन कौरवोंने ६ फिर दूरन्देशी की सलाहकारी जोकि टूटी डाढ़ विषसे रहित पैरसे दबायेहुये सर्पों की समान थे ७ उसके पीछे सर्प की समान श्वास लेता हुआ आपके पुत्र को देखता क्रोधयुक्त कर्ण हाथ से हाथों को मलकर उनसे बोला कि अर्ज्जुन सदैव सावधान दृढ़पराक्रमी और धैर्य्यमानहै और श्रीकृष्णजीभी समयके अनुसार उसको समझादेते हैं ८ । ९ अब हम उसके अस्त्रोंके छोड़ने से अकस्मात् ठगगये हेराजा अब कलके दिन में उसके सब संकल्पों को नाशकरूंगा १० यह कर्णके बचन सुनकर दुर्य्योधन ने बहुत अच्छा कहकर उत्तम राजाओं को आज्ञादी तब उसकी आज्ञापाकर सब राजालोग अपने डेरोंको गये ११ उस रात्रिमें सुखपूर्वक निवास करके प्रातःकाल बड़ी प्रसन्नता से युद्ध करने के लिये निकले उन्होंने कौरवों में श्रेष्ठ बृहस्पति और शुक्रजी के मतमें नियत धर्मराज के बड़े उपायसे रचेहुये कठिनतासे बिजयहोनेवाले व्यूहको देखा १२ इसके पीछे शत्रुहन्ता दुर्य्योधनने उस शत्रुओं के मारनेवाले बड़े बीर पराक्रमी और उन्नत स्कन्धवाले कर्ण को स्मरण किया १३ जो कर्ण युद्ध में इन्द्र के समान पराक्रम में मरुद्गणों के सदृश बल में सहस्रबाहु के समान था उसकर्ण में राजा का चित्तगया १४ सब सेनाओं का चित्तभी उस बड़े धनुषधारी कर्ण में ऐसागया जैसे कि प्राणों के

संकट में मन बन्दहोकर एक ओरको जाताहै १५ धृतराष्ट्र बोले हे सूत इसके पीछे दुर्य्योधन ने क्या किया हे हीन प्रारब्धी लोगो जो तुम्हारा मन सूर्य्य के पुत्र कर्ण में गया १६ तो सेनाओं के बिश्रामकरने के पीछे फिर युद्ध के जारी होने पर कर्णको ऐसेदेखा जैसे कि शीतसे पीड़ित मनुष्य सूर्यको देखताहै १७ वहां सूर्य का पुत्र कर्ण इस रीति से युद्ध में प्रवृत्तहुआ हे संजय फिर वहां सब पाण्डवों ने कर्ण से कैसे युद्ध किया १८ अकेलाही महाबाहु कर्ण सृंजियों समेत सब पाण्डवों को मारसक्ता है क्योंकि युद्धमें कर्ण की भुजाओं का पराक्रम इन्द्र और बिष्णुके समान है १९ उस महारथी के पराक्रम संयुक्त शस्त्र बड़े घोर हैं युद्ध में कर्णका आश्रय लेकर राजा दुर्य्योधन मदोन्मत्त है २० इसके पीछे पाण्डवके हाथसे अत्यन्त पीड़ामान दुर्य्योधनको देखकर और पाण्डवों कोभी पराक्रम करनेवाला देखकर महारथी कर्ण ने क्या किया २१ फिर अभागा दुर्य्योधन युद्धमें कर्णका आश्रय लेकर पाण्डवों को श्रीकृष्ण और उनके पुत्रों समेत बिजय करनेकी अभिलाषा करताहै २२ यह महाशोककारी दुःखहै जिस स्थानपर कि वेगवान् कर्ण ने युद्ध में पाण्डवों को नहीं बिजय किया इससे निश्चयकरके दैव बड़ाहै २३ यह द्यूतकी निष्ठा बर्त्तमान है और शोकका स्थान है मैं दुर्य्योधन के उत्पन्न कियेहुये भालेके समानघोर कठिन दुःखोंको सहरहाहूं हे तात संजय वह दुर्य्योधन शकुनी को नीतिज्ञ मानता है २४। २५ और सदैव राजाके आज्ञावर्त्ती वेगवान् कर्णको भी नीतिमान् मानता है हे संजय महाभारी युद्धों के बर्त्तमान होनेके कारण २६ मैंने सदैव अपने पुत्रोंको घायल और मृतकसुना और युद्धमें पाण्डवोंका कोई रोकनेवाला नहीं है २७ जैसे कि स्त्रियों के मध्यमें डोलते हैं उसीप्रकार सेनाकोभी मझाते हैं इससे दैव अधिक बलवान्है संजय बोले कि हे राजा पूर्ब्ब समयके धर्मसंबन्धी बार्त्ताओं को बिचारो २८ जो मनुष्य असंभव कार्य्य को पीछेसे शोचता है उसका वह कार्य्य नहीं होता है किन्तु शोचसे नाशको पाता है २९ हे राजा मुझ बुद्धिमान् के पूर्वयोग्य बिचारको जो तुमने नहीं किया इसीसे वह कार्य्य तुम्हारे हाथसेजातारहा ३० हे राजा सदैव मैंने समझाया था कि पाण्डवों से युद्ध मतकरो तुमने अपनी अज्ञानता से उसबचनको नहीं माना ३१ तुमने पाण्डवोंके साथमें परस्पर मिलकर बड़े २ घोर पाप किये और आपही के कारणसे अच्छे अच्छे

हजारों राजाओं का नाश बर्त्तमान हुआ ३२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अब समय आगया शोचमतकरो हे अजेय जैसे कि यह घोर नाशहुआ उस सबको मुझ से सुनो ३३ प्रातःकालके समय कर्ण राजा दुर्य्योधनके पासगया और मिलकर दुर्य्योधन से कहनेलगा ३४ कि हे राजा अब मैं यशस्वी पाण्डवों से युद्धकरूं-गा मैं कि तो उस बीर अर्ज्जुनको मारूंगा या वही मुझको मारेगा ३५ हे भर-तबंशी राजा दुर्य्योधन मेरे और अर्ज्जुन के कार्य्यों की आधिक्यता से मेरी और अर्ज्जुन की सम्मुखता नहीं हुई ३६ हे दुर्य्योधन मेरे इस बचन को तुम बुद्धि के अनुसार सुनो कि मैं युद्ध में अर्ज्जुन को मारकर न आऊंगा ३७ जिसके बड़े २ वीर मेरे बर्त्तमान होने पर युद्ध में मारेगये वह अर्ज्जुन मेरे स-न्मुख आवेगा जो कि मैं इन्द्रकी शक्तिसे पृथक्हूं ३८ हे राजा जो अपनी रक्षा करनेवाला है उसको तुम समझो कि मेरे और अर्ज्जुन के अस्त्रों का पराक्रम और प्रताप समानहै शत्रुके बड़े कार्य्यका नाश हस्तलाघवता बाणों का दूरफें-कना और अस्त्र गिरानेकी सावधानी में अर्जुन मेरे समान नहीं है३६।४०हे भरत बंशी देहकाबल वा मनकाबल वा अस्त्रोंकी शिक्षा वा पराक्रममें लक्षभेदन करने में भी अर्जुन मेरे समान नहीं हैं ४१ सब शस्त्रों में श्रेष्ठ बिजयनाम धनुष इन्द्रके प्रिय होनेकी इच्छासे बिश्वकर्माजीने उत्पन्नकिया ४२ हेराजा निश्चयकरके इंद्र ने उसी धनुषकेद्वारा दैत्योंके समूहों को बिजयकिया और जिसके शब्द से दैत्यों की दशोंदिशा मोहित हुईं ४३ वह बड़ा उत्तम धनुष इन्द्रने भार्गवजीको दिया और भार्गवजी ने वह दिव्य धनुष प्रसन्नहोकर मुझकोदिया ४४ हे महाविजयी उसी धनुष के द्वारा मैं महाबाहु अर्जुन से लड़ूंगा वैसेही लड़ूंगा जैसे कि भागे हुये दैत्यों से इन्द्र लड़ाथा ४५ परशुरामजी का दियाहुआ घोर धनुष गाण्डीव धनुष से अधिकहै जिसके द्वारा यह पृथ्वी इक्कीसबार विजयकरीगई ४६ इस ध-नुष के घोरकर्मको भार्गव परशुरामजीने मुझसेकहा है उनके उस दियेहुये धनुष के द्वारा मैं पाण्डवों से लड़ूंगा ४७ हे दुर्य्योधन अब मैं बड़े विजयी बिख्यात अर्जुनको युद्धमें मारकर तुझको बांधवों समेत प्रसन्न करूंगा ४८ हे राजा अब पर्व्वत बन द्वीप और समुद्रों समेत यह सब पृथ्वी तेरीहोगी जिसके कि बीर मारे गये और पुत्र पौत्रों की प्रतिष्ठा है ४६ अब तेरे अभीष्ट के निमित्त मेरी कोई अच्छेप्रकार की विशेषता ऐसी नहीं है जैसे कि अच्छे धर्मपर प्रीति करनेवाले

मनुष्य की मोक्षहोती है ५० वह अर्जुन युद्धमें मेरे सहने को ऐसे समर्थ नहीं हो सक्ता जैसे कि वृक्ष अग्निको नहीं सहसक्ता मैं जिस हेतुसे कि अर्जुन से कमहूं उसको अब मुझे कहना अवश्यहै ५१ एक तो उसके धनुषकी प्रत्यंचा दिव्यहै और इसीप्रकार उसके दो तूणीर अक्षय हैं और उसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं मेरा वैसा सारथी नहीं है ५२ उसका गाण्डीव धनुष दिव्य उत्तमहोकर युद्धमें सब से अजेयहै और मेरा विजयनाम धनुष भी दिव्य और उत्तमहै ५३ हे राजा वहां मैं उस धनुष के कारण से अर्जुन से अधिक हूं और जिनकारणों से कि बीर पां-डव अर्जुन मुझसे अधिकहै उसको भी मुझसे सुनो ५४ प्रथम तो सबके पूज्य रूप श्रीकृष्णजी सारथी हैं और अग्नि देवताका दियाहुआ सुवर्ण जटित रथ भी दिव्यहै ५५ हे बीर वह सबप्रकारसे अजेयहै उसके घोड़ेभी चित्तके अनुसार शीघ्रगामी हैं और ध्वजा भी दिव्य प्रकाशमान है और उस ध्वजामें हनूमान् जी बड़े आश्चर्य्यकारी हैं ५६ और संसारके स्वामी श्रीकृष्णमहाराज उसके रथ की रक्षा करते हैं इन बस्तुओं से रहित होकर मैं अर्जुन से लड़ना चाहताहूं ५७ युद्धको शोभा देनेवाला यह राजाशल्य श्रीकृष्णजीके समानहै जो राजाशल्य मेरा सारथी बनजाय तो अवश्य तेरी विजय होय ५८ शत्रुओं के साथ कठिन कर्म करनेवाला शल्य मेरा सारथी होय और कंकपक्षवाले मेरे अनेक बाणों के बहुतसे छकड़े साथ में ले चलें ५९ हे भरतर्षभ राजेन्द्र उत्तम घोड़ों के रथमें बै-ठकर तुमभी मेरे साथही साथ चलो ६० मैं अपने गुणों से अर्जुन से अधिक होजाऊंगा शल्य भी श्रीकृष्णजी से अधिकहै और मैंभी अर्जुनसे अधिकहूं६१ जिस प्रकार शत्रुहन्ता श्रीकृष्णजी अश्वहृदय नाम विद्या के जाननेवाले हैं इसी प्रकार महारथी शल्य भी अश्वविद्या का ज्ञाताहै ६२ और भुजामें राजा शल्य के समान कोई नहीं है इसीप्रकार अस्त्रवेत्ता मेरे समान कोई नहीं है ६३ जो कि अश्वबिद्या में शल्यके समान कोई नहीं है इसीसे यह मेरारथ अर्ज्जुन से भी अधिक होगा हे कौरवों में श्रेष्ठ ऐसा करने से मैं रथकी सवारीमें अधिक होजाऊंगा और युद्ध में अर्जुन को बिजय करूंगा ६४ । ६५ इन्द्र समेत देवता भी मेरे सन्मुखहोनेको समर्थ नहीं हैं हे शत्रुहन्ता महाराज दुर्य्योधन यह काम मैं तुमसे करवाया चाहताहूं ६६ यह मेरा मनोरथ पूर्ण करो इससमय को किसी प्रकार से उल्लंघन न करना चाहिये ऐसा करने से सब अभीष्ट सिद्धहोंगे ६७ हे

भरतबंशी इसके पीछे जैसा मैं युद्ध करूंगा उसको भी तुम देखोगे मैं सन्मुख आनेवाले पाण्डवों को सब प्रकार से विजय करूंगा ६८ सुर और असुर भी युद्धमें मेरे सन्मुख आनेको समर्थ होनेको समर्थ नहीं हैं हेराजा फिर मनुष्ययोनि पाण्डवलोग मेरी सन्मुखता क्या करेंगे ६९ संजय बोले कि कर्णके इन सब बचनों को सुनकर आपका पुत्र दुर्य्योधन अत्यन्त प्रसन्न होकर कर्णसे प्रशंसा पूर्व्वक यह बचन बोला ७० कि हे कर्ण जैसा तुम कहते हो मैं इन सब बातों को वैसाही करूंगा तूणीरों से भरेहुये रथ तुम्हारे पीछे २ चलेंगे ७१ कंकपक्षसे जटित तेरे बाणों के बहुतसे छकड़े लेचलूँगा और मुझ समेत सब राजालोग तेरे पीछे २ चलेंगे ७२ संजय बोले हे महाराज आपका प्रतापी पुत्र दुर्य्योधन इस प्रकारके बचन कहकर मद्रदेशके राजाशल्यके पास जाकर उससे यह बचन बोला ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णदुर्य्योधनबिचारेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज आपका पुत्र बड़ी नम्रता समेत समीप जाकर महारथी शल्यसे यह बचन बोला १ हे सत्यव्रती महाबाहु शत्रु शोककारी मद्र देशके स्वामी युद्धमेंशूर और शत्रुकी सेना को भय उत्पन्न करनेवाले २ श्रेष्ठ-बक्ता आपने कर्णका बचन सुनाहै मैं सब श्रेष्ठ राजाओं में आपको उत्तम जानताहूँ ३ हे अनुपम पराक्रमी शत्रुपक्ष के नाशकारी राजा मद्र मैं नम्रता पूर्व्वक आपको शिरसे दण्डवत् करताहूं ४ हे रथियों में श्रेष्ठ आप अर्ज्जुन के नाश और मेरी वृद्धिके अर्थ न्याय से सारथ्य कर्म करने को योग्यहो ५ आपके सारथी होनेसे कर्ण मेरे शत्रुओं को बिजयकरेगा कर्ण की बागडोरों का पकड़ने वाला दूसरा कोई पुरुष नहीं है ६ हे महाबाहु युद्धमें बासुदेवजी के समान तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य नहीं है ७ आप सब प्रकार से कर्ण की ऐसी रक्षाकरिये जैसे कि ब्रह्माजी ने महेश्वरजी की और श्रीकृष्णने सब आपत्तियों में पाण्डवों की करी है और करते हैं हे महाराज उसीप्रकार आपभी कर्णकी रक्षा करिये ८ भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य कर्ण और पराक्रमी कृतवर्मा सौबलका पुत्र शकुनी अश्वत्थामा मैं और हमारी सब सेना ९ हे राजा इस रीति से यह नौ भागकिये

हैं परन्तु इन भागोंमें महात्मा भीष्म और द्रोणाचार्य्यका भाग नहीं है १० इन्हों-
ने उन दोनोंभागों को उल्लंघन करके मेरे शत्रुओंको मारा वह दोनों वृद्ध बड़े
धनुषधारी युद्धमें छलसे मारे गये ११ हे निष्पाप वह दोनों कठिन कर्मोंको क-
रके यहांसे स्वर्गको गये और इसीप्रकार अन्य २ भी बहुतसे पुरुषोत्तम युद्धमें
शत्रुओं के हाथसे मारेगये १२ हमारे अनेक शूरबीर युद्धमें बड़े २ पराक्रमों को
करके प्राणों को त्याग कर स्वर्ग को गये १३ हे राजा यह मेरी बहुतसी सेना
मारीगई पूर्व्व में भी इन अत्यन्त थोड़े पाण्डवों से मेरे बहुतसे मनुष्य मारेगये
अब कौनसी बात करनी उचित है १४ कुन्ती के पुत्र महाबली सत्य पराक्रमी
हैं सो हे राजा जिस रीति से वह पाण्डवलोग मेरी शेष बची हुई सेना को न
मारसकें वही उपाय आपको करना योग्य है १५ हे समर्थ यह सेना युद्ध में
पाण्डवों के हाथसे मृतक हुये शूरबीरवाली है अर्थात् इसके युद्धकर्त्ता शूरबीर
मारेगये अब हमारी वृद्धि चाहनेवाला एक महाबाहु पराक्रमी कर्ण और सब
लोगों के महारथी पुरुषोत्तम आप हो हे शल्य अब कर्ण युद्ध में अर्ज्जुन के
साथ लड़ना चाहता है १६ । १७ हे राजाशल्य उस कर्ण में मुझको बिजयकी
बड़ी आशाहै इस पृथ्वीपर उसका उत्तम सारथी कोई नहीं है १८ जैसे कि युद्ध
में अर्ज्जुन के सारथी श्रीकृष्णजी हैं उसीप्रकार आपभी कर्ण के रथपर सारथी
हूजिये १९ हे राजा श्रीकृष्णजी से युक्त और रक्षित होकर जैसे कि वह अ-
र्ज्जुन जिन जिन कर्म्मों को करता है वह सबके प्रत्यक्षहैं २० पूर्व्व में अर्ज्जुन
ने युद्धमें हमारे शत्रुओंको मारा अब श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले इस अर्जुन
का पराक्रम है २१ हे राजा मद्र अर्ज्जुन श्रीकृष्णजी के साथ हमारी बड़ी भारी
सेनाको प्रतिदिन युद्धमें भगाताही हुआ दिखाई देताहै २२ हे बड़ेतेजस्वी कर्ण
का और तुम्हारा भाग शेष रहगया है कर्ण समेत आप एकही भाग से उस
पाण्डवी सेनाका नाशकरो जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अन्धकार को दूर
करता है उसी प्रकार आपभी कर्णसमेत होकर युद्धमें अर्ज्जुनको मारो २३ । २४
सूर्य्यके समान उदय होनेवाले बालार्क के समान प्रकाशमान कर्ण और शल्य
को देखकर युद्ध से सब महारथी ऐसे भागेंगे जैसे कि सूर्य्योदय में अरुणको
देखकर अंधकार दूर होताहै २५ इसीप्रकार आपके युद्धमें प्रकाशमान होतेही
पांचाल और सृंजियों समेत कुन्ती के पुत्र भी नाशको पावेंगे २६ कर्ण रथियों

में अत्यन्तश्रेष्ठहै और आपरथियों में असादृश्यहैं जैसा तुम दोनोंका योगहोगा वैसा संयोग न पूर्व्व में हुआहै न आगे होगा २७ जैसे कि श्रीकृष्णजी सब दशाओं में पाण्डवोंकी रक्षा करते हैं उसीप्रकार आपभी सूर्य्य के पुत्र कर्ण की रक्षाकरो २८ यह कर्ण तुझसारथीके साथहोकर इन्द्रसमेत देवताओं से भी युद्ध में अजेयहोगा फिर पाण्डवोंके युद्धमें कैसे विजयी न होगा हे राजा तुम मेरे बचनोंमें सन्देह मतकरो २९ संजय बोले कि कुलीनता शास्त्रज्ञता अधिकार और पराक्रम से अजेय महाबाहु शल्य दुर्य्योधन के बचनको सुनकर क्रोध में भराहुआ बारम्बार हाथियोंको प्रेरणा करताहुआ भृकुटीको त्रिबलीकरके क्रोध से रक्तबर्ण नेत्रोंको खोलकर यह बचनबोला ३०। ३१ हे गांधारीके पुत्र निश्चय करके तू मेरा अपमान करता है और सन्देह करता है जो तू निस्सन्देह होकर मुझसे कहताहै कि सारथीपना करो ३२ और कर्णको मुझसे भी अधिक जान कर उसकी प्रशंसा करताहै मैं युद्धमें कर्णको अपनी समान नहीं समझताहूं ३३ हे राजा तुम मेरा अधिकतर भाग बिचारकरो मैं युद्धमें उसको बिजयकरके जहां से आयाहूं वहांको चलाजाऊं ३४ हे कौरवनन्दन चाहै मैंही अकेला युद्ध करूंगा अब तुम युद्धमें मुझ शत्रुहन्ताके पराक्रमको देखो ३५ जैसे कि मुझसा पुरुष उस अपमानको हृदयमें धारण करके फिर त्याग करने को कर्मकर्त्ता होजाय वैसेही तुमभी मुझमें सन्देह न करो ३६ अथवा युद्धमें भी मेरा अपमान किसीप्रकारसे न करना चाहिये मेरी बज्ररूपी मोटी २ भुजाओं को देखो ३७ और मेरे चित्र धनुष समेत विषवाले सर्पकेसमान बाणोंको देखो और बायुकेसमान वेगमान उत्तम घोड़ों से अलंकृत मेरे श्रेष्ठ रथको देखो ३८ हे गान्धारी के पुत्र सुवर्ण सूत्रोंसे वेष्टित मेरी गदाको देखो मैं संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर पर्व्वतों को भी तोड़सक्ताहूं ३९ और हे राजा अपने तेज से समुद्रको शोषण करसक्ताहूं मुझ शत्रुओं के विजय करने में समर्थ ऐसे सामर्थ्यवान् को ४० युद्धमें तू नीच अधिरथीके सारथीपने में क्यों संयुक्त करताहै हे राजा तुम मुझको नीचकर्म में संयुक्त करने को योग्य नहींहो ४१ मैं उत्तम होकर नीचजातिके सेवन करने को नहीं चाहताहूं जो कि प्रीतिसे समीप आया और स्वाधीनता में नियतहुआ ४२ उसको तू नीचजातिकी आधीनता में करताहै देखो छोटे बड़ोंका बिपर्य्यय करना बड़ापापहै ब्रह्माजी ने मुखसे ब्राह्मण उत्पन्नकिये और भुजासे क्षत्रियों को

उत्पन्नकिया ४३ बैश्योंको जंघा से और शूद्रोंको चरणों से उत्पन्नकिया यह वेद का बचनहै इन चारोंबर्णोंसे अनुलोम प्रतिलोम लोगहुये हैं हे भरतबंशी चारों बर्णोंकी मिलावटसे उत्पन्न होनेवालों के क्षत्रीलोग रक्षक दण्ड देनेवाले और दान करनेवाले कहे हैं ४४।४५ और ब्राह्मणोंको ब्रह्माजीने यज्ञकरनेकराने दान देनेलेने और वेद पढ़ने और शुद्ध दानोंकेद्वारा लोक के अनुग्रह के निमित्त इस पृथ्वीपर नियत कियाहै ४६ बैश्यों का कर्म धर्म से खेतीकरना पशुपालन और दान करनाहै और शूद्रलोग ब्राह्मण क्षत्री और बैश्यों के सेवा करनेवाले वर्णन किये हैं ४७ और सूतलोग तो अवश्यही क्षत्री और ब्राह्मणों के सेवा करने वाले हैं क्षत्री किसी दशामें भी सूतोंका आज्ञावर्त्ती नहीं होसक्ता ४८ हे राजा मैं राजर्षियों के कुल में उत्पन्न मूर्द्धाभिषेक नाम से प्रसिद्ध इसरीति से बन्दीजनों का पूज्य और स्तूयमान हूं ४९ हे शत्रुसेनापहारी सो मैं ऐसा होकर सूत के सारथीपने को इच्छानहीं करताहूं ५० मैं अपमान युक्तहोकर फिर किसीप्रकार से भी युद्धनहीं करूंगा हे गान्धारी के पुत्र मैं तुझसे पूछकर अब अपने घरको जाऊंगा ५१ संजय बोले हे महाराज युद्ध में शोभा पानेवाला क्रोधयुक्त शल्य इसप्रकारसे कहकर राजाओं के मध्य में से शीघ्रही उठकर चलदिया ५२ आप का पुत्र बड़ी प्रतिष्ठा पूर्व्वक उसको पकड़कर सब प्रयोजनों के सिद्ध करनेवाले मीठे २ बचनों से बड़ी नम्रतापूर्व्वक बोला ५३ हे शल्य जैसा आप जानतेहो और कहतेहो सो यथार्थहीहै इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहींहै इसमें मेरा प्रयोजनहै उसको आप कृपाकरके सुनिये ५४ हे राजा कर्ण आपसे अधिक नहीं है और न मैं आपपर सन्देहकरताहूँ आपमद्रदेशके राजाहैं जो मिथ्या समझें तो उस कामको न करियेगा ५५ हे पुरुषोत्तम तुम्हारे वृद्धलोगोंको रत अर्थात् सत्यतायुक्त बोलते हैं उनकी सन्तानहोनेसे आप आर्तायन कहेजाते हैं यह मेरा मत है ५६ हे प्रतिष्ठा देनेवाले इसकारण से आप युद्धमें शत्रुओं के शल्यरूप अर्थात् भल्लरूपहो इसीहेतुसे पृथ्वीपर आपका नाम शल्य विख्यात है ५७ हे बड़े दक्षिणा देनेवाले आपने जो प्रथम कहाहै उसीको करो हे धर्मज्ञ मेरे निमित्त जो २ कहाजाताहै ५८ कर्णसमेत मैं भी आपसे अधिक पराक्रमी नहींहूँ परन्तु मैं युद्धमें आप को उत्तम घोड़ोंका सारथी चाहताहूँ ५९ हे शल्य मैं कर्णकोभी उत्तम गुणों के द्वारा अर्जुनसे अधिक मानताहूँ और आपको बासुदेवजी से भी

अधिक मुझसमेत सबलोकमानते हैं ६० हे नरोत्तम कर्ण अस्त्रों में भी अर्जुनसे अधिकहै इसीप्रकार आपभी अश्वविद्या के जानने में और पराक्रममें श्रीकृष्ण से अधिकहो ६१ जैसे कि बड़ेसाहसी बासुदेवजी अश्वहृदयको जानते हैं उसी प्रकार उनसेभी द्विगुणित आप जानतेहो ६२ शल्य बोला हे गांधारीके पुत्र कौरव जो तुम सेनाके मध्यमें मुझको श्रीकृष्णजीसे अधिकमानते और कहते हो इसीसे मैं तुमपर प्रसन्नहूँ ६३ अब मैं अर्जुन के साथ युद्धकरनेवाले यशस्वी कर्णके साथ सारथीपनेमें नियतहोताहूँ हे बीर जैसे कि तुम मानकर चाहतेहो ६४ हे बीर कर्णके बिषयमें मेरा यह संकल्पहै अर्थात् प्रतिज्ञाहै कि मैं इसके सन्मुख श्रद्धाके समान कहूँगा ६५ संजय बोले हे भरतबंशी राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र कर्ण समेत बोला कि जैसी राजा मद्रकी इच्छाहै वैसाही हो ६६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसारथ्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

दुर्य्योधन बोले हे राजा मद्र आपसे जो मैं कहताहूँ उसको फिर भी तुम सुनो हे समर्थ जैसे कि पूर्व्व देवासुरों के संग्राममें जो वृत्तान्तहुआ १ उसीको महर्षी मार्कण्डेयजीने जिसरीतिसे मेरे पितासे कहा हे राजऋषभ आप उसको मुझसे सुनिये और चित्तसे समझिये २ तुमको इसमें बिचार न करनाचाहिये हे राजा परस्पर में बिजयकी इच्छासे देवता और असुरों का प्रथमयुद्ध ३ तारक संबंधीहुआ तब दैत्य देवताओं से हारगये यह हमने सुना ४ हे राजा दैत्यों के हारने पर तारकके तीन पुत्र ताराक्ष कमलाक्ष बिद्युन्माली ५ उग्रतपी होकर बड़े भारी नियम में नियतहुये हे शत्रुसंतापी उन तीनों ने तपस्याओं से अपने २ शरीरों को दुर्ब्बल करदिया उनकी शान्तचित्तता तप नियम और समाधी से प्रसन्नहोकर बरदाता ब्रह्माजी ने उनको बरदान दिये ६।७ हे राजा उन सब मिले हुओं ने सब जीवमात्रके हाथ से मृत्युका न होना लोकके पितामह ब्रह्माजी से बरमांगा तब ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि सबकी अविनाशिता नहीं है हे असुर लोगो इसबिचारसे लौटो ८।९ और इसके सिवाय जो दूसरा वर चाहतेहो उसको मांगो हे राजा इसके पीछे वह सब मिलेहुये प्रभुका बारम्बार ध्यान करके १० और सर्वेश्वर को नमस्कार पूर्व्वक यह वचनबोले हे देवता पितामह हमको यह

बरदानदो ११ कि हम तीन पुरों में नियतहोकर आपकी कृपासे इसलोक में इस पृथ्वीपर घूमें १२ इसकेपीछे हजारवर्ष के अनंतर परस्परमें मिलेंगे हे निष्पाप यह तीनोंपुर एकहीरूप होजायँ १३ हे भगवान् उससमय जो देवता हमारे इस मिले हुये पुरको एकही बाणसे ढानेवालाहोगा उसीसे हमारी मृत्युहो १४ ब्रह्माजी तथास्तु कहकर स्वर्गमें चलेगये फिर वह तीनों बरप्रदानको पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुये १५ और तीन पुर बनाने के लिये असुरों के विश्वकर्म्मा अजर अमर और दैत्यों से पूजित जो मयनाम दैत्यहै उससे बोले १६ उसके पीछे उस बुद्धिमान् मयदैत्य ने अपने तपसे तीन पुरों को उत्पन्न किया उनमें एक सुवर्णका दूसरा चांदीका तीसरा लोहेकाथा १७ वह सुवर्णका पुरतो स्वर्गमें नियत हुआ चांदीका अंतरिक्षमें और लोहेकापुर इच्छाके अनुसार पृथ्वीपर चलनेवालाहुआ १८ उनमें प्रत्येकपुर सौयोजन बर्गात्मक गृहअट्टादिकों से युक्त प्राकार और तोरणों से शोभित अत्यन्त शोभित धामों से भराहुआ और खुलाहुआ निविड़ता से रहित बड़े २ चौड़े मार्गोंका रखनेवाला नानाप्रकारके हर्म्य और स्वच्छ द्वारोंसे शोभायमानथा १९।२० हे राजा उन तीनोंपुरों में जुदे २ राजाहुये सुवर्णका पुर तो महात्मा ताराक्षकाहुआ और चांदीवाला कमलाक्षकाहुआ और लोहेवाला विद्युन्माली का हुआ वह तीनों दैत्यों के राजा अस्त्रों के तेजों से तीनोंलोकों को जीतकर नियत हुये २१।२२ और कहनेलगे कि कौन प्रजापति है उन उत्तम बीर दैत्योंकी संख्या प्रयुत अर्बुदों थीं और किरोड़ों दैत्य जहां तहां से आये वह मांसभक्षी महाबली पूर्वसमयमें देवताओं से पराजित २३।२४ बड़े ऐश्वर्य के चाहनेवाले त्रिपुरनाम गढ़में आश्रितहुये फिर मय दैत्य इनके सब मनोरथों का पूरा करनेवाला हुआ २५ वह सब दैत्य उस मयकी रक्षा में होकर निर्भय रहतेथे त्रिपुरके राजाओं ने जिस जिस अभीष्टको मनसे ध्यानकिया २६ उस अभीष्टको उनके निमित्त मयदैत्य ने अपनी मायासे प्रकट किया तारताक्ष के पुत्र बीर पराक्रमी हरिनाम ने बड़ी घोर तपस्या करी २७ उस तपसे ब्रह्माजी प्रसन्नहुये तब ब्रह्माजी को प्रसन्न जानकर उसने यहबर मांगा कि हमारेपुर में एक ऐसी बापी अर्थात् बावड़ी उत्पन्नहो २८ जिसमें शस्त्रों से मृतकलोग उसमें डालने से सजीव होकर बलवान् होजायँ हे राजा उस तारकाक्ष के पुत्र हरि ने इस बरको पाकर २९ वहां मृतक संजीविनी बावड़ी को तैयार किया फिर मरे

हुये दैत्य जिस रूप और पोशाकथे उसमें डालेगये ३० वह उसी रूपको धारण किये पोशाक समेत उत्पन्न हुये उन्हों ने उस बावड़ी को पाकर फिर उन सब लोकों को पीड़ित किया ३१ वह सबदैत्य बड़े बड़े तपस्वी और सिद्धलोगों के भी भयके बढ़ानेवाले हुये हे राजा कभी उनकी युद्ध में पराजय नहीं हुई ३२ उसके पीछे लोभ मोहसे व्याप्त निर्बुद्धी निर्लज्जहोकर वह सबलोभ में फँसेहुये नियत हुये ३३ बरदान से अहंकारी होकर वह सब जहां तहां देवताओं के समूहों को भगाकर अपनी इच्छाके अनुसार घूमने लगे ३४ देवताओंके प्रियकारी सब क्रीड़ा स्थानों को वा ऋषियों के पवित्र आश्रमों को और अनेक सुन्दर सुन्दर देशोंको नाश करके उन दुष्टकर्मी दैत्यों ने मर्यादाओं को भी बिगाड़ा इसके पीछे सबके पीड़ित होनेपर मरुद्गणों समेत इन्द्रने ३५।३६ चारों ओरको बज्रों के प्रहारसे तीनोंपुरों से युद्ध किया जब इन्द्र उन बरदान पाने वालों के पुरों के तोड़ने और पराजय करने को समर्थ नहीं हुआ तब भयभीत होकर वह उन पुरोंको छोड़कर ३७। ३८ देवताओं को साथलेकर ब्रह्माजी के पासगया वहां जाकर उसने असुरों की प्रबलता ब्रह्माजीसे बर्णन करी ३९ फिर शिरों से दण्डवत् करके उनका मूलवृत्तान्त बर्णन किया और उनके मारनेका उपाय ब्रह्माजी से पूछा भगवान् ब्रह्माजी इन्द्रके वचनको सुनकर देवताओं से बोले कि जो तुमसे शत्रुता करताहै वह मेरा भी शत्रुरूप और अपराधी है निश्चय करके वह देवताओं से बिरोध करनेवाले निर्बुद्धी असुर जो तुमको पीड़ित करतेहैं इसीसे वह सदैव अपराधी हैं ४०।४२ मैं सब जीवमात्रको निस्सन्देह समान दृष्टिसे देखताहूं परन्तु धर्म के बिरोधी जीवमारनेकेही योग्यहैं यहीमेरा नियतब्रत है ४३ मैं उन पुरोंको एकही बाणसे तोडूंगा इसमें मिथ्या न होगा उन पुरोंको एकही बाणसे शिवजी के सिवाय तोड़नेवाला दूसरा देवता कोई समर्थ नहीं है ४४ हे देवताओ तुम उस युद्धकरनेवाले अचल आदि ईश्वर शिवजी की शरणलो जिससे कि वह शिवजी उन असुरोंको मारे ४५ इन्द्रसमेत सब देवता ब्रह्माजी के बचनों को सुनकर ब्रह्माजी को आगे करके शिवजीकी शरणमें गये ४६ वह धर्मज्ञ देवता ऋषियों समेत तप और नियमों में नियत होकर सनातन वेदोंको पढ़तेहुये सर्वात्मारूप शिवजी के पासगये ४७ हे राजा उन्हों ने उससर्वात्मा निर्भयता देनेवाले जगदीश्वर शिवजीको उत्तम२ स्तुतियों

से प्रसन्न किया जिस आत्मारूपसे सब जगत व्याप्तहै ४८ और नानाप्रकारके मुख्यतपों से मनकेयोगवाली सब वृत्तियोंको रोकनेको जानताहै और जिसका चित्तभी सदैव अपने आधीनहै ४९ उसने उस सर्बशक्तिमान् षड़ैश्वर्य्यके स्वामी उपाधि रहित शिवजीको देखा ५० और उसी अद्वितीय ईश्वरकोही नानाप्रकार के रूपों का धारण करनेवाला कल्पनाकिया अर्थात् उस परमात्मा में अपने संकल्पके अनुसार अनेक रूपोंको ५१ और एकने दूसरेके रूपको देखा जिसने बिष्णुरूपसे कल्पनाकिया उसको बिष्णुरूप दृष्टपड़े और जिसने इन्द्ररूप ध्यान किया उसको इन्द्ररूप दिखाईदिये यह देखकर सब आश्चर्य्यित होकर उस जगत् के स्वामी अजन्माको सर्बरूप देखकर ५२ देवता और ब्रह्मऋषियों ने शिरोंको पृथ्वीमें धरकर प्रणामकिया फिर शिवजीने उठकर उनको स्वस्ति बचनसे पूजन किया ५३ फिर मन्द मुसकान करतेहुये भगवान्ने कहा कि कहौ किस निमित्त आयेहो तब तो शिवजीकी आज्ञापाकर वह सबदेवता नियत चित्ततासे तप नियमोंमें नियत होकर सनातन वेदको पढ़तेहुये शिवजीकी स्तुति करनेलगे ५४ (स्तोत्र) नमोनमोनमस्तेस्तुप्रभोइत्यब्रुवन्वचः । नमोदेवाधिदेवायधन्विने वनमालिने ५५ प्रजापतिमखघ्नायप्रजापतिभिरीज्यते । नमोस्तुतायस्तुत्याय स्तूयमानायशम्भवे ५६ विलोहितायरुद्रायनीलग्रीवायशूलिने । अमोघायमृगाक्षायप्रबरायुधयोधिने ५७ अर्हायचैवशुद्धायक्षयायक्राथनायच। दुर्वारणायक्राथायब्रह्मणेब्रह्मचारिणे ५८ ईशानायाप्रमेपायनियन्त्रेचर्मवाससे । तपोरत्तायपिंगायब्रत्तिनेकृतिवाससे ५९ कुमारपित्रेत्र्यक्षायप्रवरायुधयोधिने । प्रपन्नार्त्तिविनाशायब्रह्मद्विट्संघघातिने ६० वनस्पतीनांपतियेनराणांपतयेनमः । गत्रांचपतयेनित्यंयज्ञानांपतयेनमः ६१ नमोस्तुतेससैन्यायत्र्यंबकायामितौजसे । नमोवाकर्मभिर्देवत्वांप्रपन्नान्भजस्वनः ६२ ततःप्रसन्नोभगवान्स्वागतेनाभिनंद्यच ॥ प्रोवाचव्येतुवत्स्वासोब्रूतकिंकरवाणिच ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणित्रिपुराख्यानेचतुस्त्रिंशत्तमोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधन बोले कि पितृदेवता और ऋषियोंके समूहोंको शिवजीने निर्भयता दी उस निर्भयताके देनेपर ब्रह्माजी शिवजीकी प्रशंसाकरके यहलोकोंका हित-

कारी बचन बोले १ हे देवताओंकेईश्वर आपकेदियेहुये प्रजापतिके पदपर वर्त्त-
मानहोकर मैंने दैत्योंको बड़ाभारी बरदानदियाथा २ उनमर्य्यादा उल्लंघन करने-
वाले असुरोंके मारनेको आपके सिवाय किसीको सामर्थ्य नहीं है हे भूत भवि-
ष्यके स्वामी आपही उनके मारनेको बिरोधी शत्रुहो ३ हे देवेश्वर शंकर देवता
तुम शरणागत आनेवाले और प्रार्थना करनेवाले देवताओं के ऊपर कृपाकरो
और दानव लोगोंकोमारो ४ हे बड़ाई देनेवाले आपकी कृपासेही सब संसार वृद्धि
पाताहै हे लोकेश आपही रक्षाके स्थानहैं हम सब आपकी शरणहैं ५ शिवजी
ने कहा कि तुम्हारे सब शत्रु मारडालनेकेही योग्य हैं यह मेरा मत है परन्तु मैं
अकेला उनके मारनेको उत्साह नहीं करताहूं क्योंकि वह बहुतसे असुर बड़े २
पराक्रमी हैं ६ सो तुम सब बड़े २ पराक्रमी मेरे साथी होकर मेरे आधेतेजसे उन
शत्रुओंको युद्धमें विजय करो ७ देवता बोले कि हे बिश्वनाथ जितना हमारा
पराक्रमहै उससे द्विगुणित उनका पराक्रम युद्धमें हममानते हैं क्योंकि उनका
तेजबल हमने देखा है वह बास्तव में हमसे द्विगुणित बलवान् हैं ८ श्रीभगवान्
बोले कि तुमसे शत्रुता करनेसे वह सब पापात्मा हैं इससे बधके अवश्य योग्य
हैं तुम उन शत्रुओंको मेरे आधेतेज और बलसे मारोगे ९ देवता बोले हे महे-
श्वरजी हम आपका आधातेज और बलधारण करनेको समर्थ नहीं हैं आपही
हमसबके आधेबलसे शत्रुओंको मारो १० श्रीभगवान् शिवजीने कहा जो मेरा
पराक्रम धारणकरने को तुम्हारी कोई सामर्थ्य नहीं है तो तुम्हारे आधे तेजसे
वृद्धिपानेवाला मैंहीं उनको मारूंगा ११ तब देवताओंने कहा बहुतअच्छा यह
देवताओंके बचनको सुनकर देवेश्वर शिवजी सबके आधेतेजको लेकर अधिक
होगये १२ अर्थात् शिवजी उनके आधेबलसे सबसे अधिक बलवान् होगये तभी
से शिवजीका महादेवनाम प्रसिद्धहुआ १३ इसके पीछे महादेवजी बोले कि हे
देवताओ मैं धनुषबाण धारीहूं और युद्ध भूमिमें रथकी सवारीके द्वारा तुम्हारे
उनशत्रुओं को मारूंगा १४ इसहेतुसे तुम मेरे रथ और धनुष बाणको बिचारकरके
तबतक खोजो जबतक कि उनशत्रुओं को पृथ्वीपर न गिराऊं १५ देवता बोले
कि हे देवेश्वर हम जहां तहांसे तीनोंलोकोंका सबतेज इकट्ठा करके उससे आपके
प्रकाशमान रथको तैयार करेंगे १६ फिर जैसा कि बुद्धिके अनुसार बतायागया
वैसाही विश्वकर्माजीने शुभ और उत्तम रथको तैयारकिया तदनन्तर उन उत्तम

देवताओंने उस बनेहुये दिव्य रथको अच्छेप्रकारसे अलंकृतकिया १७ विष्णुजी चन्द्रमा और अग्निदेवता यहतीनों तो शिवजीके बाणमें कल्पितहुये अग्नि शृंगहुआ और चन्द्रमा भल्लहुआ १८ और विष्णुजी उस उत्तम बाणमें कुंतल हुये और बड़े २ पुरोंकी धारण करनेवाली धरा अर्थात् पृथ्वीदेवी शिवजी का रथ बनी वह पृथ्वी पर्वत वा द्वीपोंसे युक्तहोकर अखिलजीवोंकी धारण करनेवाली थी उससमय मन्दराचल पर्वत अक्षहुआ और उसकी जंघा महानदी हुई१६।२० तब दिशाविदिशा रथकेपरिवारहुये और नक्षत्रों के समूह ईशाहुये उस रथमें सतयुगजुआहुआ और सर्पोंमें श्रेष्ठ वासुकीसर्प रथका कूबरहुआ २१ हिमाचल और विंध्याचल यहदोनों रथके पहियों के उपस्करहुये उदयाचल और अस्ताचल पाये हुये २२ और दानवों का उत्तम स्थान समुद्र अक्षवना और सप्तऋषियों का मण्डल रथका पुरस्कर हुआ २३ गंगा सरस्वती सिन्धु और आकाश धुर हुआ और जलसमेत सबनदियां भी रथकी उपस्करहुई २४ दिनरात्रि और कलाकाष्ठा नाम समय और सब ऋतुओं समेत प्रकाशमान् ग्रह अनुकर्षहुये और नक्षत्र बरूथहुये २५ धर्म अर्थ काम से संयुक्त त्रिवेणु द्वार और बन्धनहुये औषधी वीरुध और फलफूल युक्त वृक्ष घंटेबने २६ उस महा उत्तमरथ में सूर्य्य और चन्द्रमा पूर्व और पश्चिमके पायेहुये और दिन वा रात्रि पूर्व्वापरनाम शुभपक्ष हुये २७ तब धृतराष्ट्र नाम नागपति को आदिलेकर दश नागपतियों को ईशाकिया और श्वासलेनेवाले बड़े २ सर्पोंको योक्तरकिया २८ सर्पको दूसरा जुआबनाया और संवर्त्तक वा बलाहक नाम बादलों का जुयेका चर्मबनाया कालपृष्ठ नहुष कर्कोटक धनंजय और अन्य २ सर्प घोड़ों के बालबन्धनहुये और दिशा विदिशा आदि घोड़ोंके मार्गहुये२६।३०संध्या पृथ्वी मेधा स्थिति सन्नति और नक्षत्रों से चित्रित आकाशको रथका चर्म्मकिया ३१ मद्यजल और प्रेतोंके स्वामी लोकेश्वरोंको घोड़ा बनाया पूर्ब्ब अमावास्या और पूर्ब्बपूर्णिमा और उत्तर अमावास्या वा उत्तर पूर्णमासी इन सुन्दरव्रत वालियों को योक्त बनाया ३२ उस रथमें उस अमावास्या आदिके अधिष्ठाता पितरोंको इरावनकी कीलक बनाई उनकीलकों में धर्म सत्य और तपको रस्सियां बनाई ३३ उस रथका आधार मनहुआ और सरस्वती प्रचार मार्गहुई और नानाप्रकार के बर्णवाली बिचित्र प्रेरणाही उत्तम पताकाहुई ३४ बिजली इन्द्रधनुषसे अलंकृत प्रकाशमान् रथको प्रका-

शितकिया वषट्कार मन्त्र चाबुक हुआ और गायत्रीशिरका बन्धनहुई ३५ पूर्बसमयमें यज्ञकेमध्यमें महात्मा महेश्वरजीका जो संबत्सरनाम धनुष नियत हुआथा वही धनुष ठहरायागया और बड़ी शब्दवाली सावित्रीजी प्रत्यंचाबनी ३६ और दिव्यकवच वह नियतकिया जोकि बड़ोंके योग्यरत्नोंसे जटित खंडित न होनेवाला रजोगुण रहित कालचक्र से बाहरथा ३७ श्रीमान् सुबर्ण का मेरु पर्व्वत ध्वजाकी यष्टीहुआ और बिजलियोंसे अलंकृत बादल पताकाहुआ ३८ और अध्वरों के मध्यमें देदीप्य अग्नियां प्रकाशमानहुई फिर देवतालोग उस अलंकृत रथको देखकर आश्चर्य्य युक्तहुये ३९ हे श्रेष्ठ इसके पीछे देवताओंने सबलोकोंके तेजको एक स्थानपर इकट्ठा देखकर उस सजेहुये रथको ४० उस महात्माके सन्मुख बर्त्तमानकरके बर्णनकिया हे महाराज नरोत्तम इसप्रकारसे देवताओंकीओरसे उसशत्रुओंके मारनेवाले उत्तमरथके तैयारहोनेपर४१शंकरजी ने अपने अस्त्रशस्त्रोंको उस रथपर रक्खा और आकाशको ध्वजाकी यष्टीबनाके नन्दीगण को उसपर नियत किया ४२ ब्रह्मदण्ड कालदण्ड रुद्रदण्ड और तप यह चारों सब दिशाओं से युक्त रथ के ओर पासके रक्षकहुये ४३ अथर्वा और अङ्गिरस उस महात्मा के रथ चक्रों के रक्षक हुये ऋग्वेद सामवेद और पुराण यह सब आगे चलनेवाले हुये ४४ इतिहास और यजुर्वेद पीछे के रक्षक हुये और दिव्यवाणी और विद्या यह रथके चारों ओर नियत हुये ४५ हे राजेन्द्र स्तोत्रादिक वषट्कार और प्रणव यह मुख में शोभा करनेवाले हुये ४६ और छओं ऋतुओं समेत बर्ष के अन्तको बिचित्र धनुष करके अपने सन्मुख अबिनाशी छायारूप सावित्रीको युद्धमें धनुषकी प्रत्यंचा बनाई ४७ वेगवान् रुद्रजी कालरूपहुये और उनका धनुष बर्षान्त रूप हुआ इस हेतुसे रौद्री कालरात्रीको धनुषकी प्रत्यंचा बनाया ४८ बिष्णु अग्नि और चन्द्रमाभी बाणरूपहुये यह सब जगत् अग्निषोम नाम दो रूपवाला बैष्णव कहा जाताहै ४९ और बिष्णुजी उस भगवान् महातेजस्वी शिवजी की आत्मा हैं इस कारणसे उन्होंने शिव जीके धनुषकी प्रत्यंचाके स्पर्शको न सहा ५० ईश्वरने भृगु वा अंगिराऋषिके क्रोधसे उत्पन्न बड़ी कठिनतासे सहनेके योग्य तेजसंकल्पवाले असह्य क्रोधाग्नि को उसबाणमें लगाया ५१ और नीललोहित धूम्रवर्ण दिगम्बर भयकारी दशहजार सूर्य्य के समान प्रकाशों से संयुक्त ज्वलित तेजको ५२ कठिनतासे गिरने

के योग्य राक्षसों का संहार करनेवाला और ब्राह्मणों के मारनेवाले शत्रुओं का नाश करनेवाला सदैव धर्म में नियत मनुष्यों की रक्षा करनेवाला और अ-धर्मी लोगोंका संहारकर्त्ताथा ५३ शत्रुओं के मथन करनेवाले भयानक बल और रूपचित्तके समान शीघ्रगामी इन अपने गुणों से युक्त भगवान् शिवजी प्रकाशमान हुये ५४ यह जड़ चैतन्य रूप बिश्व उन शिवजी के अंगों में श-रणरूप होकर अपूर्व्व दर्शनवाला शोभायमान हुआ ५५ वह धनुषधारी शि-वजी उस तैयार हुये रथको देखकर और चन्द्रमा बिष्णु और अग्नि से उत्पन्न होनेवाले उसबाणको लेकर ५६ नियतहुये हे प्रभु राजा शल्य तब देवताओं ने उसके पीछे चलनेवाले देवताओंमें श्रेष्ठ बायुको पवित्र गन्धियोंका पहुँचा-नेवाला बिचारकिया ५७ तब सावधान शिवजी देवताओंको भी भयभीत करते हुये पृथ्वी को कंपायमान करके उस रथपर सवार हुये ५८ उस रथपर सवार होनेके अभिलाषी देवताओं के ईश्वर शिवजी को परमऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणों ने स्तुतिमान किया ५९ ब्रह्मऋषियों से स्तुतिमान और बन्दीजनोंसे प्रतिष्ठित और नृत्यविद्यामें कुशल नाचनेवाली अप्सराओं से शोभायमान ६० खड्ग बाण और धनुषधारी बरदाता शिवजी देवताओं से बोले कि हमारा सारथी कौनहोगा ६१ तब देवगणों ने कहा कि हे देवेश आप जिसको आज्ञा देंगे वही निस्सन्देह आपका सारथी होगा ६२ फिर शिवजीने कहा कि जो मुझसे श्रेष्ठतम होय उसको तुम अच्छीरीति से बिचारकर शीघ्र ही मेरा सारथी बनाओ बिलम्ब न करो ६३ इसके पीछे शिवजी के इस बचन को सुनकर देवतालोग ब्रह्माजी के समीप पहुँच बहुत प्रसन्न करके यह बचन बोले ६४ कि हे देवता असुरों के मारने में जो २ आपने कहा वह सब हमने किया और शिवजी हमपर प्रसन्न हैं ६५ हमने बिचित्र शस्त्रों से युक्त रथ को तैयार किया है हम नहीं जानते हैं कि उस उत्तम रथमें सारथी कौन होगा ६६ हे देवोत्तम इसहेतु से आपही किसी सारथी को बिचार कीजिये हे समर्थ देवता हमारे इस बचनके सफलकरने को आपही समर्थ हैं ६७ हे भगवन् तुमने पूर्व्व समय में हम लोगों से ऐसा कहाहै कि मैं तुमलोगों का हित करूंगा उसको आप करने के योग्य हैं ६८ हे देव तब वह रथियों में श्रेष्ठ कठिनता से सहने के योग्य शत्रुलोगों का भगानेवाला पिनाक धनुषधारी हमारे अनुकूल युद्ध

करनेवाला बिचार कियागया वह दानवों को भयभीत करता हुआ वर्त्तमान है ६९ उसी प्रकार चारों वेद यही चारों उत्तम घोड़े हुये और पर्व्वतों समेत पृथ्वी रथ हुई नक्षत्रों समेत आकाश निवासस्थान और शिवजी युद्धकर्त्ता बने हैं परन्तु सारथी जानने के योग्यहै इन सबसे अधिक तेज बलवाला सारथी चाहिये हे देव रथ घोड़े समेत लड़नेवाला देवता नियत है ७०। ७१ और हे पितामहजी कवच धनुष और शस्त्र भी तैयार हैं परन्तु उनका सारथी आपके सिवाय दूसरा हम नहीं देखते हैं ७२ हे प्रभु आपही सब गुणों से सम्पन्न देवतासे अधिकहो सोतुम शीघ्रही उत्तमरथपर सवारहोकर घोड़ोंकी बाग पकड़ो ७३ आपको देवताओं के विजय और असुरोंके नाशके लिये ऐसा करना उचित है यह कहकर उन देवताओंने तीनोंलोकों के ईश्वर ब्रह्माजीको शिरसे दण्डवत्करी और उनको सारथी बनने के निमित्त प्रसन्नकिया ब्रह्माजी बोले हे देवताओ तुमसे जोकहाहै उसमें कुछभी मिथ्या नहीं है ७४। ७५ अबमैं युद्धकर्त्ता शिवजी के घोड़ोंको थांभताहूं यहकहकर वहसंसारके स्वामी ब्रह्माजी७६ देवताओं की प्रार्थना से सारथी नियत हुये उन लोकेश ब्रह्माजी के रथपर सवार होनेपर ७७ उनबायुके समान शीघ्रगामी घोड़ोंने शिरोंसे पृथ्वीको प्राप्त किया अपने तेजसेही प्रकाशमान भगवान् ७८ ब्रह्माजीने रथपर चढ़कर बागडोरें समेत चाबुकको हाथमें लिया उसके पीछे देवताओंमें श्रेष्ठ भगवान् ब्रह्माजी उन बायुके समान घोड़ोंको उठाकर ७९ शिवजीसे बोले कि रथपर सवार हूजिये इसके अनन्तर शिवजी विष्णु अग्नि और चन्द्रमा से उत्पन्न होनेवाले उसबाणको लेकर ८० धनुषसे शत्रुओं को कंपाते सवारहुये परम ऋषि गन्धर्व देवगण और अप्सराओं के गणोंने उस रथारूढ़ देवेशकी स्तुतिकरी वह शोभायमान खड्ग धनुषबाणधारी बरदाता ८१। ८२ अपने तेजसे तीनोंलोकोंको अत्यन्त प्रकाश करतेहुये रथपर सवारहुये और इन्द्रादिक देवताओंसे फिर कहनेलगे ८३ कि यह तुमसन्देह न करना कि शत्रु नहींमारे जायँगे ८४ इसबाण से तुम असुरोंको माराहुआही जानना उन देवताओं ने कहा कि सत्यहै असुर मारगये यह बचन जो आपके मुखसे निकलाहै वह मिथ्या नहीं है ८५ देवता लोग ऐसा बिचारकर बड़े प्रसन्नहुये उसके पीछे सब देवगणों समेत देवेश शिवजी ८६ उस बड़ेरथमें बैठेहुये चले जिसके समान कोई नहीं वहबड़ा यशस्वी

देवता मांसभक्षी अजेय दौड़ते नाचते और चारों ओरसे धमकातेहुये अपने पार्षदोंसे शोभित था ८७ महाबाहु तपोमूर्त्ति बड़े गुणवान् सब ऋषि और देवगणोंने महादेवजी की विजयकी आशाकरी ८८ हे नरोत्तम इसरीतिसे लोकों को निर्भय करनेवाले लोकेशके चलनेपर सब संसारी जीवों समेत देवतालोग प्रसन्नहुये ८९ वहां ऋषिलोग बहुतसे स्तोत्रोंसे शिवजीकी स्तुतिको करतेहुये बारम्बार इनकेतेजकी वृद्धिकरनेवालेहुये ९० उनके यात्राकरनेपर प्रयुतों अर्बुदों गंधर्वोंने नानाप्रकारके बाजोंको बजाया ९१ इसकेपीछे बरदाता ब्रह्माजीके रथपर सवारहोने और असुरोंकी ओरको चलनेपर मन्द मुसकान करतेहुये शिवजी बोले कि धन्यहै धन्यहै ९२ हेदेवता उधरकोचलो जिधर दैत्यलोगहैं और सावधानहोकर तुम घोड़ोंको तेजकरो अब तुम मुझ शत्रुहन्ताके युद्ध में भुजबलको देखो ९३ हे राजा इसके पीछे मन और बायु के समान शीघ्रगामी घोड़ोंको तीक्ष्ण किया और जिस ओर को दैत्य दानवोंसे संयुक्त वह त्रिपुरथा उधरकोही उनका मुखकिया ९४ भगवान् शिवजी देवताओंकी विजयके निमित्त लोकपूजित इन आकाशके पान करनेवाले घोड़ोंके द्वारा बड़ी शीघ्रता से चले ९५ शिवजीको रथपर सवार होकर त्रिपुरके सन्मुख चलनेकेसमय नन्दीगण दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ बड़ेवेगसे गर्जा ९६ वहां देवताओंके शत्रु तारक दैत्य इस नन्दीगणके महाभयकारी शब्दको सुनकर नाशको प्राप्तहुये ९७ तब दूसरे असुरलोग वहां युद्धके निमित्त सन्मुखगये हे महाराज इसके पीछे त्रिशूलधारी शिवजी क्रोध में ज्वलितहुये ९८ तब सब जीवधारी और तीनों लोक भयभीतहुये और पृथ्वी कम्पायमान हुई और धनुषके चढ़ातेही बड़े२ शकुन हुये ९९ उस समय चन्द्रमा अग्नि विष्णु ब्रह्मा और रुद्र समेत जो धनुषथा उसके वेगसे वह रथ अत्यन्त पीड़ा को पाताथा १०० इसके पीछे नारायणजी उस बाणके भागमेंसे बाहर निकले और बृषभरूप होकर उसबड़े रथको उठा लिया १०१ रथ के पीड़ित होने और शत्रुओं के गर्जने पर उन महाबली शिवजीने भ्रांतीसे शब्द किया १०२ इसके पीछे बैल के मस्तक और घोड़ों के पीछे नियत होनेवाले रथ पर बैठकर उन शिवजी ने दानवों के पुर को देखा १०३ हे नरोत्तम तब बैल और घोड़ों पर नियत रुद्रजी ने उनके घोड़ों के स्तनों का नाशकरके खुरों के टुकड़े २ कर दिये १०४ हे राजन् शल्य आपका भलाहो

तभी से गौ और बैलों के पैर बीचमें से फटे और उसी समय से घोड़ों के स्तन नहीं हुये १०५ अद्भुतकर्मी महाबली रुद्रजी ने उनको पीड़ित कर अपने धनुष को संधान बाणको चढ़ाके पाशुपत अस्त्रसे संयुक्त करके त्रिपुरको अच्छेप्रकार से चिन्तायुक्त किया हेमहाराज उसधनुषधारी शिवजी के नियतहोने१०६।१०७ पर दैवकी प्रेरणा से समय के आने पर वह तीनों पुर एकत्वभाव को प्राप्तहुये फिर उन त्रिपुर नामकी एकदशा होनेपर देवताओं को बड़ी प्रसन्नताहुई १०८ इसके पीछे महेश्वरजी की स्तुति करतेहुये देवगण और सब सिद्ध महर्षियों ने यह शब्द किया कि बिजयकरिये इसकेपीछे त्रिपुर और असुरों के मारनेवाले क्षमा न करनेवाले तेजस्वी देवता शिवजीके शरीरमें से एक महाउग्र रूपवाला दूसरारूप प्रकटहुआ फिर उस भगवान् लोकेश्वर ने अपने उस दिव्य धनुषको खैंचकर १०९। ११०। १११ उस तीनों लोकके सारवान बाणको त्रिपुरके ऊपर मारा हे महाराज उस उत्तम बाण के छोड़नेपर ११२ पृथ्वी पर वह तीनोंपुरगिरपड़े और उनके पीड़ित शब्द बड़े भयकारी हुये उस बाण ने उन दैत्यगणों को नाशकरके पश्चिमी समुद्र में डालदिया ११३ इसप्रकार क्रोधयुक्त महेश्वर जीके हाथसे तीनों लोकोंका दुःखदायी त्रिपुर नाशको प्राप्त हुआ उनकानाश तीनों लोकोंकी वृद्धिका कारण हुआ और दैत्यभी सब मारेगये ११४ इसके पीछे बड़ा हाहाकार करके अपने क्रोधसे उत्पन्न होनेवाली उसप्रचंड अग्निको शान्तकिया और उसको रोककर शिवजी ने कहा कि तू संसार को भस्म मत कर ११५ इसके अनन्तर सब देवगण ऋषि और महर्षिलोग स्वस्थ चित्तहुये और उत्तम २ बचनों से शिवजी को प्रसन्न करके सबने स्तुतिकरी ११६ इन बातों के पीछे ब्रह्मादिक सब देवता शिवजी को प्रणामकर उनकी आज्ञा ले २ कर जहां २ से आयेथे वहां २ को चलेगये ११७ इसरीतिसे उससंसारके स्वामी देवऋषियों के पूज्य महेश्वरजी महाराज ने लोकों के कल्याणको किया ११८ जैसे कि सृष्टि के कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजी ने वहां रुद्रजी के सारथ्य कर्म को किया ११९ उसीप्रकार आपभी शीघ्रतासे महात्मा कर्णके सारथी होकर घोड़ों की रस्सी पकड़िये १२० हे राजाओं में श्रेष्ठ आप श्रीकृष्ण कर्ण ओर अर्जुन से अधिक श्रेष्ठ हो यह निश्चय है कि यह कर्ण युद्धमें रुद्रजी के समानहै और आप नीति में ब्रह्माजी के बराबरहो इसकारणसे आप मेरे उन शत्रुओं के मा-

रने को वैसे समर्थ हो जैसे कि इन्द्र असुरों के मारने को समर्थ होताहै १२१।१२२ हे शल्य अब यह कर्ण श्रीकृष्ण सारथी समेत श्वेत घोड़ेवाले अर्ज्जुन को युद्धमें मथन करके जिस रीति से अर्ज्जुन को मारे वही प्रकार आपको करना उचित है १२३ हे मद्रदेशके स्वामी तुम्हारेही कारणसे हमको राज्य मिलने की और अपने जीवनकी आशा है अब मुझ कर्ण के मंत्रीकी विजय है अर्थात् तुम्हीं हमारे राज्यकी प्राप्ति और शत्रुओं के नाशके हेतुहो १२४।१२५ जिसको धर्मज्ञ ब्राह्मणने मेरे पिताके सन्मुख कहा हे शल्य इसकारण अर्थ और कर्म से युक्त अपूर्व्व बचनको सुनकर बड़े निश्चयके साथकर्मकरो इसमें किसी बातका बिचार मतकरो १२६ भार्गववंश में बड़े यशस्वी जमदग्नि जी उत्पन्नहुये उनके पुत्र तेजगुण में पूर्ण परशुरामजी प्रसिद्धहुये १२७ उस प्रसन्नचित्त सावधान जितेन्द्री ने अस्त्रों के निमित्त उत्तम ब्रतों को धारण करके शिवजी को प्रसन्न किया १२८ उसकी भक्ति और शान्त चित्तता से प्रसन्नहोकर शिवजी ने उनको दर्शन दिया १२९ और परशुराम से कहा हे परशुरामजी तुम्हारा कल्याणहो मैं प्रसन्न हूं और तुम्हारे चित्तकी इच्छा भी मुझ को बिदित हुई तुम अपनी आत्माको पवित्रकरो सब अभीष्टोंको पावोगे १३० और जब तुम पवित्र होगे तभी तुमको अस्त्र दूंगा क्योंकि यह अस्त्र अपात्र और असमर्थ को भस्म करते हैं १३१ शिवजी के इसबचनको सुनकर परशुरामजी ने उत्तर दिया १३२ हे देवेश जब आपमुझको पवित्र और पात्र जानैं तभी अस्त्र दीजियेगा १३३ दुर्य्योधनने कहा कि हे शल्य इसके पीछे तप शांति और नियम पूर्वक पूजा भेंट और बलिप्रदान होम और मुख्य मन्त्रों के द्वारा १३४ बहुतबर्षों तक शिवजी की आराधना करी तब उन महादेवजीने महात्मा भार्गवजी की १३५ प्रशंसा देवी पार्वतीजी के सन्मुख बर्णन करी कि यह दृढ़ब्रत रखनेवाले परशुराम सदैव मुझमें भक्ति रखनेवाले हैं १३६ हे शत्रुहन्ता इसप्रकार से प्रसन्न होकर शिवजीने देवता और पितरों के सन्मुख उन परशुरामजी के बहुतसे गुणों का बर्णनकिया १३७ इसकेपीछे उसीसमय में दैत्यलोग बड़े पराक्रमीहुये और प्रबल और अहंकारी राक्षसों से देवतालोग पराजित होकर घायल हुये १३८ तब उनके मारनेमें निश्चय करनेवाले देवताओं ने इकट्ठेहोकर उन शत्रुओं के मारनेका उपायकिया परन्तु उनके मारने को समर्थ नहीं हुये १३९ इसके पीछे

देवताओं ने उमापति महेश्वरजीको भक्तिसे प्रसन्नकिया और प्रार्थनाकरी कि शत्रुओं के समूहोंको मारिये १४० इसके अनन्तर वह देवेश शिवजी देवसंतापी दैत्योंके नाश करनेका प्रणकरके भार्गव परशुरामजीको बुलाकर यह बचन बोले १४१ कि हे भार्गव देवताओं के सब आयेहुये शत्रुओं को हमारी प्रीति और लोकों के हितके अर्थ तुममारो १४२ यह बचन सुनकर परशुरामजी ने शिवजीसे प्रार्थनाकरी कि हे देवेश युद्धमें दुर्म्मद अस्त्रवेत्ता दानवों के मारने को अस्त्रों से अभिज्ञकैसे मारनेको समर्थ होसक्ताहै महेश्वरजी ने कहा कि मेरी आज्ञासे तुम वहांजावो शत्रुओं को मारोगे १४३। १४४ और शत्रुओं के समूहों को बिजय करके बड़े गुणों को प्राप्त होगे इस बचनको सुनकर परशुरामजी सब बातोंको अंगीकार करके १४५ स्वस्तिबाचन पूर्व्वक दानवों की ओरचले वहां जाकर बड़े अहंकार और बलसे उनदानवों से बोले १४६ कि हे युद्धदुर्मद दैत्यलोगो मुझ से युद्ध करो हे महाअसुरलोगो मुझको महादेवजी ने तुम्हारे विजय करनेको भेजाहै १४७ फिर भार्गवजी के इस बचनको सुनकर दैत्यों ने युद्ध किया उससमय उस भार्गवनन्दन ने बज्र और बिजली के समान स्पर्श वाले प्रहारों से युद्धमें उन दैत्योंको मारकर शिवजीका दर्शन किया फिर जमदग्निजी के पुत्र ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी दानवों के हाथसे घायल शरीर शिवजी के हाथके स्पर्शसे घातजन्य पीड़ासे रहितहुये और शिवजी महाराज ने इनके उस कर्मसे अत्यन्त प्रसन्न १४८। १४९। १५० होकर इन महात्माभार्गवजीको बहुतसे बरदान दिये और उन प्रसन्नमूर्त्ति शिवजी ने परशुरामजी से कहा १५१ कि शस्त्रों के आघातसे यह तेरे शरीर में पीड़ा हुई उस पीड़ासे हे भृगुनन्दन तेरामानुषीकर्म नष्ट होकर दिव्यकर्म प्राप्तहुआ १५२ अब तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे दिव्य अस्त्रोंको लो, दुर्य्योधनने कहाकि इसकेपीछे परशुरामजी सब अस्त्रों को और अनेक अभीष्ट बरोंको पाकर शिरसे दण्डवत् कर शिवजी की आज्ञा लेकर वहांसे चलेगये १५३ तब ऋषिने इसरीति से प्राचीन वृत्तान्त को बर्णन किया भार्गवजी ने भी अत्यन्त प्रसन्न अन्तःकारण के साथ दिव्य धनुर्वेद महात्मा कर्णको दिया हे पुरुषोत्तम राजा शल्य जो कर्णमें कुछ पापहोता तो भृगुनन्दनजी काहे को दिव्यअस्त्र उसको देते और मैं भी उसको सूतके वंशमें उत्पन्न नहीं समझता हूँ १५४। १५५। १५६ मैं इसको क्षत्रियों के

बंशमें उत्पन्न देवकुमार जानताहूँ और यहकुलके गुप्तकरने को आज्ञादियाहै यह मेरामतहै १५७ हे शल्ययह कर्ण सबप्रकारसे क्षत्री है और सूतके बंशमें नहीं उत्पन्न हुआहै कुण्डल और कवचधारी महाबाहु महारथी १५८ सूर्य्यके समान तेजस्वी सिंहको मृगी कैसे उत्पन्न करसक्ती है और जैसे कि इसके दोनों भुजा गजराजकी सूंड़के समान मोटी हैं १५९ उसीप्रकार हे शत्रुहन्ता इसकी बड़ी छाती को भी देखो यह सूर्य्य का पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण कोई प्राकृतिपुरुष नहीं है १६० हे राजेन्द्र यह कर्ण महात्मा परशुरामजी का प्रतापवान् और महापराक्रमी शिष्य है १६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यदुर्य्योधनसंवादेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

दुर्य्योधनबोले कि इसरीतिसे वहां सबलोकोंके पितामह भगवान् ब्रह्माजीने सारथ्य कर्मकिया और श्रीरुद्रजी रथीहुये १ हेबीर रथी से अधिक रथ का सारथी करना योग्यहै हेपुरुषोत्तम इसहेतुसे तुम युद्धमें घोड़ोंको थांभो जैसे कि शिवजी के निमित्त देवगणोंने भगवान् ब्रह्माजीको सारथ्य कर्मकेलिये प्रार्थनाकरी उसी प्रकार हम लोगोंकी ओरसे कर्णसेभी अधिक आप प्रार्थनाकिये गयेहो२।३ जैसे कि देवताओंकी ओरसे शिवजी से बड़ेभी ब्रह्माजी प्रार्थना कियेगये हेमहाराज उसीप्रकार आपभी कर्णसे अधिक होनेके कारण प्रार्थनाकिये गये हैं जैसे कि ब्रह्माजीने रुद्रजीके घोड़ोंको थांभा ४ उसीप्रकार आपभी बड़े तेजस्वी कर्णके घोड़ों को थांभो शल्य बोले कि हे नरोत्तम मैंने भी इन नरोत्तम श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके मुखसे कहीहुई इस उत्तम अद्भुतकथाको बहुधा सुनाहै जैसे कि ब्रह्माजीने शिवजीके सारथ्य कर्मको कियाहै५और जैसे कि शिवजीने एकही बाण से सब असुरोंको मारा हे भरतबंशी यह भूतकाल का वृत्तान्त श्रीकृष्णजी का भी जाना हुआहै ६।७ जैसे कि भगवान् ब्रह्माजी सारथी हुये उसीप्रकार श्रीकृष्णजी भी भूतभविष्य के वृत्तान्तोंको जानतेहैं ८ इसी हेतुसे जैसे कि जान बूझकर भगवान् ब्रह्माजीने शिवजी के सारथ्यकर्मको किया हे भरतबंशी उसी प्रकार श्रीकृष्णजीने अर्ज्जुनकी रथवानी अङ्गीकारकरी ९ जोकर्ण किसी दशा में भी अर्ज्जुनको मारडालेगा तो अर्ज्जुनके मरनेकेपीछे आप श्रीकृष्णजी युद्ध

करेंगे १० शङ्ख चक्र गदाके हाथमें धारण करनेवाले श्रीकृष्णजी तेरी सेनाको भस्मकरेंगे उससमय उन क्रोधयुक्त श्रीकृष्णजी के सन्मुख तेरी सेनामें से कोई भी युद्ध करनेको समर्थ न होगा ११ संजय बोले कि शत्रुओं का बिजय करने वाला महासाहसी आपका पुत्र दुर्य्योधन ऐसे बचन कहनेवाले शल्यसे बोला हे महाबाहु तुम सूर्य्यके पुत्र महापराक्रमी कर्णका अपमान मतकरो १२ । १३ जो कर्ण कि सब अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ होकर सर्व शास्त्रोंका पारगामी है जिसके धनुषकी भयानक प्रत्यञ्चाके शब्दको सुनकर १४ पांडवी सेना दशोंदिशाओं को भागती है हे महाबाहु आपके नेत्रोंकेही सन्मुख हुआथा जैसे कि वह मायावी सैकड़ों मायाओंका प्रकट करनेवाला घटोत्कच मारागया और अर्ज्जुन किसी प्रकारसे भी सेनाके सन्मुख नहीं हुआ १५ । १६ बड़ा भयभीत अर्ज्जुन इस सबदिनोंमें कभी सन्मुख नहींहुआ और पराक्रमी भीमसेन धनुषकी कोटि से प्रेरित किया गया १७ हेराजा बहुतसे लोगोंने कर्णसे कहाथा कि तू पेटपालन करने वालोंके समान अज्ञान है इसीप्रकार बड़ेयुद्धमें माद्रीके पुत्र शूरवीर नकुल और सहदेवको बिजय करके १८ किसी प्रयोजनसे युद्धमें नहीं मारा हे श्रेष्ठ जिस कर्णने वृष्णियों में बड़ाबीर और यादवोंमें श्रेष्ठ महापराक्रमी सात्यकी को १९ युद्धमें बिजयकरके रथसे विहीन करदिया और उसीमन्द मुसकान वालेने सृंजियोंको आदिलेकर अन्य सब योद्धाओंको जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्न था उनको बारम्बार युद्धमें बिजय किया उस महारथी पराक्रमी कर्णको पाण्डव लोग युद्धमें कैसे बिजय करसक्तेहैं २० । २१ जोक्रोधयुक्त होकर युद्धमें बज्रधारी इन्द्रको भी मारसक्ताहै और आपसर्वबिद्या सम्पन्न महाअस्त्रज्ञ और पंडितहो २२ और पृथ्वीपर आपके भुजबलके समानभी कोई नहींहै तुम शत्रुओंके भल्लरूप होकर पराक्रममें भी अक्षयहो २३ हे शत्रुहन्ता राजा शल्य इसीहेतुसे आपका नाम बिख्यात है आपके भुजबलको पाकर सब यादवलोग समर्थ नहींहुये २४ हे राजा श्रीकृष्णजी आपके भुजबलसे अधिकहैं जैसे कि अर्ज्जुन के मरनेपर श्रीकृष्णजी से सेना रक्षाके योग्यहै २५ उसीप्रकार कर्णके नाश होजानेपर सेनाके लोग आपसे रक्षाके योग्यहैं जैसे कि वासुदेवजी युद्धमें सेनाको रोकेंगे उसीप्रकार आपभी सेनाको अवश्यमारोगे २६ आपके कारणसे युद्धमें अग्रगणता प्राप्तकरना चाहताहूं और सब सगे भाई इष्ट मित्र और अन्य सब राजाओं

की अऋणता चाहताहूं २७ शल्यबोला हे प्रशंसा करनेवाले दुर्य्योधन तुम सब सेनाके समक्ष जो कृष्णजीसेभी अधिक मुझको कहतेहो इस हेतुसे मैं तुझपर प्रसन्नहूं अब मैं प्रसन्नतासे अर्ज्जुनसे लड़नेवाले यशस्वी कर्णके साथ उसके रथपर इसप्रतिज्ञासे सारथी बनताहूं कि मैं जिससमय जो चाहूंगा वहकर्णके विषयमें कहूंगा उसका किसी प्रकारका मान नहीं करूंगा २८।३० संजय बोले हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब आपकापुत्र कर्णसमेत यह बोला कि ऐसाही होय यहकहकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें ३१शल्यके सारथी होनेसे विश्वासयुक्तहोकर दुर्य्योधन बड़ी प्रसन्नता से कर्णसे प्रीतिपूर्व्वक मिला३२और बड़ी प्रशंसाकरके कहनेलगा कि युद्ध में तुम सब पाण्डवोंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र सब दानवोंको मारता है ३३ इसके अनन्तर घोड़ोंके हांकनेपर शल्यके तैयारहोनेपर प्रसन्नचित्त होकर कर्ण ने दुर्य्योधनसे कहा ३४ यह मद्रदेशका राजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर बात नहीं करताहै हे राजा आप मीठेवचनोंसे फिरइसप्रकारसे कहो ३५ तब महाज्ञानी सर्वशास्त्र औरअस्त्रोंका वेत्ता पराक्रमी राजा दुर्य्योधन मद्रदेशियों के महाराज से बोला ३६ हे शल्य अब कर्ण बादलके समान घिरेहुये शब्दयुक्त बाणों से युद्धभूमिको पूर्ण करना मानताहै कि अर्जुन के साथ युद्ध करना चाहिये ३७ हे पुरुषोत्तम आप युद्धमें उसके घोड़ोंको थांभो कर्ण आप सब योद्धाओं को मारकर फिर अर्जुनको मारना चाहताहै ३८ हे राजा मैं बारंबार आपको कर्णके सारथी बननेके निमित्त अपनी इच्छासे प्रार्थना करताहूं जैसे कि सारथियों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनके मन्त्री हैं उसी प्रकार आप भी कर्णकी सब ओरसे रक्षाकरो ३९। ४० संजय बोले इसके पीछे प्रसन्नचित्तहो राजाशल्य आप के पुत्र दुर्योधन से बड़े स्नेह से मिलाप करके यह वचन बोला ४१ हे गांधारी के पुत्र अपूर्वदर्शन राजा दुर्योधन जो तुम मुझको ऐसा मानतेहो इस हेतु से तेरा जो अभीष्ट है उस सबको मैं करूंगा ४२ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ शत्रुसंतापी मैं जिस जिस कर्म के योग्यहूं और जहां जहां जैसा २ मैं करसक्ता हूं वहां २ अपने मन से सर्वात्मा से तेरेकर्म को करूंगा ४३ मैं वृद्धिका चाहने वाला होकर कर्णसे जो कुछ प्रियवार्त्ताकहूं उसवचनको आप और कर्णदोनों सब प्रकारसे सहनेके योग्यहैं ४४ कर्णबोला हे राजा मद्र जिसप्रकारसे ब्रह्माजी शिवजीके और श्रीकृष्णजी अर्ज्जुन के सारथीहुये उसीप्रकार तुमभी हमारी

वृद्धिमें प्रवृत्तहूजिये ४५ शल्यने कहा कि अपनी निन्दा और स्तुति और दूसरे की निन्दा और स्तुति यह चारप्रकार के कर्म अच्छेलोग नहीं करते हैं ४६ हे बुद्धिमान् फिरभी मैं तेरे निश्चयहोनेके लिये अपनी प्रशंसासे भरेहुये वचनको कहताहूं उसको तुम यथार्थही समझो हे प्रभु मैं मातलिके समान सावधानी व अश्वकी रथवानी अथवा आगे होनेवाले दोषके जानने और उसके दूरहोने के उपायके जानने से और दोषोंके दूर करने की सामर्थ्य रखनेसे इन्द्रके सारथी होनेके योग्यहूं ४७। ४८ हे निष्पाप कर्ण इस हेतुसे युद्धमें अर्ज्जुनसे युद्धकरने वाले तुझ रथीके साथसारथी होकर तपसे पृथक् घोड़ोंको चलाऊंगा ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसारथ्यस्वीकारेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

दुर्योधनबोला हे कर्ण यह राजा मद्र तेरा सारथी बनेगा यह तुम्हारा सारथी श्रीकृष्णजी से भी ऐसा अधिक है जिसप्रकार इन्द्रका सारथी मातलि १ जैसे कि मातलि हरित घोड़ोंके रथको चलाताहै उसी प्रकार यह शल्यभी तेरे रथके घोड़ोंको चलावेगा २ तुझ युद्धकर्त्ताके रथी होने और राजा मद्रके सारथी होने पर तुम्हाराही उत्तम रथ निश्चय करके पाण्डवोंको विजय करेगा ३ संजयबोले हे राजा इसके अनन्तर प्रातःकाल होजाने पर राजा दुर्योधनने उस वेगवान् राजा मद्रसे फिर कहा ४ कि हे राजा मद्र आप अब युद्धमें कर्णके उत्तम घोड़ों कों थांभो तुम से रक्षित होकर यह कर्ण अर्जुन को अवश्य विजय करेगा ५ हे भरतवंशी यह वचन सुनकर शल्य ने रथपर नियत होकर कहा कि ऐसाही होगा तब प्रसन्नचित्त कर्ण अपने सारथी शल्य के पास आकर यह वचन बोला कि हे सूत आप मेरे रथको शीघ्र तैयार करो उसके पीछे सारथी शल्य ने कहा विजयकरो यह शब्द कहकर रथोंमें श्रेष्ठ गंधर्व नगर के समान ६। ७ बुद्धि के अनुसार अलंकृत कल्याणरूप और विजयी रथको बड़ी शीघ्रता से तैयार करके वर्त्तमानकिया उस उत्तम रथको प्रथम तो महारथी कर्णने ब्रह्मज्ञानी अपने पुरोहित के द्वारा बुद्धि के अनुसार पूजके परिक्रमाकर विचारपूर्वक सूर्य का उपस्थान करके ८। ९ सन्मुख वर्त्तमान हुये शल्यसेकहा कि आप सवार हूजिये इसकेपीछे बड़ा तेजस्वी शल्य कर्णके उस अत्यन्त उत्तम बड़े अजेय रथ

पर ऐसे चढ़ा १० जैसे कि पर्वतपर सिंह चढ़ताहै तदनन्तर कर्ण अपने उत्तम रथको शल्यके स्वाधीन देखकर ११ ऐसे सवार हुआ जैसे बिजली से भरेहुये बादलपर सूर्य्य सवार होताहै फिर वह सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशमान दोनों एक रथपर सवार होकर १२ ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग्ग के सूर्य्य और चन्द्रमा दोनों बादलों में शोभित होते हैं उससमय वह महात्मा बड़े तेजस्वी ऐसे दिखाई दिये १३ जैसे कि यज्ञमें ऋत्विज और सदस्यों से स्तुतिमान इन्द्र और अग्नि होते हैं फिर वहकर्ण रथपर नियत होगया जिसके घोड़ों को शल्यने पकड़रक्खाथा १४ बाणरूप किरणोंका रखनेवाला कर्ण घोर धनुष को टंकारता हुआ अपने उत्तम रथपर ऐसे नियत हुआ जिसप्रकार मण्डलयुक्त सूर्य्य नियत होताहै १५ वह पुरुषोत्तम ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि मन्दराचल पर्व्वतपर सूर्य्य नियत होताहै फिर शल्य उस महाबाहु रथपर चढ़े हुये तेजस्वी कर्णसे १६ यहवचन बोला कि हे वीर कर्ण युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी से कठिन कर्म्म नहीं कियागया १७ तुम सब धनुषधारियों के समक्ष में उसको करो मेरे चित्तमें यह पूर्ण विश्वास था कि महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य १८ अवश्य अर्जुन और भीमसेनको मारेंगे हेवीर उसमहायुद्धमें जो वीरताका कर्म्म उन दोनोंसे नहींहुआ १९ हे कर्ण तुम द्वितीय इन्द्रके समान होकर उसकर्मको करो तुम धर्मराजको बांधो अथवा अर्जुनको मारो २० हे कर्ण तुम भीमसेन समेत माद्रीकेपुत्र नकुल और सहदेवको भी मारो हे पुरुषोत्तम तुम यात्राकरो तुम्हारा कल्याण है और विजय होगी २१ वहां जाकर पाण्डवों की सबसेनाको भस्मकरो इसकेपीछे तूरी नामादि हजारों बाजे और भेरी बजाईं २२ उनका शब्द ऐसा सुन्दर विदितहुआ जैसे कि स्वर्ग में बादलों के शब्द होतेहैं फिर वह महारथी रथमें बैठाहुआ कर्ण उसके वचनको अंगीकार करके २३ उस युद्धमें अत्यन्त सावधान शल्य से बोला हे महाबाहु घोड़ों को तीक्ष्णकरो मैं अर्जुनको मारूंगा २४ और भीमसेन समेत दोनों नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिरको मारूंगा हे शल्य अब तुम अर्जुनको और मुझ हजारों बाण फेंकने वाले के भुजबलको देखो अब मैं बड़े प्रकाशित बाणों को २५ । २६ पांडवों के नाश और दुर्योधनकी विजयकेलिये फेंकताहूं शल्य बोला हे सूतकेपुत्र तुम इस रीतिसे पांडवोंका अपमान करते हो २७ वह पांडव सब अस्त्रशस्त्रों के ज्ञाता बड़े

धनुषधारी अतिबलीकभी मुख न मोड़नेवाले महाभाग अजेय और सत्यपराक्रमी हैं २८ जो साक्षात् इन्द्रकोभी भयके उत्पन्न करनेवाले हैं हेकर्ण जब वज्रके समान २९ गांडीव धनुषके शब्दको सुनोगे तब ऐसानहीं कहोगे अथवा जब कि भीमसेनके हाथसे ३० हाथियोंकी सेनाको खंडित दन्तहोकर मृतक देखोगे तब ऐसा नहीं कहोगे जब युद्ध में धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर वा नकुल सहदेवको देखोगे ३१ और जब तीक्ष्णबाणों से आकाशको आच्छादित करनेवाले बाणों के चलाने वाले हस्तलाघव करनेवाले अजेय शत्रुओं को अथवा अन्य २ बड़े २ प्रतापी राजाओं को देखोगे तब तुम ऐसे वचन नहीं कहोगे ३२ । ३३ संजय बोले कि इसके पीछे कर्ण राजा मद्रके कहेहुये वचनों को निन्दित करके उस वेगवान् राजा मद्रसे कहनेलगा कि अब चलो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसंबादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि प्रसन्नमूर्त्ति सब कौरव उस बड़े धनुषधारी युद्धाभिलाषी कर्ण को देखकर चारों ओरसे पुकारे १ इसके पीछे दुन्दुभी और नानाप्रकारके बाणोंके घोड़ोंकी गर्जना समेत शब्दोंको करते आपके युद्धकरनेवाले २ युद्ध में मृत्युको लौटाकर निकले इसकेपीछे कर्ण समेत प्रसन्नचित्त युद्धकर्त्ताओं के चलनेपर ३ पृथ्वी कम्पायमान हुई और बड़ी दूरतक शब्दायमान होगई और सूर्य्यादि नवग्रह युद्ध के निमित्त निकलते हुये दृष्टपड़े ४ और उल्काओं का गिरना वा शुष्क विद्युत्पातन होना प्रारम्भहुआ और महाभयकारी वायु चली उस समय महाभयसूचक पशु और पक्षियों के समूह आपकी सेना को बहुधा दाहिने हुये और यात्रा करनेवाले कर्ण के घोड़े पृथ्वी परगिरे और अन्तरिक्षसे अस्थियोंकी महाभयकारी वर्षाहुई ५।७ अस्त्रशस्त्र अग्निरूपहुई ध्वजा कम्पायमानहुई और वाहनोंने अश्रुपात किया ८ ऐसे २ अनेक भय और अशुभसूचक उत्पात कौरवोंके नाश के लिये प्रकटहुये ९ परंतु दैवसे मोहितहुये उन सब राजाओंने इनभयकारी उत्पातोंको कुछ नहीं गिना और यात्रा करनेवाले कर्ण से कहने लगे कि विजय करो उस स्थानपर कौरवलोगों ने पाण्डवों को पराजय माना १० हेराजा इसके पीछे शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला रथियों में श्रेष्ठ यह

रथपर बैठाहुआ कर्ण बड़े पराक्रमी सूर्य और अग्निके समान प्रकाशमान भीष्म और द्रोणाचार्यको विचारकर ज्वलितरूप हुआ ११ अहंकार और क्रोधज्वलित रूप श्वासाओंको लेताहुआ कर्ण अर्जुन के अद्भुतकर्म को विचारकर शल्यको सन्मुख करके यहवचन बोला कि हे शल्य मैं शस्त्रधारी रथमें सवार होकर युद्धमें वज्रधारी इंद्रसे भी नहीं डरताहूँ भीष्महो जिनमें मुख्य गिनेजातेथे उनको पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखकर मुख न मोड़ना यह जो प्रशंसा है वह मुझको त्यागकर-ती है १२। १३ जब कि महाइन्द्र और विष्णुके रूपवाले निर्द्दोष अत्यन्त उत्तम रथ और घोड़ेवाले और हाथियों के संहार करनेवाले घायल न होने के समान भीष्म और द्रोणाचार्य्यजी शत्रुओं के हाथ से मारेगये इसहेतु से इस युद्ध में मुझ को भी भय नहीं है १४ बड़े अस्त्रज्ञ ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गुरूजी ने सारथी वा हाथी और रथों समेत बड़े२ वीर पराक्रमी राजाओंको युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मराहुआ देखकर किस कारणसे युद्ध में सब शत्रुओं को नहीं मारा १५ सो मैं इस प्रबल घोर युद्ध में द्रोणाचार्य्य को स्मरण करताहुआ सत्य २ कहताहूं हे कौरव तुम उसको समझो तुममें से मेरे सिवाय कौनसा दूसरा मनुष्य है जो उस मृत्यु के समान सन्मुख आनेवाले उग्ररूप अर्जुन से सन्मुख लड़े १६ द्रो-णाचार्य्यजी में शिक्षाकरना वा बल धैर्य और महान् अस्त्रज्ञतापूर्व्वक नम्रताथी जो वह महात्मा मृत्युके वशीभूत हुये तो मैं अब उसको आसन्नमृत्युही मान-ताहूं १७ मैं इसलोक में शोचताहुआ कर्म और दैवयोगसे सबको नाशमानही जानताहूं गुरूके गिराये जानेपर सूर्य्योदयके समय सन्देहसे रहित कौनमनुष्य अपने जीवनेकी आशा करसक्ताहै १८ निश्चय करके अस्त्र, बल, पराक्रम, कर्म, श्रेष्ठनीति और उत्तम शस्त्र मनुष्य के सुख के कर्म को नहीं करसक्ते हैं क्योंकि जब इस रीति से गुरूजी शत्रुओं के हाथसे मारे गये १९ तब कोई भी अस्त्रा-दिक उन असहिष्णु अग्नि वा सूर्य्य के समान तेजस्वी पराक्रम में इन्द्र और विष्णु के सदृश नीति में शुक्र और बृहस्पति के समान गुरूजीकी रक्षाकरने को समीपतामें नियत नहीं हुये २० स्त्री वा बालकोंको पीड़ित और रोदनकरने पर और दुर्य्योधन के उपायों के निष्फल होने पर मुझको कर्म करना उचित है यह मेरामतहै हे शल्य इसहेतुसे शत्रुओंकी उस सेनामें चलो २१ जहां सत्य-संकल्प राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी, सात्यकी, सृंजय, नकुल

और सहदेव नियतहैं उनसे युद्धकरनेवाला मेरे सिवाय अन्य दूसरा कौनहै २२ इसहेतुसे हे राजा मद्र शीघ्र चलो मैं युद्धमें सन्मुख होकर उन पांचालों को वा सृंजियों समेत पाण्डवों को मारूँगा वा उनके हाथ से मरकर द्रोणाचार्य्य के समान यमराज के समीप जाऊँगा २३ हे शल्य यह बात नहीं है कि मैं भीष्मादि शूरों के समान न मरूँगा किंतु मरना अवश्य है परन्तु मुझसे मित्रके द्रोह करनेवाले नहीं सहेजाते इस हेतुसे उनसे पराक्रमपूर्व्वक लड़कर प्राणोंको त्यागकरके द्रोणाचार्य्य के पीछे जाऊंगा २४ जीवनके अन्त होनेपर मृत्युके चाहेहुये बुद्धिमान् और अबुद्धिमान् दोनों बच नहींसक्के हे बुद्धिमान् इसहेतु से मैं पाण्डवोंके सन्मुख जाऊंगा निश्चयकरके दैवके उल्लंघन करनेको कोई समर्थ नहीं है २५ राजा धृतराष्ट्र का पुत्र सदैवसे मेरा शुभचिन्तक और मित्ररहा है इस निमित्त मैं उसके अभीष्ट सिद्धहोनेके लिये प्रियभोग और कठिनतासे त्यागनेके योग्य अपने प्राणोंको भी त्यागकरूंगा२६ वह व्याघ्रचर्मसे मढ़ाहुआ रथ मुझको परशुरामजी ने दिया है जो शब्दरहित चक्र सुवर्णमय त्रिकोश और रजतमय त्रिवेणु और अत्यन्त उत्तम घोड़ोंसे संयुक्तहै २७ हे शल्य चित्रविचित्र धनुष ध्वजा गदा वा उग्ररूप शायक प्रकाशित खड्ग और उत्तम आयुधों समेत शब्दायमान उग्र उज्ज्वल शङ्खको देखो २८ मैं इसपताकाधारी वज्रके समान दृढ़ शब्दायमान श्वेत घोड़े और तूणीरों से शोभायमान रथोंमें श्रेष्ठ इसरथपर आरूढ़होकर युद्धमें अपने पराक्रमसे अर्ज्जुनको मारूंगा २९ जो युद्धभूमिमें सदैव सावधान सबका नाशकरनेवाला कालभी अर्जुनकी रक्षाकरे तो भी युद्धमें सन्मुखहोकर उसको अवश्य मारूंगा अथवा भीष्म के समक्ष यमराज के पास जाऊंगा ३० जो युद्धमें यमराज वरुण कुबेर इन्द्र अपने सबसमूहों समेत इकट्ठे होकर भी अर्जुनकी रक्षाकरें तबभी मैं उनसब समेत अर्जुनको विजय करूंगा बहुत बातोंके कहने से क्या प्रयोजनहै ३१ संजय बोले कि कर्णके वचनों को सुनकर पराक्रमी राजाशल्य उसका अपमान करके हँसा और निषेधकरके उत्तर दिया ३२ शल्यनेकहा हे कर्ण अपनी प्रशंसा मतकरो हे बड़े अहंकारी तुमबड़ा बोल बोलतेहो बड़े आश्चर्य्यकी बातहै कि कहां तो नरोत्तम अर्जुन और कहां नराधम तुम ३३ अर्जुन के सिवाय कौनपुरुष विष्णुजी और इन्द्रसे रक्षित देवस्वरूप यदुभवनको विलोड़न करके श्रीकृष्णकी छोटीबहिन सुभद्राको हरणकर

सक्राथा ३४ और मृगवध कलहमें अर्थात् शूकरके शिकार करने में इन्द्रकेसमान पराक्रमवाले अर्जुन के सिवाय कौनसा पुरुष इसलोक में त्रिभुवन के स्वामी ईश्वरोंके भी ईश्वर शिवजीको युद्ध में बुलासक्ता है ३५ अर्ज्जुन ने अग्नि की गौरवतासे असुर, सुर, महाउरग, मनुष्य, गरुड़, पिशाच, यक्ष और राक्षसोंको अपने बाणों से विजयकिया और अग्निको यथेच्छ भोजनरूप हव्यदिया ३६ तुझको स्मरणहै कि जब युद्धमें कौरवोंसमेत तुम सबको पराजय करके गन्धर्वोंने इसधृतराष्ट्रकेपुत्र दुर्य्योधनको बांधलियाथा और तुमलोग भाग आयेथे उससमय इसीअकेले अर्ज्जुन ने सूर्य्यके समान प्रचंड शायकों से गन्धर्वोंको पराजय करके उसको छुटायाथा ३७। ३८ फिर गोहरणमें सेना वा सवारीसमेत चढ़ाई करनेवाले गुरू, गुरुपुत्र और भीष्मादिक तुम सब उस पुरुषोत्तमके हाथ से विजय कियेगयेथे उससमय तुमने क्यों नहीं अर्ज्जुनको विजयकिया ३९ संजय बोले कि इसरीतिसे शत्रुओंकी प्रशंसा बड़े साहसी शल्यके मुखसे होने पर कौरवी सेनाका सेनापति कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर राजामद्रसे बोला ४० ऐसाहीहोगा ऐसाहीहोगा क्या अधिक वर्णनकरतेहो अबतो निश्चयकरके मेरा उसका युद्ध वर्त्तमानहै जो वह इसयुद्धमें मुझको विजय करलेगा तब तेरा यह कहना ठीक२ होगा ४१।४२ राजामद्रनेकहा ऐसाही होय यह कहकर उत्तर नहीं दिया तब युद्धकी इच्छाकरके कर्णने शल्यसेकहा कि हे शल्य सावधान होजाओ ४३ वह श्वेतघोड़ोंसेयुक्त शल्यको सारथी रखनेवाला युद्धमें शत्रुओंको मारताहुआ उन वीरशत्रुओं के सन्मुख ऐसे गया जैसे कि अन्धकारको दूरकरता हुआ सूर्य्य जाताहै उसके पीछे व्याघ्र चर्म से मढ़ेहुये श्वेतघोड़ों के रथके द्वारा वहां पहुंचकर सबपांडवी सेनाको देखकर बड़ीशीघ्रतासे अर्जुनकोपूछा ४४।४५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८॥

उनतालीसवां अध्याय॥

इसके अनन्तर यात्रा करने में आपकी सेना को प्रसन्न करतेहुये कर्ण ने युद्ध में प्रत्येक को देखकर पाण्डवों से कहा १ कि इस समय जो पुरुष महात्मा अर्ज्जुन को मुझे दिखावे उसको मुंह मांगा धन दूं २ और जो पुरुष अर्ज्जुन को मुझसे थोड़ा जाने उसको मैं रत्नों का भराहुआ एक शकट दूं ३

और जो अर्ज्जुन का बतलानेवाला पुरुष उसको भी थोड़ा माने तो मैं उस को भोजन और कांस्य दोहिनियों समेत सौ गौवें दूं ४ अर्ज्जुन के दिखलाने पर सौ उत्तम गांव दूं और खच्चरों समेत रथ भी दूं ५ अथवा इन सबको भी थोड़ाजाने तो मैं उसको कृष्ण केशों से शोभित स्त्रियोंको दूंगा जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला इसको भी साधारण जाने ६ तो उसको सुनहरी हाथी के समान छः बैलों से युक्त रथदूं और इसीप्रकार उसे ऐसी वस्त्रालंकारयुक्त स्त्रियों का एक सैकड़ादूंगा ७ जोकि निष्ककी माला धारणकिये गीतवाद्यमें कुशल श्यामांगी हों अथवा जो अर्ज्जुनका दिखलानेवाला उसको भी कमजाने उस को सौ हाथी सौ गांव सौ रथ और दशहजार सुवर्ण से युक्त ८। ९ सुशिक्षित हृष्ट पुष्ट रथके लेचलने में समर्थ होंय ऐसे घोड़े दूंगा और सुवर्ण शृंगों से युक्त सवत्सा चारसौ गौवेंदूंगा १० जो अर्ज्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ा माने ११ उसके लिये दूसरावरदेकर ऐसे पांचसौ घोड़ेदूं जोकि श्वेतवर्ण और सुवर्ण से मंडित स्वच्छ मणियों के भूषणों से अलंकृतहों १२ इसके विशेष में अठारह अच्छे शिक्षित अन्य घोड़ोंकोभी दूंगा और अति उज्ज्वल सुवर्णसे अलंकृत कांबोजी भी घोड़ोंसे युक्तरथदूं १३ जो अर्जुनका दिखलानेवाला पुरुष उसको भी न्यूनसमझे १४ तो दूसरा दानदूं अर्थात् नानाप्रकार के स्वर्ण भूषणों से और मालाओं से अलंकृत पश्चिमीय कच्छदेशों में उत्पन्न और माल्यवान् हाथीवानों से शिक्षित सौहाथीदूं और जो इसको भी थोड़ामाने १५।१६ उसको बहुतवृद्धियुक्त धनसे पूर्ण वन जंगलवाले ऐसेचौदह गांवदूं जोनिर्भय औरअच्छे राजाओं के भोगनेके योग्यहोंय १७ इसीप्रकार निष्ककी मालाधारण करनेवाली मगधदेशी दासियों का एक सैकड़ादूं और जो अर्जुन का दिखलानेवाला पुरुष इसको भी थोड़ामाने तो जोवह मांगेवहदूं अर्थात् बेटी स्त्रीको आदिले जो मेरा प्रियधन होय उसको भी दूंगा इसके विशेष जो जो मेरा धनहै और वह चाहता है वह सब उसको देसक्ता हूं जो अर्ज्जुन को मुझे बतावे व दिखावै १८। २० श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको एक समयमेंही मारकर उनका सबधन उस को दूं जो अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजी को मुझे दिखावे २१ युद्धमें ऐसे वचनों को कहतेहुये कर्ण ने समुद्रसे उत्पन्नहुये अपने शङ्खको बजाया २२ हे महाराज कर्ण के इन वचनों को सुनकर दुर्योधन अपने साथियों समेत अत्यन्त प्रसन्न

हुआ २३ इसके पीछे हे पुरुषोत्तम दुन्दुभी आदि मृदंगों के सब प्रकारके शब्द वा बाजों समेत सिंहनाद और हाथियों के शब्द २४ सेनाओंके मध्यमें प्रकट हुये इसी प्रकार अत्यन्त प्रसन्न चित्त शूरवीरों के अनेक शब्दहुये २५ तब तो सेनाके प्रसन्न होनेपर राजामद्र हँसकर उस शत्रुओं के विजय करनेवाले और अपनी प्रशंसा करतेहुये जानेवाले महारथी कर्णसे यह वचन बोला २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णावलेपेनवत्रिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोले हे सूतपुत्र दान करनेसे बन्दहो तू सुवर्णमय हाथी के समान छः बैलोंसे संयुक्त रथको पुरुषके अर्थ अर्थात् ब्रह्मके अर्पणकरो तब तुम अर्जुनको देखोगे १ हे राधाके बेटे तुम यहां बालबुद्धिसे अज्ञानों के समान धनको देतेहो अब तुम बिना उपायकेही अर्जुनको देखोगे २ तुम अज्ञानियों के समान जो निरर्थक धनको देतेहो सो अपात्रके दानदेने में जो दोषहैं उनकोभी अपने मोहसे नहीं जानतेहो ३ जो तुम बहुतसे धनको देतेहो उसधनकेद्वारा तुमको उचितहै कि यज्ञोंको करो ४ जो तुम अपनी अज्ञानतासे श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारना चाहतेहो वह निरर्थकहै शृगालोंसे सिंहोंका मारना हमने कभी और कहींभी नहीं सुनाहै ५ तू अप्रियताको और अप्राप्तको चाहताहै तेरे शुभचिंतकमित्रहैं जो कि तुझको अग्निमें गिरतेहुये नहीं रोकतेहैं ६ तू शुभाशुभ कर्मकोभी नहींजानताहै और निस्सन्देह तू कालके गालमें फँसताहै जीवनका चाहनेवाला कौन पुरुष सर्वथा निष्प्रयोजन और सुनने के अयोग्य बार्त्ताओंको करे ७ जैसे कि गलेमें पत्थरकी शिलाको बांधकर समुद्रमें पैरना चाहै अथवा पर्व्वत के शिखरसे गिरनाहोय वैसेही प्रकारका तेरा ईप्सितकर्महै ८ जो अपना कल्याण चाहतेहो तो तुम सब योद्धाओंसे युक्त सजीहुई अपनी सेना समेत अर्जुनसे युद्धकरो ९ मैं दुर्योधनकी वृद्धिकेलिये तुझसे कहताहूं जो तू जीवनकी इच्छा रखताहै तो मेरे बचनोंको शत्रुता और ईर्षासंयुक्त न जान १० कर्ण बोला मैं अपनेही भुजबल के आश्रित होकर युद्धमें अर्जुनको चाहताहूं हे उत्तम मित्र तुम शत्रुरूप होकर मुझको भयभीत करातेहो ११ अब मुझको मेरे इस बिचारसे कोई भी नहीं हटा सक्ता इन्द्रभी जो बज्र दिखाकर मुझको युद्धसे निवृत्त कियाचाहै तो नहीं निवृत्त

होसक्ता फिर मनुष्यकी क्या सामर्थ है १२ संजय बोले कि फिर कर्ण को क्रोध युक्त करनेकी इच्छासे मद्र देशके स्वामी शल्यने कर्ण के बोलने के पीछे इस उत्तररूप बचनको कहा १३ कि जब अर्जुनके बेगसे युक्त प्रत्यंचासे प्रेरित तीव्र हाथोंसे छोड़ेहुये कंकपक्षसे जटित तीक्ष्ण नोकवाले बाण तेरे सन्मुख आवेंगे तब तू अर्जुनके विषयमें ऐसे बचन कहनेको दुखी होगा १४ जब सेनाको संतप्त करता हुआ तुझको तीक्ष्णनोकवाले बाणों से मर्द्दन करना चाहनेवाला अर्जुन अपने दिव्य धनुषको लेकर तेरे सन्मुख आवेगा तब हे सूतपुत्र तू महादुखी होगा १५ जैसे कि माताकी गोदी में कोई सोताहुआ बालक चन्द्रमाके पकड़नेकी इच्छा करता है उसी प्रकार अब तुम इस रथपर सवार होकर प्रकाशमान अर्जुनको अपने मोहसे विजय किया चाहतेहो १६ हे कर्ण अब तुम अत्यन्त तीक्ष्णधार वाले त्रिशूल से चिपटकर अपने अंगोंको घसीटतेहो जो कि अत्यन्त तीक्ष्ण धारवाले त्रिशूल कर्मी अर्जुन के साथमें लड़ना चाहतेहो १७ जैसे कि अज्ञान बालक वा बेगवान नीचमृग क्रोधयुक्त बड़े केसरी सिंहको युद्धके निमित्त बुलावे हे सूत पुत्र इसीप्रकार से तू भी अर्जुनको बुलाता है १८ हे सूतके पुत्र तू राजकुमार को मतबुलावे जैसे कि मान्ससे तृप्तहुआ शृगाल बनमें केसरी सिंहको नहीं बुलासक्ता उसीप्रकार तुम अर्ज्जुन को प्राप्त होकर अपना नाशकरना चाहतेहो सो मतकरो १९ जैसे कि शृगाल ईशाके समान दांत रखनेवाले मुख और गंडस्थल से मद झाड़नेवाले बड़े हाथी को युद्धमें बुलावे हे कर्ण उसी प्रकार तुम पांडव अर्जुनको बुलातेहो २० तुम अपनी अज्ञानता और बल बुद्धिसे बिलमें बैठेहुये क्रोधयुक्त महाबिषधर कालेसर्पको लकड़ीसे मारतेहो जो अर्जुनसे युद्धकरना चाहतेहो २१ हे कर्ण अब शृगाल रूप अज्ञानहोकर तुम केसरी सिंहरूप क्रोधयुक्त नरोत्तम पांडव अर्जुनको उल्लंघन करके गर्जते हो २२ और सर्प के समान तुम अपनी मृत्यु के लिये सुन्दर पक्षवाले अद्भुत पराक्रमी गरुड़के समान बेगवान महाबली पांडव अर्जुन को बुलातेहो २३ सब जलोंके स्वामीभयानक मत्स्यादिक जीवों से व्याप्त चन्द्रोदय में प्रसन्नरूप वृद्धिपानेवाले मूर्त्तिमान समुद्रको भुजाओंसे तरनाचाहतेहो २४ हे कर्ण बछड़े के समान तुम दुन्दुभीरूप क्षुद्रघंटिकाओं के शब्दरखनेवाले होकर तीक्ष्ण शृंगसे घात करनेवाले बड़े बैलके समान पांडवअर्जुन को युद्धमें बुलातेहो २५ तुम

मेंढक के समान होकर लोकमें घोर जल बरसानेवाले नररूप बादल के समान अर्जुन के सन्मुख ऐंसे गर्जते हो २६ जैसे कि अपने घरमें नियत कुत्ता बन में बर्त्तमान व्याघ्रको अपने स्थानसे भोंकताहै उसीप्रकार तुमभी कुत्ते के समान नररूपव्याघ्र अर्जुनकी ओर को भोंकतेहो २७ हेकर्ण खरगोशों से युक्त शृगाल भी बनमें निवास करताहुआ अपनेको उस समयतक सिंहरूप मानताहै जबतक कि सिंहको नहीं देखताहै २८ हे राधाकेपुत्र इसीप्रकार शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुनको न देखके तुमभी अपनेको सिंहरूप मानरहेहो २९ जबतक एकरथ पर सूर्य्य और चंद्रमाके समान नियत श्रीकृष्ण और अर्जुन को नहीं देखतेहो तबतक तुम अपनी आत्माको व्याघ्र मानतेहो ३० हे कर्ण जबतक कि तुम युद्धमें गांडीव धनुषके शब्दको नहीं सुनतेहो तभीतक तुम इन अस्तव्यस्त बचनोंको मुखसे बोलरहेहो रथ और धनुषों से दशोंदिशाओं को शब्दायमान करनेवाले और शार्दूलके समान गर्जनेवाले अर्ज्जुनको देखकर तू शृगालरूप होजायगा ३१ । ३२ तुम सदैव शृगालरूप हो और अर्ज्जुन सदैव सिंहरूप है हे अज्ञान इस कारण बीरलोगोंसे शत्रुता करनेमें तू शृगालके समान दिखाई देताहै ३३ जैसे कि चूहाबिलार और महाबन में कुत्ता और व्याघ्रहोय और जैसे शृगाल और सिंह होंय और जिसप्रकार खरगोंश और हाथी होंय ३४ अथवा मिथ्या और सत्य वा विष और अमृतहोंय उसीप्रकार तुम और अर्ज्जुन भी अपने २ कर्म से विख्यातहो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि तेजस्वी शल्य से निन्दा कियाहुआ कर्ण अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर बचन रूपभालों को सहन करताहुआ बोला १ कि हे शल्य गुणवानों के गुणों को गुणवानही जानताहै गुणहीन मनुष्य नहीं जानताहै तुमगुणोंसे रहितहो इसीसे गुण और अवगुणों को क्याजानसक्ते हो २ हे शल्य मैं महात्मा अर्जुनके बड़े अस्त्रों को वा क्रोध बल पराक्रम धनुष औ बाणोंको अच्छे प्रकार से जानताहूं ३ और राजाओंमें वा यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीकी भी महानता को जैसा कि मैं जानताहूं वैसा तुम नहीं जानतेहो ४ मैं अपने और पाण्डवों

के पराक्रमको अच्छेप्रकार से जानताहुआ युद्धमें उस गांडीव धनुषधारी को बुलाताहूं ५ हे शल्य यह सुन्दर पुंखवाला रुधिर पीनेवाला तरकस में अकेला ही रहनेवाला स्वच्छ अलंकृत ६ चन्दन से लिप्त बहुत बर्षों से पूजित सर्परूप बिषधर उग्रमनुष्य घोड़े और हाथियों के समूहोंका मारनेवाला ७ घोररुद्ररूप कवच समेत अस्थियों का चूर्णकर्त्ता जिसके द्वारा में क्रोधयुक्तहोकर मेरुपर्व्वत सरीके बड़े २ पर्व्वतों को भी चीर डालताहूं ८ में अर्जुन और देवकीनन्दन श्रीकृष्ण के सिवाय उस बाणको कभी दूसरे पर नहीं चलाऊंगा इसहेतु से मैं सत्य २ बचन कहताहूं ९ कि मैं अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर उसबाणसे अर्जुन और वासुदेवजीसे लडूंगा यह कर्म मेरेही योग्यहै १० सब वृष्णबंशी बीरोंकी लक्ष्मी श्रीकृष्णजी में नियतहै और सब पांडवोंकी बिजय अर्जुनमें नियतहै ११ इससे अब दोनों को पाकर कौन लौटसक्ताहै वह दोनों पुरुषोत्तम भागेहुये हैं वा रथ पर नियत हैं १२ मुझ अकेले के सन्मुखहोनेपर हे शल्य मेरे युद्धकी शोभा को देखना बुआ और मामा के बेटे अजेय दोनों भाइयों को १३ सूतमें पोही हुई दोमणियों के सदृश मेरे हाथसे मृतकही देखोगे अर्जुन के पास गांडीवधनुषहै श्रीकृष्णके पास सुदर्शनचक्रहै और गरुड़ वा हनूमानजी के रूप रखनेवाली दोनों ध्वजाहैं १४ हे शल्य भयभीतोंको भयके उत्पन्न करनेवाले और मेरी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले वह दोनों हैं दुष्टप्रकृति अज्ञानी महायुद्धमें अनभिज्ञ भयसे विदीर्ण चित्त तुमभयभीतहोकर बहुत से भयकारी बचनोंको कहतेहो हे पापीदेश में उत्पन्न होनेवाले निर्बुद्धी नीच क्षत्रियों के कुलको कलंकलगानेवाले अबयुद्ध में उनदोनों को मारकर तुझको भी बांधवों समेत मारूंगा १५।१७ तू मित्रहोकर शत्रुके समान शत्रुओंकी प्रशंसाकरताहै मुझको श्रीकृष्ण और अर्जुनसे क्या डराताहै कैतो वह दोनों मुझकोही मारेंगे वा मैंहीं उन दोनों को मारूंगा १८ में अपने पराक्रमको जानताहुआ श्रीकृष्ण और अर्जुनसे नहीं डरताहूं मैं अकेलाही हजारों बासुदेव और अर्जुनों को मारसक्ताहूं १९ हे दुर्देशमें उत्पन्नहोनेवाले मौनहो दुष्ट अन्तष्करणवाले मद्र देशियों के विषयमें क्रीड़ाके निमित्त इकट्ठे होनेवाले स्त्री बालक वृद्ध मनुष्य बहुधा जिन कथाओं को गान करके पढ़ा करते हैं हे शल्य उन गाथाओंको मुझसे सुनो २०। २१ और पूर्व समय में इन्हीं कथाओंको राजाओं के समक्षमें ब्राह्मणोंनेभी जिसप्रकारसे बर्णन करी हैं

हे अज्ञानी तुम उनको एकाग्रचित्तसे सुनकर क्षमाकरना वा उत्तरदेना २२ अर्थात् मद्रदेशी सदैव मित्रसे शत्रुता करनेवाले हैं जो हमसे शत्रुताकरता है हम उसको मद्रदेशीही जानते हैं मद्रदेशीमें मेल मिलाप नहींहोताहै और आपसमें क्षुद्रवचन बोलाकरतेहैं २३ हमने सुनाहै कि मद्रदेशीयलोग सदैव दुष्टात्मा मिथ्यावादी और कुटिलहोते हैं २४ पिता, माता, पुत्र, सास, ससुर, मामा, जामात्र, लड़की, भाई, पोते, बांधव और समान अवस्थावाले, अभ्यागत, और अन्यदासी दासआदि सब मिलेहुये हैं और बुद्धिमान होकरभी अज्ञानियों के समान अपनी इच्छासे पुरुषोंसे विषय भोगकरनेवालेहैं २५।२६ इसीप्रकार जिन नीच अचेतता में युक्त मत्स्यखादकोंके घरमें गौके मांससमेत मद्यकोपीकर पुकारते और हँसतेहैं २७ और अयोग्य गीतोंकोभी गातेहुये इच्छानुसार कर्मों को करते हैं और परस्परमें भी इच्छानुसार वार्त्तालाप करतेहैं उनमें धर्म कैसे होसक्ता है २८ जो कि मद्रदेशी अहंकारी होकर दुष्टकर्मी विख्यातहैं इसहेतुसे मद्रदेशियोंसे मित्रता और शत्रुता दोनों न करे २९ मद्रदेशियों में स्नेह और प्रीति नहींहोती और वह सदैव अपवित्रहैं मद्रदेशी और गान्धार देशियोंमें पवित्रता नष्टहोगई है ३० राजा जिस में याचकहै उस यज्ञमें जो दियाजाता है वह सब जैसे नष्टताको पाताहै और जिसप्रकार शूरोंका संस्कार करनेवाला तिरस्कारको पाताहै और जैसे इसलोकमें ब्राह्मणों के शत्रु सदैव नाशहोते हैं उसीप्रकार मद्रदेशियों से प्रीतिकरके मनुष्य नष्टताको पाता है ३१।३२ मद्रदेशी में मेलमिलाप नहीं है हे विषैले विच्छू मैंने तेरे विषको अथर्वणवेदके मन्त्रोंसे शांतकियाहै ३३ इसीप्रकार ज्ञानीलोग बिच्छूके काटेहुये विषके वेगसे घायल मनुष्यकी औषधीकरते हैं वहभी सत्य २ देखनेमें आते हैं ३४ हे बुद्धिमान कैतौ मौन होजाओ नहीं तो ऐसे २ बचनों को सुनोंगे जिन वचनों को मद्यसे मदोन्मत्त स्त्रियां गाकर नाचती हैं ३५ उन स्वेच्छाचारी पतिवंचक भोगों में अनियम स्त्रियोंका पुत्र मद्रदेशी किसरीति से धर्म कहनेको योग्य होसक्ताहै ३६ जो स्त्रियां कि ऊंट और गधोंसमान खड़ीखड़ी पेशाब कियाकरती हैं उन बेधर्म और निर्लज्ज ३७ स्त्रियोंका पुत्रहोकर तू धर्म कहना चाहताहै जो स्त्रियां कांजी मांगनेपर कीचों को खींचती हैं ३८ और न देनेकी इच्छासे इन भयकारी असह्य वचनोंको कहती हैं कि कोई हमसे कांजी मतमांगो वह हमारी बड़ी प्रियहै ३९ बेटीको दें पतिको दें परन्तु कांजीको न

देंगे कन्या और वृद्ध स्त्री निर्लज्जहैं और कम्बलोंकी धारण करनेवाली होकर बहुधा दुराचारिणी और भ्रष्टहैं इसरीति से अन्यलोगभी शिरकी चोटीसे पैरके नखोंतक अयोग्य और अनुचित बातें मद्रदेशियोंके विषयमें कहाकरते हैं और यह भी हमने सुना है कि ४० । ४१ । ४२ पापिष्ठ देशमें उत्पन्न होनेवाले म्लेक्ष रूप धर्म्मों से रहित मद्र, सिन्ध, और सौबेर देशीलोग कैसे धर्म्मों को जानेंगे क्षत्रियोंका यह श्रेष्ठधर्म्म है ४३ कि युद्धभूमि में मृतकहोकर अथवा सत्पुरुषों से स्तूयमानहोकर पृथ्वीपर शयनकरें इसहेतुसे जो मैं युद्धभूमिमें जीवनको त्याग करूं ४४ तो मुझ स्वर्गाभिलाषी का यह प्रथमकल्प है ऐसा में बुद्धिमान दुर्योधनका प्यारामित्रहूं ४५ उसके लियेही मेरेप्राण और धनहैं हे पापी देशमें पैदा होनेवाले विदित होताहै कि तूभी पांडवोंसे भगायाहुआ है तुम शत्रुके समान जैसे कर्महमारे साथमें करतेहो वह सब तुम इच्छापूर्वककरो यह निश्चय समझो कि मैं तुझ सरीके सैकड़ों मनुष्योंसे भी युद्धमें अजेयहूं जैसे कि धर्मज्ञ मनुष्य नास्तिक के बचनों से धूपकेमारे सारंग पक्षी के समान बिलापकरके शरीरको सुखाताहै ४६ । ४७ । ४८ उसीप्रकार क्षत्रीके व्यवहारमें नियतहोकर मैं डरानेके योग्य नहींहूं पूर्व्वसमयमें मेरेगुरू श्रीपरशुरामजीने युद्धमें मुख न मोड़नेवाले और शरीर त्यागनेवाले नरोत्तमलोगोंकी जो गति कही है उसको मैं स्मरण करता हूं और धृतराष्ट्र के पुत्रों की रक्षा और शत्रुओं के नाश करने में प्रवृत्त हूं ४९ । ५० मुझको उत्तम व्यवहारमें नियत पुरूरवाबंशी जानों हे राजामद्र मैं तीनोंलोकों में ऐसा किसी जीवधारीको नहीं देखताहूं ५१ जो मुझको इस बिचारसे हटावे यह मेरा सिद्धान्त है हे बुद्धिमान ऐसा जानकर मौनहो भयभीत होकर क्यों बहुत बकता है ५२ हे मद्रदेशियों में नीच मैं तुझको मारकर कच्चे मान्स भक्षियों को नहींदूंगा हे शल्य तुम मित्र और मित्रके पिता धृतराष्ट्र इन दोनों बिचारों से और कठिन बचनोंकी सहनशीलता से अबतक जीवते बचेहो हे राजा मद्र जो तू फिर ऐसे बचनों को कहैगा ५३ । ५४ तो तेरे शिरको अपनी बज्रकी समान गदासे काटकर पृथ्वीपर गिराऊंगा हे दुष्टदेश में उत्पन्न होनेवाले अब यहां इस बातके देखने और सुननेवाले हैं ५५ कि श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन कर्णको मारें अथवा कर्ण उन दोनोंको मारे हे राजा इसप्रकार कहकर ५६ फिर कर्ण राजा मद्रसे बोला कि निर्भय होकर तुम रक्षाकरो रक्षाकरो ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यकर्णपरस्परानिन्दाकरनेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ फिर शल्य युद्ध के अभिलाषी अधिरथी कर्ण के बचनोंको सुनकर उससे यह विश्वासरूप बचन बोला १ कि मैं अपने धर्म्म में नियत यज्ञकर्त्ता युद्ध में मुख न मोड़नेवाले मूर्द्धाभिषेक राजाओं के बंश में उत्पन्नहुआहूं २ हे कर्ण जैसे मदिरा से उन्मत्त मनुष्य होताहै वैसाही तू मुझको दिखाईदेताहै इससे अब मैं उसीप्रकारसे शुभचिंतकतासे तुझमतवालेकी चिकित्सा करताहूं ३ हे नीच कुलकलंकी कर्ण इस मेरी कहीहुई काकोपमा को समझो उसको सुनकर अपनी इच्छाके अनुसार कर्म करना ४ हे कर्ण मैं अपने बिषय में उस दोषको स्मरण नहीं करताहूं अर्थात् नहीं जानताहूं जिसके हेतुसे हे महाबाहु तुम मुझ निरपराधीको मारना चाहतेहो ५ मुख्यकर राजाका अभ्युदय चाहनेवाले रथपर सवार होकर मैं तेरे हानिलाभ के कहने के योग्यहूं मेरे इन बचनों को समझो ६ कि टेढ़ा सीधा मार्ग रथके सवारों की बल निर्बलता रथकी सवारी में घोड़ोंका क्लेश और थकावट ७ शस्त्रोंकाज्ञान पशु पक्षियों के शब्द भार की न्यूनाधिकता बाणोंके भालोंकी चिकित्सा ८ अस्त्रोंका योग युद्ध और शकुन यह सब बातें मुझरथके रक्षकसे तुमको जानने के योग्य हैं ९ हे कर्ण इसहेतु से यह दृष्टान्त तुझसे कहताहूं ठेठ समुद्रके किनारेपर एक बड़ा धनी वैश्य अनाज रखनेवाला था १० वह वैश्य यज्ञोंका करनेवाला महादानी शांतचित्त होकर पवित्रतापूर्व्वक अपनेकर्म में नियत बहुतसेपुत्र पौत्रादि से युक्त प्रीतिमान और जीवमात्रोंपर दया करनेवाला था ११ वह धर्म्मपर चलनेवाले राजा के देश में निर्भयतासे निवासकरताथा उसके कुमार बालकोंकी जूठनका खानेवाला एक उच्छिष्टभृतनाम काक था उसको वैश्य के कुमार बालक सदैव मान्स उष्ण अन्न दही दूध खीर मधु घृत यह सब बस्तु खिलायाकरते थे उस बालकों के जूठन खानेवाले अहङ्कारी काक ने अपने बराबरवाले वा अपनेसे बड़ोंकी भी निन्दाकरी इसके पीछे किसीसमय दैवयोगसे समुद्रके तटपर चलने में गरुड़के समान मन के समान बड़े शीघ्रगामी प्रसन्नचित्त चक्रांग आदिक हंसआये तब वह वैश्यों के बालक उन हंसोंको देखकर अपने जूठन खानेवालेको ऐसे बोले १२।१६ हे आकाशचारी काक आप तो सब पक्षियों से उत्तमहो यह प्रशंसा सुनकर उस निर्बुद्धी

काकने अपने अहङ्कार और अज्ञानतासे उस बचनको सत्यहीजाना और उन दूरजानेवाले बहुत हंसों के पास जाकर उस दुर्बुद्धी ने कहा कि तुमलोगों में से जो श्रेष्ठहोय वह मेरे साथ उड़े यह सुनकर वह सब आयेहुये हंस हँसे १७। २० और उन आकाशचारी मनगामी और पक्षियों में श्रेष्ठ हंसोंमें से चक्रांग नाम हंसने उसअहंकारी काकसे कहा २१ कि हम हंसोंकी गति मनके समानहै और दूर जानेके कारण से हम सब पक्षियों में शिरोमणि गिनेजाते हैं हे निर्बुद्धी तू काकहोकर अपनेसाथ हमको उड़नेकेलिये कैसे बुलाताहै २२।२३ भला कहतो सही कि तू हमारे साथ किस प्रकारसे उड़ेगा यह सुनकर उस निकृष्ट जाति और अपनी प्रशंसा आप करनेवाले काकने हंसोंके कहेहुये वाक्योंको बारंबार निंदा करके उत्तर दिया २४ कि मैं निस्सन्देह सौ प्रकारकी गति से उड़सक्ताहूं और प्रत्येकगति शतयोजन लम्बी चित्र बिचित्र और जुदे २ प्रकार की है २५ उन गतियों के यह नामहैं उड्डीन अर्थात् ऊपरको उड़ना अवड्डीन, नीचेको चलना प्रड्डीन, सबओर को जाना बिडीन, केवल उड़ना निड्डीन, धीरेचलना संडीन, चित्तरोचकगति तिरछीडीन गतिभी चारप्रकार कीहै २६ विडीन, बड़ी बिस्तृत परिडीन, सबओरसे चलना पराडीन पीछेको उड़ना सुडीन, स्वर्गमार्गमें चलना अभिडीन, सन्मुख चलना महाडीन, पवित्र और ऊंचीगति खडीन, आकाश कोजाना परिडीनं, चारोंओरको चलना अवडीन, चढ़ना प्रडीन, अद्भुतगति संडीन, डीन, डीनक, ऊपरकी ओरकीगतें बिडीन, उड्डीन, संडीन, पुनडीन, बिडीन२७।२८ संपात, समुदीष, ब्यतरिक्त, गतागत, प्रतिगत, वव्ही निकुलीन इत्यादि अनेक प्रकारकी गतिहैं २९ उन गतियों को मैं तुम्हारे सन्मुख करताहूं इसीसेमेरे पराक्रमको देखोगे मैं उन गतियों में से एक गतिके द्वारा आकाश में उड़ताहूं हे हंसलोगो आप जिस गतिसे कहो उसीगतिसे उड़ूं ३०।३१ हे पक्षियो निश्चयकरके इस निराश्रय आकाशमें इनगतियों से उड़सक्तेहो तो तुमभी अच्छे प्रकार से निश्चय करके मेरे साथउड़ो काकके इसबचनको सुनकर ३२ एक हंस ने हँसकर काकको उत्तर दियाहै हे कर्ण उस बचनको मुझ से समझो अर्थात् हंसने कहा हे काक तुम निश्चयकरके सौ प्रकारकी गतिको उड़ोगे ३३ और मैं उसी गतिसे उड़ूंगा जिस गतिसे सब पक्षी उड़तेहैं क्योंकि मैं इस एक गति के सिवाय दूसरी गतिको नहीं जानताहूं ३४ हे ताम्राक्ष अबतुमभी चाहे जिस गति

से उड़ो इसके पीछे जो वहां और काक इकट्ठे होगयेथे वह सब हँसे ३५ और कहनेलगे कि हंस एकही गतिवालाहोकर सौ गति जाननेवाले को कैसे परास्त करसक्राहै ३६ इसके अनन्तर हंस और काक ईर्षा करके उड़े अर्थात् एक गति उड़नेवाला हंस सौ गतिवाले काक के साथ उड़ा ३७ काक उड़तेही वृक्षों पर बैठ २ अहंकारमें भराहुआ इधरउधर फिरता बोलनेलगा ३८ उसकी ऐसी गति को देखकर सब काक प्रसन्नहुये और सब हंस उसकी अभाग्यता देखकर हँसनेलगे ३९ इसरीतिसे एकमहूर्त्ततक उड़करहंसको पुकार२कर कहताथा कि ४०। ४१ मेरी इनकलाओं को देखकर आपभी अपनी कलाओंको प्रकटकीजिये ४२ हंस उसके बचनको सुन बहुतसा हँसकर पश्चिम समुद्रकी ओरको चला ४३।४४ और उसके संगकाकभी अपनेपरों को चपल करताहुआ चला समुद्र के ऊपर चलते २ कुछदूरपर काक थकित होगया ४५ और कोई वृक्ष टापू न देखके धैर्यतासे रहित होकर उड़नेलगा ४६ जब उसके सब पक्ष शिथिलहोगये तब समुद्रमें गिर पड़ा४७ उसको गिराहुआ देखके वह हंसवहां स्थिरहोकर हँसकर कहनेलगा ४८ हे काक आप अपनाव्रत और स्नान शीघ्रकरके चलो क्योंकि अभी समुद्रका पाट सौ योजनहै कहौ सौ गतियोंमेंसे यह कौनसी आपकी गतिहै कि जलमें मौनहोकर अपनेपक्ष और चोंचको डुबाते और निकालतेहो यह बचन सुनकर वह नीच बायस आरत बचनों से बोला हे हंस अब आप अपनीओरको देखकर मेरे ऊपर क्षमाकरो और जलसे निकालकर मुझको आनन्ददो और हमने अपनी कुमतिके बशीभूत होकर जो आपसे कुत्सित बचनकहे उनको अपने हृदयसे दूरकर दयाकरके मुझको जलसे निकालिये हे कर्ण यह काकके बचन सुनकर हंसने अपने पंजेसे उसको पकड़कर स्थलमें लाकर डालादिया सो जैसे कि बैश्यकेघरमें उच्छिष्ट खाखाकर काकपुष्टहुआ और हंससे प्रणकरके अपना हास्य कराया उसीप्रकार तुमभी धृतराष्ट्र के घरमेंखाके मोटेहोकर बढ़ेहो अब तुमकाकके समानहो हंसरूपी पार्थसे लड़कर अपना हास्य कराया चाहतेहो अरे विराटनगर में द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य और भीष्मादिकसरीके शूरवीरों को पार्थने बिजयकिया तब तुमने अकेले अर्जुन को क्योंनहीं मारा ४६।७३। उसस्थानपर पृथक् २ और संयुक्त तुमसब लोगोंको अर्जुनने ऐसे बिजयकिया जैसे कि शृगालों को सिंह बिजयकरताहै तब तेरा पराक्रम कहांथा ७४ युद्धमें

अर्जुनके हाथसे मारेहुये भाईको देखकर सबकौरवी बीरों के देखतेहुये प्रथमतो तुम्हींभागे ७५ हे कर्ण इसीप्रकार द्वैतबनमें गन्धर्वों से सन्मुखता होनेमें प्रथम तुमहीं सब कौरवों को छोड़कर भागेथे ७६ वहां भी हे कर्ण अर्जुननेही युद्धमें गन्धर्वों को मारकर और चित्रसेनादिकों को बिजय करके स्त्री समेत तेरे मित्र व पालनकरनेवाले दुर्य्योधनको छुटायाथा ७७ हे कर्ण फिर परशुरामजी ने राजाओं के मध्य सभा के बीच अर्जुन और केशवजीका प्राचीन प्रभाव बर्णन कियाथा ७८ तुमने राजालोगों के समक्ष में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अबध्य बर्णन करनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य्य के बारंबार कहेहुये बचनोंको सुना मैं उसको कहांतक तुझसे कहूं अर्जुन अनेक प्रकारसे तुझसे ऐसा अधिकहै जैसे कि सबजीवोंसे ब्राह्मण अधिक होताहै ७९। ८० तू अभी रथपर चढ़ेहुये बसुदेवनन्दन और कुन्तीनन्दन श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखेगा जैसे कि बुद्धिमें नियत होकर काक हंसके पास शरणागत हुआ उसी प्रकार तू भी बासुदेवजी और अर्जुनके पास जाकर शरणागतहो ८१। ८२ हे कर्ण जब तुम युद्धमें पराक्रमी अर्जुन और वासुदेवजीको एक रथपर देखोगे तब ऐसी २ बातें न कहोगे ८३ जब अर्जुन सैकड़ों बाणोंसे तेरे अहंकारका नाश करेगा तभी तुम अपने और अर्जुनके बलाबल रूप अन्तरको देखोगे ८४ अरे जो नरोत्तम देव असुर और मनुष्योंमें प्रसिद्धहैं उनका अपमान तुम ऐसे मतकरो जैसे कि पटबीजना सूर्य्यका अपमान नहीं करसक्ता ८५ जैसे कि सूर्य्य और चन्द्रमाहैं उसी प्रकार अर्जुन और श्रीकृष्णजी अपने तेजसे बिख्यातहैं तुम मनुष्यों में पटबीजनेके समानहो ८६ हे बुद्धिमान सूतके पुत्र कर्ण तू अर्जुन और केशवजीका अपमान मतकर वह दोनों नरोत्तम महात्माहैं मौनहोजा अपनी प्रशंसा मतकर ८७॥

दो० सूर्य्य चन्द्रसम बिदित है पारथ कृष्ण अमान।
तिनकी सरवरि जिनकरो तुम खद्योत समान १
बरप्रभाव हरिपार्थको पूर्व कह्यो बलिराम।
सोभुलायकत मोहबश लरन चहत जयकाम २

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिशल्यसंबादेहंसकाकोपाख्यानेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि महात्मा कर्ण शल्य के अप्रिय बचनों को सुनकर शल्य से बोला कि मैं ठीक २ जानताहूं जैसे कि अर्जुन और श्रीकृष्णजीहैं १ मैं अर्जुन के रथके हांकनेवाले केशवजी और अर्जुनके पराक्रम समेत बड़े अस्त्रों को भी अच्छी रीति से जानताहूं हे शत्रुरूप शल्य उसको तू नहीं जानताहै २ मैं उन शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और निर्भयरूप श्रीकृष्ण और अर्जुनसे युद्ध करूंगा परंतु ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजीका दियाहुआ शाप अब मुझको अधिकतर दुःख दे रहाहै ३ हे शल्य शापका कारण यह था कि मैं पूर्व्व समय में दिव्य अस्त्रोंका अभिलाषी होकर ब्राह्मणका रूप बनाकर कपटसे परशुरामजी के पास ठहरनेको गयाथा वहांभी अर्जुनकीही उन्नति चाहनेवाले देवराज इन्द्रने ४ भयानकरूप कीटके शरीर में प्रवेश करके मेरी जंघामें चिपटकर काटने से बिघ्नकरदिया अर्थात् मेरी जंघापर शिर रखकर गुरू परशुरामजी के सोनेपर उस कीटने मेरीजंघा को काटा ५ और बड़े घाव होनेके कारण मेरी जंघामें से बहुतसा रुधिर प्रकट हुआ परन्तु मैंने गुरूजीके भयसे शरीरको जराभी न कंपाया इसके पीछे जब गुरूजी जागे और उस मेरी जंघाके रुधिरको देखा ६ उन्होंने उस घाव से भी मुझको धैर्य्यतामें नियतदेखा तब यह बचन कहा कि निश्चयकरके तू ब्राह्मण नहीं है कौनहै यह सत्य २ कहो हे शल्य तबतो मैंने सूतके समान समीप जाकर अपना यथार्थ वृत्तान्तकहा ७ उससमय क्रोधयुक्त होकर महा तपस्वी गुरूजीने मुझको देखकर शापादियाकि हे सूत तैंने अपनी ज्ञातिको गुप्तकरके जो इसअस्त्रको प्राप्त कियाहै वह युद्धकर्मके समय पर तुझको स्मरण न रहैगा ८ इसके सिवाय और कालमें इस अस्त्रसे तेरी मृत्युहोगी क्योंकि ब्राह्मणके बिना मन्त्र और वेदरूप ब्रह्म अचल होकर स्थिर नहीं होताहै अब इस भयकारी कठिन युद्धमें उसबड़े अस्त्रका प्रयोग संहार स्मरण नहीं आताहै ९ हे शल्य जो यह सबका मारनेवाला महाघोर भयानकरूप प्रबलयुद्ध भरतबंशियों में उत्पन्न हुआहै यह कालरूप युद्ध बहुतसे बड़े २ क्षत्री शूरबीरों को निश्चय करके संतप्त करेगा परन्तु मैं उस उग्र धनुषधारी महावेगवान् भयानक कठिनता से सहने के योग्य सत्य पराक्रम और प्रतिज्ञावाले पाण्डव अर्ज्जुन को युद्ध में मृत्यु के मुख

में पहुँचाऊंगा १० । ११ वह मेरा अस्त्र वर्त्तमानहै उसी के द्वारा युद्ध में शत्रुओं के समूहों को और प्रतापी बलवान् अस्त्रज्ञ और महाउग्र धनुषधारी तेजस्वी निर्द्दयी शूर रुद्र शत्रुओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को युद्ध में ऐसे मारूंगा जैसे कि महावेगवान् अप्रमेय जलोंका स्वामी समुद्र अनेक जीवोंको अपने में मग्न करलेता है १२ । १३ जैसे समुद्र बड़ा वेगवान् बुद्धि से परे मर्य्यादा और किनारों समेत बड़े २ प्रभाववालों को धारणकरता है १४ इसीप्रकार अब मैं भी इस लोकके युद्ध में मर्मों के भेदी बीरों के मारनेवाले तीक्ष्णबाण समूहों के छोड़-नेवाली प्रत्यञ्चा खैंचनेवालों में श्रेष्ठ अर्ज्जुनके साथ युद्धकरूंगा १५ इस रीति से बाणों के बलके प्रताप से उस बड़े पराक्रमी अस्त्रज्ञ समुद्रकी समान महादुर्जय बड़े २ शूरबीर राजाओं के नाशकरनेवाले अर्ज्जुन को ऐसे सहूंगा जैसे कि समुद्र को मर्य्यादा सहलेती है १६ अब युद्ध में जिसके समान दूसरे धनुषधारीको नहीं समझता और मानताहूं वह देवता और असुरोंको भी युद्ध में विजय करसक्ताहै उसके साथ अब मेरे महाघोर युद्धको देखो युद्धाभिलाषी महाअहङ्कारी अर्जुन दिव्य महाअस्त्रोंके द्वारा मेरे सन्मुख आवेगा १७ तब मैं युद्ध में उसके अस्त्रों को अपने अस्त्रों से हटाकर उत्तम बाणों से उस सूर्य्य के समान उग्रदिशाओं के तपानेवाले अर्ज्जुन को गिराऊंगा १८ जैसे कि बड़ाबादल सूर्य्य को ढकदेताहै उसीप्रकार अग्निरूप क्रोध रखनेवाले महातेजस्वी इस लोकके भस्म करनेवाले अर्ज्जुनको अपने बाणोंसे आच्छादित करदूंगा १९ मैं बादलरूप अपने बर्षा रूप बाणों से युद्ध में उस अग्निरूप बल पराक्रम रखनेवाले प्रहारकर्त्ता बायुरूप उग्र अर्ज्जुनको शान्तकरूंगा २० हिमालय पर्व्वत के समान युद्ध में अग्निके समान क्रोधरूप पण्डित सत्यवक्ता अर्थ मार्गों में समर्थ महाबली अर्ज्जुन को देखूंगा २१ लोक में अद्वितीय धनुर्धर जिसके समान दूसरा नहीं देखता और जिसने सब पृथ्वीको बिजयकिया मैं युद्धमें सन्मुखहोकर उस अर्ज्जुन से लडूं-गा २२ जिस अर्ज्जुनने इन्द्रप्रस्थ के समीप खाण्डवबन में देवताओं समेत सब जीवोंको बिजयकिया २३ उस बीरके सन्मुख मेरे सिवाय इच्छापूर्वक कौन युद्ध करसक्ताहै वह महाअहंकारी अस्त्रज्ञ हस्तलाघवका करनेवाला दिव्य अस्त्रोंके प्र-योग संहारोंका ज्ञाता प्रलयका मचानेवाला है २४ अब मैं तीक्ष्ण बाणों से उस अतिरथीके शिरको देहसे जुदाकरूंगा हे शल्य मैं युद्धमें बिजयको और मृत्युको

आगे करके इस अर्जुनसे लड़ूंगा २५ ऐसा मेरे सिवाय दूसरा कोई मनुष्य नहीं है जोकि उस इन्द्रके समान पराक्रमी के साथ एकरथसे युद्धकरे मैं युद्धमें प्रसन्न चित्त होकर क्षत्रियोंके देखतेहुये उस पांडव अर्जुनकी बीरता बर्णन करताहूं २६ तुम महामूर्ख और अज्ञानचित्त होकर हठसे उस अर्जुनकी बीरताको क्या कहतेहो जो पुरुष सबका अप्रिय कठोर चित्त नीच और अशान्तचित्त होताहै वह शान्तचित्तवालों की निन्दाकरता है २७ मैं इस प्रकारके सैकड़ों पुरुषों को मार सक्ताहूं परन्तु मैं क्षमा करने के समय आनेपर क्षमाकर देताहूं हे पापात्मा शल्य तू अज्ञानी के समान मुझको डराकर अर्जुनके लिये प्रियबचनोंको कहताहै २८ हे सत्यताके समय मित्रसे शत्रुता करनेवाले कुटिलबुद्धी निश्चय करके मित्रता सात पदोंसे संबंध रखनेवाली है वह भयकारी समय सन्मुख आता है जिससे कि दुर्य्योधनने युद्धको प्राप्त कियाहै २६ और मैं भी उसीके अभीष्ट सिद्धीका चाहनेवालाहूं परन्तु तुम उसी बातको मानतेहो जिसमें कि प्रीति नहीं है अर्थात् हमारा पक्षवाला होकर भी अन्यके साथ प्रीति करताहै मित्रशब्द मिदधातु से संबंध रखताहै जिसका अर्थ मोदहै वा मिदिधातुसे जिसका अर्थ प्रसन्न करना तृप्त करना रक्षाकरना और अन्तमें कुशल करनाहै अथवा सुखसे संपन्न करना कहाहै इनलक्षणोंसे मित्र कहाजाताहै ३० मैं तुझसे सत्य २ कहताहूं कि यह सब गुणमुझमें प्राप्तहैं राजा दुर्य्योधन मेरे इनसब गुणोंको जानताहै और मारना शासनकरना स्वाधीन करना दंडदेना लम्बेश्वासलेने में पकड़लेना और पीड़ित करना इनगुणोंके होनेसे शत्रुकहाजाताहै ३१ यह सब गुण बहुधा तुझमें नियत हैं इसनिमित्त अब मैं दुर्य्योधनकी वा तेरीइच्छा अथवा अपनी शुभकीर्त्ति और ईश्वरकी प्रसन्नताके लिये अर्ज्जुन और बासुदेवजीसे लड़ूंगा अब उस कर्मको वा ब्रह्मास्त्र आदि महा उत्तम और दिव्य अस्त्रों को और मानुषी शस्त्रों को देखो ३२। ३३ मैं उस उग्रपराक्रमीको ऐसे प्राप्तकरूंगा जैसे कि बड़ा मतवाला हाथी दूसरे मतवाले हाथीको और विजयके हेतु उस अजेय ब्राह्मअस्त्रको मन से अर्ज्जुनके ऊपर चलाऊंगा ३४ उस मेरे अस्त्रसे भी युद्धमें कोई शत्रु नहीं बचसक्ताहै जो कदाचित् यहरथकाचक्र किसीगढ़ेमें नहींगिरे ३५ तो हेशल्य मैं दण्डधारी यमराज पासभृत् वरुण गदाधारी कुबेर बज्रधारीइन्द्र और युद्धाभिलाषी शस्त्रोंसे मारनेवाले किसीप्रकारके भी शत्रुसे ३६ नहींडरताहूं इसीहेतुसे मुझको

अर्ज्जुन और श्रीकृष्णजीसे जराभी भय नहीं है ३७ मेरायुद्ध उन दोनोंके साथ परलोकके निमित्तहोगा हे राजा इसकाहेतु यहहै कि एकसमय अस्त्रोंके सीखनेमें मैंने घोररूप अस्त्रोंको फेंकाथा ३८ वहां अज्ञानतासे एक ब्राह्मणकी होमसाधन करनेवाली गौकाबछड़ा जो निर्जन बनमें चररहाथा वह मेरे बाणसे मारागया उसके मरजानेसे उस ब्राह्मणने कहा कि ३९ जोतुझ बड़े मतवालेने मेरीहोम की गौके बछड़ेको माराहै इस हेतुसे तुझ युद्धमें लड़नेवाले को रथका पहिया पृथ्वीमें घुसजायगा यह ब्राह्मणने मुझको शापदियाहै ४० । ४१ इस हेतुसे मैं ब्राह्मणके शापसे बहुत डरताहूं इन ब्राह्मणोंका राजा चन्द्रमा है इसीसे यह सब ब्राह्मण सुख दुःखके स्वामी हैं ४२ हे मद्रदेशाधिपति मैंने हजारों गौ और बैल देनेसे भी उसको प्रसन्न करनाचाहा परन्तु वह किसी प्रकारसे भी प्रसन्न नहीं हुआ ४३ वह उत्तम ब्राह्मण सातसौ हाथी और सैकड़ों दास दासी देनेपरभी मुझपर प्रसन्न नहींहुआ ४४ श्वेतबत्सा चौदह हजार कृष्णागौवोंकेभी भेटकर-नेसे उसकाचित्त मुझसे प्रसन्न नहींहुआ इसके सिवास सब पदार्थोंसे युक्त मैंने अपने स्थान धनआदि जो २ मेरीवस्तु थीं ४५ उनसबको भी बारम्बार उसको भेट किया तबभी उसने इच्छानहींकरी ४६ और मुझ अपराध क्षमाकरानेवाले से कहा कि हे सूत जो मैंने कहाहै वह वैसेहीहोगा मिथ्या कभी नहीं होसक्ता ४७ मिथ्या बोलना सन्तानका नाशकरनेवाला होताहै पापकाभागी होता है इस कारण धर्मकी रक्षाके निमित्त मैं मिथ्या नहीं बोलसक्ताहूं ४८ तू ब्राह्मणकी गतिको नाशमतकर तुमने बड़ा अपराध कियाहै इसलोकमें मेरे बचनको कोई मिथ्या नहीं करसक्ता इससे मेरेशापको अंगीकार कर ४९ हे अनम्र होनेवाले मैंने शुभचिन्तकतासे यह कहा है मैं तुझ निरादर करनेवाले को जानताहूं तू मौनहोकर उत्तरको सुन ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

संजयबोले हे महाराज इसके पीछे शत्रुबिजयी कर्ण राजामद्रको सम्बोधन करके यह बचन बोला १ हे शल्य जो तुमने निदर्शनके निमित्त अर्थात् दृष्टा-न्तार्थ मुझसे कहाहै सो मैं युद्धमें तेरे बचनोंसे भयभीत नहीं होसक्ता जो देव-

ताओं समेत इन्द्रभी मुझसे युद्धकरें तौभी मैं भयभीत नहीं होसक्ता फिर श्रीकृष्ण जीको साथरखनेवाले अर्ज्जुनसे क्या भय करसक्ताहूं वह क्या करसक्ते हैं २। ३ मैं केवल बातोंहीसे किसी दशामें भी भयभीत होनेको योग्य नहींहूं हे शल्य वह कोई दूसरेही मनुष्यहोंगे जो युद्धमें अर्ज्जुनसे डरें ४ नीच मनुष्यकी इतनीही सामर्थ्य है जो तुमने मुझको कठोर बचन कहे हे दुर्बुद्धी मेरी प्रशंसा करनेको असमर्थ होकर तुम बहुतसीबातें करतेहो ५ हे मद्रदेशी इसलोक में कर्ण भयके लिये नहीं उत्पन्नहुआहै किन्तु यशकीर्त्ति और पराक्रमके हेतु मैंने जन्मलिया है हे राजाशल्य तुम इनतीन कारणोंसे जीवतेबचेहो एक तो सारथ्यकर्म्म करनेसे उत्पन्नहुई मित्रता दूसरे मेरी क्षमायुक्त प्रकृति तीसरे अपने परममित्र दुर्य्योधनके कार्य्य सिद्धकेलिये ६। ७ हे शल्य राजा दुर्य्योधनका बड़ा भारी कार्य्य बर्त्तमान होकर मुझमें नियत है इसहेतुसे अल्पकाल तक मेरे हाथसे जीवतेहो क्योंकि प्रथम में नियम करचुकाहूं कि तेरेअप्रिय बचनोंको सहूंगा मैं शल्यके बिनाभी शत्रुओंको बिजयकर सक्ताहूं क्योंकि मैं अकेलाही हजार शल्यके बराबरहूं ८। ९ और मित्रसे शत्रुता करना पापकर्म कहा है इसी कारण से तुम जीवते हो १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसम्वादेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

शल्यबोला हे कर्ण निश्चय करके ये सब निष्फल बातें हैं जिनको तुम शत्रुओं के विषयमें कहतेहो युद्धमें हजार कर्णके बिनाभी मेरे हाथसे शत्रु बिजय होनेके योग्यहैं अर्थात् मैं हजार कर्णके समान हूं १ संजय बोले कि इस पीछे कर्णने इसप्रकार के कठोर बचन कहनेवाले शल्यसे फिर प्रथमसेभी द्विगुणित ऐसे कठोर बचन कहे जो देखने और सुननेके अयोग्यथे २ कर्णबोला हे राजा मद्र तुम चित्तकोस्थिर करके उनवचनोंको सुनो जोदुर्य्योधन के समक्षमें ३ ब्राह्मणोंने धृतराष्ट्रकी सभाकेमध्य नानाप्रकारके अद्भुतदेशों के भूत भविष्य वृत्तान्तों को राजाओं से बर्णन कियाथा वहां एक वृद्धब्राह्मणोत्तम भूतकालीन वृत्तान्त विषयक कथाओं को कहता वाहीक और मद्रदेशों की निन्दा करता हुआ यह बचन बोला ४। ५ कि जो लोग हिमाचल पर्व्वत श्रीगंगाजी सरस्वती यमुना

और कुरुक्षेत्रसे अलग कियेगयेहैं और जो लोग पंजाब और सिन्धके मध्यमें निवास करनेवालेहैं उन धर्महीन अपवित्र वाहीक नामवालोंको त्यागकरें ६।७ वहांपर गोबर्धन अर्थात् गौओंके मारनेको स्थान और मद्य पीनेवालोंके चौतरे यही दोनों राजकुल के द्वारहैं मैं बालकसे लेकर वृद्धोंतक के मुखसे सुनाहुआ स्मरण करताहूं ८ मैंने बड़ेकार्य्य के कारणसे वाहीक देशियोंमें सातरात्रि निवास करके वहांका सब चरित्र जाना ९ उनमें शाकल नाम नगर और आपगानाम नदी वा जरत्का नाम वाहीक इन तीनोंका चरित्र महा निन्दितहै १० यहलोग जौ और गुड़की मद्यको पानकर लहसनके साथ गोमांस को खाके मांसके पूप आदि बाजारके सम्पूर्ण भोजनोंकी करनेवालीं शीलतासे रहित नङ्ग शरीर और दिखाने को माला चन्दन आदि धारण करनेवाली स्त्रियां नगर के स्थानोंमें अथवा नगरके व प्रागारमें गाती और नाचती हैं ११। १२ और गधे वा ऊंटोंके समान शब्दोंसे नानाप्रकारके निर्लज्ज गीतोंसे मतवाली बिषय भोगोंमें अपने और परायेजाति कुजातिका बिवेक न रखनेवाली सब प्रकारसे स्वैरिणी अर्थात् स्वेच्छाचारिणी कुत्सित कर्म करनेवाली हैं १३ उन मदोन्मत्त असभ्य बार्त्ता करनेवालियों ने बड़े बिनोद पूर्व्वक इन गीतोंको गाया कि हे घायलभग हे घायलभग हे पति और स्वामीसे ताड़ितभग १४ वह संस्कार रहित अजितेन्द्री स्त्रियां इसरीतिसे पुकारतीहुईं उत्सवोंके दिनों में यथेच्छ नृत्यकरती हैं फिर ब्राह्मणने कहा कि वाहीक बासियोंसे भ्रष्ट कुरु जांगलदेशोंमें निवास करनेवालीं १५ अप्रसन्नचित्त स्त्रियोंने यह गीतगाया कि निश्चय करके कुरुजांगल देशोंमें वृहतीगौरी और सूक्ष्म कंबलोंकी धारणकरनेवाली स्त्रियां शाक लहसनके मिलनेपर काकके समान हर्षित होती हैं १६ और मद्यपानकर हँसती और नाचती हैं ऊंट वा गधे के समान स्वर से हरसमय गान कियाकरती हैं सदैव मैथुन में ऐसी रतहैं कि कभी नहीं अघाती हैं १७ और पुरुषों को बुला २ कर अपने आप प्रसन्नतासे मिलती हैं और अपने वा पराये पुरुषके बर्णका भी जहां बिचार नहीं वह स्त्रियां कलह हास्य और बिहारमें परस्पर गालियोंसे बातें करती हैं १८ वहां स्त्री पुरुष रात्रि दिन इसीप्रकार से बकते रहतेहैं और अपनी पराई स्त्री वा अपना पराया पुरुष इन बातों का जो बिचार करे वह कुत्सित गिना जाता है १९ और जहां बाराह कुक्कुट गौ गधा इनके मांस को जो न खाय

अथवा मद्यका जो पान न करे उसका जन्म निष्फल गिना जाता है २० इस प्रकार से कहकर वह ब्राह्मण पञ्चनदों के नाम राजासे कहनेलगा कि २१ चन्द्रभागा शतद्रू बिपाशा इरावती वितस्ता और छठवां सिन्ध इननदों के मध्यमें वह पुरुष बसतेहैं जिनके पूर्व्वजन्मके पाप संचितहोते हैं २२ उनका दियाहुआ देव पितर और ब्राह्मण ग्रहण नहीं करतेहैं कुत्सितकर्म्म करनेवाले अशुभ भेष भक्ष्याभक्ष्य और गम्यागम्यका बिचाररहित जिस देशमें धर्मका लवलेशभी नहींहोताहै २३ इस वृत्तान्तको अन्यब्राह्मणोंनेभी कौरवों की सभामें हमसे कहा कि यह पांचों नदियां जहांबहती हैं २४ वहां पीलूनाम वृक्षों के बनहैं वह धर्म्म हीनदेश आरट्टनामसे प्रसिद्धहैं २५ यज्ञोपवीत आदि संस्कारोंसे रहित दासीपुत्र कुचाली यज्ञोंके न करनेवाले वाहीकों के इनदेशोंमें नहींजाना उचितहै २६ देव पितर और ब्राह्मणभी उनके हव्यकव्य और दानोंको नहीं ग्रहण करते कष्ट कुण्ड नाम मृत्तिका विशेष और मट्टीके पात्रों में भोजन करतेहैं २७। २८ सत्तू वा मद्यसे अहङ्कारी उच्छिष्ट भोजी कुत्तेभेड़ी ऊंट गधे इनकादूध और मांसखाते पीते हैं पुत्रों के मारनेवाले महामूर्ख सबअन्न और दूधके खानेवाले हैं २९। ३० वह आरट्टवाहीक पण्डितलोगोंसे त्यागनेके योग्यहैं हे शल्य इसको समझकर फिर उस दूसरी बातको तुझसे कहताहूं ३१।३२ जिसको अन्यब्राह्मणों ने कौरवों की सभामें बर्णनकियाहै कि युगंधरदेश जहां भक्ष्याभक्ष्यका बिचार नहीं है उस में दूधपीकर और अच्युतस्थल नाम नगरमें निवास करके ३३। ३४ और भूतल तड़ाग जिसमें चांडाल और ब्राह्मण सब संग स्नान करते हैं उसमें स्नान करके कैसे स्वर्गको जायगा जहां यह पांचों नदी पर्व्वत से निकलकर बहती हैं ३५। ३६ उस आरट्ट नाम वाहीक देशमें श्रेष्ठ मनुष्य दो दिन भी न बासकरें बिपाशानदी में वहि और हीकनाम दो पिशाच हैं ३७। ३८ उन दोनोंकी सन्तान वाहीक लोगहैं यह ब्रह्माजीकी सृष्टिमें नहीं हैं वह नीचयोनि में उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके धर्म्मों को कैसे जानसक्ते हैं ३९। ४० कारस्कर माहिष कलिंग केटल कर्कोटक और बीरक इन भ्रष्ट धर्मियों को त्याग करना योग्यहै ४१। ४२ बड़े उलूखलके समान मेखला रखनेवाली किसी राक्षसी ने तीर्थयात्रा करनेवाले एकरात्रि घर में निवास करनेवाले ब्राह्मणसे यह बचनकहा ४३। ४४ कि वह आरट्ट देश और वाहीक नाम जल ब्राह्मणोंके निमित्त सदैव ब्रह्माजी

के कालके समानहैं ४५ उन जाति वेद रहित यज्ञहीन पूजनादिके अकर्त्तादासीपुत्र कुटिलबुद्धि संस्कार से हीन लोगों के अन्न को देवता पितर भोजन नहीं करते हैं ४६ प्रस्थल मद्र गान्धार आट्टनाम पखश व साति सिन्धु और सौवीर नाम देशों के रहनेवाले बहुधा निन्दितहैं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

कर्ण बोला हे शल्य समझो मैं फिर भी तुमसे कहताहूं तुम चित्तको स्थिर करके अच्छे प्रकारसे मेरे बचनोंको सुनो १ निश्चय करके पूर्व्व समय में एक अतिथि ब्राह्मण हमारे घरमें आया और हमारे आचारको देखकर प्रसन्नचित्त होके कहनेलगा २ कि मुझ अकेलेने बहुतकाल पर्य्यंत हिमाचल के शिषरपर निवास कियाथा तब वहां मैंने नानाप्रकार के धर्म्मों से युक्त देशोंको देखा ३ जहां प्रजालोग किसी अधर्म्म से भी शास्त्रके बिरोधी नहीं होते हैं वहांके वेदपारग ब्राह्मणोंके कहेहुये सब धर्मोंको तुझसे कहताहूं ४ हे महाराज नानाप्रकार के धर्म्मोंसेयुक्त देशोंमें घूमताहुआ वाहीक देशों में आनेके समय मैंने सुना ५ निश्चय करके उसदेशमें ब्राह्मण होकर फिर क्षत्री होताहै वैश्य शूद्र और वाहीक होकर फिर नाई होताहै ६ नाई होजाने के पीछे ब्राह्मण होताहै फिर वह द्विज होकर दास होजाताहै ७ सब कुलभरे में एकही वेदपाठी होताहै और अन्य सब भाईलोग वर्णसंकर स्वेच्छाचारी कर्म्मों के करनेवाले होते हैं ८ गान्धार मद्रदेशी और वाहीक यह निर्ब्बुद्धी होते हैं मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी को घूमकर उस वाहीक देश में धर्म्मों का संकर करनेवाला यह बिपर्य्यय सुनाहै उसको मैं फिर कहता हूं ९ तुम चित्तसे सुनो इस वाहीकोंके निन्दित वृत्तान्तोंको एक अन्य ब्राह्मण ने कहाहै १० वह भी मैंने सुनाहै कि पूर्व्वकाल में किसी पतिब्रता स्त्री को उस आरट्टदेश से चोरोंने हरलिया तब वह अधर्म युक्त होगई तब उसस्त्री ने उनको शापदिया ११ कि जो मुझवाला और भाइयोंवालीको तुमने अधर्म से प्राप्तकिया इस कारण से तुम्हारे कुलकी सब स्त्रियां वेश्या होजांयगी १२ हे नीच मनुष्यो तुम इस घोरपाप से कभी न छूटोगे इस हेतु से उनके पापभागी भानजेहैं पुत्र नहीं हैं अर्थात् माता के धनकी लेनेवाली बेटीही होती है और पिता के धनका

लेने वाला पुत्र होताहै यद्यपि वह दोनों कुकर्म से उत्पन्नहैं तौभी पुत्र तो पिता का नहीं कहलाताहै परन्तु बेटी माता कीही कहलाती है इस हेतु से भानजाही अंशका भागीहोता है १३ कौरव, पांचाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, कोशल, काश, पांड्र, कलिंग, मागध १४ और चंदेरी देशी यह महाभाग सनातन धर्मको जानतेहैं वाह्लीक देश में केवल असन्त लोग रहतेहैं १५ मत्स्य देशियों से लेकर कौरव पांचाल देशी और नैमिष देशियों से लेकर चंदेरी देशियों तक जो उत्तम और संतलोगहैं वह सब प्राचीन धर्मों से अपना कर्म धर्म और निर्वाह करतेहैं इन कुटिल पांचाल और मद्रदेशियों के सिवाय १६ हे बुद्धिमान राजा शल्य इसरीति से धर्म कथाओं में मौन और जड़के समान होकर तुम उन मनुष्यों के रक्षक होकर उनके पाप पुरय के छठे भाग के लेनेवालेहो १७ अथवा तुम उनकी रक्षा न करनेवाले पाप भागी हो क्योंकि प्रजाकी रक्षा करनेवाला राजा पुरयका भागी है परन्तु तुम पुरयभागीनहींहो १८ पूर्व्व समयमें सबदेशों के बीच सनातन धर्मके पूजित होनेपर ब्रह्माजीने पंजाब देशके धर्मको देखकर कहा कि धिक्कारहै १९ सतयुग में भी संस्कार से रहित अशुभकर्मी दासीपुत्रों का धर्म ब्रह्माजी से निन्दित होनेपर तुम वाह्लीक लोक में क्या कहा करतेहो २० जिनब्रह्माजीने पंजाब के धर्म को नष्टकहाहै उनब्रह्माजीने सब बर्णोंको अपने २ धर्म में नियत होने परभी उनकी प्रशंसा नहींकी २१ हे शल्य इसको तुम समझो और दूसरा बृत्तान्त कहताहूं जो कल्माषपाद के सरोवरमें डूबनेवाले राक्षसने कहाहै २२ क्षत्री का मल भिक्षाहै और ब्राह्मण का मल ब्रतका न करनाहै और संपूर्ण पृथ्वी भरेका मल वाह्लीक लोग हैं और स्त्रियोंका मल मद्रदेशकी स्त्रियां हैं २३ किसी राजाने उस डूबनेवाले राक्षस को डूबने से निकालकर उससे जो २ पूछा और उसने जो २ उत्तर दिये उन सबको मुझसे सुनों २४ मनुष्यों का मल वह म्लेच्छहैं जो पापमें प्रवृत्त होकर अपशब्द बोलते हैं और म्लेच्छों का मल औष्ट्रिकाहैं औष्ट्रिकों का मल नपुंसक हैंऔर नपुंसकोंका मल राजपुरोहित अथवा राजा के यज्ञ करानेवाले होतेहैं २५ राजा से बिनयकरके याचना करनेवाले वा उसके याज्ञिक लोगोंका और मद्रदेशियों का जो मलहै वह तुझ कोप्राप्त होय जो हमको नहीं त्याग करताहै २६ राक्षससे वा भूतादिकके आवेश से ब्याकुल और पीड़ित मनुष्योंकी चिकित्सा कौलकरार करके पीछे स्वाधीन

होनेवाला राक्षसहोताहै २७ पांचालदेशी वेदों का संचय रखनेवाले हैं कौरव लोग धर्म संयुक्त कर्मके करनेवाले हैं मत्स्यदेशी सत्यवक्ता हैं सूरसेनदेशी यज्ञ को करते हैं और पूर्व के वासी दासहैं अर्थात् शूद्र धर्मवाले हैं और मत्स्यों के खानेवाले हैं दाक्षिणात्य लोग धर्म्माभ्यासी हैं परन्तु वाह्लीक और सुराष्ट्रदेशी चोर और बर्णसंकर हैं २८ कृतघ्नता दूसरे का धनहरना मद्यपीना गुरूकी स्त्री से संभोग करना कठोर बचन कहना गौको मारना और घरसे बाहर रात्रिमें अन्य की स्त्री से भोग करना अन्य पुरुषों के बस्त्रोंका धारण करना यह अवगुणही २९ जिनलोगोंका धर्म है उनमें कहो कि अधर्म नहीं है नहीं अवश्यहै परन्तु अरट्ट और पंजाब देशियों को धिक्कारहै पांचाल देशियों से लेकर कुरव देशियोंतक और नैमिष देशियों से लेकर मत्स्य देशियोंतकके लोगभी धर्म को जानते हैं फिर उत्तरमें रहनेवाले अंग और मगधदेशी बृद्ध मनुष्य उत्तम धर्मों से अपना बर्त्तावकरके निर्वाह करते हैं ३० जिनमें मुख्य अग्नि है वह देवता पूर्व्वदिशामें रहते हैं और शुभकर्म करनेवाले यमराजसे रक्षित होकर दक्षिणदिशा में पितर लोग निवास करते हैं ३१ और पराक्रमी बरुण देवता सब देवताओं समेत पश्चिमदिशाकी रक्षाकरताहै और भगवान् चन्द्रमा ब्राह्मणों समेत उत्तरदिशाकी रक्षाकरताहै ३२ हे महाराज इसीप्रकार राक्षस और पिशाच हिमालयनाम श्रेष्ठ पर्व्वत को गुह्यक गन्धमादन शैलको रक्षाकरते हैं ३३ और सब जीव मात्रोंकी भगवान् बिष्णुजी रक्षाकरते हैं मगधदेशीलोग अंगचेष्टाओं से उत्पन्न होनेवाले वृत्तान्तों के जाननेवाले हैं और कौशल देशी प्रत्यक्ष और प्रकटहुये वृत्तान्तों के ज्ञाताहैं ३४ कौरव पांचाल देशी आधीबात केही कहनेसे पूरीबातके जाननेवालेहैं शाल्वदेशी सब आज्ञाओं के पूरे करनेवाले हैं औ पर्व्वती विषमहैं इस से कठिनतासे आधीन होनेवाले हैं ३५ हे राजा मुख्यकरके सब बातों के जाननेवाले सुरयुवन अर्थात् यूनानीम्लेच्छ बनावटके धर्मपरचलते हैं अर्थात् बैदिक धर्मको नहीं मानते हैं और अन्य लोग बिना समझायेहुये मंगलपूर्व्वक पूर्ण होनेवाले बचनों को नहीं समझते हैं ३६ वाह्लीकलोग अपने शुभचिन्तकोंके बिरोधी हैं और मद्रदेशी कुछ भी नहीं हैं हे शल्य इसनिमित्त तुम ऐसे उत्तरदेनेको योग्यनहीं हो इसपृथ्वीपर सब देशोंका मल मद्र देश कहाताहै ३७ मद्यका पान गुरूकी स्त्रीसे संभोग कुस्तीलड़ना पराये धनकाहरना यही जिन

लोगोंका धर्म है उनमें धर्म अवश्यहै उन अरट्टदेशी और पंजाबदेशियों को धिक्कारहै ३८ इसबातको जानकर मौनहोकर विरुद्धता मतकर नहीं तो मैं प्रथम तुझको मारूँगा फिर अर्जुन और केशवजी को मारूँगा कर्णकी इनसबबातों को सुनकर शल्यबोला हे कर्ण अंगदेशमें रोगी दुखिया लोगोंका त्याग और अपनी स्त्री पुत्रका बेचडालना वर्त्तमानहै उन देशोंका तू अधिपतिहै ३६।४० भीष्मजीने जो तुमको रथी अतिरथीकी संख्यामें कहा उन अपने दोषोंको जानकर क्रोधरहित होकर क्रोधयुक्त मतहो ४१ हे कर्ण सर्बस्थानों में ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और शूद्र हैं और सुन्दर व्रतवाली पतिव्रता स्त्रियां हैं ४२ मनुष्य मनुष्यके साथमें हास्य विनोद पूर्व्वक क्रीड़ा करते हैं और विषय भोग करनेवाले मनुष्य प्रत्येक देशमें परस्पर रक्षा करनेवाले होते हैं ४३ हरएक मनुष्य सदैव दूसरे की बुराइयों में कुशल होताहै और अपने दोषोंको नहीं जानता वा जानताहुआ भी अज्ञान होकर मोहित होजाताहै ४४ अपने २ धर्मपर कर्म करनेवाले राजा सब स्थानों में हैं दुराचारियों को दण्ड देते हैं और सर्व्वत्र धर्म्म के रखनेवाले मनुष्यहैं ४५ हे कर्ण देश के सामान्य होने से सब मनुष्य पापको सेवन नहीं करते हैं वह अपने स्वभावसे जैसे होते हैं वैसे देवता भी नहीं होते संजय बोले कि इसके पीछे राजा दुर्य्योधन ने मित्रता की रीति से कर्णको और हाथ जोड़कर शल्य को निषेध किया ४६।४७ इसकेपीछे हे श्रेष्ठ दुर्य्योधनके निषेध करने से कर्ण ने उत्तर नहीं दिया और शल्य भी शत्रुओं के सन्मुख हुआ ४८ फिर कर्ण ने शल्यको प्रेरणा करी कि शत्रुके सन्मुख चलो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंबादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसकेपीछे धृष्टद्युम्न से रक्षित पाण्डवों की सेनाको देखकर कर्णने शत्रुकी सेनाके सहनेवाले अपूर्ब व्यूहको अलंकृतकिया १ और रथशंख और अन्य २ बाजों के द्वारा पृथ्वी को कंपायमान करताहुआ चला २ हे भरतर्षभ बड़े तेजस्वी युद्धमें कुशल शत्रुसंतापी क्रोधयुक्त कर्णने बुद्धिके अनुसार व्यूह को शोभित करके ३ पाण्डवों की सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि आसुरी सेनाको इन्द्र छिन्न भिन्न करदेता है वहां युधिष्ठिर को घायलकरके

बाम अंगमें करदिया ४ धृतराष्ट्र बोले हे संजय कर्णने भीमसेनसे रक्षित उन सब पाण्डवों के सन्मुख जिन में अग्रगामी धृष्टद्युम्न था कैसे व्यूहको अलंकृत किया ५ और देवताओं सेभी अजेय बड़े धनुषधारी सब युद्धकर्त्ताओं को किस किस रीति से रोका और हे संजय मेरी सेनाके पक्ष और प्रपक्ष कौन २ हुये ६ और न्याय के अनुसार सेना का बिभागकरके किस रीति से नियत हुये और पाण्डवों ने भी मेरे पुत्रों के सन्मुख कैसे २ व्यूहको रचा ७ और वह महाभयानक युद्ध कैसे जारीहुआ और उस समय अर्ज्जुन कहांथा जबकि कर्ण युधिष्ठिर के सन्मुख गयाथा ८ क्योंकि अर्ज्जुन के समक्ष में युधिष्ठिरके सन्मुख जाने को कौन समर्थ होसक्ता है कि जिस अकेले ने पूर्बकाल में खाण्डव बन के सब जीव मात्रों को बिजय किया उसके सन्मुख कर्ण के सिवाय कौनसा पुरुष जीवनकी आशाकरके युद्धको करे ९ संजयबोले कि व्यूहकी रचनाको सुनिये और जैसे अर्ज्जुन वहां से गया और जिसरीति से अपने २ राजाको घेरेहुये युद्ध जारीहुआ १० हे राजा सारद्वत कृपाचार्य्य वेगवान् मगध देशीय यादव कृतबर्मा यह तो दाहिने पक्षपर नियतहुये ११ और उनके प्रपक्षपर महारथी शकुनि और महारथी उलूकने स्वच्छप्रास रखनेवाले सवारोंसमेत आपकी सेनाको रक्षितकिया १२ भयसे उत्पन्न होनेवाले व्याकुलतासेरहित गान्धारदेशी लोग और कठिनतासे बिजय होनेवाले उन पहाड़ियों समेत जो कि टीड़ीदल के समान पिशाचोंके तुल्य कठिनतासे देखनेके योग्यथे १३ मुख न मोड़नेवाले चौबीस हजाररथी युद्धमें कुशल संसप्तकोंने बायें पक्षको रक्षितकिया १४ वह सब आपके पुत्रोंसेयुक्त श्रीकृष्ण अर्ज्जुनके मारनेके अभिलाषी थे और पाण्डवों के प्रपक्षमें यवनों समेत कांबोज देशीय शकजातिके लोगहुये १५ और कर्णकी आज्ञासे रथ घोड़े और पतियोंसमेत सबलोग श्रीकृष्णजी और अर्ज्जुनको पुकारतेहुये नियतहुये १६ वह अपूर्व्व कवच बाजूबन्द और मालाधारण करनेवाला कर्णभी सेनामुख को रक्षित करताहुआ सेनाके मुखपर नियतहुआ १७ वह अत्यन्त क्रोधित आपके पुत्रोंसे व्याप्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ शूरबीर कर्ण सेनाका संहार कर्त्ता मध्य सेना मुखपर शोभायमान हुआ १८ और सूर्य्य और अग्निके समान प्रकाशित अपूर्व्व दर्शन पिंगलबरण नेत्रवाले बड़े हाथीपर सवारसेना समेत व्यूहके पृष्ठभागपर दुश्शासन नियतहुआ हे राजा उसके पीछे अद्भुत अस्त्र

और कवचधारी निज भाइयों से और एकत्रहुये बड़े शूरबीर मद्र और कैकेय देशियों से चारों ओरसे रक्षित आप राजा दुर्य्योधन ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि देवताओंके मध्यमें रक्षा कियाहुआ इन्द्र शोभित होताहै और अश्वत्थामा वा कौरवोंके बड़े२ महारथी शूर म्लेच्छोंसे युक्त सदैव मतवाले बादलोंके समान मदरूप जलके डालनेवाले हाथी उस रथोंकी सेनाके पीछे २ चले १६। २०। २१। २२। २३ वह ध्वजा पताका वा प्रकाशित उत्तम शस्त्र और सवारों समेत नियत होकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि वृक्षधारी पर्वत होतेहैं २४ उन पदाती और हाथियों के पाद रक्षकभी पट्टिश और खड्गके धारण करनेवाले मुख न मोड़नेवाले हजारों शूरबीर वर्त्तमानथे २५ वह देवासुरोंकी सेनाके समान व्यूहराज सवार रथ और हाथियों समेत अलंकृत महा शोभायमान हुआ २६ उस बुद्धिमान सेनापतिने इसरीतिसे बार्हस्पत्य व्यूहकोरचा उस नाचतेहुये महा व्यूहको देखकर शत्रुओंको भय उत्पन्नहुआ २७ उसके पक्ष और प्रपक्षों से पती घोड़े रथ और हाथी सबके सब युद्धाभिलाषी होकर ऐसे निकलतेथे जैसे कि वर्षा ऋतु में बादल निकलते हैं २८ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर कर्ण को सेना मुखपर देखकर शत्रुओं के मारनेवाले अकेले अर्ज्जुन से बोले २६ हे अर्ज्जुन युद्ध में कर्णके रचेहुये उस महा व्यूहको देखो जो पक्ष और प्रपक्षों से संयुक्त शत्रुकी सेनाको प्रकाशित करताहै ३० सो तुम इसशत्रुकी बृहत्सेनाको अच्छे प्रकारसे देखकर ऐसी नीति बिचारो जिससे कि यह हमको भयभीत न करे ३१ राजा के इसरीति के बचनको सुनकर अर्ज्जुन हाथ जोड़कर राजा से कहनेलगा कि जैसा आप कहते हैं वैसाही है मिथ्या नहीं है ३२ हे भरतर्षभ जिस रीतिसे इसका मारना बिचार कियाहै उसको मैं करूंगा इसकामारना बहुत श्रेष्ठहै इससे मैं इसका नाशकरताहूं ३३ युधिष्ठिर बोले कि तुम तो कर्णसे लड़ो भीमसेन सुयोधनसे नकुल वृषसेनसे सहदेव सौबलसे ३४ शतानीक दुश्शासन से सात्विकी कृतबर्मा से पाण्ड्य अश्वत्थामा से सन्मुख होकर लड़ो और मैं आप कृपाचार्य्य से युद्ध करूंगा ३५ और शिखण्डी समेत द्रौपदी के सब पुत्र उन शेषबचेहुये धृतराष्ट्र के पुत्रों से सन्मुख होकर लड़नेको जाओ और सब हमारे शूरबीर उनके शूरबीरोंको मारो ३६ संजय बोले कि इसरीतिसे धर्मराजके बचनोंको सुनकर अर्ज्जुनने कहा कि ऐसाही होगा यह कहकर अपनी सेना-

ओंको आज्ञादी और आप सेनामुख परगया ३७ जो कि यह वैश्वानर अग्नि बिश्वका प्रभुहै वह प्रथम ब्रह्माजी के मुखसे उत्पन्न चन्द्रमारूपसे प्रकट होनेवाला है उसीने घोड़ेके रूपको पाया उसघोड़ेको देवता और ब्राह्मणों ने जानलिया कि यह ब्रह्माजी के मुखसे उत्पन्नहै वही अकेला एकदेवता अपने चाररूप बनाकर अर्ज्जुनके रथको ले चलताहै ३८ जिसने पूर्वसमयमें ब्रह्मा रुद्र इन्द्र और वरुणको क्रम पूर्वक सवारकिया है इसहेतुसे प्रथम तो रथपर सवारहोकर केशवजी और अर्ज्जुनचले ३९ तदनन्तर शल्य उसअपूर्व दर्शनीय आतेहुये रथको देखकर उस युद्धदुर्मद अधिरथी कर्णसे बोला ४० यह श्वेत घोड़ों से युक्त सारथी श्रीकृष्णजीसमेत सब सेनाओंसे भी कठिनतासे रोकनेके योग्य अर्ज्जुनका रथ आया यह रथ ऐसे कठिनतासे रोकनेके योग्यहै जैसे कि कर्मोंका फल रोकने के योग्य नहीं होताहै ४१ हे कर्ण जिसको तुम पूछतेथे वह शत्रुओं को मारता हुआ अर्ज्जुनचला आताहै उसका ऐसा कठोर शब्द सुनाई देताहै जैसा कि बादलका घोर शब्द होताहै ४२ निश्चयकरके यह दोनों महात्मा श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनहैं देखो यह उठीहुई धूलि आकाशको व्याप्तकरके नियत है ४३ हे कर्ण रथके पहियेके नीचेसे चलायमान पृथ्वी कंपायमान है और महावेगवान् वायु आपकी सेनाके सन्मुख चलरही है ४४ यह कच्चे मांसखानेवाले राक्षस आदि भी बोलरहे हैं यह मृग भयानक शब्दोंको करते हैं हे कर्ण इसघोर भयदायक रोमहर्षण करनेवाले सूर्यको आच्छादित कियेहुये बादलकी सूरत केतुनक्षत्रको देखो और सब दिशाओंमें नानाप्रकारके पशुओंके झुंड और पराक्रमी शार्दूल सूर्यको देखते हैं हजारों भागनेवाले और सन्मुख नियतहोनेवाले परस्परमें घोर शब्द करनेवाले कंक और गृद्धोंको देखो और हे कर्ण तेरे रथपरलगेहुये अति उत्तम चामरभी अग्निकेसमान होगये हैं ४५।४६।४७।४८ और ध्वजाकांपती है बड़े वेगवान् उन्नत बलिष्ठ शरीरवाले घोड़ोंके कंपको देखो ४९ जैसे दर्शन करनेके योग्य आकाशमें उड़नेवाले गरुड़ोंको देखते हैं उसीप्रकार निश्चय करके युद्धोंमें हजारों मरेहुये राजालोग पृथ्वीपर आश्रयलेकर ५० शयनकरेंगे और शंखों के कठोर शब्द रोमांच खड़े करनेवाले सुनाई देते हैं ५१ हे कर्ण ढोल और मृदंगोंके शब्दोंको सुनो हे राधाकेपुत्र बाणोंके मनुष्यों के और घोड़े हाथियोंके शब्द ५२ महात्माके प्रत्यंचा के तलत्रोंके शब्दोंको और कारीगरोंके हाथसे सुबर्ण

और चांदीसे निर्मित वस्त्रोंके बनायेहुये ५३ नानाप्रकारकी वर्णवाली ध्वजाओं से कंपायमान पृथ्वी चन्द्रमा सूर्य्य और नक्षत्र रखनेवाली क्षुद्रघंटिका युक्त पताका रथपर महा शोभायमान फर्रारही हैं ५४ हे कर्ण देखो कि अर्ज्जुन की ध्वजा बायुसे चलायमान ऐसी कणकणारही हैं जैसे कि आकाशमें बिजिलियां कण-कणाया करती हैं ५५ और महात्मा पांचालोंके यह पताकाधारी रथकैसे शोभा-यमानहैं ५६ बानराधीशको धारण करनेवाली अति उत्तम विजयकारिणी ध्वजा संयुक्त आनेवाले अजेय कुन्तीनन्दन अर्ज्जुन को देखो ५७ यह चारोंओर से देखने के योग्य महाभयानक शत्रुओंका भयकारी बानर अर्ज्जुन की ध्वजाकी नोकपर दिखाई देरहाहै ५८ और बुद्धिमान श्रीकृष्णजीका यह शंख चक्र गदा और शार्ङ्ग धनुषहै जिसमें श्रीकृष्णजी का कौस्तुभमणि न्यारीही शोभा देरहा है ५९ यह शार्ङ्ग धनुष और गदा हाथमें रखनेवाले पराक्रमी बासुदेवजी बायुके समान शीघ्रगामी श्वेतघोड़ोंको चलातेहुये चलेआते हैं ६० अर्ज्जुनसे खैंचा-हुआ यह गांडीव धनुष कैसे शब्दोंको करताहै उस हस्तलाघवीके छोड़ेहुये यह तीक्ष्णबाण शत्रुओंको माररहे हैं ६१ और मुख न मोड़नेवाले बड़ेलंबे रक्तनेत्र-धारी पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले शूरबीरों के शिरोंसे यह पृथ्वी आच्छादित होती चलीआती है ६२ उठायेहुये शस्त्रोंमें कुशल युद्धकर्त्ताओं के परिघकी समान पवित्र चन्दनादि से चर्चित भुजदंड शस्त्रोंके द्वारा गिरायेजाते हैं ६३ जिनके नेत्र और जिह्वा निकल पड़ीं वह सवारोंसमेत घोड़े पृथ्वीपर मरकरगिरे-हुये सोरहे हैं ६४ पर्व्वतके शिखरकी समान रूपवाले यह हाथी मारेगये और अर्ज्जुन के हाथसे घायल वा चूर्णीभूत अंगवाले हाथी पर्व्वतों के समान घूमते हैं ६५ यह गंधर्बनगरके समान रूपवाले रथ जिनके कि राजा मरगये वह स्वर्ग-बासियों के पवित्र बिमानोंके समान पृथ्वीपर गिरते हैं ६६ अर्ज्जुनके हाथ से अत्यन्त ब्याकुलसेना ऐसी दिखाई देतीहै जैसे कि नानाप्रकारके हजारों पशु-ओंके समूह केशरीसिंहसे ब्याकुल होते हैं ६७ आपके हाथी घोड़े रथ और पति-योंके समूहों को मारनेवाले सन्मुख दौड़नेवाले यह बीर पाण्डवलोग राजाओं को मारते हैं ६८ जैसे कि बादलोंसे सूर्य्य ढकजाता है उसीप्रकार यह अर्ज्जुन ढकाहुआ दिखाई नहीं देताहै उसकी ध्वजाकी नोकही दिखाई देती है और प्रत्यंचाका शब्द भी सुनाजाताहै अब उस श्वेत घोड़ेवाले श्रीकृष्णजीको सा-

रथी रखनेवाले युद्धमें शत्रुओंके मारनेवाले बीर अर्ज्जुनको देखोगे ६९ जिसको कि तुम पूछतेथे हे कर्ण अब तुम इन पुरुषोत्तम लालनेत्र शत्रुओं के संतप्तकरने वाले एक रथ पर नियत अर्ज्जुन और बासुदेवजी को देखोगे ७० जिसके सारथी श्रीकृष्णजी हैं और धनुष जिसका गांडीव है हे कर्ण उसको जो तुम मारोगे तो हमारे राजाहोगे ७१ संसप्तकों का बुलाया हुआ यह अर्ज्जुन उनके समीप सन्मुख होकर उन महापराक्रमियों का युद्धमें नाशकररहा है ७२ ऐसे शल्यके बचनोंको सुनकर कर्ण महाक्रोध युक्त होकर बड़े अहंकारसे बोला कि हे शल्य तुम महाक्रोध युक्त संसप्तकोंसे सब ओरसे घिरेहुये अर्ज्जुनको देखो ७३ जैसे कि सूर्य्य बादलों से ढकजाय उसीप्रकार ढकाहुआ यह अर्ज्जुन दिखाई नहीं पड़ताहै हे शल्य अर्ज्जुन ऐसेही अन्तका करनेवालाहै जो कि युद्धकर्त्ताओंके समुद्रमें डूबरहाहै ७४ शल्यबोला कि कौन पुरुष बरुणको जलसेमारे और कौन मनुष्य इंधनसे अग्निको बुझावे और कौन हवाको पकड़े अथवा कौन पुरुष महासमुद्रको पानकरे ७५ मैं युद्धमें अर्ज्जुनका मरना असंभव मानताहूं इन्द्रसमेत देवतालोग भी युद्धमें अस्त्रोंसे अर्ज्जुन को विजय नहीं करसक्ते ७६ अब तेरी प्रसन्नताहै तो अपने बचनको कहकर चित्तको प्रसन्नकर वह तो युद्धमें किसी से विजय करनेके योग्य नहीं है अब तू दूसरे मनोरथको कर ७७ जो भुजाओंसे पृथ्वीको उठासके और क्रोधयुक्त होकर इन सब जड़ चैतन्योंका नाशकरे स्वर्गसे देवताओं को गिरासकै उस अर्ज्जुनको युद्धमें कौन विजय करसक्ताहै ७८ साधारण कर्मी महाप्रकाशमान द्वितीय मेरुपर्व्वतके समान नियत महाबाहु कुन्तीके पुत्र शूरबीर भीमसेनको देखो ७९ कि सदैव क्रोधयुक्त असहिष्णु विजयाभिलाषी यह पराक्रमी भीमसेन चिरकालकी शत्रुताको स्मरण करता युद्धमें नियतहै ८० यह धर्मधारियों में श्रेष्ठ युद्धमें शत्रुओंके साथ कठिन कर्म करनेवाला शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला धर्मराज युधिष्ठिर नियत है ८१ यह कठिनता से विजय होनेवाले दोनों पुरुषोत्तम अश्विनीकुमारों के समान निज सहोदर नकुल सहदेव दोनों भाई युद्धमें नियत हैं ८२ यह पांच पर्व्वतोंके समान पांचो द्रौपदीके पुत्र नियतहैं यह सब अर्ज्जुनके समान युद्धाभिलाषी युद्धमें वर्त्तमानहैं ८३ बलकी वृद्धिवाले बड़ेतेजस्वी सत्यबक्ता द्रुपदके शूरबीर पुत्र जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नहै वह भी नियतहैं ८४ इन्द्रके समानअसह्य

पूर्व समयमें क्रोधयुक्त मृत्युके समान यादवोंमें श्रेष्ठ युद्धाभिलाषी यह सात्विकी हमारे सन्मुख आताहै ८५ उन दोनों पुरुषोत्तमों के इसरीतिसे वार्त्तालाप करते करते वह दोनों सेना श्रीगंगा और यमुनाके समान बड़े वेगसे भिड़गईं ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णशल्यसंवादेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि इसरीति से सेनाओंके तैयारहोने पर और अच्छी रीति से भिड़जानेपर अर्जुन किसरीतिसे संसप्तकोंके सन्मुखगया और कर्ण कैसे पांडवों के सन्मुख गया १ इस युद्ध को ब्यौरे समेत कहो क्योंकि तुम बड़े चतुरहो मैं युद्ध में शत्रुओंके पराक्रमोंके सुनने से तृप्तनहीं होताहूं २ संजयबोले कि आपके पुत्र के हेतु अन्याय होने पर अर्जुन ने शत्रुओं की बड़ी सेना को नियत जानकर ब्यूह को रचा वह अश्व सवार हाथियों समेत रथ और पदातियों से आवृत बड़ी सेनावाला व्यूह जिसमें मुख्यधृष्टद्युम्नथा शोभायमानहुआ ३ । ४ चन्द्रमा और सूर्य्य के समान तेजस्वी धनुषधारी मूर्त्तिमान काल के समान धृष्टद्युम्न कपोतबर्ण घोड़ों समेत शोभित हुआ ५ दिब्य कवच और धनुष रखनेवाले शार्दूलके समान पराक्रमी शरीरसे प्रकाशमान युद्धाभिलाषी द्रौपदी के पुत्रोंने अपने साथियों समेत धृष्टद्युम्न को ऐसा रक्षितकिया जैसेकि तारागण चन्द्रमाको रक्षित करतेहैं तदनन्तर सेनाओं के सन्नद्ध होनेपर युद्धमें संसप्तकों को देखकर ६ । ७ क्रोधयुक्त अर्जुन अपने गांडीव धनुष को टंकारता हुआ सन्मुखगया इसकेपीछे मारनेके अभिलाषी संसप्तकलोग अर्जुनके सन्मुख दौड़े ८ वह विजय में संकल्प करनेवाले मृत्युको तिरस्कार करके सन्मुख गये मनुष्य हाथी घोड़ों के समूहों से युक्त मतवाले हाथी और रथों से ब्याप्त ९ पत्तियों से युक्त शूरबीरों के उस समूहको अर्जुन ने बड़ी शीघ्रता से पीड़ितकिया अर्जुन के साथमें उनलोगों का ऐसा कठिन युद्ध हुआ १० जैसा कि उसका युद्ध निवात कवचियों के साथ हमने सुनाथा रथ घोड़े ध्वजा हाथी इन युद्धमें बर्त्तमानों को भी ११ बाण धनुष खड्ग चक्र फरसे आदि नानाप्रकार के शस्त्रोंको उठाये हुये भुजाओं वा नानाप्रकारके शस्त्रों १२ को और शत्रुओंके हजारों शिरोंको अर्जुनने काटा तब पाताल तलके समान उस सेनारूपी सागरमें १३ इसप्रकार

मग्नहुये उसरथ को देखकर संसप्तकलोग गरजे तदनन्तर उसने उन शत्रुओं को मारकर फिरभी उत्तरकी ओरसे मारा १४ दक्षिण और पश्चिम ओर सेभी ऐसा मारा जैसे कि क्रोध युक्त रुद्र पशुओं को मारते हैं उसके पीछे हे श्रेष्ठ पांचाल चंदेरी और सृंजयदेशियों के युद्ध १५ आपके युद्धकर्त्ताओंसे बड़ेभारी कठिन हुये युद्धमें दुर्म्मद अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसमेत सेनाको मारनेवाले प्रसन्न चित्त कृपाचार्य्य कृतबर्मा और सौबल के पुत्र शकुनी ने कोशल काशी मत्स्य कारूष कैकय १६। १७ और शूरसेनदेशी उत्तमशूरों समेत युद्धकिया यह तीनों उनके युद्धका अन्त करनेवाले शरीर पाप और प्राणों के नाशकरनेवाले १८ क्षत्री बैश्य और शूद्रबीरों के धर्म स्वर्ग और यशके उत्पन्न करनेवालेहुये हे भ-रतर्षभ इसकेपीछे बड़े बीर कौरव और महारथी मद्रदेशियों से रक्षित बीर दुर्योधन ने भाइयों समेत युद्धमें आकर पाण्डव पांचाल और चंदेरी देशियों समेत सा-त्विकीकेसाथ १९। २० युद्ध करनेवाले कर्णको चारों ओरसे रक्षित किया फिर कर्णने भी तीक्ष्णधारवाले बाणों से बड़ीभारी सेनाको मारकर २१ उत्तम उत्तम रथियोंको मर्द्दन करके युधिष्ठिरको पीड़ामानकिया हजारों शत्रुओंको बस्त्रशस्त्र शरीर और प्राणों से पृथक्कर २२ स्वर्ग और यश को स्पर्श करके अपने शूर-बीरोंको प्रसन्नकिया हे श्रेष्ठ इसरीति से मनुष्य हाथी और घोड़ोंका नाश करने-वाला युद्ध कौरव और सृञ्जियों में देवासुरों के युद्ध के समान हुआ २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपरस्परयुद्धेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय मनुष्यों का नाश करनेवाले कर्णने पांडवों की उस सेनामें जाकर राजा युधिष्ठिरको जैसे अचेत किया वह सब मुझसे बर्णनकरो १ युद्धमें पाण्डवों के कौन २ से बड़े बीरों ने कर्णको रोंका और अधिरथी कर्ण ने कौन २ से बीरोंको मथकर युधिष्ठिरको पीड़ितकिया २ संजयबोले कि शत्रुओंका विजय करनेवाला कर्ण सन्मुख बर्त्तमान पाण्डवोंको जिनमें मुख्य धृष्टद्युम्नथा देखकर शीघ्रही पांचालके सन्मुख दौड़ा ३ विजयसे शोभायमान पांचाल शीघ्र ही उससन्मुख दौड़नेवाले महात्माके सन्मुख ऐसेगये जैसे कि हंस सन्मुखजाते हैं ४ इसकेपीछे दोनों ओरसे हजारों शंखों के चित्तरोचक शब्द प्रकटहुये और

भेरियोंके भयानक शब्द होनेलगे ५ तब नानाप्रकारके बाणोंका गिरना और हाथीघोड़े वा रथोंके शब्द और भयकारी वीरोंके सिंहनाद उत्पन्नहुये ६ पर्वत वृक्ष और समुद्रसमेत पृथ्वी वायु और बादलोंसमेत आकाश अथवा सूर्य्य, चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रादिक समेत स्वर्ग यहसब प्रत्यक्षमें घूमनेलगे ७ सब जीवमात्र उस शब्दको इसप्रकारका मानकर घातकरनेसे बन्दहुये और छोटे २ जीव तो भयभीत होकर मरगये ८ इसकेपीछे अत्यंत क्रोधयुक्त कर्णने शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकरके पाण्डवीसेनाको ऐसे मारा जिसप्रकार आसुरी सेनाको इन्द्रमारता है ९ बाणों को छोड़तेहुये उसकर्णने पांडवी सेनामें घुसकर प्रभद्रकोंके बड़े २ सतहत्तर वीरों को मारा १० इसके पीछे उस महारथी कर्णने सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार पच्चीस उत्तम बाणों से पच्चीसही पांचालों को मारा ११ फिर उसवीरने सुनहरी पुंखवाले शत्रुओं के चीरनेवाले नाराचों से हजारों चंदेरी देशियों को भी मारा १२ हे महाराज इसके पीछे पांचालों के रथसमूहों ने इसरीति के बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले कर्णको चारों ओरसे घेरलिया १३ फिर तो सूर्य के पुत्र महात्मा कर्ण ने दुस्सह पांचविशिखों को धनुषपर चढ़ाकर पांच पांचालोंको मारा १४ अर्थात् हे भरतर्षभ युद्धमें भानुदेव, चित्रसेन सेनाबिन्दु, तपन, शूरसेन इनपांचालोंको मारा १५ उस युद्धमें शूरबीर पांचालों के मरनेपर पांचालों में बड़ा हाहाकारहुआ १६ हे महाराज तबतो पांचालों के दश महारथियों ने कर्ण को चारोंओरसे घेर लिया उससमय भी कर्णने शीघ्रही बाणोंसे उनको मारा १७ इसके पीछे चक्र के रक्षक दुर्जय कर्णकेपुत्र सुखेन और सत्यसेनने कर्णको त्यागकर युद्ध किया १८ फिर कर्णके पुत्र पृष्ठरक्षक वृषसेनने कर्णको पीछेकी ओरसे रक्षितकिया १९ कवच और शस्त्रों के धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न, सात्विकी, द्रौपदी के पुत्र, भीमसेन, जन्मेजय, शिखण्डी और बड़े बीर प्रभद्रक २० चन्देरी, केकय, पांचालदेशी, नकुल, सहदेव और मत्स्यदेशी शूरबीर यह सब मारने के इच्छावान् उस प्रहार करनेवाले कर्ण के सन्मुख दौड़े २१ और नानाप्रकारकी बाण बर्षासे इस कर्णको ऐसा मर्द्दन किया जैसे कि बर्षाऋतुमें बादल पर्व्वतको मर्द्दनकरते हैं २२ इसके पीछे पिताके चाहनेवाले प्रहारकर्त्ता कर्ण के पुत्रोंने और आप के अन्य २ बीरों ने उन सब बीरोंको रोंका २३ सुसेन भल्लसे भीमसेन के धनुषको काटकर और सात नाराचों से भीमसेन को छातीपर घायल करके गर्ज्जा २४

इसकेपीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ने बड़े दृढ़ दूसरे धनुषको लेकर अपने बाणसे सुसेनके धनुष को २५ काटकर क्रोधसे युक्त नाचते हुये भीमसेनने दश बाणों से उसको घायल किया और बड़ी शीघ्रतासे कर्णको भी तिहत्तर बाणों से घायल किया २६ और देखनेवाले मित्रोंके मध्यमें कर्णके पुत्र भानुसेनको घोड़े सारथी रथ शस्त्र और ध्वजासमेत दशबाणोंसे गिरादिया २७ फिर क्षुरप्रसे कटाहुआ उसका वह प्रकाशमान शिर ऐसा शोभित मालूमहुआ जैसे कि नालसे जुदाहुआ कमल होताहै २८ भीमसेनने कर्णके पुत्रको मारकर आपके शूरबीरोंको फिर पीड़ामान करके कृपाचार्य्य और कृतवर्मा के धनुषोंको काटकर उनकोभी व्याकुलकिया फिर दुश्शासनको तीनबाणसे और शकुनीको छः लोहे के बाणों से घायलकरके उलूक और पत्री इनदोनों को बिरथकिया हाय सुसेन को माराहै ऐसा कहतेहुये भीमसेनने शायककोलिया तबकर्णने उसके उसबाण को काटकर तीन बाणों से उसको भी घायल किया २९। ३१ इसकेपीछे भीमसेनने सुन्दर पर्व्ववाले बाणको लेकर सुसेनके ऊपरछोड़ा फिर कर्णने उसबाण को भी काटा ३२ इसके पीछे पुत्रको चाहते निर्दय कर्ण ने मारने की इच्छासे तिहत्तर बाणों से निर्दय होकर भीमसेन को फिर घायलकिया ३३ फिर सुसेनने बड़े भारबाहक उत्तम धनुष को लेकर पांच बाणों से नकुलको दोनोंभुजा और छातीपर घायलकिया ३४ तब नकुलभी भारसहनेवाले बीसबाणोंसे उसकोघायल करके बड़े शब्दको गर्जा और कर्णकेभयको उत्पन्नकिया ३५ फिर महारथी सुसेनने शीघ्रगामी तीक्ष्ण दशबाणोंसे उसको घायलकरके शीघ्रही क्षुरप्रसे उस के धनुषको काटा ३६ इसके पीछे क्रोधसे भरेहुये नकुलने दूसरे धनुषको लेकर युद्धमें नौबाणोंसे सुसेनको रोंककर ३७ उस शत्रुहन्ताने बाणोंसे दिशाओंको ढककर इसके सारथीको घायलकिया फिर सुसेनको तीनबाणसे ३८ और तीन भल्लों से उसके बड़े दृढ़ धनुषके तीनखण्ड करदिये इसकेपीछे क्रोधयुक्त सुसेनने दूसरे धनुषको लेकर ३९ साठबाणोंसे नकुलको घायलकरके सातबाणोंसे सहदेव को छेदा परस्परके युद्धमें शीघ्रतापूर्वक शायक मारनेवाले बीरोंका युद्ध देवासुरों के युद्धके समानहुआ फिर सात्विकी तीन बाणों से वृषसेन के सारथीको मारकर ४०। ४१ भल्लसे उसके धनुषको काट घोड़ों को भी सातबाणों से मारा एकबाणसे ध्वजाको काटकर तीनबाणोंसे उसको भी हृदयपर घायलकिया ४२

इसके पीछे एकमुहूर्त्त अपने रथपर अचेतहोकर फिर उठखड़ाहुआ युद्ध में सात्विकीके हाथसे सारथी घोड़े रथ और ध्वजासे रहित कियाहुआ वह वृषसेन ४३ सात्विकी के मारनेकी इच्छासे ढाल तलवार बांधकर सात्विकी के सन्मुख गया उस शीघ्रतासे आनेवालेवृषसेनकी ढाल तलवारको सात्विकी ने ४४ बाराहकर्णनाम दशबाणोंसे काटा और दुश्शासनने उस रथ और शस्त्रसेहीन वृषसेनको देखकर ४५ अपने रथपर सवारकरके शीघ्रही दूसरे रथपर सवारकिया इसके पीछे महारथी वृषसेन ने दूसरे रथपर सवार होकर ४६ तिहत्तरबाणोंसे द्रुपदके पुत्रोंको और पांचबाणोंसे सात्विकीको चौंसठ बाणोंसे भीमसेनको पांचसे सहदेवको ४७ तीनबाणोंसे नकुलको सातबाणोंसे शतानीकको दशबाणसे शिखण्डीको और सौ बाणोंसे धर्म्मराजको घायलकिया ४८ हे राजा उस धनुषधारी कर्ण के पुत्रने इन और अन्य २ शूरवीरों को पीड़ामानकिया ४९ इसकेपीछे उस अजेयने युद्ध में कर्णके पृष्ठभागको रक्षितकिया फिर सात्विकी ने नवीन लोहे के नौ बाणों से दुश्शासनको ५० सारथी घोड़े और रथसे बिहीनकरके तीनबाणसे उसके ललाट को घायलकिया फिर वह दुश्शासन बुद्धिके अनुसार अलंकृत दूसरे रथपर सवार होकर ५१ कर्णके बलको बढ़ाताहुआ पाण्डवोंके साथ युद्ध करनेलगा इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने दश बाणों से कर्णको घायलकिया ५२ द्रौपदीके पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे सात्विकीने सात बाणों से भीमसेनने चौंसठ बाणोंसे सहदेवने सात बाणों से नकुलने तीन सौ बाणसे शतानीकने सातबाणसे ५३ शिखण्डीने दशबाणों से और बीर धर्म्मराज ने सौ बाणों से घायल किया ५४ हे राजेन्द्र विजयाभिलाषी इन बीरों ने और अन्यबीरोंने उस महायुद्धमें बड़ेभारी धनुषधारीको पीड़ामानकिया ५५ फिररथसे घूमकर उसशत्रुविजयी बीर कर्ण ने बिशिखनाम दश २ बाणोंसे प्रत्येक को घायलकिया ५६ हे महाबाहो हमने महात्मा कर्ण के अस्त्रबल और हस्तलाघवताको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया ५७ क्रोधसे बाणों को लेते चढ़ाते और मारतेहुये कर्णको नहीं देखा परन्तु शत्रुओं को मृतकहुआ देखा ५८ उससमय तीक्ष्णधारवाले बाणों से पृथ्वी स्वर्ग दिशा और आकाश भर व्याप्त होगया उस स्थानपर आकाश लालबादलों से व्याप्त होनेके समान परिपूर्ण होगया ५९ उससमय धनुष हाथमें लिये नाचताहुआ प्रतापवान् कर्ण जिन २ के हाथ से घायलहुआथा उन उन को एकएक करके तिगुने बाणों से

घायलकिया ६० फिर हज़ारबाणों से उनको घायलकरके बड़े बेगसे गर्जा इसके पीछे घोड़े रथ सारथी समेत वह सबलोग घायल हो होकर हटगये ६१ शत्रुओं का घायल करनेवाला कर्ण बाणोंकी बर्षा से उनबड़े २ धनुषधारियों को मथकर परस्पर मर्द्दनरूप पीड़ासे रहितहोकर हाथियों की सेनाओंमें आया ६२ वहां उस कर्णने मुख न मोड़नेवाले चन्देरी देशियों के तीनसौ रथों को मारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से युधिष्ठिरको घायलकिया ६३ इसकेपीछे हे राजा सब पाण्डव सात्विकी और शिखण्डी जोकि राजाको कर्णसे रक्षा कररहेथे उन सबनेआकर युधिष्ठिरको चारोंओरसे रक्षित किया ६४ उसीप्रकार सावधान शूरबीर महाधनुषधारी आप के सब युद्धकर्त्ताओं ने युद्धमें दुर्ज्जय कर्णको चारोंओर से रक्षित किया ६५ हे राजा फिर नानाप्रकारके बाजों के शब्द प्रकटहुये और सन्मुख गर्जनेवाले बीरों के सिंहनाद उत्पन्न हुये ६६ इसकेपीछे निर्भय पाण्डव और कौरव फिर सन्मुख हुये पाण्डवों का मुख्य युधिष्ठिर था और हमारा मुख्य अग्रगामी कर्ण था ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेनवचत्वारिंशोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे हजारों रथ घोड़े हाथी और पत्तियों समेत कर्ण उससेनाको चीरकर युधिष्ठिरके सन्मुखगया १ वहां कर्ण निर्भयता पूर्व्वक शत्रुओं से संतप्त होकर नानाप्रकारके हजारों शस्त्रोंको काटकर सैकड़ों महाउग्र बाणों से शत्रुओंको घायल किया २ कर्णने उनके शिर जंघा और भुजाओंको काटा तब वह घायल और मृतक होकर पृथ्वीपरपड़े और बहुतसे भागगये ३ फिर सात्विकीके कहनेपर द्राविड़ निषाद और शूरबीर पत्तीलोग युद्धमें मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुखगये ४ वह लोगभी कर्णके हाथसे शायक और भुजाओंसे रहित होकरमारेगये और एकसाथही पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि टूटाहुआ तालका बन गिरपड़ताहै ५ इसरीति से युद्धभूमिमें दिशाओंको व्याप्तकरते सैकड़ों और हजारों शूरबीर मृतक होकर पृथ्वीपर बर्त्तमानहुये इसके पीछे पांडव और पांचालोंने मृत्युके समान सूर्य्यके पुत्र कर्णको ऐसे रोका जैसे कि मन्त्र और औषधियोंके द्वारा रोगको रोकते हैं ६।७ वहकर्ण उनको भी मर्द्दनकरके फिर युधिष्ठिर

केपास ऐसे पहुँचा जैसे कि मंत्र वा औषधियोंके कर्मको उल्लंघन करनेवाला महा कठिन रोगहोता है ८ राज्य के अभिलाषी पाण्डव पांचाल और केकयलोगों से रोकाहुआ वह कर्ण उल्लंघन करनेको ऐसे समर्थ नहींहुआ जैसे कि काल ब्रह्मज्ञानीको नहीं उल्लंघन करसक्ता है ९ इसके पीछे समीप बर्त्तमान शत्रुविजयी रोकेहुये कर्ण से वह क्रोधसे रक्तनेत्र युधिष्ठिरबोले १० हे वृथा दीखनेवाले सूत पुत्र कर्ण मेरे बचनको सुन तू सदैव युद्धमें महाबेगवान् अर्ज्जुन से ईर्षा कर-ताहै ११ और दुर्य्योधन के मतमें होकर सदैव हमलोगों को पीड़ादेता है तेरा तेज बल पराक्रम और पाण्डवोंके साथमें जो शत्रुताहै १२ उस सबको तू बड़ी वीरता में नियत होकर दिखला अब मैं बड़े युद्धमें तेरे युद्धके निश्चयका नाश करूंगा १३ हे महाराज पाण्डव युधिष्ठिरने कर्णसे ऐसे बचन कहके सुनहरी पुंख वाले दशबाणों से उसको घायलकिया १४ हे भरतबंशी शत्रुओंके विजयी कर्ण ने हँसकर विषदन्तनाम दशबाणों से उसको घायलकिया १५ हे श्रेष्ठ कर्ण के हाथसे घायल वह युधिष्ठिर उसको तुच्छ करके ऐसा क्रोधयुक्त हुआ जैसे कि हव्यके कारणसे अग्नि प्रज्वलित होती है १६ प्रलयकाल करनेकी इच्छावाली ज्वालाओंकी मालाओंसे व्याप्त युधिष्ठिर का शरीर ऐसा दिखाई दिया जैसे कि प्रलयकाल में कामनाओंका भस्मकरनेवाला दूसरा संवर्त्तक अग्नि होताहै १७ हे राजेन्द्र इसके पीछे वह सेनाके मनुष्य जो कि अत्यन्त प्रकाशित शस्त्रों के धारण करनेवाले थे और जिनके प्रकाशमान वस्त्र और माला गिरपड़ी थीं वे दशोदिशाओं को भागे १८ उसकेपीछे सुवर्णसे जटित बहुत बड़ेधनुषको टंकार कर पर्व्वतोंके भी विदीर्ण करनेवाले बहुत तीक्ष्णबाणोंको चढ़ाया १९ इसकेपीछे राजाने कर्णके मारने की इच्छासे शीघ्र कर्णतक खींचेहुये यमराजके दण्डकी समान बाणको छोड़ा २० फिर वह उस वेगवान्के हाथसे छूटाहुआ बिजली के समान शब्दायमान बाण अकस्मात् उस महारथी कर्णके बाईंकोख में नियत हुआ २१ तब वह महाबाहु उसबाण से पीड़ितहोकर रथपर धनुषको छोड़कर अचेत होगया २२ इसके पीछे दुर्य्योधनकी बड़ीसेनाने कर्णको उसदशामें बिपरीत चेष्टायुक्त देखकर बड़ा हाहाकार किया २३ हे राजा युधिष्ठिरके पराक्रमको देखकर पाण्डवोंका सिंहनाद और क्रीड़ापूर्व्वक किलकिला शब्द प्रकटहुआ २४ फिर बड़े पराक्रमी कर्णने थोड़ेही काल में सचेतहोकर राजा के मारने का म-

नोरथकिया २५ और उस साहसी ने सुवर्णजटित विजयनाम धनुषको टंकारकर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से पाण्डवों को घायल किया २६ इसके पीछे युद्ध में महात्मा राजाके चक्रकेरक्षक पांचालदेशी चंद्रदेव और दण्डधार को दो क्षुरप्रों से घायल किया २७ धर्म्मराजके वह दोनों बड़ेबीर दोनों पहियोंकीओर रथके समीप ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि चन्द्रमाकेपास पुनर्वसु नक्षत्र शोभायमान होते हैं २८ युधिष्ठिरने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से कर्णको फिरछेदा और सुसेन वा सत्यसेन को तीनबाणों से घायल किया २९ शल्यको नब्बेबाणों से और कर्ण को तिहत्तर बाणों से पीड़ामान किया और उनके उन रक्षकों को सीधे चलनेवाले तीन २ बाणों से घायल किया ३० इसकेपीछे धनुषको चलायमान करताहुआ वह कर्ण बहुतहँसा और भल्लसे राजाको ब्यथितकर साठबाणों से घायल करके गर्जा ३१ इसके पीछे युधिष्ठिर पाण्डवके बड़े २ बीर क्रोधयुक्त होकर युधिष्ठिर की रक्षाकरने को कर्ण के सन्मुख दौड़े और बाणों से उसको पीड़ामान किया ३२ सात्विकी, चेकितान, युयुत्सु, पाण्ड्य, धृष्टद्युम्न, द्रौपदीके पुत्र, प्रभद्रक ३३ नकुल, सहदेव, भीमसेन, शिशुपालकेपुत्र, कारुष्य, मत्स्य, कैकय, काशी, कोशिल इनदेशों के शेषशूरवीरों ने ३४ सुसेनको घायलकिया और पांचालदेशी जनमेजयने शायकों से कर्ण को पीड़ित किया ३५ बाराह, कर्ण, नाराच, नालीक, वत्सदन्त, विपाट, क्षुरप्र, चुटका, मुख ३६ और नाना प्रकारके उग्रशस्त्रों से और रथ हाथी घोड़े और अश्व सवारों से कर्णको घेरकर मारने की इच्छासे सन्मुखदौड़े ३७ सबप्रकार करके पाण्डवों के उत्तम शूरवीरों से घिराहुआ होकर ब्रह्मास्त्रको प्रकट करतेहुये उस कर्ण ने बाणों से दिशाओं को ब्याप्त करदिया ३८ इसकेपीछे बाणरूप बड़ी अग्नि और पराक्रमरूप बड़ी उष्णता रखनेवाला अग्निरूप कर्ण पाण्डवरूपी बनको भस्मकरताहुआ इधर उधर भ्रमणकरने लगा ३९ फिर बड़े धनुषधारी बीरकर्णने हँसकर महाअस्त्रोंको चढ़ाकर बाणों से महाराजा युधिष्ठिर के धनुषको काटा ४० इसके पीछे कर्ण ने एक पलभरमेंही नब्बे बाणों को चढ़ाकर युद्ध में राजा के कवच को छेदा ४१ उससमय वह रत्नजटित सुवर्ण से खचित कवच पृथ्वीपर गिरताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि बिजलीका रखनेवाला बादल बायुसे ताड़ित होकर सूर्य्य से चिपटाहुआ होताहै ४२ उस महाराज के शरीरसे गिराहुआ अपूर्ब्ब

रत्नों से अलंकृत वह कवच ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि रात्रिके समय बादलों से रहित आकाश होता है ४३ इसके पीछे बाणों से टूटे कवच रुधिरसेभरेहुये उसराजाने केवल लोहेकी बनीहुई शक्तिको कर्णके ऊपरफेंका४४ कर्णने उस अग्निरूपी शक्तिको आकाशमेंही सात बाणों से काटा और वह शक्ति पृथ्वीपर गिरपड़ी ४५ इसके पीछे पीछे पाण्डव युधिष्ठिर चार तोमरों से कर्णको दोनोंभुजा ललाट और हृदयपर घायलकरके बड़ीप्रसन्नतासे गर्जा ४६ फिर रुधिरभरे क्रोधयुक्त सर्प के समान श्वास लेनेवाले कर्णने भल्लसे ध्वजाको काटकर तीन बाणों से पाण्डव युधिष्ठिरको घायलकिया ४७ और उसकेदोनों तूणीरोंको काटकर रथको तिल तिलके समान चूर्ण करडाला जिन कृष्णवर्ण बालरखनेवाले दन्तवर्ण घोड़ों ने युधिष्ठिर को सवार किया ४८ राजा उनघोड़ों के रथपर चढ़कर मुखमोड़कर घरको चलदिया इसरीतिसे वह युधिष्ठिर जिसका सारथी और पीछे रहनेवाला मरगया था वह हटगया ४६ फिर वह महाखेदित चित्तहोकर कर्ण के सन्मुख होनेको समर्थ नहींहुआ फिर कर्ण ने पाण्डव युधिष्ठिरके पासजाकर ५० वज्र अंकुश मत्स्य ध्वजा कच्छप और कमल आदिके चिह्नवाले हाथसे उसको पकड़ना चाहा ५१ और अपने पवित्र होनेको हाथसे कन्धेको छूकर बलसे पकड़ना चाहाही था कि कुन्ती का वचन उसको स्मरण होआया ५२ तब शल्यने कहा कि हे कर्ण इस उत्तम राजाको मतपकड़ो वह पकड़तेही तुझको भस्म न करडाले ५३ हे राजा इस बातके सुनतेही वह कर्ण हँसा और पाण्डवों की निन्दाकरता हुआ बोला बड़ेकुलमें उत्पन्न क्षत्रीधर्म में नियत होकर ५४ इसबड़े युद्धमें भयभीतता से प्राणोंकी रक्षाकरते युद्धकोत्यागकर कैसे जातेहो इससे मेरे मतसे आपक्षत्रीधर्म में कुशल नहीं हो ५५ आप ब्राह्मणों के समूहों में वेदपाठ और यज्ञ करने में योग्यहो हे कुन्ती के पुत्र युद्ध मतकरो और बीरोंके सन्मुख मतहो ५६ इनको अप्रिय मतकहो बड़े युद्धमें मत जाओ उस बड़े बीरने इसरीतिसे कहकर पाण्डवको छोड़ ५७ पाण्डवीसेना को ऐसेमारा जैसे वज्रधारी इन्द्र आसुरी सेनाको मारताहै हे राजा इसके पीछे लज्जायुक्त राजा युधिष्ठिर शीघ्रही हटगया ५८ तदनन्तर उसअजेय राजा को हटा हुआ मानकर आगे लिखे हुये बीर इसके पीछे २ चले चंदेरी देशवाले पांडव पांचाल महारथी सात्विकी ५६ शूर द्रौपदी के पुत्र नकुल सहदेव इत्यादि त-

दनन्तर युधिष्ठिरकी सेनाको फिराहुआ देख कर ६० अत्यन्त प्रसन्न चित्त कर्ण कौरवों समेत पीछेकी ओरसेचला और धृतराष्ट्रके पुत्रोंके भेरीशंख मृदंग धनुष ६१ और सिंहनादों के शब्दहुये हे कौरव्य महाराज फिरयुधिष्ठिरने शीघ्रही ६२ श्रुतकीर्त्तिके रथपर चढ़कर कर्णके पराक्रमको देखा फिर धर्मराज अपनी सेना को छिन्न भिन्न देखकर ६३ महाक्रोधितहो अपने शूरवीरोंसे बोला कि तुम कैसे खड़ेहो इनको क्योंनहींमारते तबवह राजाकी आज्ञापाकर पांडवोंके सब महारथी ६४ जिनमें अग्रगामी भीमसेनथा आपके पुत्रों के सन्मुख दौड़े तब वहां शूर-वीरोंके बड़े कठोर शब्द हुये ६५ रथ हाथी घोड़े और पत्तियों के जहां तहां शब्द होनेलगे फिर उठो घायलकरो सन्मुख होजाओ दौड़ो ६६ इसप्रकारकी परस्पर में वार्त्ता करतेहुये शूरवीरोंने उस बड़े युद्धमें एकने एकको मारा और आकाश में बाणोंके कारण घटासी छागई ६७ परस्पर में मारनेवाले लौटे हुये उत्तम पु-रुषोंके हाथसे युद्धमें ध्वजापताकाओंसे खंडित घोड़े सारथी और शस्त्रोंसे रहित एक २ शरीरके अंगोंसे चूर्णित राजालोग मृतकहोकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ६८ जैसे कि टूट२ कर पहाड़ों के शिखर गिरपड़ते हैं इसी प्रकार सवारों समेत ६६ उत्तम २ हाथी मृतक होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि बज्र से टूटेहुये सारोह भूषण और कवचों से संयुक्त पर्व्वत गिरतेहैं ७० हजारों सवारों समेत घोड़े जिनके बहुत से शूरबीर मारेगये वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े और जिनके शस्त्र अत्यन्त टूटगये वह रथहीन होकर रथोंसेही मारेगये ७१ और युद्धमें स-न्मुख युद्धकरनेवाले बीरोंसे पत्तियों के हजारों समूह मारेगये बड़ी लंबी लाल आंख और चन्द्रमा कमलके समान मुख रखनेवाले ७२ युद्ध कुशल पुरुषों के उत्तम शिरोंसे सब ओरमें पृथ्वी आच्छादित होगई और जो २ काम पृथ्वीपर हुआ उसका शब्द मनुष्योंने आकाशमें भी सुना ७३ उत्तमगीत और बाजों स-मेत अप्सराओंके समूह हजारों बीरलोगों को ७४ बिमानों में बैठाकर लियेजातेथे उस बड़े आश्चर्य को प्रत्यक्षमें देखकर स्वर्गकीअभिलाषासे ७५ अत्यन्तप्रसन्न चित्त शूरवीरों ने बड़ी शीघ्रतासे परस्परमें मारा और रथियों ने रथों समेत बड़ी वीरतासे अद्भुत युद्धकिया ७६ पत्तियोंने पत्तियोंके साथ हाथियोंने हाथियों के साथ घोड़ोंने घोड़ोंके साथमनुष्य और हाथियोंका नाशकारक युद्धकिया ७७ इस रीति के युद्ध जारीहोने और धूलसे सेनाके ढकजाने पर कचाकच युद्ध

हुआ और एकने एकको वा अपनोंने अपनेको मारा और अन्योन्यमें बालों का पकड़ना दांतोंसे काटना नखोंसे विदीर्णकरना ७८ मुष्टि प्रहारकरना भुजा से भुजाको तोड़ना यह सब युद्ध पाप और प्राणों के नाशकारीहुये इस रीतिसे हाथी घोड़े और मनुष्योंका नाशकारक युद्ध जारीहोनेपर ७६ मनुष्य हाथी और घोड़ों के शरीरों से रुधिरकी ऐसी नदी बह निकली जिसने हाथी घोड़े और मनुष्योंके कटेगिरे शरीरोंको पृथ्वीपर बहाया ८० मनुष्य हाथी और हाथियोंके परस्पर जुटजाने पर घोड़े हाथी और सवारोंका रुधिर रूप जलरखनेवाली ८१ महाघोर मांस रुधिर मज्जारूप कीचसे संयुक्त नदी मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीरों की बहानेवाली और भयभीतोंको भयकी करानेवालीथी बिजयाभिलाषी वीरों ने उसअपार नदीके पारको पाया ८२ और कोई २ उछलते डूबतेहुये स्नान करने के अभिलाषीहुये हे भरतर्षभ उन भयभीत युक्त शरीरवाले उत्तम रक्तवर्ण कवच और शस्त्रों के धारण करनेवालोंने ८३ उस नदी में स्नान किया और पानकरतेही कुम्भलाकर लज्जित हुये हमनेरथ घोड़े मनुष्य हाथी भूषण ८४ कपड़े और टूटेहुये कवचोंको पृथ्वी दिशा और आकाश समेत बहुधा रक्तवर्णही देखा ८५ हे भरतबंशी रुधिरके गंधस्पर्शरस और कठिनतारूप समेत शब्दोंसे ८६ बहुतसी सेनामें व्याकुलता प्राप्तहुई तब भीमसेन औरसात्विकी जिनमें मुख्यथे वह वीर उसअत्यन्त घायल और मृतकसेनाके सन्मुख फिरगये ८७ उससमय उनचढ़ाई करने वाले वीरोंका वेग असह्य हुआ ८८ हे राजा आपके पुत्रों के समेत बड़ी सेनाके मुख मुड़गये और मनुष्य घोड़ोंसे व्याकुल वह आपकी सेना रथ घोड़े और हाथियोंसे रहित होकर ८६ टूटीढाल टूटेकवच और खंडितशस्त्र धनुषवाली चारों ओरसे ऐसे तिर्र बिर्र होकरभागी ६० जैसे कि बनमें सिंहसे पीड़ित हाथियों के समूह व्याकुल होकर भागते हैं ६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

संजयबोले कि हेमहाराज आपकी सेना के सन्मुख दौड़नेवाले पांडवों को देखकर दुर्योधनने सेनाको हरप्रकारसे रोका १ हे भरतर्षभ उस दुर्योधनने बड़े२ शूरवीरों को और सेना को अनेक प्रकारसे रोका परन्तु आपके पुत्रकेभी पुका-

रनेसे वहलोग नहीं लौटे २ तबउसके पीछे पक्ष प्रपक्ष समेत सौबलका पुत्रश-कुनी और शस्त्रधारी कौरव युद्धमें भीमसेनके सन्मुख गये ३ कर्णभी राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखकर मद्रके राजासे यहबोला कि तुम भीमसेनके र-थके समीप चलो ४ कर्णके इस बचन को सुनकर राजा मद्रने हंसवर्णके उत्तम घोड़ों को वहां पहुंचाया जहांकि भीमसेनथा ५ हेमहाराज युद्धको शोभा देने वाले कर्णके प्रेरित थोड़े भीमसेन के रथको पाकर अच्छे प्रकारसेभिड़े ६ हे भ-रतर्षभ क्रोधयुक्त भीमसेनने कर्णको आताहुआ देखकर उसके मारनेका उपाय बिचारा ७ और बीरसात्विकी और धृष्टद्युम्नसे बोला कि तुम धर्मात्मा राजा यु-धिष्ठिरकी रक्षाकरो ८ क्योंकि वह मुझको देखकर बड़े सन्देहको न करे और मुझपर कर्ण चला आताहै ९ सोमैं आज उसको युद्ध में बधकरके अपने जय के होने की बिधिकरताहूं १० मैं तुमसे सत्यसत्य कहताहूं कि घोर युद्ध के द्वारा कितौ मैंही कर्ण को मारूंगा अथवा कर्ण मुझको मारेगा ११ अब मैं राजाको आपलोगों के सुपुर्द करताहूं तुम सबलोग अनेक प्रकारसे उसकी रक्षाके उपाय को करो १२ वह महाबाहु भीमसेन इसप्रकार धृष्टद्युम्न से कहकर बड़े शब्द से सिंहनाद को करके दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ कर्ण के रथकी ओर गया १३ इसके पीछे मद्रदेशियों का स्वामी समर्थ शल्य युद्ध के चाहनेवाले शीघ्रतापूर्वक आनेवाले भीमसेन को देखकर कर्ण से बोला १४ हे कर्ण इस अत्यन्त क्रोधयुक्त बहुतकाल से दबेहुये क्रोधको तेरेऊपर निकालने की इच्छा वाले पांडुनन्दन भीमसेन को देखो १५ हे कर्ण पूर्व्व में मैंने अभिमन्यु और घटोत्कच के मरनेपर भी इसका इसप्रकार का रूप नहीं देखाथा जैसा कि अब देखने में आताहै १६ यह क्रोधयुक्त तीनों लोकों के भी हटाने में समर्थ है इसस-मय इसने प्रलयकालकी अग्नि के समान देदीप्यमान अपने रूप को धारण कियाहै १७ संजय बोले हे राजा शल्यके इसप्रकारके कहतेही कहते में महावि-करालरूप भीमसेन कर्ण के सन्मुख बर्त्तमानहुआ इसके पीछे हँसताहुआ कर्ण उस सन्मुख आयेहुये भीमसेन को देखकर शल्य से यह बचन बोला १८ । १९ हे मद्रदेश के स्वामी अब तुमने भीमसेनके विषय में जो बचन मुझसे कहा वह सत्यहै इसमें सन्देह नहीं है २० यह भीमसेन बड़ा शूरवीर क्रोधमें भरा शरीरसे असादृश्य पराक्रमियों में भी अधिक पराक्रमी है २१ बिराट नगर में गुप्त रहने

वाली द्रौपदी के अभीष्ट चाहनेवाले ने केवल भुजबलकेही द्वारा २२ गुप्त उपाय में आश्रित और प्रवृत्त होकर कीचक को उसके सब समूहों समेत मारा अब कवचधारी क्रोध से व्याकुल यह भीमसेन दण्डधारी मृत्यु के संगभी युद्धकरने को समर्थहै फिर यह मेरे मनका अभिलाष बहुत कालसे होरहाहै कि मैं युद्ध में अर्जुन को मारूं अथवा अर्जुन मुझेमारे वह मेरा प्रयोजन भीमसेनके लड़ने से कदाचित् अभी होजाय क्योंकि भीमसेन के मरनेपर अथवा बिरथ करनेपर अर्जुन मेरे सन्मुख आवेगा यही मुझको श्रेष्ठ लाभहोगा २३ । २४ । २५ । २६ अब यहां जो उचित समझतेहो उसको शीघ्रतासे करो बड़े तेजस्वी कर्ण के इस बचनको सुनकर २७ शल्य कर्ण से बोला कि हे महाबाहो तुम बड़े पराक्रमी भीमसेनके सन्मुखचलो २८ तुम भीमसेनको बिजयकरके अर्जुनको पाओगे जो तेरे चित्तका अभीष्ट बहुत कालसे हृदयमें बर्त्तमानहै २९ हेकर्ण वह अभीष्ट तेरा तुझको प्राप्तहोगा इसमें मिथ्या न होगा ऐसा कहनेपर फिर कर्ण शल्यसेबोला ३० कि मैं युद्ध में अर्ज्जुन को मारूंगा वा अर्ज्जुन मुझको मारेगा तुम युद्ध में मनलगाकर वहांचलो जहां भीमसेनहै ३१ तबसंजयनेकहा हे राजा फिर शल्य रथ के द्वारा वहां गया जहांपर बड़े धनुषधारी भीमसेन ने आपकी सेना को भगायाथा ३२ हे राजेन्द्र इसके पीछे कर्ण और भीमसेन की सन्मुखता में तूरी और भेरी आदि बाजों के शब्द होनेलगे ३३ तदनन्तर अत्यन्त क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेन ने उसकी महादुर्ज्जय सेना को साफ और तीक्ष्ण नाराचों से दिशाओं में भगादिया ३४ हे महाराज धृतराष्ट्र इसकेपीछे भीमसेन और कर्ण का महाभयकारी कठिन रोमहर्षण युद्ध हुआ ३५ इसके पीछे एक क्षण-मात्र में ही भीमसेन कर्ण की ओर दौड़ा फिर सूर्य्य के पुत्र धर्म्मात्मा कर्ण ने उस आतेहुये भीमसेनको देखकर ३६ अत्यन्त क्रोधित होकर छातीपर घायल किया और बाणोंकी वर्षा से ढकदिया ३७ कर्ण के हाथसे छिदेहुये भीमसेनने भी कर्णको बाणों से ढककर टेढ़े पर्व्ववाले नौ बाणोंसे देहमें घायल किया ३८ फिर कर्णने बाणों से उसके धनुषको दो स्थानों से काटकर अत्यन्त तीक्ष्ण सब प्रकार के कवचों के काटनेवाले नाराच से उसकी छाती को घायल किया ३९ फिर मर्मों के जाननेवाले उस भीमसेन ने दूसरे धनुषको लेकर तीक्ष्ण बाणोंसे कर्णको ४० मर्म स्थलों में घायलकिया और पृथ्वी वा आकाश को कंपायमान

करताहुआ महा घोर शब्दको गर्जा ४१ फिर कर्णने उसको पच्चीस नाराचोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि बनमें मतवाले हाथीको उल्काओं से घायल करते हैं ४२ इसकेपीछे शायकों से घायल शरीर क्रोधसे व्याकुल क्रोध और ईर्षा से लाल नेत्र करके उसके मारनेकी इच्छासे भीमसेन ने ४३ बड़े भारबाही पर्व्वतों के भी छेदनेवाने उग्रबाणको धनुषमें चढ़ाया ४४ और बड़े धनुषधारी वेगवान् बायुपुत्र भीमसेनने कर्णके मारने की अभिलाषा से कर्ण पर्य्यन्त धनुषको खैंच कर वह बाण चलाया ४५ पराक्रमी भीमसेन के हाथसे छूटेहुये बज्र और बिजली के समान शब्दायमान उस प्रबल बाणसे युद्धमें कर्णको ऐसे घायलकिया जैसे कि बज्रकावेग पर्व्वतको व्याकुल करके घायल करताहै ४६ हे कौरव्य वह सेनापति कर्ण भीमसेनके हाथसे घायल और अचेत होकर रथके बैठनेकेस्थान पर गिरपड़ा ४७ तबतो राजा मद्रकर्णको अचेत देखकर युद्धमें शोभादेनेवाले कर्ण को युद्धभूमि से दूरलेगया ४८ इसके पीछे कर्ण के बिजय होनेपर भीमसेन ने दुर्य्योधनकी बड़ी सेनाको ऐसा भगाया जैसे कि पूर्व्वकाल में इन्द्र ने दानवों को भगाया था ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णोपवानोनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेन ने यह अत्यन्त कठिन कर्मकिया जिसने अपने हाथसे कर्णको रथके स्थानमें अचेत करके गिराया १ अकेला कर्णयुद्ध में सृंजियों समेत सब पाण्डवों को मारेगा हे संजय यहबात बारम्बार मुझसे दुर्य्योधन ने कही है २ युद्धमें भीमसेन के हाथसे बिजय कियेहुये कर्ण को देख कर मेरे पुत्र दुर्य्योधनने क्या किया ३ हे महाराज युद्धमें आपका पुत्र कर्णको मुखमोड़नेवाला देखकर अपने निज भाइयों से बोला कि ४ तुम्हारा भलाहो तुम शीघ्रजाकर कर्णको भीमसेन के महाकष्टरूपी अथाह समुद्र में डूबेहुयेकर्ण की सबओर से रक्षाकरो ५ राजाकी आज्ञापातेही वह सबलोग महाक्रोध युक्त होकर भीमसेन के सन्मुख ऐसेहुये जैसे कि अग्नि के सन्मुख पतङ्ग होते हैं ६ श्रुतवान्, दुर्द्धर, क्राथ, विवित्सु, विकट, सम, निषंगी, कवची, पाशी, नन्द, उपनन्द ७ दुष्प्रधर्ष सुबाहु, बाणवेग, सुवर्चस, धनुर्ग्राह्य, दुर्मद, जलसंध, शल,

सह, इनमहापराक्रमी रथोंसे रक्षित धृतराष्ट्रके पुत्रों ने भीमसेनको पाकर चारों ओर से घेरलिया ८। ९ और नानाप्रकार के रूपवाले बाण समूहों को चारों ओरसे फेंका फिर वह महाबली भीमसेन ने उन्हों के हाथसे पीड़ामानहोकर१० उन आतेहुये आपके पुत्रों के पन्द्रह रथों समेत पचास रथियोंको मारा ११ इसके पीछे फिर क्रोधयुक्त भीमसेन ने भल्लसे विवित्सु के शिरको देहसे जुदाकिया और वह मरकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ पूर्णचन्द्रमा के समान कुण्डलभी उसके शिरके साथही गिरा हे राजा तबतो उसके सबभाई उस शूरबीर अपने भाईको मराहुआ देखकर १३ युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन के सन्मुख गये इसके अनन्तर उस भयानक भीमसेनने उस महायुद्धमें दूसरे दो भल्लों से १४ आपके दोपुत्रोंके प्राणोंका हरणकिया हे राजा हवासे टूटेहुये वृक्षोंकेसमान देवकुमारों के समान वह विकट और सहनाम दोनोंभाई भी मरकर पृथ्वीपरगिरपड़े इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेनने क्राथकोभी यमलोकमें पहुँचाया १५। १६ अत्यन्त तीक्ष्ण नाराचका माराहुआ वह क्राथ पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो महा कठिन हाहाकार उत्पन्न हुआ १७ आपके धनुषधारी बीर बेटों के मरने और उनकी सेनाके चलायमान होनेपर फिर महाबली भीमसेनने १८ युद्ध में नन्द उपनन्द को यमलोक में पहुँचाया उसके पीछे वह आपके पुत्र भयभीत और व्याकुल १९ युद्धमें कालरूप भीमसेन को देखकर भागे फिर बड़ेदुःखी कर्ण ने आपके पुत्रों को मराहुआ देखकर २० फिर हंसबर्ण घोड़ों को वहांहीं चलाया जहांपर पांडव भीमसेनथा हे महाराज राजामद्रके चलायेहुये वह बेगवान् घोड़े २१ भीमसेन के रथको पाकर अच्छीरीति से भिड़े हे राजा धृतराष्ट्र युद्धमें कर्ण और पांडव भीमसेनका वह युद्धमहाकठिन घोररूप रुधिरका उत्पन्न करनेवाला हुआ फिर उन भिड़े हुये महारथियों को देखकर २२। २३ मैंने बिचार किया कि यह युद्ध कैसे होगा इसके पीछे युद्धमें प्रशंसनीय भीमसेनने बाणों से २४ कर्ण को आपके पुत्रों के देखतेहुये ढक दिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अस्त्रों के जाननेवाले कर्ण ने भी भीमसेनको २५ टेढ़े पर्ब्बवाले नौभल्लों से पीड़ामान किया तब उस घायल महाबाहु भयानक पराक्रमी भीमसेनने २६ कानतक खैंचे हुये सात विशिखों से कर्णको पीड़ामान किया हे महाराज इसके पीछे बिषैले सर्पकी समान श्वास लेनेवाले कर्ण ने २७ बाणोंकी बड़ी बर्षा से भीमसेन को

ढकदिया फिर महाबली भीमसेनने भी अपने बाणोंकी वृष्टिसे उस कर्णको ढक
दिया २८ और कौरवों के देखतेहुयेगर्जा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने
दृढ़धनुष को लेकर तीक्ष्णधारवाले दशबाणों से भीमसेन को पीड़ामान करके
तीक्ष्णधारवाले भल्लसे उसके धनुषको काटा इसके पीछे बड़े पराक्रमी महाबाहु
कर्णके मारनेकी इच्छासे गर्जना करतेहुये भीमसेनने सुवर्ण बस्त्रों से अलंकृत
कालदण्ड के समान घोर परिघ को लेकर फेंका कर्ण ने उस बज्र और बिजली
के समान आते हुये परिघ को २९ । ३० । ३१ । ३२ बिषैले सर्पों की समान
बाणोंसे टुकड़े २ करदिया तबतो शत्रुसंतापी भीमसेन ने बहुत बड़े दृढ़ धनुष
को लेकर ३३ कर्ण को मारे बाणों के आच्छादित करदिया उसके पीछे कर्ण
और भीमसेनका ऐसा घोरयुद्ध हुआ ३४ जैसे कि परस्पर मारनेकी इच्छाकरने
वाले महाबली बन्दरोंके राजाओंका युद्ध कटकटकर बारंबार होताहै हे महाराज
इसके पीछे कर्ण ने दृढ़ धनुष को चढ़ाकर तीन बाण से ३५ भीमसेन को कर्ण
मूलपर घायलकिया कर्ण के हाथसे अत्यन्त घायल महाबली भीमसेनने कर्ण
के शरीरको छेदनेवाले घोर बिशिखको हाथमें लेकर फेंका वह बाण उस कर्णके
कवचमें घुस शरीरको छेदकर ३६।३७ पृथ्वीमें ऐसा समागया जैसे कि सर्प बामी
में समाजाताहै उस कठिनघातसे महापीड़ित ब्याकुल और अचेतके समान ३८
वह कर्ण रथपर ऐसा कंपितहुआ जैसे कि पृथ्वी के भूकम्पमें पर्व्वत हिलताहै हे
महाराज इसकेपीछे क्रोध और ब्याकुलता से कर्ण ने ३९ भीमसेन को पचीस
नाराचों से घायलकिया और अनेक बाणों से देहको घायल करके एक बाणसे
ध्वजाकोकाटा ४० और भल्लसे उसके सारथीको कालके बशकिया और शीघ्रही
तीक्ष्णबाणोंसे उसके धनुषको काटकर ४१ हँसतेहुये कर्ण ने एकमुहूर्त्तमें सावधा-
नीसे भयकारी कर्म करनेवाले भीमसेन को रथसे बिरथ करदिया ४२ हे भरतर्षभ
वह बायुकेसमान रथसे बिहीन हँसताहुआ महाबाहु भीमसेन गदाकोलेकर उस
उत्तम रथसेकूदा ४३ और बड़े वेगसे दौड़कर भीमसेनने आपकी सेनाको उस
गदासे ऐसा तिर्रबिर्र करदिया जैसे कि बादलोंको बायु छिन्नभिन्न करदेताहै ४४
फिर उस भयानकरूप शत्रुसंतापी सर्वज्ञ भीमसेनने ईर्षाके समान दांतरखनेवाले
घातक सातसौ हाथियोंको भी छिन्नभिन्न करके ४५ बड़े पराक्रमसे उन हाथियों
के जाबड़े आंख मस्तक कमर और मर्मस्थलों को घायलकिया ४६ इसके पीछे

सब हाथी भयभीत होकरभागे और फिर शत्रुओंकी ओरसे भेजेहुये अन्य सवारों समेत हाथियोंने उसको ऐसा घेरलिया जैसे कि सूर्य्यको बादल घेरलेताहै ४७ फिर उस पृथ्वीपर नियतने उन सातसौ हाथियोंको भी सवार शस्त्र और ध्वजाओं समेत ऐसा मारा जैसे कि इन्द्र बज्रसे पहाड़ोंको मारताहै ४८ इसके पीछे शत्रुओंके विजयी भीमसेन ने शकुनी के बड़े पराक्रमी बावन हाथियों को फिर मारा ४६ इसीप्रकार आपकी सेनाको कंपायमान करतेहुये पाण्डव भीमसेनने एकसौसे अधिक रथ और हजारों पत्तियोंको मारा ५० तब आपकी सेना महात्मा भीमसेनरूपी सूर्य्यसे संतप्तहोकर छिन्नभिन्न होगई ५१ हे भरतर्षभ भीमसेन के भयसे आपके शूरबीर भयभीत होकर युद्ध में भीमसेन को छोड़कर दशों दिशाओं को भागे ५२ तब शब्द करनेवाले चर्म के कवचधारी अन्य पांचसौ रथ रथियोंसमेत भीमसेनपर चारों ओरसे बाणोंकी बर्षाकरतेहुये सन्मुख आये ५३ भीमसेनने उन पांचसौ रथसमेत बीरोंको भी ध्वजा पताकाओं समेत अपनी गदासे ऐसा मारा जैसे कि असुरोंको विष्णु भगवान् मारते हैं ५४ इसके पीछे शकुनीके आज्ञावर्त्ती शूरोंके अंगीकृत शक्ति दुधारे खड्ग और प्रासोंके हाथमें रखनेवाले तीनहजार अश्वसवार भीमसेनके सन्मुखगये ५५ तब शत्रुहन्ता भीमसेनने नानाप्रकार के मार्गोंमें घूमघूमकर शीघ्रही सन्मुख जाकर बड़े वेग पूर्व्वक गदासे उन अश्वसवारोंको भी मारा ५६ हे भरतबंशी तब तो उन सब घायलों के ऐसे शब्द प्रकटहुये जैसे कि पत्थरों से घायलहुये हाथियों के शब्द होते हैं ५७ इसरीति से शकुनीके तीनोंहजार अश्वारूढ़ोंको मारकर दूसरे रथमें सवार हो क्रोधयुक्त भीमसेन कर्णके सन्मुखगया ५८ वहां उस कर्णने भी शत्रुविजयी धर्मपुत्र युधिष्ठिर को बाणों से ढककर सारथी को रथसे गिराया ५६ इसके पीछे वह महारथी युद्धमें सारथीसे रहित रथको देखकर भागा और कर्ण कंकपक्षोंसे जटित सीधे बाणोंको मारताहुआ उसके पीछेचला ६० वायुके पुत्र भीमसेन ने राजाकी ओर जानेवाले कर्ण को देखकर अपने बाणजालों से ढकदिया फिर बाणोंसे पृथ्वी आकाश को ढककर शत्रुओं का विजय करनेवाला कर्ण बहुत शीघ्रलौटा और तीक्ष्णबाणों से भीमसेनको सब ओरसे ढकदिया ६१ । ६२ इस के पीछे हे राजा बड़े धनुषधारी सात्यकीने पीछे होनेके कारण भीमसेन के रथसे व्याकुल कर्णको पीड़ामान किया ६३ बाणोंसे अत्यन्त पीड़ित कर्णभी उसके

सन्मुख वर्त्तमानहुआ फिर सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों बीर सन्मुखहोकर युद्ध करनेलगे और हरएकने परस्पर में चौंसठ २ बाण छोड़े उन बाणों के छोड़ते में वह दोनों बीर अत्यन्त शोभित हुये हे राजा उन दोनों का फैलाया हुआ भयकारी मर्द्दनकरनेवाला ६४ । ६५ रुद्र बाणजाल क्रौंचकी पुच्छके समान रक्त बर्ण दिखाई दिया फिर छोड़ेहुये हजारों बाणों के कारणसे हमने और उन सब लोगों ने न सूर्य्य को देखा और न दिशाओं को ऐसे नहीं पहिचाना जैसे कि मध्याह्न के समय तेजस्वी सूर्य्य के कारण दिशाओंका ज्ञान नहीं होता है ६६ । ६७ उससमय कर्ण और भीमसेनके बाण समूहों से हटायेहुये शकुनी अश्वत्थामा कृतबर्मा और अधिरथी कृपाचार्य्य ६८ यह सब कर्णको पाण्डवों से भिड़ाहुआ देखकर फिर लौटे हे राजा उन आनेवाले बीरों के ऐसे बड़े कठोर शब्दहुये ६९ जैसे कि चन्द्रके उदयसे उठेहुये महासमुद्रों के शब्द होते हैं वह दोनों सेना उस महायुद्ध में परस्पर अच्छेप्रकार से देखकर खूबलड़ीं ७० और परस्परमें एक एकको घेरकर बड़ी प्रसन्नहुईं इसके पीछे मध्याह्न के समय सूर्य्य के बर्त्तमान होनेपर युद्ध जारीहुआ ७१ ऐसा युद्ध पूर्व्वमें कभी देखाथा न सुना था फिर सेनाके समूह दूसरी सेनाके समूहोंको पाकर ७२ तीव्रतासे ऐसे सन्मुख गये जैसे कि जलों के समूह समुद्रके सन्मुख होते हैं उससमय परस्पर बाणोंकी वर्षा के ऐसे बड़े २ शब्दहुये जैसे कि गर्जनेवाले समुद्रों के जलके बेगकी बड़ी ध्वनि होती है फिर उन दोनों वेगवान् सेनाओंने परस्परमें एक एकको पाकर ७३।७४ एकताको ऐसेपाया जैसे कि दो नदियां परस्पर मिलकर एक होजाती हैं हे राजा इसकेपीछे यशके चाहनेवाले कौरव और पांडवोंका घोररूप युद्ध जारी हुआ उससमय वहां गर्जनेवाले शूरबीरोंकी बार्त्तालाप जो कि निरंतर नानाप्रकार कीथीं ७५।७६ और नामोंको लेलेकर होरहीथीं सुनीगईं जिस२ के पिता माता के अवगुण स्वाभाविक दोषथे वह युद्धमें परस्पर एकएकको सुनाते थे हे राजा युद्धमें परस्पर घुड़कनेवाले उन शूरों को देखकर ७७।७८ मैंने समझा कि अब इनका जीवन नहीं है और उनक्रोधयुक्त बड़ेतेजस्वियोंके शरीरोंको देखकर ७९ मुझको अत्यन्त भयहुआ कि यह कैसे होगा इसकेपीछे उनमहारथी पांडव और कौरवों ने परस्परमें मारते२ प्रत्येकको अपने२ तीक्ष्णशायकोंसे घायलकिया ८० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज परस्पर में मारने के अभिलाषी और शत्रुता करने वाले उन क्षत्रियों ने परस्पर में घायलकिया और रथ घोड़े और मनुष्यों समेत राजाओं के समूह चारोंओरसे आपस में खूब जुटे १ । २ फेंकेहुये परिघ, गदा, कुणप, प्रास, भिन्दिपाल और भुशुंडियों के सबप्रकार के प्रहारों को ३ युद्धमें महाभयकारी देखा और बाणों की वर्षा टीड़ी के समान हजारों प्रकारसे होने लगी ४ हाथियों ने हाथियों को परस्परमें पाकर छिन्नभिन्न किया तब घोड़ों ने घोड़ोंको रथियों ने रथियों को ५ पत्तियों ने पत्तियों के समूहों को वा घोड़ों के यूथोंको अथवा रथ और हाथियों और रथ वा हाथियों ने घोड़ोंको ६ और शीघ्रगामी हाथियों ने सेनाको अंगों से बिहीन करके छिन्नभिन्न करदिया ७ वहां शूरबीरों के समूह परस्परमें घायल होते और पुकारतेथे इसहेतुसे युद्धभूमि ऐसी अत्यन्त भयानक होगई जैसी कि पशुओं को संहारस्थान की भूमि होती है ८ हे भरतबंशी उससमय रुधिर से भरीहुई पृथ्वी ऐसी दिखाई देतीथी जैसे कि बर्षाऋतुमें बीरबहूटियों के समूहों से पृथ्वी रक्त दिखाई देती है अथवा जैसे कुसुम के रंगेहुये श्वेत बस्त्रों को श्यामा स्त्री धारणकरे वह पृथ्वी ऐसे प्रकार की होगई मानों मांस रुधिरसे ब्याप्त स्वर्णमयी कुंभोंसेही ब्याप्त है ९ । १० हे राजा कटे वा टूटेहुये शिर जंघा भुजा बहुत बड़े कुंडल आभूषण ढाल पताकाओं के समूह बिशिख और धनुषधारी शूरों के शरीर पृथ्वीपर गिरपड़े ११ । १२ हे राजा हाथियों ने हाथियों को पाकर दांतों से पीड़ामान किया उससमय दांतों से कटे रुधिर से भरेहुये हाथी ऐसे शोभायमान हुये १३ जैसे कि सुवर्ण केसे रंगवाले झिरनों के गिरानेवाले और पहाड़ी धातुओं से शोभित जलों के गेरनेवाले पर्व्वत शोभित होते हैं १४ फिर वह हाथी भ्रमण करनेवाले हुये और इसीप्रकार अन्य हाथियों ने भुजासे छोड़ेहुये तोमरों समेत सन्मुख खड़ेहुये अनेक शत्रुओं को बिध्वंस किया १५ फिर नाराचों से घायल टूटे कवचवाले उत्तमहाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि मार्गशिर और पौषके महीने में बादलों से रहित पर्व्वत होते हैं १६ सुनहरी पुंखवाले बाणों से छिदेहुये हाथी ऐसे शोभितहुये जैसे कि उल्काओं से पर्व्वतों के शिखर प्रकाशमान होते हैं १७ कितनेही पर्व्वताकार

हाथी अन्य हाथियों से घायल और पक्षधारी पर्व्वतों के समान उस युद्ध में नाश को प्राप्तहुये १८ और बहुत से शल्यों से पीड़ित घावों से खेदित हाथी युद्ध में भागगये और घोर युद्धमें अपने कुंभों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और बहुतेरे सिंहों के समान शब्दोंको गर्जे बहुतसे घूमने लगे २० और बहुतसे हाथी पुकारे और सुनहरी सामानों से अलंकृत घोड़े बाणों से मारेहुये बैठगये और मृतक प्राय होकर दशोंदिशाओं में घूमने लगे २१ बाण वा तोमरों से घायल चेष्टाओं को करतेहुये बहुतसे हाथी घूमने लगे और अनेक हाथियों ने नाना प्रकार की चेष्टाओं को किया २२ हे श्रेष्ठ भरतबंशी वहां मनुष्य घायल हो२कर पृथ्वी पर शब्द करनेलगे और बहुतसे लोग भाई बन्धु पिता और पितामहा-दिकों को देखकर २३ किसी ने दौड़तेहुये शत्रुओंको देखकर गोत्रनामोंसमेत अपनीजातों को वर्णन किया २४ हे महाराज उनलोगों के स्वर्णमयी भूषणोंसे अलंकृत भुजदण्ड टूटेहुये हाथ पैरों में चेष्टा करकर लिपटते थे और उछलते थे इसीप्रकार बहुतसी भुजा उछल२ कर अनेक चेष्टा करतीथीं और हजारों ऊपर नीचे होकर अपूर्व्व चेष्टा करती थीं और किसी २ भुजाओं ने पांचमुख रखने वाले सर्पकी समान युद्धमें बहुतसा वेगकिया २५ । २६ हे राजा सर्पों के फणों के समान चन्दनसे लिप्त रुधिर से भरीहुई वह सबभुजा स्वर्णमयी ध्वजाके स-मान बहुत शोभायमान हुईं २७ इसरीति से दशोंदिशाओं में घोषसंकुलनाम घोरयुद्ध होनेपर अज्ञातरूप परस्पर में युद्ध करनेवाले हुये २८ और धूलसे सं-युक्त शस्त्रोंके आघातोंसे व्याकुल युद्धमें अँधेरे होनेके कारण अपने और पराये नहीं जानेगये २९ इसरीतिसे वह युद्ध महाघोर रूप और भयानक हुआ वहां पर रुधिररूप जल रखनेवाली बड़ी २ नदियां बहनिकलीं ३० वह नदियांबाण रूप पत्थरों से युक्त केशरूप शैवल और शाद्वलरखनेवाली अस्थिरूप मछलियों से पूर्ण धनुषबाण और गदारूपी नौका रखनेवाली ३१ मांस रुधिररूपी कीच से भरी हुई घोररूप बड़ी भयानक रुधिररूप जल के वेगकी बढ़ानेवाली होकर बहने लगीं ३२ भयभीतों के भयकी बढ़ानेवाली शूरबीरों की प्रसन्नता बढ़ाने वाली घोररूप वह नदियां यमलोक को पहुँचानेवाली होगईं ३३ हे नरोत्तम वह नदियां भीतर जानेवालों को डुबानेवाली क्षत्रियों का भय बढ़ानेवालीहुईं जहां तहां मांसभक्षी जीवोंकी गर्जना करने से ३४ वह युद्धभूमि घोररूप यम-

राजपुरी के समान होगया और चारोंओर से असंख्यों रुण्ड उठ खड़ेहुये ३५ मांस और रुधिर से तृप्त हो होकर जीवों के समूह नाचते थे हे भरतवंशी वहां रुधिर और मज्जाका भोजन करके ३६ मांस मज्जा और भेजों के खानेसे मतवाले सिंह काक गृध्र और बगलेभी दौड़तेहुये दिखाई दिये ३७ शूरबीरों ने त्यागने के अयोग्य भयकोभी त्यागकरके युद्धाभिलाषी होकर निर्भयलोगोंके समान युद्धमें कर्मोंको किया ३८ उस युद्ध में वह शूरलोग अपनी बीरता को प्रसिद्ध करतेहुये भ्रमण करनेलगे जो कि बाण और शक्तियोंसे युक्तहोकर मांस भक्षियों से व्याकुलथे ३९ हे समर्थ भरतवंशी उनलोगोंने परस्परमें गोत्रनामों समेत अपने २ पिताओंका भी नाम लिया ४० हजारों ने तो अपने गोत्रादि और नामों को सुनाया और बहुत से युद्धकर्त्ता ४१ इधर उधर से तोमर शक्ति और पट्टिशों के द्वारा परस्पर में मर्दन करनेलगे इसरीति से घोररूप महाभयानक युद्ध जारी होनेपर कौरवीसेना ऐसी पीड़ित हुई जैसे कि समुद्रमें टूटीहुई नौका डामाडोल होकर पीड़ित होती है ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे श्रेष्ठ इसरीति से क्षत्रियों के नाशकारी युद्ध के जारी होनेपर युद्धमें गाण्डीव धनुषके बड़ेशब्द सुनाईदिये हे राजा जहांपर कि पांडव अर्ज्जुन ने संसप्तकों का वा कोशिल देशियोंका और नारायण नाम सेनाका नाशकिया वहां क्रोधयुक्त संसप्तकों ने युद्धमें चारोंओर से अर्ज्जुनके शिरपर बाणों की बर्षा करी हे राजा रथियों में श्रेष्ठ वेगसे अकस्मात् उन बाणबर्षा को सहते और मारतेहुये प्रभु अर्जुनने सेनाको बिलोडन किया १।२।३।४ और अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों के द्वारा उस रथवाली सेनाके पारहोकर उत्तम शस्त्रधारी सुशर्माको सन्मुख पाया ५ तब उस श्रेष्ठरथी ने बाणोंकी बर्षा से उसको आच्छादित किया और संसप्तकों ने भी बाणों की वर्षा से अर्ज्जुनको ढका ६ इसके पीछे सुशर्मा ने शीघ्रगामी दश बाणोंसे अर्ज्जुन को और तीन उत्तम बाणों से श्रीकृष्णचन्द्रजी को दाहिनी भुजापर छेदकर ७ दूसरे भल्ल से ध्वजाकोभी विदीर्ण किया हे राजा विश्वकर्माजी का उत्पन्न किया हुआ बानरों में

श्रेष्ठ वह बड़ा बानर ८ सबको भयभीत करके बड़े शब्दको गर्जा इस हनुमान् जीके शब्दको सुनकर आपकी सेना महाभयभीत हुई ९ और अत्यन्त भयभीत होकर चेष्टारहित होगई इसके पीछे हे राजा वह सेना निश्चेष्ट होकर ऐसी शोभायमान हुई १० जैसे कि नानाप्रकार के फूलोंसे युक्त चैत्ररथ बनहोता है हे कौरव्य इसके पीछे उन युद्धकर्त्ताओं ने सावधान होकर ११ अर्ज्जुनको बाणों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि पर्व्वतको बादल आच्छादित करलेते हैं इसके पीछे सबने अर्ज्जुन के बड़े रथको घेरलिया १२ उसको घेरके तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके पुकारनेलगे हे श्रेष्ठ इसके पीछे वह सब क्रोधयुक्त रथके चारों ओर होकर रथके चक्र और ईशाके भी पकड़ने को पासगये वह हजारों शूरबीर उसके उसरथको पकड़कर १३।१४ और बड़े बलसे उसके सब साथियोंको पकड़कर सिंहनाद करनेलगे और कितनोहींने केशवजीकी भी भुजाको पकड़ लिया १५ और बहुतोंने रथमें सवार अर्ज्जुनको पकड़लिया इसके पीछे दोनों भुजाओंको कंपायमान करतेहुये केशवजीने उन सबको ऐसे गिरादिया जैसे कि मतवाला हाथी हाथी के सवारोंको गिरादेता है इसके पीछे उन महारथियों से घिरेहुये क्रोधयुक्त अर्ज्जुनने युद्धमें १६।१७ उस पकड़ेहुये रथको देख और श्रीकृष्णजीको भी गिराहुआ जानकर बहुतसे रथ सवारोंसमेत पदातियों को गिराया उसीप्रकार समीप बर्त्तमान शूरबीरोंको समीपहीसे मारे बाणोंके ढकदिया और केशवजीसे कहनेलगा १८ । १९ हे महाराज श्रीकृष्णजी भयकारीकर्म करनेवाले शरीरसे घायल हजारों संसप्तकोंको देखो २० यह रथोंकी बँधावट महाघोरहैं और पृथ्वीपर मेरे सिवाय ऐसा कोई नहींहै जो नरलोकमें इसबंधनको सहै अर्ज्जुनने ऐसा कहकर अपने देवदत्त शङ्खको बजाया और पृथ्वी आकाशादिको व्याप्तकरके श्रीकृष्णजीने भी पांचजन्य शङ्खको बजाया २१ । २२ हे महाराज उस शङ्खके शब्दको सुनकर संसप्तकों की सेना महाकंपितहुई और भयभीत होकर भागी २३ इसके पीछे शत्रुविजयी अर्ज्जुनने बारम्बार नागास्त्र को प्रकट करके उनके चरणोंको बांधदिया २४ हे राजा महात्मा अर्ज्जुनके बंधनसे चरणों में बँधेहुये वह लोग लोहेकी मूर्त्तिके समान निश्चेष्ट खड़ेरहगये २५ इसके पीछे उन निश्चेष्ट मनुष्योंको पाण्डुनन्दनने ऐसे मारा जैसे कि पूर्वसमय में तारक असुरके मारनेवाले युद्धमें इन्द्रने दैत्योंको माराथा २६ युद्धमें घायल

होकर उनलोगों ने अर्ज्जुनके उत्तम रथको छोड़दिया और शस्त्रोंका मारना प्रारंभकिया २७ हे राजा चरण बंधनके कारणसे वह लोग हिलचलभी न सके इसके पीछे अर्ज्जुनने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे उनको मारा २८ युद्धमें वह सब शूरवीरलोग सर्पोंसे बँधेहुये खड़ेरहगये जिनको कि अर्ज्जुनने लक्षकरके चरणोंका बन्धनकिया २९ हे राजा इसके पीछे महारथी सुशर्माने बँधीहुई सेनाको देखकर शीघ्रही गरुड़ास्त्रको प्रकटकिया ३० तब तो बहुतसे गरुड़ सर्पोंको भक्षण करनेको दौड़े और वह सर्प उन गरुड़ोंको देखकर भागे ३१ फिर चरण बंधनोंसे छूटीहुई वह सेना ऐसी शोभायमानहुई जैसे कि सब सृष्टिके संतप्त करनेवाले सूर्य्य बादलोंसे रहित होकर शोभित होतेहैं ३२ इसके पीछे उनबंधनोंसे छूटेहुये शूरवीरोंने अर्ज्जुन के रथपर बाण और शस्त्रोंके समूहोंको छोड़ा ३३ और सबने नानाप्रकार के अस्त्रोंको चलाया तब तो इन्द्रकेपुत्र महावीर अर्ज्जुनने उनलोगोंको बाणोंकी वर्षासे ढककर ३४ युद्धकर्त्ताओं को मारा इसके पीछे सुशर्माने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे अर्ज्जुनको हृदयमें घायलकरके दूसरे तीन बाणोंसे पीड़ित किया तब वह अत्यन्त घायल और पीड़ामान न होकर रथके बैठनेके स्थानपर बैठगया ३५ । ३६ इसके पीछे सबोंने पुकारकरी कि अर्ज्जुन मारागया इसके पीछे शङ्ख भेरी आदि बाजोंके शब्द ३७ और सिंहनाद उत्पन्न हुये फिर श्वेतघोड़ों से युक्त श्रीकृष्णजी को सारथी रखनेवाले बड़े साहसी शीघ्रतासे युक्त अर्ज्जुन ने सचेतहोकर ३८ ऐन्द्रास्त्रको प्रकटकिया हे श्रेष्ठ उस ऐन्द्रास्त्र से हजारों बाण उत्पन्न हुये ३९ और सब दिशाओं में दिखाईदिये और युद्ध में आपके हजारों रथ घोड़े और हाथियों को शस्त्रों से मारा ४० हे भरतबंशी इसके पीछे सेना के मरनेपर संसप्तक और गोपालों के समूहों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ ४१ ऐसा कोई मनुष्य न था और न रहा जो अर्ज्जुन को मारता सब बीरों के देखतेहुये आपकी सेना मारीगई ४२ वहां पाण्डव अर्ज्जुन सेना को घायल और पराक्रम से थकित देखता हुआ युद्धमें दशहजार शूरबीरों को मारकर ४३ निर्द्धूम अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुआ हे भरतबंशी महाराज परीक्षा करी हुई चौदह सहस्र सेना और तीन हजार हाथियों समेत दश हजार रथों से संसप्तकों ने फिर अर्ज्जुन को आ घेरा और यह बिचार ठानलिया कि चाहे विजयहोय वा पराजयहोय युद्ध में लड़कर मरना योग्यहै ऐसा बिचारकर

आपके शूरबीरों का और अर्जुनका महाघोर युद्धहुआ ४४। ४५। ४६। ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४॥

पचपनवां अध्याय॥

संजयबोले हेश्रेष्ठ धृतराष्ट्र कृतवर्मा, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, उलूक, शकुनि, और अपने निजभाइयों समेत राजा दुर्य्योधनने १ अर्जुन के भयसे पीड़ामान सेनाको देखकर बड़ेवेग से उनको ऐसे छुटाया जैसे समुद्रमें से टूटीहुई नौकाको निकालतेहैं २ हे भरतबंशी इसके अनन्तर एक मुहूर्त्त तक वह कठिन युद्ध रहा जो भयभीतोंको भय और शूरबीरों की प्रसन्नता का बढ़ाने वाला था ३ युद्धमें कृपाचार्य्य के छोड़े हुये टीड़ियों के समूहों के समान बाणों ने सृंजियों को ढकदिया ४ इसके पीछे बहुत शीघ्रतासे शिखंडी कृपाचार्य्यके सन्मुखगया और चारोंओर से उन श्रेष्ठब्राह्मण कृपाचार्य्य के ऊपरबाणों को बरसाया ५ फिर महाअस्त्रों के ज्ञाता कृपाचार्य्य ने क्रोधयुक्त होकर उन बाणोंके समूहों को हटाकर युद्धमें शिखंडी को दशबाणों से पीड़ितकिया ६ फिर शिखंडी ने भी क्रोध युक्त होकर कंकपक्षसे जड़ित शीघ्रगामी सातबाणों से उन क्रोधरूप कृपाचार्य्य को पीड़ामानकिया ७ उसके पीछे उनमहारथी कृपाचार्य्यजी ने तीक्ष्णबाणों से शिखंडी को घोड़े रथ और सारथी से रहित करदिया ८ इसके पीछे महारथी शिखंडी मृतक घोड़ोंके रथसे कूदकर अच्छे प्रकारसे ढाल तलवारको लेकर शीघ्र आचार्य्यजी के सन्मुखगया ९ तब आचार्य्यजी ने उस आतेहुये को टेढ़ेपर्ववाले बाणों से ढकदिया यह देखकर सबको आश्चर्य्यसा हुआ १० वहां हमने शस्त्रों के अपूर्व्व आघातों को ऐसा देखा जैसेकि शिलाओंका उछलना होताहै जब हे राजा शिखंडी निश्चेष्ट होकर युद्धमें नियतहुआ ११ तब श्रेष्ठ महारथी धृष्टद्युम्न उस कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये शिखंडी को देखकर शीघ्रही कृपाचार्य्य के सन्मुख गया १२ इसके पीछे महारथी कृतवर्मा ने कृपाचार्य्य के रथकी ओर जानेवाले धृष्टद्युम्न को बड़े वेगसे रोका १३ पीछे से कृपाचार्य्य के रथकी ओर पुत्र और सेना समेत आनेवाले युधिष्ठिरको अश्वत्थामा ने रोका १४ और बाणों की वर्षा करनेवाले आप के पुत्रों ने शीघ्रता करनेवाले महारथी नकुल और सहदेव को रोका १५ हे भरतबंशी सूर्य्य के पुत्र कर्णने युद्धमें भीमसेन कारुष्य

केकय और सृंजयदेशियों को रोका इसके पीछे शीघ्रता से युक्त भस्म करने के अभिलाषी सारद्वत कृपाचार्य्यने युद्धमें शिखंडीके ऊपरबाणों कोचलाया १६।१७ फिर बारंबार खड्गको फिराते हुये शिखंडी ने उन कृपाचार्य्य के स्वर्णमयी चारों ओरसे फेंकेहुये बाणों को काटा १८ हे भरतवंशी फिर गौतम कृपाचार्य्यजी ने उसकी सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक शायकों से तोड़ा इसहेतु से सब मनुष्य पुकारे १९ फिर वह ढालसे रहित हाथमें खड्गलिये जैसे कि मृत्यु के मुखपर रोगी बर्त्तमान होताहै वैसेही कृपाचार्य्य के स्वाधीनता में बर्त्तमान शिखण्डी उनके पासगया हे राजा चित्रकेतुका पुत्र बड़ापराक्रमी सुकेत कृपाचार्य्य के बाणोंसे ढकेहुये महादुखी शिखंडी को देखकर शीघ्रही सन्मुख गया २०।२१ युद्धमें बड़े तीक्ष्ण बाणों से ढकताहुआ महासाहसी सुकेत कृपाचार्य्य के रथके समीपपहुँचा २२ हे राजाओंमें श्रेष्ठ इसके पीछे शिखंडी युद्ध में प्रवृत्त उस ब्रतकरनेवाले ब्राह्मण को देखकर शीघ्रही हटगया तदनन्तर सुकेतने कृपाचार्य्यको नौ बाणों से ब्यथितकर सत्तरबाणों से पीड़ामानकिया फिर दूसरी बारभी तीनबाणों से घायल किया २३।२४ और उनके धनुषको बाणसमेत काटकर एक बाणसे उनके सारथी कोभी मर्मस्थल में कठिन घायल किया २५ इसके पीछे क्रोधयुक्त कृपाचार्य्य ने दृढ़ नवीन धनुष लेकर तीसबाणों से सुकेत के सब मर्मस्थलों को घायल किया २६ तब वह अत्यन्त कम्पायमान और व्याकुल सुकेत अपने उत्तम रथपर ऐसे चेष्टा करनेवालाहुआ जैसे कि भूकम्प होने में वृक्ष कांपताहै २७ तब उस कम्पायमान के शरीरसे प्रकाशित कुंडलों समेत शिरको पगड़ी समेत क्षुरप्र से गिराया उससमय उसका शिर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बाजपक्षी का लायाहुआ मांसपिंड गिरपड़ता है शिर कटतेही उसका शरीरभी पृथ्वीपर गिरपड़ा २८।२९ इसके मरनेके पीछे उसके अग्रगामी लोग क्रोधयुक्त हुये और युद्धमें कृपाचार्य्यको त्यागकरके दशोदिशाओं में भागगये ३० हे भरतवंशी प्रसन्नचित्त महारथी कृतवर्मा युद्ध में धृष्टद्युम्नको रोककर बोला कि खड़ाहो यह कहकर कृतवर्मा और धृष्टद्युम्नका वह महाभयकारी युद्धहुआ जैसे कि मांस के निमित्त लड़नेवाले दो बाज पक्षियों का अत्यन्त युद्ध होताहै ३१।३२ हार्दिक्य के पुत्र कृतवर्माको पीड़ित करनेवाले क्रोधयुक्त धृष्टद्युम्न ने युद्ध में नौ बाणों से कृतवर्मा को छाती पर घायल

किया ३३ फिर धृष्टद्युम्न के हाथसे अत्यन्त घायल कृतवर्मा ने युद्ध में बाणों से धृष्टद्युम्नको रथ और घोड़ों समेत ढकदिया ३४ हे राजा रथसमेत ढकाहुआ धृष्टद्युम्न ऐसा दिखाई दिया जैसे कि जलधारावाले बादलों से ढकाहुआ सूर्य्य होताहै ३५ अर्थात् वह घायलहुआ धृष्टद्युम्न युद्धमें स्वर्णमयी बाणोंसे उनबाण समूहों को हटाकर महा शोभायमान हुआ इसके पीछे क्रोधयुक्त सेनापतिधृष्टद्युम्नने कृतवर्मा पर बड़ी बाणोंकी बरषाकरी ३६। ३७ कृतवर्माने भी उस एका-एकी गिरनेवाले बाण समूहों को हजारों बाणों से हटाया ३८ फिर उस असह्य हटाये हुये बाणसमूहों को देखकर युद्धमें कृतवर्माको रोका ३९ और तीक्ष्णधार-वाले भल्लसे उसके सारथीको बड़े वेगसे यमलोकको भेजा और वह मृतक होकर रथ पर गिरपड़ा ४० फिर पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने बड़े बली शत्रुको विजय करके युद्धमें शायकोंके द्वारा कौरवोंको शीघ्रतासे रोका ४१ उसके पीछे आपके शूर-वीर सिंहनादोंको करके शीघ्रही धृष्टद्युम्नके सन्मुखगये और युद्धजारीहुआ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि सात्विकी और शूरवीर द्रौपदी के पुत्रोंसे रक्षित युधिष्ठिरको देखकर अश्वत्थामा जी प्रसन्न चित्तके समान सन्मुख वर्त्तमान हुये १ अर्थात् हस्तलाघवता के समान सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण घोर बाणोंको फेंकते और नाना प्रकारके मार्गों समेत अपने अभ्यासों को दिखलातेहुये सन्मुख आये २ उसके पीछे बड़े अस्त्रज्ञ अश्वत्थामा ने युद्धमें युधिष्ठिर को घेरकर दिव्य अस्त्रों से अभिमंत्रित बाणोंकी वर्षा के द्वारा आकाश को व्याप्तकिया ३ अश्वत्थामा के बाणोंसे आच्छादित आकाशमें कुछनहीं जानागया और बड़ी युद्धभूमि का शिर बाणरूप होगया ४ हे भरतर्षभ आकाशमें सुवर्णजालों से अलंकृत और ढकाहुआ बाणजाल ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि नियत हुआ यज्ञ शोभित होताहै ५ उन प्रकाशित बाणजालों से जब आकाश ढकगया और बाणों केयुद्धमें आकाश मंडल में बादलों की छाया होगई ६ ऐसे बाणरूप जालोंके होनेपर हमने एक आश्चर्य्य को देखा कि अन्तरिक्ष का उड़नेवाला कोईजीव नहींउड़ा ७ उपाय करनेवाले सात्विकी और पाण्डव धर्मराज समेत अन्यसेनाके

शूरवीर लोग पराक्रम नहीं करसके ८ हे महाराज वहां महारथी अश्वत्थामाकी हस्तलाघवता को देखकर आश्चर्य्य युक्त होकर वह सब राजालोग उसके सन्मुख देखनेको भी ऐसे समर्थ न हुये ९ जैसे कि संतप्त करनेवाले सूर्य्यको कोई नहीं देखसक्ता है इसके पीछे सेनाके घायल होने पर महारथी द्रौपदी के पुत्र १० सात्विकी धर्मराज और सब पांचालदेशी इकट्ठेहुये और घोर मृत्युके भयको त्यागकर अश्वत्थामाके सन्मुख गये ११ सात्विकी ने शिलीमुखनाम सत्ताईस बाणोंसे अश्वत्थामा को छेदकर सुवर्ण से अलंकृत सातनाराचों से पीड़ामान किया १२ युधिष्ठिरने तिहत्तर बाणों से प्रतिविन्ध्यने सातबाणों से श्रुतकर्मा ने तीनबाणों से श्रुतिकीर्त्ति ने सातबाणों से १३ सुतसोमने नौ बाणों से सतानीक ने सात बाणों से और अन्य २ शूरों ने भी चारों ओरसे घायलकिया १४ हे राजा इसके पीछे उस क्रोधयुक्त विषैले सर्पके समान श्वासलेनेवाले अश्वत्थामाने शिलीमुखनाम पच्चीसबाणों से सात्विकीको घायलकिया १५ श्रुतिकीर्त्तिको नौबाणों से सुतसोमको पांचबाणों से श्रुतकर्माको आठबाणों से प्रतिविन्ध्यको तीनबाणों से १६ सतानीकको नौबाणों से युधिष्ठिरको पांचबाण से और इसीप्रकार अन्य शूरोंको भी दो २ बाणों से घायलकिया १७ और तीक्ष्णधारवाले बाणसे श्रुतिकीर्त्तिके धनुषकोकाटा इसके पीछे महारथी श्रुतिकीर्त्ति ने दूसरे धनुषको लेकर १८ अश्वत्थामा को तीनबाणों से छेदकर दूसरे तीक्ष्णबाणों से पीड़ामान किया हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र इसके पीछे अश्वत्थामा ने बाणों की बर्षा से १९ उस सेनाको चारोंओरसे ढकदिया तबतो महासाहसी हँसतेहुये अश्वत्थामा ने धर्मराजके धनुषको फिर काटा २० और तीनबाणों से पीड़ामान किया हे राजा उसके पीछे धर्मपुत्रने दूसरे बड़े धनुष को लेकर २१ अश्वत्थामाको सत्तरबाणों से पीड़ितकिया और छाती समेत भुजाओं को घायलकिया तब सात्विकी युद्ध में प्रहारकरनेवाले अश्वत्थामा के २२ धनुषको अपने तीक्ष्ण अर्द्धचन्द्र बाण से काटकर महाध्वनि से गर्जा इसके पीछे उस टूटे धनुषधारी शक्ति रखनेवाले अश्वत्थामाने शक्तिसे सात्विकी के रथसे बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक सारथीको गिराया २३ । २४ तदनन्तर प्रतापवान् अश्वत्थामाने दूसरे धनुष को लेकर सात्विकीको बाणोंकी बर्षा से ढकदिया रथसे सारथी के गिरनेपर युद्ध में उसके घोड़े भागने लगे २५ और जहां तहां भागतेहुये दिखाईदिये २६ फिर युधिष्ठिर के साथी शूर-

बीर तीक्ष्ण बाणोंको छोड़ते वेगसे उस महाशस्त्रधारी अश्वत्थामाके ऊपर बाणों की वृष्टि करनेलगे उन क्रोधरूप आनेवालों को देखकर शत्रुसंतापी २७ हँसते हुये द्रोणपुत्रने उस महायुद्धमें उनको रोका इसके पीछे सैकड़ों बाणरूप ज्वाला रखनेवाले महारथी २८ अश्वत्थामाने युद्ध में सेनारूपी सूखे बनको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि बनमें सूखे तृणों को अग्नि भस्म करदेताहै हे भरतबंशी अश्वत्थामासे संतप्त करीहुई वह पांडवी सेना २९ ऐसे ब्याकुल होगई जैसे कि तिमिना जीव करके नदीकामुख ब्याकुल कियाजाताहै हे महाराज अश्वत्थामा के ऐसे पराक्रम को देखकर ३० उसके हाथसे सब पांडवों को मृतकरूप माना फिर क्रोध और शीघ्रता से युक्त द्रोणाचार्य्य का शिष्य महारथी युधिष्ठिर ३१ अश्वत्थामासे कहनेलगा कि ठीक २ तुममें न तो स्नेह है और न उपकारको स्मरण करतेहो ३२ हे पुरुषोत्तम तुम मुझीको मारना चाहतेहो तुम ब्राह्मण होकर तपस्या दान और वेदपाठ करनेके योग्य हो ३३ क्योंकि लिखा है कि ब्राह्मण तप दान और वेदपाठके योग्य हैं क्षत्री धनुष नवाने के योग्य हैं सो आप नाम मात्रकेही ब्राह्मणहैं हे महाबाहो तेरे देखतेही देखते कौरवों को युद्ध में विजय करूंगा ३४ तुम युद्धमें कर्मकरो निश्चय करके ब्राह्मणबन्धु हो हे महाराज इस प्रकारके बचनों को सुनकर हँसते और मंद मुसकान करतेहुये अश्वत्थामाने ३५ योग्य और मुख्यबात को बिचारकर कुछ उत्तर नहीं दिया और उत्तर न देकर बाणोंकी बर्षा से पांडवों को ऐसे ढकदिया ३६ जैसे कि क्रोधरूप मृत्यु सब संसारको ब्याप्त करदेती है हे श्रेष्ठ तब अश्वत्थामा के हाथसे ढकाहुआ पांडव युधिष्ठिर ३७ शीघ्रही अपनी बड़ी सेना को छोड़कर दूर हटगया हे राजा उस युधिष्ठिरके हटजानेपर ३८ बड़े साहसी अश्वत्थामाजी पश्चिममुख हुये और युधिष्ठिर युद्धमें अश्वत्थामाको छोड़कर कठोर कर्म में चित्तको करके आपकी सेनाके सन्मुखगया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिपार्थापयानेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

संजय बोले कि चंदेरी और कैकय देशियों से युक्त धृष्टद्युम्न और भीमसेन को आप कर्ण ने रोककर शायकों से हटाया १ इसके पीछे कर्ण ने भीमसेनके

देखते हुये युद्ध में चंदेरी कारुष्य और सृंजय देशी महारथियों को मारा २ तब भीमसेन रथियों में श्रेष्ठ कर्णको छोड़कर कौरवी सेनाके सन्मुखगया ३ कर्णने भी युद्ध में हजारों पांचाल कैकय और बड़े धनुषधारी सृंजियों को मारा ४ अर्ज्जुन ने संसप्तकों में भीमसेन ने कौरवों में और कर्णने महारथी पांचालों में प्रलयकरदी ५ हे राजा आपके कुबिचार में अग्नि के समान उन तीनों वीरां के हाथसे युद्धमें मरनेवाले असंख्य क्षत्रियों ने नाशको पाया ६ हे भरतर्षभ और क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने नौबाणोंसे चारों घोड़ोंसमेत नकुलको घायलकिया ७ इस के पीछे बड़े साहसी आपके पुत्रने क्षुरप्रसे सहदेवकी स्वर्णमयी ध्वजाको काटा ८ फिर क्रोधयुक्त नकुलने सातबाणोंसे सहदेवने पांचबाणोंसे आपके पुत्रको घायलकिया ९ उससमय अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने पांच २ बाणोंसे उन भरतबंशियोंमें और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ नकुल सहदेवको घायल करके दूसरे दोभल्लोंसे उन दोनोंके धनुषोंको भी अकस्मात् काटडाला और इक्कीस बाणोंसे घायलकिया १०। ११ युद्धमें देवकुमारों के समान वह शूरवीर दूसरे इन्द्रधनुषके समान शुभधनुषोंको लेकर शोभायमानहुये १२ इसके पीछे युद्धमें वेगवान् वह दोनों भाई युद्धमें घोरबाणोंकी वर्षाभाई के ऊपर ऐसे करनेलगे जैसे कि दो बादल पर्व्वतपर वर्षाकरते हैं १३ हे महाराज तब तो आपके क्रोधयुक्त पुत्रने बड़े धनुषधारी दोनों पाण्डवों को अपने बाणोंसे रोका १४ उससमय दुर्य्योधन का धनुष युद्धमें मण्डलाकार दिखलाई देताथा और चारोंओरसे दौड़तेहुये शायक दृष्टपड़ते थे १५ सब दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि सूर्य्यकी किरणें संसार को व्याप्तकर देती हैं इसके अनन्तर आकाशमण्डल को बाणरूपी जालोंसे ढकजानेपर १६ नकुल और सहदेवके निमित्त उसकारूपकाल और मृत्युरूप यमराज के समान दिखाईपड़ा महारथियों ने आपके पुत्रके उस पराक्रमको देखकर १७ नकुल और सहदेवको मृत्युके गालमें फँसाहुआ माना इसके पीछे पाण्डवोंका महारथी सेनापति धृष्टद्युम्न १८ वहांगया जहांपर कि राजा दुर्य्योधनथा वहां जाकर महारथी शूरवीर नकुल और सहदेवको उल्लंघनकर धृष्टद्युम्नने आपके पुत्रको शायकों से रोका तब आपके साहसी क्रोधयुक्त पुत्रने हँसकर १९। २० धृष्टद्युम्न को पचीस बाणोंसे छेदकर पैंसठबाणों से घायल बड़े शब्दसे गर्जनाकरी और फिर उसके बाण और हस्तत्राण समेत धनुषको २१। २२ अपने तीक्ष्णक्षुरप्र से

काटडाला तब शत्रुविजयी धृष्टद्युम्नने उसटूटे धनुषको डालकर २३ बड़े वेगसे बड़े भारबाहक नवीन धनुषको हाथमें लिया और वेगसे लालनेत्र क्रोधयुक्त २४ घायलहुआ धृष्टद्युम्न महाशोभायमान हुआ फिर सर्पोंके समान श्वास लेनेवाले पन्द्रह नाराचों को मारनेके इच्छावान् धृष्टद्युम्नने राजादुर्य्योधनके ऊपर छोड़े २५ वह तीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षीके परोंसे जटितबाण राजाके स्वर्णमयी कवचको काटकर पृथ्वीमें २६ बड़े वेगसे समागये फिर वह आपका पुत्र अत्यन्त घायलहोकर ऐसा शोभायमानहुआ २७ जैसे कि बसन्तऋतुमें अच्छा प्रफुल्लित किंशुकवृक्ष होताहै नाराचोंसे टूटाकवच और प्रहारोंसे घायल शरीर २८ क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने भल्लसे धृष्टद्युम्नके धनुषको काटा और बड़ी शीघ्रतासे टूटे धनुषवाले धृष्टद्युम्नको २९ दश शायकोंसे दोनों भृकुटियों में घायलकिया बड़े कारीगरके स्वच्छ कियेहुये उनबाणों ने उसके मुखको ऐसा शोभायमान किया ३० जैसे कि मधुकेलोभी भ्रमर अच्छे फूलेहुये कमलको शोभित करते हैं फिर उस महासाहसी धृष्टद्युम्नने उस टूटेहुये धनुष को डालकर ३१ बड़े वेगसे सोलह भल्लों समेत दूसरे धनुषको लिया इसके पीछे पांचबाणों से दुर्य्योधन के सारथी समेत घोड़ों को मारकर ३२ एक भल्लसे सुनहरी धनुष को काटा फिर धृष्टद्युम्न ने आपके पुत्र के रथ, उपस्कर, छत्र, शक्ति, खड्ग, गदा और ध्वजा को दश भल्लों से काटा ३३ सब राजाओं ने दुर्य्योधन की उस टूटीहुई ध्वजा को जो कि सुबर्ण के बाजूबन्द रखनेवाली अपूर्व्व मणियों से जटित नाग चिह्नवाली अति शुभरूप की थी देखा हे भरतर्षभ फिर उस रथसे विहीन टूटे कवच और ध्वजावाले दुर्य्योधन को ३४। ३५ उसके निज भाइयों ने चारों ओरसे रक्षित किया हे राजा भय से उत्पन्न होनेवाली ब्याकुलता से रहित राजा दण्डधारी दुर्य्योधन को रथपर बैठाकर ३६ धृष्टद्युम्न के देखतेहुये दूरलेगया फिर राज्यका लोभी महाबली कर्ण सात्विकीको विजयकरके ३७ युद्धमें द्रोणाचार्य्यके मारनेवाले उग्रबाणधारी धृष्टद्युम्नके सन्मुखगया फिर बाणोंको मारताहुआ सात्विकी उसके पीछे ऐसा शीघ्रचला ३८ जैसे कि हाथीको हाथी दांतों से जंघास्थानमें पीड़ामान करताहुआ जाताहै ३९ हे भरतबंशी बड़े महात्मा आपके शूरवीरों का वह महाघोर युद्ध कर्ण और धृष्टद्युम्न के मध्यमें ऐसा उत्तम युद्धहुआ कि जिसमें पाण्डवों के और हमारी ओरके किसी पुरुषने भी मुखको न मोड़ा ४१

इसके पीछे बड़ी शीघ्रता से कर्ण पांचालों से युद्ध करनेलगा हे नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र मध्याह्न के समय घोड़े हाथी और मनुष्यों का विध्वंसन दोनोंओरमें हुआ फिर विजयाभिलाषी वह सब पांचाल ४१। ४२ शीघ्रतासे कर्णके सन्मुख ऐसे गये जैसे कि वृक्षकी ओर पक्षी जाते हैं इसरीति से क्रोधयुक्त बाणसमूहों से रोकतेहुये अधिरथी कर्ण ने उन उपाय करनेवाले साहसी सेनापति से मिले हुये ४३ व्याघ्रकेतु सुशर्मा, चित्र, उग्रायुध, जय, शुक्ल, रोचमान, सिंहसेन और दुर्जयको सन्मुखपाया उनबीरों ने उस नरोत्तमको रथमार्ग्गसे घेरलिया ४४।४५ जोकि बाणोंका छोड़नेवाला क्रोधयुक्त होकर युद्ध में शोभा देनेवाला था उस प्रतापी कर्ण ने उन दूरसे युद्धकरनेवाले ४६ आठोंबीरोंको तीक्ष्णधारवाले आठ बाणोंसे पीड़ामानकिया हे महाराज उनको पीड़ितकरके महाप्रतापी कर्ण ने ४७ उन अन्य हजारों शूरबीरों को भी जो कि युद्धमें बड़े कुशलसे मारा इसकेपीछे उस अत्यन्त क्रोधयुक्त ने जिष्णु, जिष्णुकर्मा, देवापी, भद्र ४८ दण्ड, चित्र, चित्रायुध, हरि, सिंहकेतु, रोचमान, महारथी शलभ ४९ इन चंदेरी देशों के महारथियों को मारा उस समय उनके प्राण हरनेवाले कर्णका शरीर ऐसा होगया ५० जैसे कि रुधिर से लिप्त शिवजी का बड़ा शरीर होताहै हे भरतबंशी इसके सिवाय युद्ध में कर्ण के बाणों से अनेक हाथी भी घायलहुये ५१ बड़ी व्याकुलता उत्पन्न करनेवाले भयकारी वह हाथी युद्धमें कर्ण के बाणों से चारों ओरको भागभागकर पृथ्वीपर गिरपड़े ५२ बज्रसे ताड़ित पर्व्वतों के समान घोरशब्द करतेहुये गिरनेवाले हाथी घोड़े मनुष्य और रथों से कर्ण के मार्ग्ग की पृथ्वी आच्छादित होगई ५३ युद्धमें भीष्म, द्रोणाचार्य्य और अन्य आपके बीरोंने भी ऐसाकर्म नहीं किया जैसा कि युद्धभूमिमें कर्ण ने किया ५४। ५५ हे महाराज हाथी घोड़े रथ और मनुष्यों का कर्णके हाथसे नाशहुआ जैसे कि मृगों के मध्य में घूमनेवाला निर्भय सिंह पशुओं का नाशकरता है ५६ उसी प्रकार कर्णभी भयभीत मृगों के समान पांचालों में निर्भयता पूर्व्वक बिचरता हुआ नाशकरताथा जैसे कि सिंह भयभीत मृगोंको दिशाओं में भगादेताहै ५७ उसीप्रकार कर्णने पांचालों के रथसमूहोंको भगादिया जैसे कि सिंहके मुखको पाकर कोई पशु नहीं जीता है ५८ उसी प्रकार महारथी कर्ण को पाकर कोई जीवता नहींरहा निश्चय करके जिसप्रकार सब जीवमात्र बैश्वानर अग्नि को

पाकर भस्महोते हैं ५९ उसीप्रकार हे भरतबंशी सृंजीरूपी बनश्री कर्णरूपी अग्निसे भस्म होगये हे भारत कर्णने चंदेरी कैकय और पांचाल देशियों के मध्य में नामों को सुना २ कर बीरों के अंगीकृत अनेक युद्धकर्त्ताओं को मारा इस कर्ण के पराक्रमको देखकर मैंने बिचार किया ६०।६१ कि कर्ण के हाथसे एकभी पांचालदेशी जीवता न बचेगा कर्ण ने युद्धमें पांचालों को बारम्बार छिन्नभिन्न करदिया ६२ इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त धर्म्मराज युधिष्ठिर उस महायुद्ध में पांचालों के मारनेवाले कर्ण को देखकर सन्मुख दौड़े ६३ हे श्रेष्ठ धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, और अन्य हजारों मनुष्यों ने शत्रु के मारनेवाले कर्ण को घेरलिया ६४ शिखण्डी, सहदेव, नकुल, नकुलका पुत्र, जन्मेजय, सात्विकी, बहव, प्रभद्रक ६५ और धृष्टद्युम्न, यह सब बड़े तेजस्वी युद्धमें सन्मुख होकर धनुषधारी बाण फेंकनेवाले कर्ण के सन्मुख होकर बाण और अस्त्रों समेत शोभायमान हुये ६६ वहां अकेला कर्ण युद्धमें उन चंदेरी पांचालदेशी और अन्य शूरवीरों समेत पाण्डवों के सन्मुख ऐसे हुआ जैसे कि सर्पों के सन्मुख अकेला गरुड़ होताहै ६७ हे राजा उन सबके साथ कर्ण के ऐसे घोररूप युद्धहुये जैसे कि पूर्व्व समयमें देवताओं का युद्ध दानवों से हुआथा ६८ फिर उस क्रोधरूपने यमदण्ड के समान अपने बाणों से वाहीक कैकय मत्स्य वा सत्य मद्र सिन्ध इन देशियों को सबओर से मारा ६९ वह बड़ा धनुषधारी अकेलाही युद्धमें लड़ताहुआ बहुत शोभित हुआ और भीमसेन के नाराचों से हाथी मर्मस्थलों में घायलहुये ७० जिनके सवार मारेगये उन गिरतेहुये हाथी घोड़े और निर्जीव पत्तियों ने पृथ्वी को कम्पायमान करदिया ७१ युद्ध में घायल रुधिर को बमन करतेहुये और जिनके कि शस्त्र गिरपड़े वह हजारों रथी मारेगये ७२ रथी अश्वसवार सारथी पदाती घोड़े यह सब हाथियों समेत घायल होकर भीमसेनसे भयभीत और मरेहुये दृष्टपड़े ७३ भीमसेनके तोड़ेहुये अस्त्र शस्त्रादिकों से पृथ्वीभरगई दुर्य्योधनकी वह सब सेना भीमसेन के भयसे पीड़ित अचेष्टितों के समान नियतथी ७४ उत्साहसे रहित घायल और अंगचेष्टा बिना अत्यन्त दुःखीरूप युद्ध में दिखाईपड़ी ७५ हे राजा जैसे कि प्रसन्न कालमें स्वच्छ जलवाला समुद्र स्थिर नियतहोताहै उसीप्रकार आपकी सेना भी निश्चल होगई ७६ अर्थात् क्रोध पराक्रम से युक्त आपके पुत्रकी वह सेना अहंकार से पराजित होकर शोभासे

रहित होगई ७७ हे भरतर्षभ वह सेना परस्पर घायलहोकर रुधिरों से लिप्तहोकर भागी ७८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त पराक्रमी कर्ण पाण्डवों समेत सेनाको ७९ और भीमसेन भी कौरवों समेत कौरवी सेनाको भगातेहुये शोभायमानहुये इस रीतिसे महाघोर भयंकर युद्धजारी होनेपर ८० महाविजयी अर्ज्जुन सेनामें संसप्तकों के बहुतसे समूहों को मारकर फिर वासुदेवजी से बोला ८१ कि हे जनार्द्दनजी यह युद्धाभिलाषी सेना छिन्नभिन्नहोकर पराजितहुई यह संसप्तक महारथी अपने समूहों समेत मेरे बाणों से ऐसे भागते हैं ८२ जैसे कि सिंहके शब्दको सुनकर मृग भागते हैं और बड़े युद्धमें सृञ्जियोंकी बड़ीसेना पृथक् २ हुईजाती है ८३ हे श्रीकृष्णजी राजाओंकी सेनाके मध्यमें प्रसन्नतापूर्व्वक घूमनेवाले बुद्धिमान् कर्णकी यह ध्वजा दिखाईदेती है जिसमें कि हाथी की कक्षाकाचिह्न है ८४ और कोई महारथी कर्ण के विजय करनेको समर्थ नहीं है आपभी कर्ण को बड़ा पराक्रमी जानते हैं ८५ अब आप वहां चलिये जहांपर कि वह कर्ण हमारी सेनाको भगारहाहै आप इन सबको त्यागकर युद्ध में महारथी कर्ण के सन्मुख चलिये ८६ हे श्रीकृष्णजी मुझको यह उचित मालूम होताहै अथवा जैसी आपकी इच्छाहो वही करना योग्य है उसके इसबचनको सुनकर गोविन्दजी हँसकर बोले ८७ हे पांडव तुम शीघ्रही कौरवोंको मारो इसके पीछे गोविन्दजी की आज्ञानुसार अपने सारथी रूप श्रीकृष्णजी समेत श्वेत हंसबर्ण घोड़ोंकी सवारी से अर्जुन आपकी सेनामें आपहुँचा केशवजी का आज्ञाकारी सुवर्ण के भूषणों से युक्त ८८। ८९ श्वेत घोड़ों के रथके पहुँचतेही आपकी सेना चारों दिशाओं में हटगई बादलके समान शब्दायमान हनुमानजीकी ध्वजासे संयुक्त चेष्टावान् पताकावाला ९० वह रथ उससेनामें ऐसे पहुँचा जैसे कि स्वर्ग में बिमान पहुँचता है वहां वह अर्जुन और केशवजी दोनों सेनाको चीरतेहुये प्रविष्टहुये ९१ और क्रोध से भरे लालनेत्र कियेहुये वह दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन शोभायमानहुये युद्धमें कुशल और बुलायेहुये वह दोनों युद्धरूपी यज्ञभूमि में ऐसे आपहुँचे ९२ जिसप्रकार विधिपूर्व्वक यज्ञ करनेवालों से आह्वापन किये हुये अश्विनी कुमार होतेहैं फिर क्रोधयुक्त वह दोनों नरोत्तम ऐसे युद्धमें प्रवृत्त हुये ९३ जैसे कि महाबन में तल शब्द से क्रोधित महाबली हाथी होते हैं फिर अर्ज्जुन रथों की सेना और घोड़ों के समूहों को मझाकर ९४ पाशधारी यम-

राज के समान सेना में घूमने लगा हे भरतवंशी युद्धमें आपकी सेना के मध्य में पराक्रम करनेवाले उस अर्ज्जुनको देखकर ९५ आपके पुत्रने संसप्तकों के समूहोंको फिर प्रेरणाकरी तब हजाररथ तीनसौहाथी ९६ चौदहहजार घोड़े और दोलाख धनुषधारी ९७ शूरवीर लक्षोंके बेधनेवाले चारोंओरसे घिरेहुये पदातियों समेत महारथी अर्ज्जुनको बाणोंसे आच्छादित करतेहुये सन्मुख वर्त्तमानहुये९८ हे महाराज उन सबलोगोंने चारोंओरसे बाणोंकी वर्षाकरके अर्ज्जुनको ढकदिया फिर शत्रुकी सेनाका पीड़ामान करनेवाला युद्धमें बाणोंसे ढकाहुआ वह अर्ज्जुन पाशधारी यमराजके समान अपना स्वरूप दिखलाताहुआ और संसप्तकों को मारताहुआ अपूर्व्व दर्शन के योग्यहुआ ९९। १०० इसके पीछे बिजली के समान प्रकाशमान सुवर्णसे अलंकृत अर्ज्जुनके चलायेहुये बाणोंसे सब आकाशढकगया १०१ वहां अर्ज्जुनके छोड़ेहुये बड़े २ बाणोंके गिरनेसे सब आकाश आच्छादित होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि कद्रूके बेटे सर्पोंसे व्याप्त होकर शोभितहोता है १०२ बड़े साहसी पाण्डवने सुनहरी पुंखयुक्त तीक्ष्णनोक केसे टेढ़े पर्ववाले बाणोंको सब दिशाओं में छोड़ा १०३ मनुष्योंने अर्ज्जुनकी प्रत्यंचाके शब्दसे यह अनुमान किया कि पृथ्वी आकाश सब दिशा समुद्र और पर्वत टूटते हैं १०४ महारथी अर्ज्जुन दशहजार क्षत्री महारथियों को मारकर शीघ्रही संसप्तकों के सन्मुखगया १०५ वहां अर्ज्जुनने काम्बोजके राजासे रक्षित सेनाको नेत्रोंके सन्मुख पाकर अपने बाणोंके बलसे उसको ऐसे मारा जैसे कि दानवलोगों को इन्द्र मारता है और बड़ी शीघ्रता से मारने के इच्छावान् शत्रु लोगोंके शस्त्र भुजा हाथ और शिरोंको भी काटा १०६। १०७ वह शस्त्रोंसे रहित टूटेअंग होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि संसारी वायुसे टूटे बहुत शाखावाले वृक्ष गिरते हैं १०८ हाथी घोड़े रथ वा पतियोंके समूहोंके मारनेवाले अर्जुनके ऊपर सुदक्षिणके छोटे भाईने बाणोंकी वर्षाकरी १०९ तब अर्ज्जुनने उस बाणवर्षा करनेवालेकी परिघके समान दोनों भुजाओंको दो अर्द्धचन्द्रोंसे और पूर्णचन्द्रमाके समान मुखवाले शिरको क्षुरप्रसे जुदाकिया ११० उसके पीछे बड़े रुधिरको गिरानेवाला वह राजा रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटाहुआ मनशिल पर्व्वतका शिखर गिरताहै सुदक्षिणके छोटेभाई कांबोजदेशी कमलपत्र के समान नेत्रधारी उन्नत बड़े तेजस्वी अपूर्व दर्शन को इसरीति से मा-

र १११।११२ वह कांचनके स्तंभसमान टूटे हेमगिरिके समान वर्त्तमानथा इसके अनन्तर फिर महाघोर युद्ध जारीहुआ ११३ उस युद्धमें लड़नेवाले शूरवीरोंकी नानाप्रकार की अपूर्व्वदशा वर्त्तमानहुईं अर्थात् एक बाणसे मरेहुये काम्बोज देशी यवनदेशी और शकदेशी घोड़ोंसे ११४ और रुधिरसेलिप्त शूरवीरोंसे सब रुधिरमयी भूमि होगई मृतक घोड़े और सारथीवाले रथ वा मृतक सवारोंके घोड़े वा मृतक हाथीवान और सवारोंवाले हाथियों से परस्परमें मनुष्योंका बड़ा नाश हुआ ११५।११६ अर्ज्जुन के हाथ से उस पक्ष और प्रपक्षके मरनेपर बड़ी शीघ्रतापूर्व्वक अश्वत्थामाजी उस महाविजयी अर्ज्जुन के सन्मुखगये ११७ सुवर्ण जटित बड़े धनुषको कम्पायमान करता सूर्य्यकी किरणोंके समान घोरबाणोंको लेता ११८ क्रोध और अशान्ती से फैलाहुआ मुख रक्तनेत्र वह पराक्रमी ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रलयकालमें किंकरनाम दण्डधारी क्रोधरूप अग्नि होताहै ११९ इसके पीछे उग्रबाणों की वर्षाओं को बरषाया हे महाराज उनछोड़े हुये बाणों से पांडवी सेनाको भगाया १२० हे श्रेष्ठराजा उसने रथपर सवार श्रीकृष्ण जीको देखतेही फिर उदग्र बाणों की वर्षा करी १२१ तब हे महाराज अश्वत्थामा के छोड़े हुये और चारोंओर से गिरते हुये उनबाणों से वह रथपर चढ़े हुये दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ढक गये १२२ इसके पीछे तदनन्तर प्रतापी अश्वत्थामा ने युद्ध में हजारों तीक्ष्ण बाणों से उन श्रीकृष्ण अर्जुनको स्तब्ध करदिया १२३ इसरीतिसे युद्धके रक्षक उनदोनोंको बाणोंसे आच्छादित देखकर सब जड़ चैतन्य हाहाकार करनेलगे १२४ सिद्ध चारणों के वह समूह चारों ओर से यह चिन्ताकरते हुये दौड़े कि अब लोकोंकी कुशलहोगी वा न होगी १२५ हे राजा ऐसायुद्ध और पराक्रम हमने प्रथम कभी न देखाथा जैसा कि दोनों श्रीकृष्ण अर्जुनको बाणों से ढकनेवाले अश्वत्थामा ने किया १२६ वहां मैंने शत्रुओंके भयकारी अश्वत्थामाके धनुषका शब्द बारम्बार सुना १२७ इस युद्ध में बाम दक्षिण दोनों ओर को घूमनेवाले सव्यसाची अश्वत्थामाकी प्रत्यंचा ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि बादलों के मध्य में बिजली चमकती है १२८ फिर शीघ्रकर्मी दृढ़हस्तवाले अर्जुन ने अश्वत्थामा को देख बड़े मोह को प्राप्तहोकर १२९ अपने बल पराक्रम को हतमाना और युद्धमें दोनोंका शरीर दुर्द्दर्शहुआ १३० हे राजेन्द्र इस प्रकारसे अश्वत्थामा और अर्जुन के महा

घोर युद्ध होने और पराक्रमी अश्वत्थामा के प्रबल होने १३१ और अर्जुन के निर्बल होने पर श्रीकृष्णजी में महाक्रोध उत्पन्न हुआ क्रोध से श्वासलेते और नेत्रोंसे भस्म करतेहुये उन श्रीकृष्णजीने १३२ युद्धमें अश्वत्थामा और अर्जुन को बारम्बार देखा और क्रोधरूपहोकर श्रीकृष्णजी अर्जुनसे प्रीतिपूर्व्वक बोले १३३ हे भरतबंशी अर्जुन युद्ध में इस तेरे कर्म को अपूर्व्व मानताहूं कि जहां अश्वत्थामा सरीखा तुझको उल्लंघन करके वर्त्तमानहै १३४ क्या तेरा पराक्रम और भुजबल पूर्व्व के समान है क्या तेरा गांडीवधनुष रथ में हस्तगत नियतहै १३५ क्या तेरे दोनोंभुज कुशलहैं और मुट्ठी तो निर्बल नहींहोगईहैं हे अर्जुन मैं युद्धमें अश्वत्थामाकोही प्रबल विजयी देखताहूं १३६ हे भरतर्षभ अर्जुन यह गुरूका पुत्रहै ऐसा मानकर छोड़ना न चाहिये यहसमय त्यागने के योग्य नहीं है १३७ इसरीति के श्रीकृष्णजी के बचनों को सुनकर शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने चौदह भल्लों को लेकर बड़ी शीघ्रता से अश्वत्थामा के धनुष को काटा १३८ इसीप्रकार से ध्वजा, पताका, रथ, छत्र, शक्ति और गदा को तोड़कर वत्सदन्त नाम बाणों से ठोढ़ी के स्थानपर अत्यन्त घायलकिया १३९ तबतो अश्वत्थामा बड़ा मूर्च्छित होकर ध्वजा की यष्टी के आश्रय हुआ हे राजा फिर अर्जुन से बचाता हुआ उसका सारथी उस शत्रुओं के भयभीत करनेवाले अचेतरूप अश्वत्थामा को युद्ध से दूरलेगया फिर उससमय शत्रुसंतापी अर्जुन ने १४० । १४१ आपकी हजारों सेनाको मारा यह सब कर्म्म अर्जुन ने उस आपके वीर पुत्रके देखतेहुये किया १४२ इस रीतिसे आपके कुमन्त्रों के कारण शत्रुओं के साथ आपके शूरवीरोंका यह महा घोर नाश वर्त्तमान हुआ १४३ अर्जुनने संसप्तकों को भीमसेनने कौरवोंको वा सुषेणने पांचालोंको क्षणमात्रमेंही युद्धभूमिमें छिन्न भिन्न करदिया १४४ हे राजा इस रीतिसे उत्तम बीरों के सन्मुख नाशकारी युद्ध के होनेपर चारोंओर से असंख्य रुण्ड उठखड़े हुये १४५ हे भरतर्षभ आघातोंसे कठिन पीड़ामान युधिष्ठिरभी युद्धमें एक कोस हटकर नियतहुआ १४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतर्षभ इसके पीछे दुर्योधनने शल्य आदि अन्य राजाओं

समेत कर्णसे कहा कि १ दैवइच्छासे यह स्वर्गकाद्वार खुलाहुआहै ऐसे युद्धको स्वर्ग और मोक्षके पानेवाले क्षत्री लोगपाते हैं २ हे कर्ण तू युद्धमें अपने समान युद्ध करनेवाले शूरवीर क्षत्रियों के चित्तका जो प्यारा होता है वह दिन आज वर्त्तमान होकर नियतहुआहै ३ युद्धमें पांडवों को मारकर वृद्धियुक्त पृथ्वी को पावोगे अथवा युद्धमें शत्रुओं के हाथसे मरकर वीरों के लोकों को पावोगे ४ वह सब श्रेष्ठ क्षत्री लोग दुर्य्योधनके इस बचनको सुनकर बड़े प्रसन्न होकर अत्यन्त उच्चस्वरसे गर्जे और बाजोंको बजाया ५ इसकेपीछे दुर्योधनकी उससेनाके अति प्रसन्न होनेपर अश्वत्थामाजी आपके शूरवीरोंको प्रसन्न करतेहुये यहबचनबोले कि सब सेनाके मनुष्यों के समक्षमें शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरापिता इस धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया ६ । ७ हे राजालोगो इसहेतुसे मैं उस क्रोधसे मित्रके लिये भी तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं उसको आपसब समझो ८ मैं धृष्टद्युम्नको जबतक न मारलूंगा तब तक कवचको नहीं उतारूंगा जो मेरी प्रतिज्ञा पूरी न होगी तो स्वर्गको भी मैं नहीं पासक्ता ९ युद्धमें भीमसेन अर्ज्जुनको आदि ले जो कोई शूरवीर धृष्टद्युम्नका रक्षकहोगा उसकोभी मैं युद्धमें बाणोंसे मारूंगा १० इसवचन के सुनतेही भरतवंशियों की सबसेना एक साथही पांडवों के सन्मुख गई और इसीप्रकार वह पांडवलोगभी कौरवों के सन्मुख दौड़े ११ हे राजा वह महारथियों का संग्राम बड़ा भयकारी हुआ और कौरव वा सृंजियों के आगे मनुष्यों का नाश कुछ कम प्रलयहीके समान हुआ १२ इसके पीछे युद्धमें उन कठिन प्रहारों के वर्त्तमान होनेपर अप्सराओं समेत देवता और सब जीवमात्र उन नरवीरों के देखने के अभिलाषी इकट्ठे हुये १३ अत्यन्त प्रसन्न चित्त अप्सराओं ने युद्धमें अपने कर्म्मसे स्वर्ग में पहुँचने के योग्य बड़े बड़े नरोत्तम बीरों को दिव्य माला वा नानाप्रकारकी गंधि और रत्न जटित उत्तम २ अद्भुत भूषणों से बरसा करके ढकदिया १४ फिर वायुने उनसब गंधादिकोंको लेकर उन सब श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले शूरवीरोंको सेवन किया वायुसे सेवित होकर परस्परमें मारे हुये शूरवीर पृथ्वीपर गिरपड़े १५ दिव्यमाला वा सुनहरी पुंखवाले विचित्र बाणों से व्याप्त उत्तम शूरवीरों से विचित्र वह पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि नक्षत्र मण्डल से अलंकृत आकाश होता है १६ इसके पीछे वह युद्धभूमि अन्तरिक्ष के प्रशंसायुक्त बचन बाजों के शब्दों से शब्दायमान धनुष

और रथचक्रोंके अपूर्व्व शब्दों से अद्भुत रूप होकर व्याकुल रूप होगई १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभूमिअद्भुतरूपबर्णनेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्ज्जुन कर्ण और भीमसेनके क्रोधयुक्त होनेपर इसरीतिसे राजाओं का यह अद्भुत युद्ध हुआ १ हे राजा अर्ज्जुन अश्वत्थामा को पराजित करके और दूसरे महारथियों को भी विजय करके बासुदेवजी से यहबचन बोला २ हे महाबाहु श्रीकृष्ण जी भागती हुई पाण्डवी सेनाको और युद्ध में महारथियों को भगातेहुये कर्णको देखो ३ हे श्रीकृष्णजी मैं धर्मराज युधिष्ठिर को नहीं देखताहूं हे बड़े शूरवीर मुझको युधिष्ठिरकी बड़ी ध्वजाभी नहीं दिखाई देती ४ हे जनार्द्दनजी जिनका तीसरा भाग शेष है उन धृतराष्ट्र के पुत्रों में से युद्धमें मेरे सन्मुख कोई नहीं आताहै ५ इस हेतु से आप मेरे हितको करते हुये वहां चलो जहांपर युधिष्ठिर है हे माधवजी मैं युद्ध में अपने छोटे भाइयों समेत युधिष्ठिरको कुशल देखकर फिर आनकर शत्रुओं से लड़ूंगा यहसुनकर श्रीकृष्णजी शीघ्रही रथके द्वाराचले ६ । ७ जहां राजा युधिष्ठिर और महारथी सृञ्जय अपनी२ सेनासमेत मृत्युको हाथ में लिये परस्परमें युद्ध करतेथे इसके पीछे मनुष्यों के नाशकाल बर्त्तमान होनेपर युद्धभूमिको देखतेहुये गोविन्दजी अर्जुनसे बोले ८।९ हे अर्जुन देखो कि दुर्योधनके कारणसे पृथ्वीपर क्षत्रियोंका और भरतबंशियोंका महाघोर रुद्ररूप नाश बर्त्तमानहै १० हे धनुषधारी मरेहुये धनुषधारियों के सुवर्णपृष्ठ वाले धनुष और बहुमूल्य टूटेहुये तूणीरोंको देखो ११ और सुनहरी पुंख युक्त टेढ़े पर्व्ववाले बाणोंको तेलसे सफा कियेहुये कांचली से रहित सर्पोंकी समान नाराचों को देखो १२ हाथीदांत का बेंटा रखनेवाले सुवर्ण जटित खड्गोंको और टूटेहुये स्वर्णमयी कवचोंको देखो १३ सुवर्ण जटित प्रास और सुवर्ण भूषणों से अलंकृत शक्ति अथवा स्वर्णसूत्रों से खचित बड़ी २ गदाओंको देखो १४ सुवर्ण से जटित दुधारे खड्ग और पट्टिश और फरसोंको देखो १५ गिरे हुये भारी२ मुशल चित्रितशतघ्नी और बड़े२ परिघोंको देखो १६ इसमहायुद्धमें टूटे चक्र और तोमरोंको देखो विजयाभिलाषी वेगवान् युद्धकर्त्तालोग नानाप्रकारके शस्त्रों समेत मरेहुये भी जीवते हुये से विदित होते हैं गदाओं से अंग

भंग मुशलों से टूटे मस्तक १७। १८ हाथी घोड़े और रथों से घायल हजारों शूरवीरोंकोदेखो हे शत्रुहन्ता अर्जुन मनुष्य घोड़े और हाथियोंके शरीर बाण, शक्ति, दुधारा, खड्ग, पट्टिश १९ घोर रूप लोहे की परिघ असिकान्त, फरसा इत्यादि शस्त्रों से छिन्नरूप और बहुतसे मृतकरूप शरीरों से २० आच्छादित होकर चन्दन से लिप्त सुबर्ण के बाजुओं से अलंकृत २१ हस्तत्राण वा केयूर रखनेवाली भुजाओं से पृथ्वी प्रकाशमानहुई हे भरतबंशी हस्तत्राण रखनेवाले अत्यन्त अलंकृत औ छिदीहुई उत्तम भुजा २२ और हाथीकी सूंड़के समान महावेगवानोंकी टूटीजंघा और उत्तम चूड़ामणि समेत कुण्डलधारी २३ उत्तम नेत्रवाले वीरोंसमेत पड़ेहुये शिरोंसे पृथ्वी महा शोभायमान होगई है हे भरतर्षभ रुधिरसे लिप्त अंग जिनकी ग्रीवा टूटीहुई २४ इनसब नानाअंगों से पृथ्वी ऐसी प्रकाशित हुई जैसे कि शांतज्योतिवाली अग्नियों से बनशोभित होताहै और सुनहरी घण्टे रखनेवाले बहुत प्रकारसे टूटेहुये शुभरथों से व्याप्त २५ बाणों से घायल मृतक वा व्याकुलपड़ेहुये आनर्त्तवाले घोड़ोंको देखो अनुकर्ष उपासंग पताका और नाना प्रकारकी ध्वजाओं को देखो २६ रथी लोगों के बड़े२ शंख श्वेत चामर और जिनकी जिह्वा बाहर निकल पड़ीं उन पर्व्वताकार सोतेहुये हाथियोंको देखो २७ बैजयन्तीमाला वा रथके बिचित्र मृतक घोड़े वा हाथियों के परिस्तोम मृगचर्म और कम्बलोंको देखो २८ फैलनेसे बिचित्र चांदीसे जड़े हुये अंकुश और बड़े २ हाथियों समेत गिरकर टूटे घंटोंको देखो २९ बैडूर्य्य मणियोंसे जटित सुन्दर दण्ड युक्त गिरेहुये शुभ अंकुश और सवारोंकी भुजाओं में बंधेहुये सुवर्ण जटित चाबुकोंको देखो ३० बिचित्र मणियों से जटित सुवर्ण से अलंकृत रांकवान मृगचर्म से बनेहुये पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ोंके स्तर परिस्तोमों को देखो ३१ राजाओंकी चूड़ामणि वा बिचित्र स्वर्णमयीमाला वा टूटेहुये छत्र चामर और व्यजनोंको देखो ३२ चन्द्रमा और नक्षत्रों के समान प्रकाशमान सुन्दर कुंडलधारी डाढ़ी मूछोंसे अलंकृत भयसंयुक्त वीरों के मुखोंसे ३३ ढकीहुई रुधिररूप कीचवाली पृथ्वीको देखो और चारोंओरसे शब्द करनेवाले अन्य सजीव जीवोंको देखो ३४ हे राजा शस्त्रोंको त्यागकर बारंबार रोनेवाले जातवालों से घिरेहुये बहुतसे मनुष्यों को देखो ३५ वेगवान् वा विजयाभिलाषी क्रोधभरे शूरवीर दूसरे मृतक शूरवीरोंको ढककर फिर युद्धके लिये जाते हैं ३६ इसीप्रकार

पड़े हुये शूरवीरों ने जिन जातवालों से जलको मांगा वह मनुष्य जहां तहां दौड़रहेहैं ३७ हे अर्ज्जुन कोईतो जलके निमित्तगये और अनेक मृतकहुये वह शूर उनको अचेत देखकर लौटे ३८ जलको त्यागकर परस्पर पुकारतेहुये दौ-ड़ते हैं हे श्रेष्ठ जल पीपीकर मरनेवालोंको वा जलके पीनेवालोंको भी देखो ३९ कितनेही बांधवों के प्यारे मनुष्य अपने प्रिय बांधवोंको त्यागकर जहांतहां इस महायुद्धमें युद्ध करतेहुये दृष्टपड़ते हैं ४० हे नरोत्तम इसी प्रकार दोनों ओष्ठों को काटनेवाले टेढ़ी भृकुटीवाले मुखों से चारोंओरको देखनेवाले अन्य मनुष्यों को देखो ४१ तब इस रीतिसे बातें करतेहुये श्री कृष्णजी वहांगये जहांपर कि युधिष्ठिर थे और अर्ज्जुनने भी राजाके देखने के निमित्त ४२ बारम्बार गोविन्द जी को प्रेरणाकरी कि शीघ्रचलो २ ऐसी शीघ्रता करनेवाले माधव श्रीकृष्णजी ने वह युद्धभूमि अर्ज्जुनको दिखाकर ४३ बड़ी धैर्य्यता से अर्ज्जुनसे यह बचन कहा कि हे अर्ज्जुन राजा युधिष्ठिर को और सन्मुख जानेवाले राजाओं को देखो ४४ और महा युद्ध में अग्नि के समान क्रोधरूप कर्ण को भी देखो यह बड़ाधनुषधारी भीमसेन युद्धमें लौटाहै ४५ पांचाल सृञ्जी और जो २ पांडवों के उत्तम गिनेजातेहैं जिनका अग्रगामी धृष्टद्युम्न है वह सब उस भीमसेन के संग में लड़ते हैं ४६ और उस लौटनेवाले पांडव भीमसेन से शत्रुओं की बड़ी सेना फिर पराजयहुई हे अर्जुन यह कर्ण भागनेवाले कौरवोंको रोकताहै ४७ हे कौ-रव्य वेगमें यमराज के समान और इन्द्रके सदृश पराक्रमी शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ यह अश्वत्थामा भी जाता है ४८ महारथी धृष्टद्युम्न युद्ध में उस भागनेवाले के पीछे जाताहै और युद्धमें मरेहुये सृंजियोंको देखो ४९ महा अजेय बासुदेवजी ने इस रीतिसे इस सब वृत्तान्तको अर्जुन से कहा हे राजा इसके पीछे महाघोर युद्ध जारीहुआ ५० तब मृत्युको निवृत्त करके दोनों सेनाओं के समागम हो-नेमें दोनों ओरको सिंहनादों के महान् शब्द होनेलगे ५१ हे पृथ्वीपति राजा धृतराष्ट्र आपके दुर्मंत्रों से पृथ्वीपर आपके और अन्यों के शूरबीरों का इसरीति से नाश जारी हुआ ५२॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिमहायुद्धेनवपंचाशत्तमोऽध्यायः ५९॥

———

साठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे निर्भय कौरव सृञ्जी और युधिष्ठिरको अग्रगामी करनेवाले पाण्डव और कर्णको अग्रगामी करनेवाले हमलोगफिर भिड़गये १ उस समय कर्ण और पाण्डवोंका वह युद्ध फिर जारीहुआ जो भयकारी रोमहर्षण करनेवाला यमराज के देशकी वृद्धि करनेवाला था २ हे भरतबंशी उस कठिन रुधिर रूप जल रखनेवाले युद्ध के जारीहोने पर और शूरवीर संसप्तकों के कुछ बाकीरहने पर ३ धृष्टद्युम्न और महारथी पाण्डव सब राजाओं समेत कर्ण के सन्मुख गये तब अकेले कर्ण ने युद्ध में आनेवाले प्रसन्नचित्त विजयाभिलाषी उन वीरोंको ऐसे धारणकिया जैसे कि जलके समूहोंको पर्व्वत धारण करताहै ४ । ५ वह सब महारथी कर्णको पाकर ऐसे भिन्न २ होगये जैसे कि जलके समूह पर्व्वतको पाकर इधर उधर दिशाओं को चलेजाते हैं ६ हेमहाराज इसके पीछे रोमहर्षण करनेवाला युद्ध होनेलगा तब धृष्टद्युम्नने कर्णको टेढ़ेपर्व्ववाले बाणोंसे ७ घायल किया उससमय तिष्ठ२ कहकर विजयनाम उत्तम धनुषको खैंच कर महारथी कर्ण ने ८ धृष्टद्युम्न के धनुषको और बिषैले सर्पों के समान बाणोंको काटकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहोकर नौबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल किया ९ हे निष्पाप वह कर्ण के बाण उस महात्माके सुनहरी कवचको छेदकर रुधिरमें भरेहुये बीरबहूटी के समान शोभायमान हुये १० महारथी धृष्टद्युम्न ने उस टूटे हुये धनुषको डालकर दूसरे धनुष और बिषैले सर्पकी समान बाणोंको लेकर ११ टेढ़े पर्व्ववाले सत्तरबाणोंसे कर्णको पीड़ामानकिया और उसीप्रकार कर्ण नेभी युद्धमें शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको १२ बिषैले सर्पके समान बाणोंसेढक दिया फिर द्रोणाचार्य्यके शत्रु बड़े धनुषधारी धृष्टद्युम्नने तीक्ष्ण धारवालेबाणों से पीड़ामान किया १३ हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्ण ने सुनहरी भूषण युक्त द्वितीय यमदण्डके समान बाणको उसके ऊपरफेंका १४ हस्तलाघवकरनेवाले सात्यकीने उस अकस्मात् आनेवाले घोररूप बाणको सौप्रकारसेकाटा १५ तब कर्णने बाणको कटाहुआ देखकर सात्यकीको बाणोंकी बर्षाकरके चारोंओर से ढकदिया १६ और सात नाराचों से पीड़ामानभी किया इसके पीछे सात्यकी ने भी सुबर्णजटित बाणों से उसको छेदा १७ हे महाराज इसके पीछे घोरयुद्ध

हुआ वह युद्ध नेत्र और कर्णोंको भयभीत करनेवाला महाअद्भुत चारोंओरसे देखनेकेही योग्य था १८ हे राजा वहां कर्ण और सात्यकी के उस कर्मको देख-कर सब जीवों के रोमांच खड़ेहोगये १९ इसी अन्तरमें अश्वत्थामाजी बड़ेपरा-क्रमी उस धृष्टद्युम्न के सन्मुख गये जोकि शत्रुओं का विजय करनेवाला और पराक्रम समेत प्राणोंका हरनेवाला था २० शत्रुके पुरके विजय करनेवाले और अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा जी बोले कि हे ब्राह्मणके मारनेवाले ठहरोठहरो अब मुझसे बचकर जीतानहीं बचसक्ता २१ यह कहकर शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामा ने तीक्ष्णधार घोररूप सुन्दर बेंतवाले बाणों से वीर धृष्टद्युम्न को अत्यन्त वेगसे ढकदिया २२ हे श्रेष्ठ जैसे कि महारथी द्रोणाचार्य्य जी युद्ध में उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्नको देखकर बड़ेपरिश्रमसे उपाय करनेवालेहुये २३ उसी प्रकार शत्रुओंके वीरों के मारनेवाले धृष्टद्युम्न युद्धमें अश्वत्थामाको देखकर कुछ अप्रसन्नहोकर अपनी मृत्युकोमाना २४ फिर वह युद्धमें अपनेको शस्त्रसे अवध्य जानकर बड़ी तीव्रतासे अश्वत्थामाके सन्मुख ऐसेगया जैसे कि प्रलयकाल में काल कालके सन्मुख जाता है २५ हे महाराजेन्द्र फिर वीर अश्वत्थामा अपने सन्मुख धृष्टद्युम्नको देखकर क्रोधसे श्वासलेताहुआ उसके सन्मुखगया २६ और उनदोनों ने परस्पर देखकर बड़ा क्रोध किया हे महाराज राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला प्रतापवान् अश्वत्थामा २७ सन्मुख होनेवाले धृष्टद्युम्न से बोले हे पांचालदेशियों में नीच अब मैं तुझको मृत्युके समीप भेजूंगा २८ जो कि पूर्व्वसमय में तुमने द्रोणाचार्य्य को मारकर पापकर्म्म किया है अब वह पापका फल तुझको ऐसा मिलैगा जिसमें तेराकल्याण न होगा २९ हे अज्ञान जो तू अर्जुनसे अरक्षितहोकर युद्धमें नियतहोताहै या नहीं हटताहै इसीसे सत्य२ तेरा कल्याण नहीं है ३० यह बचन सुनकर प्रतापवान् धृष्टद्युम्नने उत्तर दिया कि मेरा वहीखड्ग तेरे उत्तरकोदेगा ३१ जिसने कि युद्धमें उपाय करनेवाले तेरे पिताको उत्तर दियाथा नाममात्र अपनेको ब्राह्मण कहनेवाले द्रोणाचार्यजी मेरे हाथसे मारेगये ३२ अब युद्ध में अपने पराक्रमसे तुझको भी क्यों न मारूंगा हे महाराज क्रोधयुक्त सेनापति धृष्टद्युम्नने ऐसाकहकर ३३ अत्यन्त तीक्ष्णबाण से अश्वत्थामाको घायलकिया फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने टेढ़ेपर्व-वाले बाणोंसे युद्धमें धृष्टद्युम्नकी दिशाओंको ढकदिया ३४ उससमय चारों ओर

से बाणोंसे ढकेहुये न शूरवीर दिखाई दिये न दिशा विदिशा समेत अन्तरिक्ष दिखाई दिया हेराजा इसीप्रकार धृष्टद्युम्नने भी युद्धमें शोभादेनेवाले अश्वत्थामाको ३५। ३६ कर्णके देखतेहुये बाणोंसे ढकदिया फिर चारों ओरसे देखनेके योग्य अकेले कर्णनेभी पांचाल पांडव ३७ द्रौपदीके पुत्र युधामन्यु और महारथी सात्यकीको रोका ३८ फिर धृष्टद्युम्नने युद्धमें अश्वत्थामाके धनुषको काटा तब बेगवान् अश्वत्थामाने उसको डाल दूसरे धनुषको लेकर घोरजंग में बिषैले सर्पोंकी समान बाणोंको फेंका फिर उसने धृष्टद्युम्नकी गदा शक्ति धनुष ध्वजा ३९। ४० रथ सारथी और घोड़ोंको बाणोंसे एक क्षणमात्र में मारा तब उसधनुष रथ गदा शक्ति रथ ध्वजा टूटेहुये धृष्टद्युम्नने ४१ बड़ेखड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली ढालको लिया हे राजेन्द्र तब हस्तलाघवी बीर अश्वत्थामा ने शीघ्रही अपने भल्लों से रथसे न उतरनेवाले धृष्टद्युम्नके उसखड्गको भी काटा यह बड़ा आश्चर्यसा हुआ ४२। ४३ हे भरतर्षभ फिर उपाय करनेवाला महारथी उस रथ गदा शक्ति खड्ग आदि से रहित बाणों से अत्यन्त घायल धृष्टद्युम्न को न मारसका हेराजा जब अश्वत्थामा बाणोंसे उसको न मारसका ४४। ४५ तब वहबीर धनुष को त्यागकर धृष्टद्युम्नकी ओरको चला और उससमय हेमहाराज उसमहात्मा भ्रमरहित अश्वत्थामाका बेग इसप्रकारका हुआ ४६ जैसे कि उत्तम सर्पके भक्षण करनेवाले गरुड़का बेगहोताहै उसीसमय श्रीकृष्णजी अर्जुनसे बोले ४७ हेअर्जुन देखो जैसे कि अश्वत्थामा धृष्टद्युम्नके रथपर बड़े उपायों को करता है वह निस्सन्देह इसको मारेगा ४८ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले महाबाहु जैसे हो सके वैसे अश्वत्थामारूप मृत्युके मुखमें फँसेहुये धृष्टद्युम्नको निश्चयकरके छुटाओ ४९ हेमहाराज ऐसाकहकर प्रतापवान् वासुदेवजीने घोड़ोंको वहांपहुँचाया जहां कि अश्वत्थामा नियतथे ५० केशवजीके हांकेहुये वह चन्द्रबर्ण घोड़े आकाशगामी होकर अश्वत्थामाके रथपरपहुँचे ५१ हे राजा महापराक्रमी अश्वत्थामाने उन बड़े पराक्रमी श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर धृष्टद्युम्नके मारनेमें उपाय किया ५२ तब बड़े पराक्रमी अर्जुनने खिंचेहुये धृष्टद्युम्नको देखकर बाणों को अश्वत्थामाके ऊपर फेंका ५३ गांडीवधनुषसे चलायेहुये वह स्वर्णमयीबाण अश्वत्थामाको पाकर उसके शरीर में ऐसे प्रवेशकरगये जैसे कि सर्प बामी में घुसते हैं हेराजा उनबाणोंसे घायल और पीड़ावान् बीर अश्वत्थामा युद्धमें बड़े

तेजस्वी धृष्टद्युम्नको छोड़कर रथपर सवारहुये ५४। ५५ और अर्जुनके बाणसे पीड़ितहोकर उत्तमधनुषको लेकर शायकों से अर्जुनको घायल किया ५६ इसी अन्तरमें बीरसहदेव युद्धभूमि में शत्रुसंतापी धृष्टद्युम्नको रथ में बैठाकर दूर ले गया ५७ हेमहाराज फिरतो अर्जुनने भी अश्वत्थामाको बाणोंसे पीड़ितकिया फिर बड़े क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने अर्जुनको दोनों भुजा और छातीपर घायल किया ५८ फिर क्रोधयुक्त अर्जुन ने युद्ध में कालके समान दूसरे कालदण्ड के समान नाराचनाम बाणको अश्वत्थामाके ऊपरफेंका ५९ वह बड़ातेजस्वी बाण उसब्राह्मण अश्वत्थामाके कन्धेपर गिरा तब बाणके वेगसे ब्याकुलहोकर अश्वत्थामा रथके बैठनेके स्थानपर बैठगये और महाब्याकुलताको पाया हे महाराज इसके पीछे कर्णने अपने विजयनाम धनुषको टंकारा ६०। ६१ युद्धमें क्रोधयुक्त होकर बारम्बार अर्जुनको देखनेवाले और अर्जुनसे युद्धमें द्वैरथ युद्ध करने के अभिलाषी कर्ण ने धनुष को टंकारकर ६२ युद्धभूमि में शीघ्रता करनेवाले अश्वत्थामाको ब्याकुल देखके रथकेद्वारा युद्धभूमिसे दूर लेगया ६३ हे महाराज धृष्टद्युम्नको छूटाहुआ और अश्वत्थामा को अचेतता पूर्व्वक ब्याकुल देखकर विजय से शोभायमान पांचालों ने बड़े शब्दकिये ६४ हजारों दिब्य बाजेबजे और युद्धमें उस अद्भुतपनेको देखकर शूरवीरों ने सिंहनाद किये ६५ पाण्डव अर्जुन ऐसा कर्मकरके वासुदेवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी आप संसप्तकों के सन्मुखचलो यहमेरा बड़ा कामहै ६६ अर्जुन के बचनको सुनकर श्रीकृष्णजी बड़ी पताकावाले मन और बायुकेसमान शीघ्रगामी रथकी सवारीसे चलदिये ६७

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाअचेतोनामषष्ठितमोऽध्यायः ६०॥

इकसठिवां अध्याय॥

संजय बोले कि इसी अन्तरमें कुन्तीकेपुत्र धर्मराज युधिष्ठिरको दिखातेहुये श्रीकृष्णजीने अर्जुनसे यह बचन कहा हे पाण्डव बड़े पराक्रमी मारनेके इच्छावान् महाधनुषधारी धृतराष्ट्र के पुत्रों से यह तेराभाई राजायुधिष्ठिर बड़ी शीघ्रता से पीछाकिया जाताहै १। २ वहां महादुर्मद क्रोधयुक्त पांचाल महात्मा युधिष्ठिर को चाहतेहुये पीछे चलेजाते हैं ३ और पृथ्वी का राजा रथसमेत सेनाओं से अलंकृत दुर्योधन राजायुधिष्ठिर के पीछे दौड़ताहै ४ हे पुरुषोत्तम यह पराक्रमी

विषैले सर्पकेसमान स्पर्शवाले सबयुद्धों में कुशल भाइयों समेत मारने का अभिलाषी है ५ युधिष्ठिरके पकड़ने की इच्छा करनेवाले यह धृतराष्ट्र के पुत्र हाथी घोड़े रथ और पतियों समेत ऐसे जाते हैं कि जैसे कि इच्छावान् पुरुष उत्तम मनुष्य के पास जाते हैं ६ यादव सात्यकी वा भीमसेन से रोकेहुये युधिष्ठिर को पकड़ने के इच्छावान् यहलोग फिर ऐसे नियतहैं जैसे कि इन्द्र और अग्नि से बारंबार रुकेहुये अमृत के चाहनेवाले दैत्यहोते हैं ७ यह शीघ्रता करनेवाले महारथी बहुत होनेके कारण पाण्डव युधिष्ठिरकी ओर फिर ऐसे जातेहैं जैसे कि वर्षा ऋतुमें जलके प्रवाह समुद्रकी ओर जाते हैं ८ बड़े २ पराक्रमी बड़े धनुषधारी सिंहनादों को करते शंखोंको बजाते और शत्रुओं को चलायमान करतेहुये चले जाते हैं ९ मैं कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरको मृत्युके मुखमें बर्त्तमान मानताहूं और उस कुन्तीके पुत्रको दुर्योधनकी आधीनतामें बर्त्तमानहोकर अग्निमें होमाहुआ बिचार करताहूं १० हे अर्जुन फिर दुर्योधनकी सेना इसप्रकार की है कि इसके बाण लक्षमें बर्त्तमान होकर समर्थ भी नहीं बचसक्ता है ११ युद्धमें बाणों के समूहों को शीघ्र छोड़नेवाले यमराज के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त बीर दुर्योधन के वेगको कौन सहसक्ताहै १२ बीर दुर्योधन अश्वत्थामा कृपाचार्य्य और कर्णके बाणोंका वेग पर्व्वतोंका भी तोड़नेवाला है १३ शत्रुओं का संतप्त करनेवाला पराक्रमी हस्तलाघवी कर्मकर्त्ता युद्धमें कुशल राजायुधिष्ठिर कर्णके हाथसे मुखमोड़नेवालाहो चुकाहै और बड़े शूरबीर धृतराष्ट्रकेपुत्रों समेत कर्ण युद्धमें युधिष्ठिरको पीड़ामान करने को समर्थ है १४।१५ युद्धमें लड़नेवाले प्रशंसनीय बुद्धि उस युधिष्ठिर के पराजय होनेका गुमान इन और अन्य महारथियोंको भी प्राप्तहै १६ क्योंकि यह भरतबंशियों में श्रेष्ठ ब्रत करनेवाला समर्थ राजायुधिष्ठिर ब्राह्मणोंके क्षमा आदि पराक्रमोंमें नियतहै यह क्षत्री धर्म्मरूप पराक्रम में अर्थात् कठोर प्रकृति आदिमें नियतनहीं है १७ निश्चय करके कर्णकेसाथ भिड़ेहुये शत्रुहन्ता युधिष्ठिर बड़े संशयमें प्राप्तहुआहै १८ हे अर्जुन जो कि असहन शील भीमसेन शत्रुओंके सिंहनादों को सहरहाहै इससे मैं अनुमान करताहूं कि महाराज युधिष्ठिर जीवतेहुये नहीं हैं १९ हे भरतर्षभ युद्धमें विजयसे शोभायमान बारंबार गर्जते और शंखोंको बजातेहुये २० यह कर्ण बड़े पराक्रमी उन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको प्रेरणा करताहै कि तुम पांडव युधिष्ठिरको मारो २१ हे अर्जुन महारथी लोग इंद्रजालरूप स्थूणा कर्ण

नाम गांधर्वअस्त्र वा पाशुपतिअस्त्र और बाणोंकेजालोंसे राजाको ढकरहे हैं २२ हे भरतबंशी अर्जुन राजायुधिष्ठिर ऐसा ब्याकुल करदिया है जैसा कि यह पांचालदेशी अश्वत्थामाने कियाथा पांडवों समेत सब शूरबीर इसके पीछे हुये हैं इसीप्रकार तुमसे भी यह राजा रक्षाकरनेके योग्यहै २३ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ पराक्रमी शीघ्रता के समय शीघ्रता करनेवाले शूरबीर उस पातालमें डूबेहुये के समान युधिष्ठिरको निकालने की इच्छा कररहे हैं२४ राजाकी ध्वजानहीं दिखाई देती है हे अर्जुन वह राजा नकुल, सहदेव, सात्यकी और शिखण्डी के देखते हुये कर्ण के बाणों से मारागया २५ हे भरतबंशी समर्थ अर्जुन वह राजाधृष्टद्युम्न भीमसेन, शतानीक और सब पांचाल वा चंदेरीदेशियोंके देखतेहुये मारागया २६ हे अर्जुन यह कर्ण बाणों से पाण्डवोंकी सेनाको ऐसे माररहाहै जैसे कि कमल के बनोंको हाथी मारताहै २७ हे पांडुनन्दन यह आपके रथी भागते हैं हे अर्जुन देखो २ यह महारथी जाते हैं २८ हे भरतबंशी यह हाथी कर्ण के बाणों से घायल और पीड़ित होकर शब्दोंको करतेहुये दशों दिशाओंको भागते हैं २९ हे अर्जुन शत्रुओंके पराजय करनेवाले कर्ण से युद्धमें भगायेहुये यह रथों के समूह चारों ओरसे भागते चलेजातेहैं ३० हे ध्वजाधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन कर्णके रथपर नियत हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली और जहां तहां युद्धमें घूमने वाली ध्वजाको देखो ३१ यह कर्ण हजारों बाणों को बरसाता तुम्हारी सेना को मारता हुआ भीमसेनके रथपर दौड़ताहै ३२ इन भगायेहुये महारथी पांचालों को ऐसा देखो जैसे कि महायुद्धमें इन्द्रसे भगायेहुये दैत्य होते हैं ३३ यह कर्ण युद्ध में पांचाल पांडव और सृञ्जियों को बिजय करके तेरे निमित्त सब दिशाओं को देखताहै यहमेरा पक्काअनुमानहै ३४ हे अर्जुन यहकर्ण उत्तम धनुषको खैंचता हुआ ऐसा शोभायमानहै जैसे कि देवगणोंसे ब्याप्त शत्रुओं को विजयकरके इन्द्र शोभायमान होताहै ३५ यह सब कौरव कर्ण के पराक्रमको देखकर गर्जते हुये शब्दोंको करते हैं और युद्धमें चारोंओर से पांडव और सृंजियों को डरते हैं ३६ हे प्रशंसा देनेवाले यह कर्ण युद्धमें सब आत्मासे पांडवोंको भयभीतकरके सब सेनाके मनुष्यों से बोला ३७ हे कौरव्य तुम्हारा कल्याणहो तुम शीघ्र चलकर सन्मुखताकरो जिससे कि कोई सृंजी युद्धमें तुम्हारे हाथसे जीवता बचकर न जावे तुम शस्त्रोंको धारणकिये सावधानीसे युद्धकरो और हम पीछे की

ओर से चलते हैं यह कर्ण इसरीति से कहकर पीछेकी ओरसे बाणों को मारता हुआ चलागया ३८। ३९ हे अर्जुन श्वेतछत्रसे शोभायमान कर्णको देखो वह ऐसा मालूमहोताहै जैसे कि चन्द्रमासे शोभायमान उदयाचल पर्व्वतहोताहै ४० हे भरतवंशी अर्जुन पूर्ण चन्द्रमाके समान शोभायमान सौ शलाका रखनेवाले मस्तकपर धारण किये हुये छत्रसमेत ४१ यह कर्ण तुझको सकटाक्ष देखता है निश्चय करके यह बड़ी तीव्रतामें नियतहोकर युद्धमें आवेगा ४२ हेमहाबाहु बड़े युद्ध में बृहत् धनुषको चढ़ानेवाले बिषैले सर्पोंके समान बाणोंके छोड़नेवाले इस कर्णको देखो ४३ हे शत्रुसंतापी अर्जुन यह कर्ण तुझ से युद्ध करनेकी इच्छा करताहुआ तेरी बानरीध्वजाको देखकर लौटा ४४ यह अपने मरनेके लिये ऐसे आताहै जैसे कि शलभनाम पक्षी प्रकाशमान अग्निके मुखमें जाताहै हे भरत-बंशी रथकी सेनासमेत रक्षाकरनेका अभिलाषी दुर्योधन अकेले कर्णकोही देख कर लड़ताहै इन सबसमेत इसदुष्ट अन्तःकरणवाले दुर्योधनको बड़े बिचारपूर्बक उपायोंसे मारनाचाहिये ४५। ४६ हे उच्चाभिलाषी शस्त्रोंको अच्छीरीतिसे जानने वाले युद्धाभिलाषी यश राज्य और उत्तमसुखको चाहनेवाले तेरे हाथसे मारनेके योग्यहै ४७ हे राजा जैसे कि देवासुरोंके युद्धमें देवता और दानवोंके युद्ध होते हैं इसीप्रकार हे भरतर्षभ अत्यन्त क्रोधयुक्त तुझको और कर्णको देखकर ४८ यह क्रोधयुक्त दुर्य्योधन अपनेको बुद्धिमान् बिचारकर उत्तरको नहीं पाताहै ४९ हे कुंतीकेपुत्र तुम धर्मात्मा युधिष्ठिरकेसाथ अपराध करनेवाले आसन्नमृत्यु कर्ण के सन्मुख शीघ्रहीजाओ ५० और बुद्धिको प्रबल करके इस महारथी के सन्मुख चलो हे रथियोंमें श्रेष्ठ यह पांच महापराक्रमी और तेजस्वी उत्तम रथी ५१ पांच हजारहाथी और दशहजार घोड़ों समेत हजारोंशूरबीरोंको साथलिये ५२ प्रयुतों पदातियोंसे युक्तहोकर आते हैं हे बीर परस्परमें रक्षित सेना तेरे सन्मुख आती है ५३ हे भरतर्षभ तुम आप चलकर इस बड़े धनुषधारी कर्ण को दर्शन दो और बड़ी तीव्रता में नियत होकर सन्मुख जाओ ५४ यह अत्यन्त क्रोध युक्त होकर कर्ण पांचालोंके सन्मुख दौड़ताहै मैं इसकी ध्वजाको धृष्टद्युम्नके रथपर देखताहूं ५५ हे शत्रुसंतापी मैं मानताहूं अर्थात् अनुमान करताहूं कि यह पांचालों के सन्मुख जाताहै हे अर्जुन अब मैं उस तेरी अभीष्ट प्रियवार्ता को कहताहूं ५६ कि यह श्रीमान् धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर आनन्दपूर्ब्बक कुशल से है और यह महा-

बाहु भीमसेन सेनाके मुखसे निवृत्तहुआ लौटाहै ५७ और वह भरतवंशी संजियों
की सेना सात्विकी से युक्तहै यह कौरव युद्धमें तीक्ष्णधार बाणोंसे मररहेहैं ५८
हे अर्जुन महात्मा पांचालों से और भीमसेन के हाथसे दुर्य्योधनकी सेना युद्ध
में मुखोंको मोड़मोड़कर ५९ भीमसेन के बाणोंसे घायल होकर बड़ी शीघ्रतासे
भागतीहै और टूटे कवच रुधिर से लिप्त शरीरवाली ६० महादुखी भरतबंशियों
कीसेना दिखाईदेती है हे भरतर्षभ अर्जुन इस शूरबीरों के स्वामी फैलेहुये भीम-
सेनको देखो कि यह बिषैले सर्पकी समान क्रोधयुक्त सेनाका भगानेवालाहै हे
राजन् यह लालपीले काले और श्वेत सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से शोभायमान
६१। ६२ अलंकृत पताका और छत्र गिरते हैं मुख न मोड़नेवाले और नानाप्रकार
के बर्णवाले पांचालों के बाणों से घायल और निर्जीव होकर यह रथी अपने २
रथोंसे गिरतेहैं ६३। ६४ हे अर्जुन बेगवान् पांचाल मनुष्य हाथी घोड़े और रथों
से जुदे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके सन्मुख जाते हैं और नरोत्तम भीमसेन से रक्षित होकर
६५। ६६ वह अजेय पांचाललोग अपने २ प्राणोंकी आशा छोड़ २ शत्रुओं को
मर्द्दनकरते हैं हेशत्रुविजयी यह सब पांचाल प्रसन्नहो होकर शंखों को बजाते हैं
६७ और युद्धमें बाणों से शत्रुओंको मर्द्दन करतेहुये दौड़ते हैं इन अपने शूर-
बीरों के साहसको देखो कि पांचालदेशी शूर अपने पराक्रमों से धृतराष्ट्र के पुत्रों
को ऐसे मारतेहैं ६८ जैसे कि क्रोधयुक्त सिंह हाथियों को मारते हैं शस्त्रोंसे रहित
शूरवीर शस्त्रधारी शत्रुओं के शस्त्रको काटकर ६९ उसीसे इन फलयुक्त शस्त्रधा-
रियों को मारतेहुये गर्जनाओं को करतेहैं शत्रुओं के शिर और भुजाभी गिरायी
जाती हैं ७० रथ हाथी घोड़े और युद्ध के सब बीरलोग शूरता के उत्पन्न करने
वाले शब्दों को कररहे हैं और यह दुर्य्योधन की बड़ीसेना सब ओर को पांचालों
के सन्मुख ऐसे बर्त्तमानहै ७१ जैसेकि वेगवान् हंसों से चारोंओर को ब्याप्त श्री
गंगाजी होती हैं श्रेष्ठों में भी अतिश्रेष्ठ बीर कृपाचार्य्य और कर्ण आदि यह सब
पांचालों के रोकने में कठिन पराक्रम करनेवाले हुये और भीमसेन के अस्त्रों से
पराजित महारथी धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखो ७२। ७३ और शत्रुओं के हाथ से
पांचालों के पराजय होनेपर निर्भय होकर गर्जनेवाले धृष्टद्युम्न आदि बीरहजारों
शत्रुओंको मारतेहैं ७४ बायुका पुत्र भीमसेन शत्रुओं के पक्षोंको मझाकर बाणों
की बर्षाकरताहै और धृतराष्ट्रकी बड़ी सेना महाब्याकुलहै ७५ और यह रथीभी

भीमसेन के भयसे अत्यन्त पीड़ामान होकर भयभीतहैं देखो भीमसेन के नाराचों से घायल होकर यह हाथी ऐसे गिरते हैं ७६ जैसे कि इन्द्रके बज्रसे टूटेहुये पर्व्वतों के शिखर गिरते हैं भीमसेन के गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से घायल यह बड़े २ हाथी अपनी सेनाओंको कुचलते दबातेहुये इधर उधरको भागते हैं भीमसेन का सिंह बड़े दुःख से सहनेके योग्यजानो ७७।७८ हे राजन् दण्डधारी यमराजके समान क्रोधयुक्त तोमरों से भीमसेन के मारनेकी इच्छा से यह निषादकापुत्र इस युद्धमें गर्जनेवाले और बिजयसे शोभायमान बीर भीमसेन के सन्मुख आताहै इसकी दोनों भुजाओं को उस गर्जनेवाले भीमसेन ने तोमर से काटडाला ७९ । ८० और देदीप्य अग्नि और सूर्य्यके समान प्रकाशित दशबाणों से मारडाला इसको मारकर अब प्रहार करनेवाले दूसरे हाथियों के सन्मुख आताहै ८१ सवारों समेत सवारियों को और नीले बादलों के समान हाथियों को शक्ति और तोमरों से मारनेवाले भीमसेन को देखो ८२ हे राजन् तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे उन सात २ हाथियों की बैजयन्ती ध्वजाओं को काटकर तेरे बड़े भाई भीमसेनने मारडाला ८३ दश २ नाराचों से एक २ हाथी मारागया इसीसे धृतराष्ट्रके पुत्रों के शब्द नहीं सुनेजाते हैं हे भरतर्षभ इसीप्रकार युद्धमें इन्द्र के समान भीमसेन के लौटने पर क्रोधयुक्त नरोत्तम भीमसेनके हाथसे दुर्य्योधनकी तीनअक्षौहिणी सेना घायल और रोकीगई संजय बोले कि भीमसेन के उन कठिनकर्मों को देखकर ८४ । ८५ । ८६ अर्ज्जुनने शेष बचेहुये शत्रुओं को तीक्ष्णधार बाणों से छिन्न भिन्न करदिया हे प्रभु वह संसप्तकों के समूह युद्धमें घायल और भयभीतहोकर दशों दिशाओं में बिभागित होकर भागे और इन्द्रके आतिथ्यको पाकर शोक से रहित हुये ८७ । ८८ पुरुषोत्तम अर्ज्जुनने टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से दुर्य्योधन की चतुरंगिणी सेनाको मारा ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि पाण्डव भीमसेन और युधिष्ठिरके लौटने और पांडव वा सृंजियों के हाथसे मेरी सेनाके मरने १ अथवा अप्रसन्नता पूर्व्वक सेनाकेसमूहों के बारम्बार भागनेपर हे संजय मुझको समझाकर कहो कि कौरवों ने क्या २

प्रतापवान् सहदेवने रोककर ४२ उसके चारों घोड़ोंको मार सारथीको यमलोक में पहुंचाया हे राजन् इसके पीछे पिताको प्रसन्नकरनेवाला उलूक रथसे उतरकर शीघ्रही त्रिगर्त्तदेशियों की सेनामें गया ४३ और हँसतेहुये सात्विकी ने तेज धारवाले बीसबाणों से शकुनिको छेदकर एकबाणसे उसकी ध्वजाको काटा ४४ हे राजन् फिर क्रोधयुक्त प्रतापवान् शकुनी ने युद्ध में उसके कवच को चीरकर उसकी सुनहरी ध्वजाको काटा ४५ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले सात्विकी ने बाणों से उसके घोड़ोंको यमलोकमें पहुंचाया हे भरतर्षभ फिर शकुनी अकस्मात् रथसे कूदकर शीघ्रही ४६ । ४७ महात्मा उलूकके रथपर सवारहुआ तब युद्धको शोभा देनेवाले सात्विकी ने उसको शीघ्रही हटाया ४८ हे राजन् फिर सात्विकी आपकी सेनाके सन्मुखगया और सेना भिन्नभिन्न होगई ४९ सात्विकी के बाणों से ढकीहुई आपकी सेनाके लोग शीघ्रही दशों दिशाओं में भागकर निर्जीवों के समान गिरपड़े ५० फिर आपके पुत्रने युद्धमें भीमसेन को रोका तब भीमसेनने एकमुहूर्त्त भरमेंही वहां उस पृथ्वी के राजा दुर्योधनको घोड़े रथ सारथी और ध्वजासे रहित करदिया ५१ उस कर्म से सब मनुष्य प्रसन्नहुये इसके पीछे राजा दुर्योधन भीमसेनके आगे हटगया ५२ फिर सब कौरवी सेनाने भीमसेन को घेरा वहां भीमसेनके मारनेके इच्छावान् शूरबीरोंके बड़े शब्दहुये ५३ युधामन्युने कृपाचार्यको छेदकर शीघ्रही उनके धनुषको काटा इसकेपीछे शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृपाचार्यने दूसरे धनुषको लेकर ५४ युधामन्युकी ध्वजा सारथी और छत्रको पृथ्वीपर गिराया इसकेपीछे महारथी युधामन्यु रथकी सवारी से हटगया ५५ उत्तमौजाने भयानकरूप और भयानक पराक्रमवाले कृतबर्मा को बाणों से अकस्मात् ऐसा ढकदिया जैसे कि बादल पानीकी बर्षासे पर्व्वतको ढकदेता है ५६ हे शत्रुसंतापी राजा धृतराष्ट्र वह महाघोर युद्ध ऐसा बहुत बढ़ाहुआ जैसाकि मैंने पहले कभी न देखाथा ५७ इसकेपीछे कृतवर्माने युद्धमें उत्तमौजस को हृदयपर पीड़ामानकिया तब वह अकस्मात् रथके अंगपर बैठगया ५८ फिर सारथी रथके द्वारा उस महारथीको दूरलेगया इसकेपीछे सब कौरवी सेना भीमसेनके ऊपरचढ़आई ५९ दुश्शासन और शकुनीने हाथियोंकी बड़ीसेना समेत भीमसेनको घेरकर क्षुरप्र नाम बाणोंसे घायल किया ६० तब क्रोधयुक्त भीमसेन सैकड़ों बाणों से क्रोधयुक्त दुर्योधनको बिमुख करके बड़ी तीव्रतासे हाथियोंकी

सेनापर आटूटा ६१ वहां अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने उस अकस्मात् आने वाली हाथियोंकी सेनाको देखकर दिव्यअस्त्रको प्रकट किया ६२ हाथियों को हाथियों से ऐसे मारा जैसे कि बज्रसे इन्द्र असुरों को मारताहै ६३ इसके पीछे युद्धके बीच हाथियों को मारतेहुये भीमसेनने बाणों के समूहों से आकाशको ऐसा ढकदिया जैसे कि टीड़ियों से वृक्ष ढकजाताहै इसकेपीछे भीमसेनने मिले हुये हाथियों के हजारों झुण्डों को बड़े वेगसे ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलों के समूहों को बायु तिर्रे बिर्रे करदेताहै सुवर्ण और मणियों के जालों से ढकेहुयेहाथी ६४।६५ युद्धमें ऐसे अधिक शोभायमान हुये जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल हे राजन् भीमसेनके हाथसे घायलहोकर सबहाथी शब्द करतेहुयेभागे ६६ कितनेही हाथी हृदयमें घायलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े उन गिरे हुयेसुवर्ण भूषणों से अलंकृत हाथियों से ६७ वहां पृथ्वी ऐसी शोभायमान हुई जैसे कि फैलेहुये पर्वतोंसे प्रकाशित मुखवाले रत्नोंसे अलंकृत गिरनेवाले हाथियों के सवारों से होतीहै ६८ अथवा पृथ्वी ऐसी मालूमदेतीथी जैसे कि क्षीणपुण्य वाले ग्रहों के गिरने से शोभायमान होतीहै इसके पीछे मदझाड़नेवाले टूटेहुये मुखवाले सैकड़ों हाथी भीमसेनके बाणोंसे घायलहोकर युद्धसेभागे भयसे पीड़ित बाणों से घायल अंग रुधिरको बमनकरनेवाले पर्व्वताकार अनेक हाथी ६९।७० धातुयुक्त पर्व्वतों के समान भागे हमने भीमसेन की दोनों धनुष खैंचनेवाली भुजाओं को बड़ेसर्पकी समान चन्दन अगरसे अलंकृत देखा और उसके बज्र के समान शब्दवाले ज्या शब्दको सुनकर ७१।७२ मूत्र बिष्ठाको करतेहुये हाथी बड़े कठिनशब्दोंको करतेहुये भागे हे राजन् उस अकेले बुद्धिमान् भीमसेनका वहकर्म ७३ इसरीति का शोभितहुआ जैसे कि सब जीवोंके मारनेवाले रुद्रजी का होताहै ७४ ॥ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर श्वेतघोड़ों से युक्त और श्रीनारायणजी के थांबेहुये उत्तम रथपर नियत श्रीमान् अर्जुन आकर सन्मुखहुआ १ हे भरतर्षभ अर्जुनने युद्धमें आपकी उसबड़ी घोड़ोंवाली सेनाको ऐसे छिन्नभिन्न करदिया

जैसे कि बायुबड़े समुद्रको उथल पुथल करदेताहै २ अर्ज्जुन के प्रमत्त होनेपर आधी सेना को साथ लियेहुये आपके पुत्र दुर्य्योधन ने अकस्मात् सन्मुख आकर ३ आतेहुये क्रोधयुक्त युधिष्ठिरको रोककर तिहत्तरबाणों से घायलकिया ४ तबतो कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर बड़े क्रोधयुक्तहुये और शीघ्रही उसने बीस भल्लोंको आपके पुत्रके शरीरमें प्रविष्ट किया ५ इसके पीछे युधिष्ठिरके पकड़नेकी इच्छासे कौरव दौड़े तब महारथी लोग शत्रुओं का दुष्ट बिचार जानकर ६ उसकुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरको चाहतेहुये सब आनकर इकट्ठेहोगये नकुल सहदेव और पर्षतका पौत्र धृष्टद्युम्न एकअक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिर के पास दौड़े ७ और युद्धमें आपके महारथियों को मर्द्दन करताहुआ भीमसेनभी शत्रुओं से घिराहुआ ८ राजाको चाहताहुआ दौड़ा हे राजन् सूर्य्यके पुत्र कर्णने उन आनेवाले सब बड़े धनुषधारियों को ९ बाणोंकी बर्षासे रोका और बाणोंकी वर्षाकरते तोमरोंको चलाते १० वह उपायकरनेवाले लोगभी कर्णकी ओर देखनेको समर्थ नहींहुये फिर कर्णने उन सब शस्त्रकुशल बड़े २ धनुषधारियों को ११ बड़ीबाणोंकी बर्षा करके रोका और शीघ्र अस्त्रके प्रकट करनेवाले प्रतापी सहदेव ने दुर्य्योधनके सन्मुख होकर शीघ्रही बीसबाणोंसे छेदा सहदेवके हाथसे घायल पर्व्वतके समान राजा दुर्योधन १२ । १३ मदोन्मत्त हाथीके समान रुधिरसे लिप्तहुआ फिर वहां बाणोंसे घायलहुये आपके पुत्रको देखकर १४ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण क्रोधित होकर दौड़ा तब दुर्योधनको देखकर शीघ्रही अस्त्रको प्रकटकिया १५ उस अस्त्रसे युधिष्ठिरकी सेनासमेत धृष्टद्युम्न को घायल किया इसके पीछे महात्मा कर्ण के हाथ से घायल और पीड़ामान युधिष्ठिरकी सेना अकस्मात् भागी १६ हे राजन् वहां नाना प्रकारके बाण परस्पर में फेंकेगये १७ कर्ण के धनुष से निकले हुये बाणों ने भल्लोंसे पुंखोंको काटा हे राजन् अन्तरिक्षमें परस्पर गिरनेवाले बाण समूहोंकी १८ घिसावट से अग्नि उत्पन्न हुई इसके पीछे कर्णने चलनेवाली टीड़ियोंके समान शत्रुके शरीरमें प्रवेश कर जानेवाले बाणों से बड़े वेगयुक्त होकर दशों दिशाओंका आच्छादित कर दिया लालचन्दन से चर्च्चित सुवर्ण और मणियों से अलंकृत १९ । २० भुजाओं को उत्तम अस्त्र के दिखाने वाले कर्ण ने चेष्टावान् किया इसके अनन्तर अपने शायकों से सब दिशाओंको व्याप्त करके २१ कर्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बहुत पीड़ित किया इसके पीछे क्रोधयुक्त धर्म के पुत्र

युधिष्ठिर ने २२ तीक्ष्ण पचास बाणों से कर्ण को घायल किया वह युद्धभूमि बाणों से अन्धकार युक्त होकर महाभयकारी दिखाईदी २३ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब धर्म्मपुत्र के हाथ से सेना के घायल होजाने पर आपके शूरवीरों ने बड़ा हाहाकार किया २४ फिर कंकपक्ष वाले अनेक शायक तीक्ष्ण धारवाले बहुतसे भल्ल नानाशक्ति दुधारे खड्ग और मुशलों से उस धर्मात्मा ने जहां जहां अपने क्रोधको प्रकटकिया हेभरतर्षभ तहांतहां आपके शूरवीर छिन्नभिन्नहोगये२५।२६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त कर्णने भी धर्मराज युधिष्ठिर को नाराच अर्द्धचन्द्र और वत्सदन्तनाम बाणों से घायल किया २७ वह अशान्तचित्त क्रोधयुक्त महासाहसी कर्ण क्रोधसे ओठोंको चबाताहुआ शायकों को लेकर युधिष्ठिर के पास गया २८ तब युधिष्ठिरने उसको सुनहरी पुंखवाले सौ बाणोंसे घायलकिया फिर हँसतेहुये कर्ण ने तीक्ष्ण कंकपक्षसे जटित २९ तीनभल्लों से उस युधिष्ठिर को छातीपर घायलकिया उससे अत्यन्त पीड़ामान राजायुधिष्ठिर ३० रथके अंगपर बैठकर सारथी से कहनेलगा कि चल तदनन्तर सब धृतराष्ट्रके पुत्र और राजा लोग पुकारे ३१ कि राजाको पकड़ो यह कहकर सब दौड़े उसके पीछे प्रहार करनेवाले केकय देशियों के एकहजार सातसौ रथियों ने ३२ पांचालों समेत धृतराष्ट्रके पुत्रों को रोका और ३३ मनुष्यों के नाशकारी उस कठिन युद्ध के जारीहोनेपर बड़े पराक्रमी भीमसेन और दुर्य्योधन परस्परमें सन्मुखहुये ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्ण ने आगे नियत होनेवाले महारथी केकयदेशियों को अपने बाणजालों से छिन्नभिन्न करदिया रोकनेमेंही उन केकयदेशियों के पांचसौ रथोंको कर्ण ने यमलोकको भेजा १ । २ इसके पीछे शूरवीरलोग नियत हुये कर्णको रोकनेको समर्थ होकर उसके बाणों से अत्यन्त पीड़ित होकर भीमसेन के पासगये ३ फिर कर्ण एकही रथकेद्वारा बाणोंके बलसे रथकी सेनाओं को चीरताहुआ युधिष्ठिरके पासगया ४ अपने डेरेको जानेवाले बाणोंसे घायल शरीर धीरे२ चलनेवाले अचेतहुये नकुल और सहदेवके मध्यवर्त्तीवीर ५ राजा को पाकर दुर्य्योधनकी प्रसन्नताकी इच्छासे कर्णने तीक्ष्ण धारवाले तीन उत्तम

बाणों से पीड़ामानकिया और इसीप्रकार युधिष्ठिरनेभी कर्णको छातीपर घायल करके तीन बाणों से सारथीको और चारबाणों से घोड़ोंको पीड़ामानकिया ६।७ फिर शत्रुसंतापी नकुल सहदेव और जो लोग कि अर्ज्जुन की सेना के रक्षक थे वह सब कर्ण की ओर इस निमित्त दौड़े कि यह कहीं राजा को न मारे ८ उन दोनों नकुल और सहदेव ने कर्ण के ऊपर बाणों की बर्षाकरी और बड़ेउ-पाय में प्रवृत्तहुये ९ इसीप्रकार प्रतापवान् कर्ण ने भी उन शत्रुओं के विजयी महात्मा दोनों नकुल और सहदेवको बड़े तीक्ष्ण भल्लोंसे घायल किया १० फिर कर्णने धर्मराजके दन्तबर्ण कालेबाल और चित्तके समान शीघ्रगामी घोड़ोंको भी मारा ११ इसके पीछे बड़े धनुषधारी हँसतेहुये कर्णने दूसरे भल्लसे युधिष्ठिर के छत्रको गिराया १२ इसीप्रकार प्रतापी बुद्धिमान् कर्णने नकुलकेभी घोड़ोंको मारकर उसके रथके ईशा और धनुषको काटा १३ तब मृतक घोड़े और टूटेरथ वाले अत्यन्त घायल वह दोनों भाई सहदेव के रथपर सवार हुये वहां शत्रुओं के वीरोंका मारनेवाला मामा शल्य उनदोनोंको बिरथ देखकर १४ करुणाकरके कर्ण से बोला कि हे कर्ण तुझको पाण्डव अर्ज्जुन से लड़ना चाहिये १५ तू अत्यन्त क्रोधरूप होकर धर्मराजके साथ क्यों लड़ताहै शस्त्र अस्त्र कवच बाण और तूणीर से रहित १६ रथके सारथी और घोड़ेवाला होकर यह शत्रुओं के अस्त्रों से टूटे अंगहैं तुम अर्ज्जुनको पाकर हास्य के योग्य होगे १७ इसरीति के शल्यके बचनको सुनकर क्रोधयुक्त कर्ण ने वैसी दशामें भी युधिष्ठिरको घायल किया १८ और पाण्डव नकुल और सहदेवको तीक्ष्णबाणों से छेदा फिर कर्ण ने हँसकर बाणों से उनका मुख फेरदिया १९ इसके पीछे उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिर के मारने में प्रवृत्त कर्ण को शल्य ने हँसकर फिर यह बचन कहा कि हे कर्ण आपको दुर्य्योधनने जिस प्रयोजनकेलिये प्रतिष्ठित कियाहै २० उस अर्ज्जुनको मारो युधिष्ठिरके मारने से तेरा क्या लाभहोगा २१ श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनके बड़े शंखों के यह बड़े शब्द और धनुष का यह शब्द ऐसा सुना जाताहै जैसे कि वर्षाऋतुमें बादलों के शब्द होते हैं २२ यह अर्ज्जुन बाणोंकी बर्षा से महारथियों को मारताहुआ हमारी सब सेनाको निगले जाताहै हे कर्ण इसको तुम युद्धमें देखो २३ उस शूरके पृष्ठके रक्षक युधामन्यु और उत्तमौजसहैं और इसकी उत्त-रीय सेनाका सात्विकी रक्षकहै २४ इसीप्रकार धृष्टद्युम्न उसकी दक्षिणी सेनाका

रक्षकहै और भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रों से युद्ध करताहै २५ सो अब हम सबके देखतेहुये वह भीमसेन जैसे उस दुर्य्योधन को नहीं मारे और जिसप्रकार से वह छूटजाय हे कर्ण उसीप्रकार तुमको करना चाहिये २६ युद्धको शोभा देनेवाले और भीमसेन से निगलेहुये इस दुर्य्योधनको देखो जो कदाचित् तुमको पाकर यह छूटजाय तो बड़ा आश्चर्य्य होय २७ इस बड़े संशय में पड़ेहुये दुर्य्योधन को बचाओ माद्री के पुत्र नकुल सहदेव और राजा युधिष्ठिर के मारने से क्या लाभहै २८ हे राजा कर्ण ने शल्य के इन बचनों को सुनकर और महायुद्धमें भीमसेन से पराजित दुर्य्योधन को देखकर २६ राजा का अत्यन्त चाहनेवाला और शल्यके बचनसे चलायमान बड़ा पराक्रमी कर्ण अजातशत्रु युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव को छोड़कर ३० आपके पुत्रकी रक्षा करने को दौड़ा हे श्रेष्ठ धृतराष्ट्र राजा मद्रकी प्रेरणासे और मानों आकाशगामी घोड़ों के द्वारा ३१ कर्णके चलेजाने पर कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेव शीघ्रगामी घोड़ोंके द्वारा दूर चलेगये ३२ वह लज्जायुक्त राजायुधिष्ठिर बाणोंसेघायल उन दोनों भाइयों समेत शीघ्रही डेरेको पाकर ३३ बहुतशीघ्र रथसेउतरा वहां जिसके भल्ल निकाले गये वह राजा युधिष्ठिर हृदयके भालों से महापीड़ामान होकर अपने शुभ शयन पर जाकर लेटगया ३४ और लेटकर अपने महारथी दोनों भाई नकुल और सहदेवसे बोला हे पाण्डव तुम दोनों बहुतशीघ्र भीमसेनकी सेनामेंजाओ ३५ वह भीमसेन बादल के समान गर्जताहुआ लड़ताहै इसके अनन्तर बड़े भाईकी आज्ञापाकर शत्रुओंके पीड़ा देनेवाले महातेजस्वी रथियों में श्रेष्ठ पराक्रमी दोनों भाई नकुल और सहदेव दूसरे रथपर सवारहोकर उत्तम बेगवाले घोड़ों के द्वारा भीमसेनकी सेनाको पाकर ३६ । ३७ दोनोंभाई अपनी सेनाओं समेत वहां नियत हुये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेचतुष्षष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा इसके पीछे रथकी सेना के बड़े समूहों समेत अश्वत्थामा जी अकस्मात् वहां पहुँचे जहां पर अर्जुन नियत था १ श्रीकृष्णजी को साथ रखनेवाले शूरवीर अर्जुन ने अकस्मात् आनेवाले अश्वत्थामा को

तत्क्षण ऐसे रोका जैसे कि मर्य्यादा समुद्र को रोकती है २ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने शायकों से श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को ढकदिया ३ इसके पीछे वहांपर महारथी कौरवों ने श्रीकृष्ण अर्जुनको ढका हुआ देखकर बड़ा आश्चर्य्यकिया ४ इसके अनन्तर हे भरतर्षभ हँसते हुये अर्जुनने दिव्य अस्त्रों को प्रकटकिया तब अश्वत्थामा ने उस अस्त्र को रोका ५ फिर अर्जुन ने मारनेकी इच्छासे जिस २ अस्त्रको चलाया उस २ अस्त्रको बड़े धनुषधारी अश्वत्थामा ने नाशकरदिया ६ इसके पीछे बड़े भयकारी अस्त्रों को युद्ध वर्त्तमान होनेपर युद्धमें हमने अश्वत्थामा को मुख फाड़ेहुये काल के समान देखा ७ उसने बाणों से दिशा बिदिशाओं को आच्छादित करके तीनबाणों से बासुदेव जीको दाहिनी भुजापर छेदा ८ इसके पीछेअर्जुनने उस महात्मा के सब घोड़ों को मारकर युद्धभूमिपर रुधिरों के प्रवाहवाली नदी को बहाया ९ वह भयानक नदी सबलोक को परलोकमें प्राप्त करनेवाली महाघोर रूपीथी युद्ध में अर्जुन के धनुष से निकले हुये बाणों से रथों समेत सब रथियों को १० और अश्वत्थामा के घोड़ों को मृतक देखा और उस महाघोर शत्रुओंको परलोकमें पहुँचानेवाली नदी को इसरीति से जारीकिया ११ कि उन दोनों अश्वत्थामा और अर्जुन के महाघोर संग्राम होने पर अमर्य्यादा से युद्ध करनेवाले शूरवीर पीछे की ओरसे दौड़े १२ हे राजा अर्जुन ने युद्ध में घोड़े सारथी समेत रथ वा मृतक सवारवाले घोड़े और हाथियों के हजारों यूथोंको मारकर मनुष्यों का घोर नाश करदिया अर्जुनके धनुषसे निकलेहुये बाणों से हजारों रथी मरकर गिरपड़े १३ । १४ और जिन घोड़ों के योक्त छूटगये वह घोड़े जहांतहां चारोंओर को दौड़े युद्धमें शोभायमान पराक्रमी अश्वत्थामा अर्जुन के उस कर्म को देखकर १५ उस विजयी अर्जुनके पास शीघ्रही जाकर स्वर्णमयी बड़े धनुषको टंकारता हुआ १६ तीक्ष्ण बाणों से उसको चारोंओरसे ढकने लगा हे महाराज अश्वत्थामा ने बाणों से अर्जुनको फिर आच्छादित करके १७ बड़ी निर्द्दयता पूर्व्वक उसको छातीपर अत्यन्त घायल किया हे भरतबंशी उस अश्वत्थामा के हाथ से युद्धमें अत्यन्त घायल १८ गांडीव धनुषधारी बड़े बुद्धिमान् अर्जुन ने बाणोंकी वर्षा से अश्वत्थामा को ढककर उसके धनुष को काटा १९ तब उस टूटे धनुषवाले अश्वत्थामाने युद्धमें बज्रके समान स्पर्शवाली परिघको लेकर अर्जुन के ऊपर

फेंका २० हे राजा उस स्वर्णमयी आतेहुये परिघ को हँसतेहुये पांडुनन्दन अर्जुनने अकस्मात् काटडाला २१ फिर अर्जुनके शायकों से वह टूटा हुआ परिघ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बज्रसे घायल टूटेहुये पहाड़ गिरते हैं २२ हे महाराज इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी अश्वत्थामाने इंद्रास्त्र के बेगसे अर्जुनको ढक दिया २३ तब उस बेगवान् पांडव अर्जुनने उसके फैलेहुये इन्द्रजालको देखकर अपने गांडीव धनुषको लिया २४ और महाइन्द्रके उत्पन्न कियेहुये उत्तम अस्त्र को लेकर इन्द्रजालको दूरकरके अर्जुन ने महाइन्द्र की शक्ति से युक्त उस जाल को फाड़कर एक क्षणभर मेंही अश्वत्थामा के रथको ढकदिया इसके अनन्तर अर्जुन के बाणों से दबेहुये अश्वत्थामा ने समीप में आकर २५ अर्जुनकी उस बाण वृष्टिको सहके और अपने बाणों से शत्रुको दृष्टिके सन्मुख करके सौबाणों से अकस्मात् श्रीकृष्णजीको घायल करताहुआ तीन क्षुद्रकनाम बाणोंसे अर्जुन को घायलकिया २६ इसके पीछे अर्जुनने सौशायकों से गुरूके पुत्रको मर्मस्थलों पर छेदा और आपके शूरबीरों के देखते हुये घोड़े सारथी कवच और धनुषको काटा २७ फिर उस शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनने मर्मस्थलों में छेद कर भल्ल से उसके सारथीको रथकी नीड़से गिरादिया २८ फिर उसने आप घोड़ोंको थांभकर बाणोंसे श्रीकृष्ण और अर्जुन को ढकदिया वहां हमने अश्वत्थामाके इस शीघ्र पराक्रमको देखा २९ कि जिसने घोड़ोंको भी थांभा और अर्जुन से भी युद्धकिया हे राजा युद्ध में सब शूरबीरों ने उसके उसकर्मकी बड़ी प्रशंसाकरी ३० इसके पीछे अर्जुनने हँसकर अपने क्षुरप्रनाम बाणों से शीघ्रही अश्वत्थामाके घोड़ों की बागको काटा ३१ फिर बाणके बेगसे पीड़ामान होकर वह घोड़े भागे हे भरतबंशी इसकेपीछे आपकी सेनाका घोर शब्दहुआ ३२ फिर चारोंओर से तीक्ष्ण बाणों को छोड़ते बिजयाभिलाषी पाण्डव बिजयको पाकर आपकी सेना पर दौड़े ३३ हे महाराज युद्धमें बिजयसे शोभायमान बीर पाण्डवों के हाथ से दुर्य्योधनकी बड़ी सेना बारंबार छिन्नभिन्न हुई ३४ तब अपूर्व्व युद्ध करनेवाले आपके पुत्र और सौबलके पुत्र शकुनी और कर्ण के देखतेहुये सब भागे ३५ उससमय चारोंओरसे पीड़ामान आपके पुत्रोंसे रोकीहुई बड़ी सेना युद्धमें नियतहुई ३६ हे महाराज उसके पीछे आपके पुत्रों की बड़ी सेना चारों ओर से भागनेवाले शूरबीरों के कारण व्याकुल और भयभीत होगई ३७ तदनन्तर

ठहरो ठहरो इसप्रकार से कर्ण के कहने पर भी महात्माओं के हाथ से घायल हुई वह सेना नियत नहीं हुई ३८ हे महाराज इसके पीछे दुर्य्योधन की सेना को चारों ओर से भागी हुई देखकर बिजय से शोभायमान पाण्डवों ने बड़े शब्द किये ३९ तब दुर्य्योधन बड़ी नम्रता पूर्व्वक कर्ण से बोला हे कर्ण देखो पांचालों के हाथसे बड़ी सेना अत्यन्त पीड़ित होगई है ४० तेरे नियत होनेपर भी भागी हे शत्रुबिजयी महाबाहो इसबात को समझकर उचित कर्म करो ४१ हे पुरुषोत्तम बीर पाण्डवों के हाथ से भगाये हुये हजारों शूरबीर युद्ध में तुझी को पुकारतेहैं ४२ दुर्य्योधनके इस बड़े बचनको सुनकर हँसताहुआ कर्णभी मद्र देशके राजासे यह बचनबोला ४३ हे राजा अस्त्रोंसमेत मेरी दोनों भुजाओंके पराक्रमको देखो अबमैं युद्धमें पाण्डवों समेत सब पांचालोंको मारताहूँ ४४ हे नरोत्तम अब तुम कल्याणके निमित्त घोड़ोंको निस्सन्देह चलाओ हे महाराज प्रतापी कर्णने इसबचनको कहकर ४५ बिजयनाम उत्तम और प्राचीन धनुषको लेकर प्रत्यंचा समेत बड़ी दृढ़तासे पकड़कर ४६ सबप्रकारसे शूरबीरों को रोक कर उसशूर पराक्रमी और साहसीने भार्गव अस्त्रको धनुषपर चढ़ाया इसके पीछे उस महायुद्धमें लाखों प्रयुतों और अर्बुदों तीक्ष्णबाण धनुषसे निकले ४७।४८ उन अग्निरूप घोरकंक और मोरके पंखोंसे जटित बाणों से पाण्डवी सेना ऐसी ढकगई कि कुछ भी नहीं जानपड़ताथा ४९ हे राजा युद्ध में भार्ग्गव अस्त्र से पीड़ामान पराक्रमी पांचालोंका बड़ाहाहाकार हुआ ५० हे नरोत्तम राजा धृत-राष्ट्र चारोंओरसे गिरतेहुये हजारों हाथी घोड़े रथ और चारोंओर से मृतक हुये मनुष्यों से पृथ्वी कम्पायमान हुई और सब पाण्डवी सेना ब्याकुलहुई ५१।५२ हे नरोत्तम शत्रुओंका तपानेवाला अकेला कर्ण शत्रुओं को भस्म करताहुआ निर्धूम अग्नि के समान शोभायमान हुआ ५३ कर्ण के हाथ से घायल वह पाञ्चाल चन्देरी देशियों समेत जहां तहां ऐसे अचेत होगये जैसे कि बन के भस्महोने में हाथी अचेत होजाते हैं ५४ हे नरोत्तम वह उत्तम पुरुष ब्याघ्रों के समान पुकारे इसकेपीछे युद्धमें उन भयभीत पुकारनेवाले ५५ और चारोंओरसे दौड़नेवालों के ऐसे बड़े शब्द उत्पन्नहुये जैसे कि महाप्रलयमें जीवों के शब्द होतेहैं ५६ हे श्रेष्ठ फिर कर्ण के हाथसे घायल उन जीवों को देखकर पशु पक्षी जीवभी भयभीत होगये ५७ युद्धमें कर्णके हाथसे घायल वह संजय अर्जुन और

बासुदेवजी को बारंबार ऐसे पुकारतेथे ५८ जैसे कि यमपुरी में दुःखीजीव यमराजको पुकारतेहैं कर्णके शायकोंसे घायल होनेवालोंके शब्दोंको सुनकर ५६ कुंतीकापुत्र अर्जुन वहांपर छोड़ेहुये भार्गवास्त्रको देखकर बासुदेवजीसेबोला ६० हे महाबाहो श्रीकृष्णजी भार्गवास्त्रके पराक्रमको देखो यह अस्त्र युद्धमें कैसे नाश करनेके योग्य नहींहै ६१ हे श्रीकृष्णजी युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले पराक्रम में यमराजकेसमान क्रोधरूप कर्णको देखो ६२ यह कर्ण घोड़ोंको चलाचलाकर प्रतिपद बारंबार मुझको देखताहै मैं युद्धमें कर्णसे भागनेवाला नहीं हूँ ६३ मनुष्य युद्धमें विजय और पराजय दोनों पाताहै हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी मृतक मनुष्यकी तो पराजयही होती है विजय कैसे होसक्ती है ६४ अर्जुनके इस बचन को सुनकर श्रीकृष्णजी ने बुद्धिमानों में श्रेष्ठ अर्जुन से समय के अनुसार यह बचन कहा ६५ कि कर्ण के हाथ से राजा युधिष्ठिर अत्यन्त घायल हुआ है हे अर्जुन तुम उसको देखकर और भरोसा देकर फिर कर्णको मारोगे ६६ हे राजा ऐसा कहकर युधिष्ठिरको देखना चाहते और युद्धमें कर्णको थकावटमें पकड़ना चाहते श्रीकृष्णजी चले ६७ इसके पीछे केशवजीकी आज्ञासे अर्जुन बाणों से पीड़ामान राजा युधिष्ठिरके देखनेको रथकी सवारी के द्वारा युद्धभूमि से शीघ्रही अपने डेरोंकोगया ६८ तब चलतेहुये अर्ज्जुनने धर्मराजके दर्शनकी अभिलाषा से सेनाको देखा और उसमें अपने बड़ेभाई को नहीं देखा ६९ हे भरतबंशी वह अर्ज्जुन अश्वत्थामा से युद्धकरके और उस बज्रधारी इन्द्रसे भी न रुकनेवाले अपने गुरूके पुत्रको पराजय करके चलदिया ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे उग्रधनुषधारी शत्रुओं से अजेय अर्ज्जुन ने अश्वत्थामाको पराजय कर बड़े कठिन शूरों के कर्मों को करके फिर अपनी सेना को देखा १ महात्मा अर्ज्जुन शूरों के साथ युद्ध न करनेवाली सेना के मुखपर नियत शूरबीरोंको प्रसन्नकरता और पहले प्रहारों से घायल और नियतहुये बहुत रथियोंकी प्रशंसा करताहुआ २ और अजमीढ़बंशी अपने भाई युधिष्ठिरको न देखकर भीमसेन के पास जाकर यह बचन बोला कि राजा कहां हैं और किस

रीति से उसने युद्ध किया ३ भीमसेन ने कहा कि कर्ण के बाणों से पीड़ामान धर्मपुत्र युधिष्ठिर यहां से हटगयाहै और किसीप्रकारसे जीवता है ४ अर्ज्जुन ने कहा कि हे भीमसेन आप शीघ्रतासे उस कौरवों में श्रेष्ठ राजाकी खबर लेनेको यहांसे चलो निश्चय करके वह राजा युधिष्ठिर कर्ण के बाणों से अत्यन्त घायल होकर अपने डेरे को गया है ५ द्रोणाचार्य्य के तीक्ष्णधार बाणों के प्रहारों से अत्यन्त घायल होकर भी वेगवान् राजा युधिष्ठिर बिजय की अभिलाषा करके जबतक वहां नियत नहीं हुआथा तबतक द्रोणाचार्यजी भी नहीं मरे थे ६ वह महानुभाव बड़ा पाण्डव अब युद्धमें कर्ण के हाथसे संशय संयुक्त हुआहै हे भीमसेन अब तुम बड़ी शीघ्रतासे उनके निश्चय करनेको जाओ और मैं शत्रुओं को रोककर नियतहूंगा ७ भीमसेन बोले हे महानुभाव तुम भी उस भरतर्षभ युधिष्ठिर के वृत्तान्तको जानोहो और हे अर्ज्जुन जो मैं यहांसे चलाजाऊंगा तो बड़े शूरबीर शत्रु मुझको अपने से भयभीतहुआ कहेंगे ८ तब अर्जुनने भीमसेनसे कहा कि संसप्तक मेरी सेनाके सन्मुख नियतहैं अब उनको बिनामारे इन शत्रु समूहों के स्थानसे जाना योग्य नहीं है ९ हे कौरवों में बड़े बीर तब भीमसेन अपने पराक्रमको पाकर अर्ज्जुन से बोले कि मैं संसप्तकों के सन्मुख युद्ध करने को जाऊंगा हे अर्जुन तुम चलेजाओ १० शत्रुओं के मध्यमें भाई भीमसेन के कठिनतासे होने के योग्य इस बचन को कि हे अर्जुन मैं अकेला बड़ी कठिनता से विजय होनेवाले महा असहनशील संसप्तकों की सेना को रोकूंगा सुनकर ११ महापराक्रमी सत्यवक्ता बानरध्वज अर्ज्जुन महात्मा कौरवों में श्रेष्ठ सत्य पराक्रमी भाई युधिष्ठिर के देखने को चलनेवाला होकर उन वृष्णिबंशियों में श्रेष्ठ श्रीनारायणजी से बोला कि हे इन्द्रियों के स्वामी इस समुद्ररूप सेनाको त्यागकर घोड़ोंको चलाइये हे केशवजी अजात शत्रु राजा युधिष्ठिरको मैं देखना चाहताहूं १२।१३ संजय बोला कि तदनन्तर घोड़ोंको चलायमान करतेहुये सब यादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी भीमसेनसे यहबात बोले कि हे भीमसेन अब यहतेरा कर्म कुछ अपूर्व नहीं है मैं जाताहूं तुम बाणों के समूहों से शत्रुओं के समूहोंको मारो १४ हे राजा इसके पीछे श्रीकृष्णजी गरुड़के समान शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा बड़ीशीघ्रतासे जहां राजायुधिष्ठिरथा १५ वहांगये हे राजेंद्र उस शत्रुबिजयी भीमसेनको युद्धके बिषयमें समझाकर सेनाके सन्मुख नियतकरके १६ फिर

पुरुषों में बड़े वीर दोनों श्रीकृष्ण अर्जुन युधिष्ठिर के समीप गये और वहां अकेलेही सोतेहुये राजा को पाकर दोनोंने रथसे उतरकर धर्मराज के चरणोंको नमस्कार किया श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन उस पुरुषोत्तमको कुशलपूर्ब्बक देखकर ऐसे प्रसन्न हुये जैसे कि इन्द्रको देखकर अश्विनीकुमार प्रसन्न होते हैं १७।१८ फिर राजा ने भी उनको ऐसा प्रसन्न किया जैसे कि इन्द्र अश्विनीकुमारों को और जैसे महाअसुर जम्भ के मरने पर बृहस्पतिजी ने इन्द्र और विष्णु को कियाथा १९ संजय बोले कि इसके पीछे शत्रुसन्तापी राजा युधिष्ठिर कर्ण को मृतक मानताहुआ बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक बाणों से भिदेहुये रुधिरसे लिप्तशरीर महाप्रतापी लालनेत्रवाले उन बड़े पराक्रमी साथआनेवाले अर्ज्जुन और केशवजीको देखकर युद्धमें गांडीव धनुषधारीके हाथसे कर्णको मृतकमाना२०।२२ हे भरतर्षभ मन्द मुसकान पूर्व्वक दोनोंकी प्रशंसा करते युधिष्ठिर ने उन शत्रुसंहारी श्रीकृष्ण अर्ज्जुनको बड़ी मृदुता और मिष्टबाणी से प्रसन्न किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेषट्षष्ठितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीकृष्णजी आपका आगमन शुभकारीहो तुमदोनों श्रीकृष्णजी और अर्ज्जुनका दर्शन मुझको अत्यन्त अपूर्व्व है १ अक्षत और निर्बिघ्न आप दोनोंके हाथोंसे वह महारथी कर्ण मारागयाही जानो जो युद्धमें विषधर सर्प की समान सब शस्त्रों में कुशल २ धृतराष्ट्र के पुत्रों का सहायक और सब कौरवी सेनाका रक्षक और वृद्धिकर्त्ता धनुषधारी वृषेण वा सुषेण से रक्षित श्री परशुरामजी से अस्त्रों का सीखनेवाला बड़ा पराक्रमी दुर्जय संसार में अद्वितीय महारथी धृतराष्ट्रके पुत्रोंका रक्षक सेनाके मुखपर जानेवाले शत्रुओं का मारनेवाला वा मर्दन करनेवाला है ३।५ दुर्योधन के हितमें युक्त हमारे पीड़ादेने के निमित्त युद्धमें देवताओं समेत इन्द्रसेभी अजेय तेजबलमें अग्नि बायुके समान पातालके समान गम्भीर मित्रोंकी प्रसन्नताका बढ़ानेवालाहै ६।७ उस मेरे मित्रोंके मारनेवाले कर्णको युद्धमेंमारकर प्रारब्धसे तुम दोनों ऐसेआये हो जैसे कि असुरको मारकर दो देवता आते हैं ८ सब सृष्टिके मारने के अभिलाषी यमराजके समान अपनेको बड़ामाननेवाले उस कर्णने हे श्रीकृष्ण और

अर्ज्जुन मेरे साथ बड़ाघोरयुद्ध किया ६ उसने मेरी ध्वजा काटकर दोनों आगे पीछेवाले सारथियोंको भी मारा तदनन्तर मैं सात्विकी के देखतेहुये मृतकघोड़े वालाहोगया १० धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव वीर शिखण्डी वा द्रौपदी के पुत्र और सब पांचालों के देखते हुये उसने ऐसा कर्म किया ११ हे महाबाहो उस उपाय करनेवाले महापराक्रमी कर्णने शत्रुओं के बहुतसे समूहों को मारकर मुझको विजयकिया १२ हे शूरोंमें श्रेष्ठ अर्ज्जुन उस कर्णने जहांतहां मुझको पराजय को करके निस्सन्देह पूर्व्वक बहुतकठोर असभ्य बचन कहे १३ हे अर्ज्जुन मैं भीमसेन के प्रभावसे अबतक जीवताहूं बहुतसी बातों के कहनेसे क्या प्रयोजन है मैं उस कर्णको अबनहीं सहसक्ताहूं १४ हे अर्ज्जुन मैंने तेरह बर्षतक जिससे भयभीत होकर न रात्रिको निद्राली न दिनको कहीं सुखचैनपाया १५ हे अर्जुन उसकी शत्रुतासे युक्त होकर भस्म होरहाहूं और अपने मरणको प्राप्त होकर वाध्रीनस मेढ़ेकेसमान भागाहूं १६ बहुतकालसे मुझचिन्तासे युक्त होनेवालेका अब यहसमय वर्त्तमानहुआहै वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथसे कैसे पराजय होनेको योग्य होय १७ हे अर्जुन मैं जागते सोते उठते बैठते चलते फिरते जहांतहां हर-समय कर्णहीको देखताहूं अर्थात् सब संसार मुझको कर्णहीरूप दीखताहै १८ हे अर्ज्जुन मैं कर्णसे ऐसा भयभीत होरहाहूं कि जहांजहां जाताहूं वहां वहा कर्ण कोही नियत देखताहूं १६ हे श्रीकृष्ण अर्ज्जुन उस युद्धसे कभी न हटनेवाले वीर कर्णने मुझको घोड़े और रथ समेत विजय करके जीवता त्यागकियाहै २० अब मुझ कर्ण के हाथसे पराजय पानेवालेका इस संसार में जीवना ब्यर्थहै २१ पूर्व्वमें भीष्मजी द्रोणाचार्य्य वा कृपाचार्य्य से भी ऐसा दुःख मैंने नहीं पायाथा जैसा कि अबयुद्ध में इसमहारथी कर्णसे पायाहै २२ हे अर्ज्जुन अबमैं तुझसे यह पूछताहूं कि किसरीति से निर्विघ्नता पूर्बक तेरे हाथसे कर्ण मारागया उस सब वृत्तान्तको यथावस्थित ब्यौरे समेत मुझसे वर्णन करो २३ पराक्रम में यमराज और पुरुषार्थमें इंद्रकेसमान और अस्त्रोंमें परशुरामजीके समान वह कर्ण युद्धमें कैसे मारागया २४ महारथी और सबयुद्धोंमेंकुशल धनुर्द्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ और सब में अकेला पुरुषार्थी २५ वह कर्ण तेरेही निमित्त पुत्रों समेत धृतराष्ट्र से स्तुति कियागयाथा वह तेरे हाथसे कैसे मारागया २६ हे पुरुषोत्तम अर्ज्जुन वह दुर्योधन सदैव सब शूरों के मध्य में कर्णही को तेरा मारनेवाला मानताथा

वह कर्ण तेरे हाथ से कैसे मारागया २७ । २८ और तुमने उसके शुभचिन्तकों के देखते हुये उस युद्ध करनेवाले का शिर ऐसे काटडाला जैसे कि रुरु नाम मृग का शिर सिंह काटता है २९ छः हाथी दान करने का इच्छावान् युद्ध में तुझ को चाहनेवाले जिस कर्ण ने दिशा और विदिशाओं को सेवन किया वह दुरात्मा कर्ण क्या अब तेरे अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों से ३० युद्ध में मरा-हुआ पृथ्वी पर सोताहै युद्ध में तैंने कर्ण को मारकर मेरा बड़ा भारी अभीष्ट किया ३१ जो कर्ण सदैव पूजित और अहंकारयुक्त होकर तेरे निमित्त सबओर को दौड़ा वह अपने को शूर माननेवाला तुझको युद्धमें पाकर अब क्या मारा गया ३२ हे तात जो कि तेरे निमित्त हाथी घोड़ों समेत उत्तम सुनहरी रथोंको दूसरे लोगों को देने की इच्छा कररहाथा और सदैव युद्ध में ईर्षा करनेवालाथा वह पापात्मा क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारागया ३३ जो बल पुरुषार्थ में दुर्मद सदैव कौरवों की सभा में निरर्थक बार्त्तालाप करताथा और उस दुर्य्योधन का अत्यन्त प्रियथा अब वह दुष्टात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ३४ सन्मुख होकर तेरे चलाये हुये रुक्मांगवाले आकाशचारी बाणों से शरीर में अत्यन्त घायलथा वह पापीकर्ण क्या अब सोताहै दुर्य्योधन की भुजा ढीली और निर्बल हुई ३५ जो यह कर्ण अपने अज्ञान से राजाओं के मध्य में दुर्योधन को प्रसन्न करता हुआ अहंकार में भराहुआ सदैव अपनी यह प्रशंसा करताथा कि मैं अर्ज्जुन का मारनेवालाहूं क्या उसका वह बचन ठीक नहीं हुआ ३६ कि मैं तबतक कभी पदाती रूप से नहीं दौडूंगा जबतक कि अर्ज्जुन नियत होकर बर्त्तमानहै उस निर्बुद्धी का सदैव यही व्रतथा हे इन्द्रके पुत्र अर्ज्जुन वह कर्ण क्या अब तेरे हाथसे मारागया ३७ जिस दुष्टबुद्धी कर्ण ने सभा में कौरवी वीरों के मध्य में द्रौपदी से यह कहाथा कि हे कृष्णा तू इन अत्यन्त निर्बल और नाशयुक्त पुरुषार्थ रहित पांडवोंको क्योंनहीं त्यागकरती है ३८ और उसी कर्ण ने तेरे विषय में प्रतिज्ञा करीथी कि मैं श्रीकृष्ण समेत अर्ज्जुन को बिना मारेहुये यहां नहीं आऊंगा वह पापबुद्धी तेरे बाणोंसे घायलहुआ अब क्या सोरहाहै ३९ सृञ्जियों और कौरवों के इस युद्धको क्या तुम जानतेहो जिस में कि मेरी यहदशा होगई है अब वह दुरात्मा क्या तेरे हाथसे मारागया ४० हे अर्जुन तुमने युद्धमें अपने गाण्डीव धनुष से छोड़ेहुये अग्निरूप बाणों से उस अत्यन्त निर्बुद्धी कर्ण

का कुण्डलों समेत देदीप्यमान शिर क्या शरीरसे काटडाला है ४१ हे वीर जो मुझ बाणों से घायल ने तुमको कर्ण के मारने के निमित्त ध्यान कियाहै अब तुमने कर्ण के मारने से क्या वह मेरा ध्यान सफल किया ४२ जो दुर्य्योधन कर्ण के आश्रित होकर हमको देखता है अब तुमने उस दुर्य्योधन के रक्षक को क्या पराजय किया ४३ पूर्व्व समय में जिसने सभा के मध्यवर्त्ती होकर कौरवों के सन्मुख हमको थोथेतिल और नपुंसक कहा वह दुर्बुद्धी और क्रोधसे भरा हुआ कर्ण सन्मुख होकर क्या युद्ध में तेरे हाथ से मारा गया ४४ पूर्व्वकाल में जिस हँसते हुये दुरात्मा कर्ण ने शकुनी से जीती हुई द्रौपदी को बड़ी हठता से कहाथा कि इस द्रौपदीको यहां लावो वह कर्ण क्या अब तेरे हाथसे मारागया ४५ और जिस निर्बुद्धी ने विख्यात शस्त्रधारी महात्मा पितामहकी निन्दा करी हे अर्जुन वह अर्द्धरथी क्या तेरे हाथसे अब मारागया ४६ हे अर्जुन अब तुम इसबातको कहकर कि वह कर्ण युद्धमें मेरे हाथसे मारागयाहै मेरे हृदयकी जलती हुई अग्नि को बुझावो क्योंकि वह अग्नि अमर्ष जनित वायु से प्रेरित मेरे हृदय में प्रदीप्त होकर सदैव नियत रहती है ४७ सो हे अर्जुन तेरे हाथ से कर्ण कैसे मारागया है उस मेरे दुष्प्राप्य मनोरथ को वर्णन करो हे बड़े वीर मैं तुझको सदैव ऐसे ध्यान करता हूं जैसे कि वृत्रासुर के मरने पर भगवान् इन्द्र ध्यान किये गयेथे ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्रसंहितायांवय्यासिक्यांकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरवाक्येसप्तषष्टितमोऽध्यायः६७॥

अड़सठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह अत्यन्त पराक्रमी महात्मा अतिरथी अर्जुन उस क्रोध युक्त धर्म के अभ्यासी राजाके उस वचन को सुनकर उस निर्भय और महापराक्रमी युधिष्ठिरसे बोला १ हे राजा अबकौरवीसेनामें आगे चलनेवाला अश्वत्थामा विषैले सर्परूप बाणों को छोड़ता मुझ संसप्तकों से भिड़े हुये के सन्मुख आकर अकस्मात् नियत हुआ २ हे श्रेष्ठ वह अश्वत्थामा बादल के समान शब्दायमान मेरे रथको देखकर सबसेनाके मध्यमें आकर नियतहुआ तब मैंने उसके पांचसौ वीरों को मारकर फिर अश्वत्थामा को पाया हे महाराज वह बड़ा सावधान मुझको पाकर ऐसे मेरे सन्मुख हुआ जैसे कि सिंह के सन्मुख गजराज आताहै

हे महाराज उसने मरनेवाले कौरवी रथों के बचाने का उपाय किया ३। ४ तदनन्तर दुःख से कंपायमान कौरवोंके अत्यन्त श्रेष्ठ शूरवीर उस आचार्य्यके पुत्रने युद्धमें श्वेतरंगवाले कुछ कम बिष और अग्नि के समान बाणों से श्रीकृष्णजी समेत मुझको अत्यन्त पीड़ामान किया ५ उस मुझसे लड़नेवाले अश्वत्थामा के बाणों को आठ बैल रखनेवाले आठसौ छकड़े लेचलते हैं मैंने उसके छोड़ेहुये उन बाणों को अपने बाणों सेही ऐसे नाश करदिया जैसे कि बादलों के जाल समूहों को बायु नाश करदेती है इसके पीछे सुशिक्षित अस्त्रोंके बलसे बड़े प्रयास से कर्ण पर्य्यंत खैंचे हुये अनेक बाण समूहों को ऐसे छोड़ताहुआ जैसे कि वर्षा ऋतुमें कालमेघ नाम बादल जलको बरसाताहै ६। ७ हमने उस बाणलेते और चढ़ाते हुये को नहीं जाना कि वह बायें हाथ से वा दक्षिण हाथ से बाणों को फेंकताहै वह अश्वत्थामा युद्धमें सन्मुख बर्त्तमान हुआ ८ जिस अश्वत्थामाका प्रत्यंचासे युक्त धनुष मंडल के समान दिखाई देताथा उस अश्वत्थामा ने पांच बाणों से मुझको और पांचही बाणों से बासुदेवजी को छेदा ९ तबतो मैंने एक पलमात्रमेंही बज्रके समान तीसबाणों से उसको पीड़ामान किया फिर मेरे पृषत्क नाम बाणों से पीड़ित होकर वह अश्वत्थामा क्षणमेंही स्त्रावित के समान रूपवाला होगया १० सब अंगों से रुधिर को डालता हुआ वह अश्वत्थामा मुझसे पराजित होकर सेनाके बड़े २ श्रेष्ठ मनुष्यों को अपने रुधिर भरेहुये शरीर से देखता हुआ कर्ण के रथों की सेनामेंचलागया ११ उसके पीछे मारनेवाला कर्ण युद्धमें अपनी सेना को भयभीत और हाथी घोड़े और रथों को भगाता हुआ देखकर पचास उत्तम रथियों को साथमें लियेहुये बड़ी शीघ्रता करता हुआ मेरे सन्मुख आया १२ मैं उनको मारकर युद्धका भार भीमसेन के सिपुर्द कर और कर्ण को छोड़करके आपके देखने को बड़े वेग से शीघ्रता करके आयाहूं सब पांचाल लोग कर्ण को देखकर ऐसे भयभीत हुये जैसे कि केशरी सिंहको देखकर गौवें भयभीत होतीहैं १३ हे राजा प्रभद्रक नाम क्षत्री मृत्यु के फैले हुये मुखको प्राप्तकरके और कर्ण को पाकर युद्ध करनेवालेहुये तब कर्णने मृत्युरूपी नदीमें डूबेहुये उन सातसौ रथियों को मृत्युलोक में भेजा १४ हे राजा वह कर्णभी तबतक चित्त से पीड़ामान और क्लांत चित्तहीरहा जबतक कि उसने हमलोगों को नहींदेखा फिर तुमको उससे भिड़ाहुआ और अश्वत्थामा से पहिले बहुत

घायलहुआ सुनकर १५ मैं कर्ण से हटजानेका आपका समय मानताहूं हे ध्यान से बीरोंके कर्म करनेवाले राजायुधिष्ठिर मैंने पूर्व्वही कर्णका यह अपूर्वरूपवाला अस्त्र देखा १६ सृञ्जियों में कोई ऐसा शूरवीर नहीं बर्त्तमान है जो अब उस महारथी कर्णका सामना करसके हे राजा मेरी सेनाका रक्षक धृष्टद्युम्न, सात्विकी १७ और युधामन्यु, उत्तमौजस यह दोनों राजकुमार भी पीछेकी ओरसे मेरी रक्षा करें हे महानुभाव मैं कठिनतासे पारहोने के योग्य महाबीर और रक्षापूर्वक शत्रुकी सेना में बर्त्तमान उस सूतपुत्र कर्ण से अपने सहायकों समेत सन्मुख होकर युद्ध में ऐसे युद्ध करूंगा जैसे कि बज्रधारी अपने बज्रसे युद्धकरताहै हे राजाओं में श्रेष्ठ भरतबंशी अब जो वह इस युद्धमें दिखाईदेताहै १८।१६ उस सूतपुत्रका और मेरा युद्ध जयके निमित्त आप ऐसे देखोगे जैसे कि नन्दी के मुखके आश्रयी प्रभद्रक कर्ण के सन्मुख जाते हैं २० हे भरतबंशी वह राजकुमार बांधे मारे और युद्धमें सबलोक के अर्थ डूबे इस से हे राजा अब जो मैं हठकरके बांधवों सहित उस लड़नेवाले कर्णको नहीं मारूँ तो प्रतिज्ञाके न करनेवालेकी जो घोरगतिहै उसको मैं पाऊँ मैं आपसे पूँछताहूँ आप युद्ध में मेरी बिजयको कहिये और मेरे आगे २ भीमसेन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको ग्रसे २१।२२ तब हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं कर्ण समेत सेनाको और शत्रुओं के सब समूहों को मारूँगा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनप्रतिज्ञायांअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि बड़ातेजस्वी कर्ण के बाणों से पीड़ामान युधिष्ठिर कर्णको समर्थ और बड़ापराक्रमी सुनकर अर्जुनसे महाक्रोधयुक्तहोकर यहबचन कहनेलगा १ कि हे भाई तेरी सेना भागी और जैसी रीतिसे अब पराजितहुई वह श्रेष्ठ नहींहै तुम कर्ण के मारनेको समर्थ नहीं होसकेहो इसीहेतुसे तुम भीमसेनको वहां छोड़कर भयभीतहोकर यहां चले आयेहो २ हे अर्जुन तुमने कुंतीके गर्भ से उत्पन्नहोकर जैसी प्रीतिकरी वह श्रेष्ठ नहीं है कि कर्ण के मारने में समर्थ न होकर भीमसेनको त्यागकरके हटआया ३ द्वैतबनमें जो तुमने सत्यप्रतिज्ञा करीथी कि मैं एकरथसे कर्णको मारूँगा उस बचनको कहकर अब कैसे कर्णसे भयभीत होकर भीमसेनको छोड़कर हटआयाहै ४ जो तू द्वैतबनहीमें यह कहदेता कि हे राजा

में कर्ण से लड़नेको समर्थ न होऊँगा तो हे अर्जुन हम अपने समयके अनुसार सब कामों को करते ५ हे वीर तैंने मेरे साम्हने उसके मारने की प्रतिज्ञा करके उस प्रतिज्ञाको पूरा नहीं किया उसी प्रतिज्ञाने हमसबको शत्रुओं के मध्य में लाकर युद्धभूमिरूपी शिलापर छोड़कर किसहेतु से पीसा है ६ इसके विशेष हे अर्जुन बन जाने के अभिलाषी हमलोगों ने तेरे बिषय में बिश्वास करके बहुतसे अपने अभिमत कल्याणोंकी आशाकरीथी हे राजपुत्र हम सबफल चाहनेवालोंकी वह सब आशा ऐसे निष्फल होगई जैसे कि बहुतसे फलरखनेवाला वृक्ष निष्फल होय ७ अथवा जैसे कि मांससे ढकीहुई बंशी और भोजनसे ढकाहुआ बिष होताहै इसीप्रकार तुमने भी मुझ राज्याभिलाषी के नाशके अर्थ राज्यरूपी अनर्थ को दिखलाया है ८ हे अर्जुन हम उन तेरह बर्षों तक सदैव आशाकरके तेरेहीपीछे ऐसे जीवतेरहे जैसे कि बोयाहुआबीज समयपर देवता इन्द्रकी कृपासे बर्षाकी आशाकरताहै सो तुमने हमसबको नरकमें डुबाया ९ तुझ निर्बुद्धी के उत्पन्न होनेके सातदिन पीछे अन्तरिक्षसे यह आकाशबाणी हुईथी कि यहपुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी उत्पन्नहुआहै यह शत्रुरूप शूरवीर मनुष्यों को बिजय करेगा १० और मद्र कलिंग और केकयदेशियोंको भी बिजयकरके राजाओंके मध्यमें सबकौरवोंको मारेगा ११ इससे उत्तम कोई धनुषधारी नहीं होगा कोई जीवधारी इसको कभी बिजय नहीं करसकेगा यह जितेंद्री और सबविद्याओं में पूर्ण होकर अपनी इच्छा से सब जीवमात्रों को अपने आधीन करेगा १२ हे कुन्ती यह तेरापुत्र कांति और शोभामें चन्द्रमाके समान तीव्रता और शीघ्रतामें बायुके सदृश और स्थिरतामें मेरु पर्व्वतके समान क्षमा करने में पृथ्वी के तुल्य तेजमें सूर्यके समान लक्ष्मी में कुबेरके शूरतामें इन्द्रके पराक्रममें विष्णुके समान यह महात्मा ऐसा उत्पन्न हुआ है १३ जैसे कि शत्रुओं के मारनेवाले दिति के पुत्र विष्णुजी अपने लोगों के विजय और शत्रुओं के मारने के निमित्त सब जगत् में बिख्यात महातेजस्वी धनुष चलानेवाले उत्पन्नहुये हैं १४ शतशृंगके मस्तकपर अन्तरिक्ष में यह सब तपस्वी लोगों के सुनते हुये आकाशबाणी ने कहाहै सो वह जैसा कहाथा वैसा नहीं हुआ इससे निश्चय करके देवताभी मिथ्या बोलतेहैं १५ और इसीप्रकार सदैव तेरी प्रशंसा करनेवाले अन्य अन्य उत्तम ऋषियों के बचनों को सुनकर दुर्य्योधनके शिष्टाचार को अंगीकार नहीं

करताहूं और कर्ण के भयसे पीड़ामान तुझको नहीं जानताहूं १६ हे अर्ज्जुन त्वष्टा देवता के बनाये हुये निश्शब्द पहियेवाले हनुमान्‌जी की ध्वजा रखने वाले उस शुभरथ पर सवार होकर और स्वर्णमयी बेष्टन से अलंकृत खड्गको और ताल वृक्षके समान इस गांडीवधनुषको लेकर १७ केशवजी के साथ रथपर सवार होकर तुम कर्णसे भयभीत होकर कैसे हटआये अब उस धनुषको केशव जीको दो और तुम युद्धमें केशवजी के सारथी बनो १८ तब केशवजी उस उग्र कर्णको ऐसे मारेंगे जैसे कि बज्रधारी इन्द्रने वृत्रासुरको माराहै जो तू अब इस घूमनेवाले उग्रकर्णके मारनेमें समर्थ नहीं है १९ तो जो राजा अस्त्रविद्यामें तुझसे अधिकहो उसको यह गाण्डीव धनुष देदो हे पाण्डव अब यह लोकपुत्र स्त्रियोंसे रहित और राज्यके नाशकरनेके हेतुसे आनन्द और कुशलतासे रहित हमलोगों को २० उस पापियों से सेवित अगाध और घोर नरक में पड़ाहुआ देखेगा जो तू कुन्तीके गर्भमें न पैदाहोता तो इस दुःखमें काहेको पड़ता २१ हे राजपुत्र निर्बुद्धी वहीं तेरा कल्याण होजाता जो तू युद्ध से हटकर न आता गाण्डीव धनुषको और तेरे भुजबलको २२ धिक्कारहै और तेरे असंख्य बाणों को भी धिक्कारहै और हनुमान्‌रूप धारण करनेवाली तेरी ध्वजाको भी धिक्कार और अग्नि के दियेहुये तेरे रथ को धिक्कारहै २३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णप्रतियुधिष्ठिरक्रोधवाक्येएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९॥

सत्तरवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि हे भरतर्षभ युधिष्ठिर के इन बाणरूप निन्दित वाक्यों को सुनकर महाक्रोधरूप होकर कुन्ती के पुत्र अर्जुनने मारनेकी इच्छा करके हाथमें खड्गको लिया १ तब अन्तर्य्यामी सब के मनके जाननेवाले श्रीकृष्णजी ने उसके क्रोधको देखकर कहा कि हे अर्ज्जुन यह क्या बातहै जो तैंने खड्गको हाथमें लिया २ हे अर्ज्जुन तुझसे लड़ने के योग्य मैं किसी को नहीं देखताहूं बुद्धिमान् भीमसेन ने उन धृतराष्ट्र के पुत्रोंको घेरलियाहै ३ वह राजा देखने के योग्यहै इसहेतु से हटआयाहै हे अर्ज्जुन उस राजाको तुमने कुशल पूर्व्वक देखा ४ सो तुम उस राजाओं में श्रेष्ठ शार्दूलके समान पराक्रमी अपनेभाई राजा युधिष्ठिरको देखकर और प्रसन्नताका समय बर्त्तमान होनेपर जो भूलसे यहकर्म

होगया तो क्या हुआ ५ हे कुन्ती के पुत्र मैं ऐसा किसी को नहीं देखताहूं जो तुझको मारने के योग्यहोय किस हेतु से तू प्रहारकरना चाहताहै तेरे चित्तकी भ्रान्ति क्याहै ६ तुम किस कारण शीघ्रतासे बड़े खड्ग को पकड़तेहो हे कुन्ती के पुत्र अब में तुझ से पूछताहूं कि तेरी कौनसे कर्म्म करने की इच्छाहै ७ जो महाक्रोधित होकर इस बड़ेभारी खड्गको पकड़ताहै फिर श्रीकृष्णजी के बचनों को सुनकर युधिष्ठिरको देखताहुआ ८ सर्प के समान श्वासलेता क्रोध युक्त होकर अर्ज्जुन श्रीगोबिन्दजी से बोला कि आप इस गाण्डीव धनुष को किसी दूसरे को देदो जो मुझको इस रीतिसे प्रेरणा करे मैं उसके शिरको काटूंगा ९ यह मेरा अपांशुव्रतहै अर्थात् गुप्तव्रत है हे अतुलबल पराक्रमवाले गोबिन्दजी जैसा कि इस राजाने आपके सन्मुख मुझसे कहा १० उसके सहने को मैं उत्साह नहीं करसक्ताहूं इस हेतुसे उस धर्म्म से भयभीत राजाको मारूंगा ११ इस नरोत्तम को मारकर अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा हे यदुनन्दन मैंने इसी निमित्त खड्गको पकड़ाहै १२ हे जनार्द्दनजी सो मैं युधिष्ठिरको मारकर सत्यसंकल्प होकर शोक और ज्वरसे निवृत्त होऊंगा १३ अथवा ऐसे समयके बर्त्तमान होनेपर आप क्या उचित आज्ञा देते हैं जिसको मैं योग्य समझ कर करूं १४ मैं आपकी जो आज्ञा होगी उसीको करूंगा संजय बोले कि इस बातको सुनकर गोबिन्दजी ने बड़ी धिक्कारियां देकर अर्जुन से कहा १५ हे अर्ज्जुन मैं निश्चय जानताहूं कि तुमने वृद्धलोगों का सेवन नहीं कियाहै पुरुषोत्तम जो तुम को क्रोधहुआ है यह क्रोध समय के समान नहीं है १६ हे अर्ज्जुन धर्म्म के प्रकारों का ज्ञातापुरुष ऐसा नहीं करसक्ताहै जैसे कि अब यहां तुम धर्म्म से भयभीतहोकर निर्बुद्धी से होरहेहो १७ जो मनुष्य करने के अयोग्य कर्मों को और योग्य कर्मों को एककरताहै हे अर्जुन वह अधमपुरुष कहाजाताहै १८ पण्डित लोग जिस धर्मपर आरूढ़ होकर ईश्वर का उपस्थान करते हैं उसी के अनुसार इतरलोग भी आचरण करते हैं १९ हे अर्जुन योग्यायोग्य कर्मों के निश्चय में दृढ़ता रखनेवाला मनुष्य बिबशहोकर ऐसाही अज्ञानी होजाताहै जैसे कि तुम होगयेहो २० उचित और अनुचित कर्म किसीप्रकारसे भी आनन्द पूर्व्वक जानने के अयोग्य नहींहै यह सब शास्त्र कहते हैं तुम उसका बिचार नहीं करतेहो २१ तुम पूरे बुद्धिमान् नहींहो जिस बुद्धिके द्वारा धर्मज्ञ होकर धर्मकी रक्षा क-

रताहै हेअर्जुन जो धर्मके अभ्यासी होकर भी पाप पुण्यकारी कर्म नहीं जानते हो २२ हे तात जीवों का न मारनाही उत्तम धर्महै यह मेरा मतहै चाहै मिथ्या वचन किसी समय कहदे परन्तु हिंसा कभी न करे २३ सो हे नरोत्तम तुम इस धर्ममें पण्डित होकर अपने बड़े भाई राजा युधिष्ठिर को कैसे मारने को प्रवृत्तहो जैसे कि कोई साधारण मनुष्य होताहै २४ हे प्रशंसा देनेवाले सुन कि युद्ध न करनेवाले वा युद्धसे मुखमोड़नेवाले वा भागनेवाले और घरमें आश्रय लेनेवाले शत्रु अथवा हाथ जोड़नेवाले वा शरणागत और मदोन्मत्तों के मारनेको उत्तम लोग नहीं प्रशंसा करते हैं वह सब गुण तेरे गुरुरूप बड़ेभाई युधिष्ठिर में हैं २५। २६ हे अर्जुन पूर्वसमय में तुमने बाल्यावस्था से ऐसा व्रत कियाथा इसी हेतुसे अपनी अज्ञानता करके अधर्म युक्त कर्म को निश्चय करते हो २७ हे अर्जुन धर्मोंकी कठिनतासे मिलनेवाली सूक्ष्मगति को अच्छे प्रकारसे धारण न करके तू किसहेतु से अपने गूरुरूप बड़े के मारने की इच्छासे दौड़ताहै २८ हे पांडव धर्मकी इस गुप्तवार्त्ता को भीष्मजी के अथवा पांडव युधिष्ठिर के द्वारा मैं तुझसे कहूंगा २९ वा विदुरजी और यशस्विनी कुन्ती तुमसे कहैगी हे अर्जुन इसको मैं मूल समेत कहूंगा तुम चित्तसे सुनना सत्य बोलनेवाला साधुहै ३० गृहस्थाश्रमी से कोई आश्रमी श्रेष्ठ नहीं है बड़े दुःख से जानने के योग्य अभ्यास करी हुई सत्यता को मूल समेत देखो ३१ सत्यता कहने के योग्यनहीं होतीहै अर्थात् सत्यतामें कोई दोषनहीं कहसक्ता परन्तु जब सत्यता में मिथ्यापन होता है तब वह सत्यता भी मिथ्या कहनेकेयोग्य होतीहै ३२ अर्थात् किसी किसी स्थानपर सत्यता से अधर्म भी होताहै जैसे कि विवाहके समय वा विषयभोग करने के समय वा प्राणोंके नाशमें वा सबधन के चोरीहोने में और ब्राह्मण के मनोरथ सिद्ध होने में मिथ्या बोलना इन पांचों स्थानों में मिथ्या बोलने का कोई पाप नहीं होताहै ३३ सबधनके चुरायेजाने में मिथ्याबोलना योग्यहोताहै ऐसे स्थान में सत्य भी मिथ्या होताहै ३४ बुद्धिमान् सावधान पुरुष इस रीति से देखताहै अभ्यास करीहुई सत्यताको देखो कि सत्यता दोषलगाने के योग्यनहीं है और अभ्यास करीहुई कहने के योग्य नहीं प्रथम सत्य और मिथ्याको अच्छीरीति से जानकर निश्चय धर्म का ज्ञाताहोता है ३५ क्या अद्भुत कर्म देखने में आताहै कि बड़ाज्ञानी वा बड़ा भयकारी मनुष्य भी बहुत बड़े पुण्य को ऐसे प्राप्त करता

है ३६ जैसे कि बलाक नाम बधिकने व्याघ्र के मारडालने से पुण्यप्राप्त किया फिर क्या आश्चर्य्य है कि अज्ञानी और मूर्ख धर्म का अभिलाषी पुरुष बहुत बड़े पापको प्राप्तकरे जैसे कि नदियों के समीप कौशिकने प्राप्तकियाथा ३७ अर्जुन बोले हे श्रीकृष्णजी इस बलाकनदी और कौशिक संबंधी कथाको ऐसे बिचार से कहिये जिस में मैं समझूं ३८ बासुदेवजी बोले हे भरतबंशी पूर्व्व समय में बलाकनाम एक बधिक हुआ वह सदैव अपने स्त्री पुत्रादिकोंको पोषणके अर्थ मृगों को माराकरताथा अपनी इच्छासे नहीं मारताथा अपने वृद्ध माता पिता और अन्य आश्रित लोगों की पालना करताथा ३९ और अपने धर्म में प्रीतिवान् होकर सत्यवक्ता और किसीके गुण में दोषनहीं लगाताथा एक समय उस मृगाकांक्षीको कोई मृग नहीं मिला तब बहुत खोज करते२ एक जल पीताहुआ नाकही जिसकी नेत्र रूप थी ४० ऐसे श्वापद व्याघ्र को उसने देखा ऐसे रूप का जीव उसने पहले नहीं देखाथा इसी हेतुसे उसकोभी अपूर्वदर्शन जानकर मारा उस अन्धे श्वापद के मारने पर आकाश से पुष्पों की बर्षा हुई ४१ और उत्तम गीत बाद्योंसमेत अप्सरा नाचीं और उस बधिकके लेजानेके लिये स्वर्ग से बिमानआया ४२ हे अर्जुन निश्चय करके उस श्वापदजीव ने सब जीवों के नाशके लिये तपस्याकरके बरदानपायाथा इसीसे ब्रह्माजीने उसको अंधा करदिया ४३ सबजीवों के नाशमें निश्चय करनेवाले उस जीवको मारकर पीछे से वह बलाक स्वर्गको गया इसरीतिसे धर्मकी बड़ी सूक्ष्मगति है बड़ी कठिनता से जाननेके योग्यहै ४४ और कौशिक ब्राह्मणभी एक बड़ा तपस्वी और शास्त्रोंका जाननेवालाथा वह गांवसे दूर नदियोंके संगमपर निवास करताथा ४५ सत्यबोलने का सदैव ब्रत रखताथा इसीसे हे अर्ज्जुन वह सत्यवक्ता बिख्यात हुआ ४६ इसके पीछे कितनेही मनुष्य चोरों के भयसे उसबनमें रहनेलगे वहां भी क्रोधयुक्त चोरों ने बड़े उपायों से उनको ढूंढ़ा ४७।४८ इसके अनन्तर उन्हों ने सत्यबोलनेवाले कौशिकके पास आकरकहा कि हे भगवन् बहुत से मनुष्यों का समूह किस मार्ग से गयाहै हम सत्य २ पूछते हैं जो आप जानते होयँ तो कहिये सत्यता से पूछेहुये उस कौशिकने उनसे कहा ४९ कि बहुत बृक्ष लता बल्लीवाले उसबनमें रहते हैं उस कौशिकने उनको प्रकटकरके मूल वृत्तान्त को भी प्रकटकिया ५० इसकेपीछे उन्होंने उन क्रूर मनुष्योंको पाकर मारडाला यह

सुनाजाताहै सूक्ष्म धर्मों से अनभिज्ञ वह कौशिक उनबड़े अधर्म रूप कहेहुये दुष्ट वचनसे महादुःखरूप नरकको ऐसे गया जैसे कि थोड़ेशास्त्रका जाननेवाला अज्ञानी धर्म्मों के प्रकारोंको न जानकर जाताहै ५१।५२ अपने सन्देहों को वृद्ध लोगों से न पूछनेवाला बड़े नरकके योग्य होताहै उस धर्म और अधर्मका मूल निश्चय करनेके लिये तेरा योग्यताका कोईतो बचनहोगा ५३ कठिनतासे प्राप्त करनेके योग्य उत्तम ज्ञानको तर्कसे निश्चय करते हैं और बहुतसे लोग कहते हैं कि धर्म वेदसे होताहै ५४ इसहेतुसे तुझको दोष नहीं लगाताहूं सब नहीं किया जाताहै क्योंकि जीवधारियों की उत्पत्तिके लिये धर्मका वर्णन किया गया ५५ जो अहिंसासे युक्त होता है वही धर्म है और धर्मरूप बचनभी हिंसा न करने-वालोंकी अहिंसाके निमित्त बर्णन कियागयाहै ५६ धारण करने से धर्म कहाग-याहै क्योंकि वह सृष्टिको धारणकरताहै अर्थात् उत्पत्ति और पोषणकरताहै जिस हेतुसे कि वह धारणनाम गुणसेयुक्तहै इसी कारणसे वह निश्चयकरके धर्म कहा जाताहै ५७ जो किसीसमयपर अन्यायसे चोरीकरतेहुये धर्मको चाहतेहैं अथवा वेद के विरुद्ध मोक्षपद को चाहते हैं उनके साथ कभी बार्त्तालाप भी न करना चाहिये ५८ अथवा अवश्यक बोलने के समयपर भी वेद वा लौकिक बचनका संदेहहोय अर्थात् इसबिषयके विचार करनेकेसमय कि यह ब्राह्मण चोरहै वा नहीं ऐसे समयमें वहां मौनहोना अवश्यहै और जो कदाचित् मौन होनेसेभी काम न होसके तो वहां मिथ्या बोलनाभी योग्य गिनाजाताहै वह बिना विचारे से भी सत्यही के तुल्यहै ५९ जो किसी कामके बिषयमें ब्रत करके कर्म से उसको पूरा न करे अर्थात् विरुद्धकर्म करे उसके बिषयमें बुद्धिमान् लोगोंका बचनहै कि वह उसके फलको नहींपाताहै ६० किसीके प्राणजानेमें बिवाहमें सबजाति के नाशमें और जारी होनेवाले कर्म में कहाहुआ बचन मिथ्या नहीं कहलाता है ६१ धर्मतत्वके जाननेवाले वा देखनेवाले इसबातमें अधर्मको न देखते हैं न जानते हैं जो शपथों के खानेमें भी चोरों से मिलाहुआनहीं है ६२ वहां मिथ्या कहनाही श्रेष्ठ होताहै वह भी बिना बिचारके सत्यहै और समर्थ होनेपर उनको किसी दशामें भी धनदेनेके योग्य नहींहै ६३ पापियोंको दियाहुआ धन दाता कोभी पीड़ित करताहै अर्थात् नरकमें डालताहै इसीकारण धर्म के निमित्त मि-थ्या कहने से मिथ्याके फलको भोगनेवाला नहीं होताहै मैंने बुद्धिके अनुसार

यह लक्षणोद्देश तुमसे विधिपूर्व्वक कहा ६४ यह सब मुझ शुभचिन्तकने धर्म और बुद्धिके अनुसार कहाहै हे अर्जुन इसको सुनकर अबतुमकहौ कि यह युधिष्ठिर तेरे मारनेके योग्यहै वा नहीं ६५ अर्जुन बोले बड़ाज्ञानी और बुद्धिमान् जिस रीतिसे कहै और जिसरीतिसे हमाराभलाहोय उसीप्रकारका यह आपका वचनहै ६६ हे श्रीकृष्णजी आप हमारे माता और पिता के समान होकर परम गति और परमस्थानहो ६७ तीनों लोकोंमें आपसे कोई बातछिपी नहीं है इसी से आप सबप्रकारके उत्तम धर्मोंको ठीक २ जानतेहो ६८ मैं धर्मराज पांडव युधिष्ठिरको अवध्य अर्थात् मारनेके अयोग्य मानताहूं आपइसमेरे संकल्पमें प्रतिज्ञा के रक्षाका कोई उपाय वर्णनकीजिये ६९ अथवा इसस्थानपर मेरे हृदयमें बर्त्तमान कहनेके योग्य उत्तमबातोंको सुनिये हे श्रीकृष्णजी आपमेरेब्रतको जानते हैं जो कोई मनुष्य सब मनुष्यों के आगे मुझसे ऐसा बचनकहै कि ७० हे अर्जुन तुम इस गाण्डीव धनुषको ऐसे मनुष्य को देदो जो बलपराक्रम और शस्त्र बिद्यामें तुमसे अधिकहो हे श्रीकृष्णजी मैं ऐसे कहनेवाले मनुष्यको हठकरके ऐसे मारूं जैसे कि मिथ्या शब्दके कहने से भीमसेन मारताहै ७१ हे वृष्णियों में बीर श्रीकृष्णजी आपके सन्मुख राजा युधिष्ठिरने इसी शब्दको बारम्बार मुझसे कहा कि धनुषको दूसरेको दे हे केशवजी जो मैं उसको मारडालूं तो मैं थोड़े समयतक भी इस जीवलोकमें नियत नहीं रहूंगा ७२ इससे निश्चय करके मैं निष्पाप राजा के मारनेको ध्यान करके पराक्रम से हीन अचेत होकर अपने शरीरको त्याग करूंगा हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ जिससे कि मेरीप्रतिज्ञा संसारकी बुद्धिमें सत्यसमझीजाय ७३ और जिसप्रकार पाण्डव युधिष्ठिर और मैं जीवतारहूं हे श्रीकृष्णजी वैसेही आपभी अपना सम्मत मुझको दीजिये बासुदेवजी बोले हे बीर युद्ध में कर्णके तीक्ष्ण धारवाले बाणों के समूहों से राजा युधिष्ठिर महा घायल दुःखी थकावटसे युक्त बारम्बार युद्ध करने में कर्ण के बाणों से विदीर्ण होगया है ७४ इस हेतुसे इसने महादुखी होकर ऐसे अयोग्य वचन तुमसे कहे जिससे कि तुम क्रोधयुक्त होकर युद्धमें कर्णको मारो इसी कारणसे बारम्बार तुझमें क्रोध बढ़ाने के लिये कहाहै कि तू युद्धमें क्रोधरूप होकर कर्णको मारे ७५ यह युधिष्ठिर भी इस लोक में उस पापी कर्ण के समान अथवा उससे सन्मुखता करनेवाला तेरे सिवाय किसी दूसरेको नहीं समझताहै हे अर्जुन इसी हेतुसे मेरे सन्मुख अत्यन्त

क्रोधयुक्त होकर राजाने तुमसे यह कठोर वचन कहे हैं ७६ युद्धमें सदैव सन्नद्ध दूसरेके सहनेको अयोग्य कर्णमेंही अब युद्ध रूपी द्यूत बांधागयाहै उसीके मरनेपर कौरव लोग विजय होंगे ऐसी बुद्धि राजा युधिष्ठिर में है ७७ इस कारण से धर्मपुत्र युधिष्ठिर मारने के योग्य नहीं है हे अर्ज्जुन तुझ को अपने प्रणको पूरा करना योग्य है और अपने योग्य उस बात को तू मुझ से समझ जिस से कि यह जीवता हुआ भी मृतक के समान होजाय ७८ जब प्रतिष्ठा के योग्य मनुष्य को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तभी वह इस जीव लोक में जीवता रहताहै और जब प्रतिष्ठित पुरुष अपमान को पाता है तब वह जीवता हुआ भी मृतक के समान कहाजाता है ७९ यह राजा युधिष्ठिर सदैव से भीमसेन नकुल सहदेव और तुझ से अच्छी रीति से प्रतिष्ठा किया गयाहै और लोक में वृद्ध वा शूर वीर लोगोंने भी इसकी प्रतिष्ठाकी है इसीप्रकार तुमभी बातों केही द्वारा इसका अपमान करो ८० हे कुन्तीके बेटे उसके साथ ऐसा कर्म करके अधर्मयुक्त कर्म को कर ८१।८२ यह अथर्वाङ्गिरसी नाम श्रुति है कल्याणके चाहनेवाले पुरुषों को सदैव इस श्रुतिको काममें लाना योग्यहै ८३ यही बिनामारेहुये मारना कहा जाताहै और यही समर्थ गुरुतम कहाजाताहै हे धर्मज्ञ तुम इस मेरे कहेहुये बचनको धर्मराजसे कहौ ८४ हे पाण्डव यह धर्मराज तेरे हाथसे इसरीतिपर मरनेको अयोग्यजानताहै इसके पीछे इस के चरणों को दण्डवत् करके बड़े मीठे बचनों से इससे शुभचिन्तकता की बातें कहौ ८५ बुद्धिमान् तेराभाई राजा युधिष्ठिरभी धर्म को बिचारकर फिर कभी तुझपर क्रोध न करेगा हे अर्जुन भाई के मिथ्या मारनेसे अलग होकर तुम बड़ेहर्षसे युक्तहोके इससूतके पुत्र कर्णको मारो ८६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिश्रीकृष्णअर्ज्जुनसंवादेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि श्रीकृष्णजीके इसरीतिके बचनको सुनकर अपने मित्र श्रीकृष्णजी की प्रशंसा करनेलगा और बड़े हठको करके धर्मराजसे ऐसे कठोर बचनबोला जैसे पूर्व्व कभी नहीं बोलाथा १ हे राजा तुम तो युद्धसे एककोश दूर नियतहो तुमऐसा मुझसे कभी मतकहौ जो चाहै तो भीमसेन मेरी निन्दाकरने को योग्यहै कि सब लोकके शूरबीरों से लड़ता है २ वह कालरूप भीमसेन युद्ध

में शत्रुओं को पीड़ामान करके बड़े२ शूरबीर राजाओं को उत्तम रथों को श्रेष्ठतर हाथियों को उत्तम अश्वारूढ़ों को और असंख्य बीरों को ३ हाथियोंसमेत मारकर बड़े कठोर सिंहनाद को गर्जना करताहै और जैसे कि मृगों को सिंह मारताहै उसीप्रकार युद्धभूमिमें दशहज़ार कांबोज देशी और पहाड़ी शूरबीरों को मारकर वहबीर बड़े २ ऐसे कठिन कर्मों को करताहै जिनको तुम कभी करने को समर्थ नहींहोसक्के और रथसे कूद गदाको हाथमेंलेकर उसके प्रहारोंसे युद्धमें घोड़े रथ और हाथियों को मारकर सिंहके समान दहाड़ताहै ४।५ इसके बिशेष खड्गसे भी घोड़े रथ और हाथियों को अथवा रथांग और धनुषसे शत्रुओं को मारकर फिर बड़े क्रोध और पराक्रमका रखनेवाला दोनों भुजाओं से पकड़कर चरणोंसेही शत्रुओं को मारडालताहै ६ वह कुबेर और यमराज के समान महापराक्रमी बड़े हठकरके शत्रुओंकी सेनाका मारनेवालाहै वह भीमसेन मेरी निन्दा करने के योग्यहै न कि तुम जो कि सदैव शुभचिन्तकों से रक्षा किये जातेहो ७ अकेला भीमसेनही बड़े २ रथ हाथी घोड़े और असंख्यों पदातियों को मथकर धृतराष्ट्रके पुत्रों में मग्नहै वह शत्रुओं का बिजयी मेरी निन्दा करनेके योग्यहै ८ जो कि कलिंग बंग अंग निषाद और मगध देशियोंको और नीले बादलके समान मतवाले हाथियोंको और शत्रुओंके मनुष्योंको सदैव मारताहै वह शत्रुसंहारी भीम मेरी निन्दाके योग्यहै ९ वह बड़ाबीर महा युद्धमें समयपर उचित रथपर सवार होकर धनुष को चलायमान करताहुआ बाणों से पूर्ण ऐसी बाणों की बर्षा करताहै जैसे जलधाराओं की बर्षा बादल करताहै १० जिस भीमसेनने अभी मुखकी नोंक सूंड़ और अङ्गों समेत घायल करके आठसौ बड़े२ हाथी युद्धभूमिमें मारडाले वह शत्रुओंका मारनेवाला मुझसे कठोर बचन कहने के योग्यहै ११ बुद्धिमान् मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों के बचनमें पराक्रमको और बहुत से क्षत्रियों में पराक्रमको कहते हैं हे भरतबंशी तुम बचन में बली और कठोरहो और तुम्हीं मुझको जानतेहो जैसा कि मैं पराक्रमीहूं १२ जो कि मैं स्त्री पुत्र जीवन और आत्माके साथ तेरे चित्तका प्रियकरने को सदैव प्रवृत्त रहताहूं इसपरभी जो तू मुझ को बचनरूपी बाणों से भेदकर मारताहै हम तुझ से उस सुखको नहीं जानते १३ तू द्रौपदी की शय्यापर नियत होकर मेरा अपमान मतकर मैं तेरेही निमित्त महारथियोंको मारताहूं हे भरतबंशी इसहेतुसे तुम शंकाकरनेवाले होकर

महानिष्ठुर प्रकृतिहो मैंने तुझसे कभी सुखको नहींपाया १४ हेनरदेव युद्धमें सत्य संकल्प भीष्मजी ने अपनेआप तेरेही अभीष्टकेलिये अपनी मृत्युको तुझसे कहा द्रुपदका पुत्र शिखंडीबीर महात्माहै उसीने मेरे आश्रयमें होकर उनको मारा १५ जो कि तुम पांशोंकी बाजीमें कार्य्यों के बिगाड़ने में प्रवृत्तहुये इस हेतुसे मैं तेरे राज्यकी प्रशंसा नहींकरताहूं तुम नीचों से सेवित अपने आप पापोंकोकरके हमारे द्वारा शत्रुओंको विजयकरना चाहतेहो १६ तुमने पांशोंकी बाजीमें धर्मके विपरीत बहुतसे दोषोंको जिनको कि सहदेवने वर्णनकिया तुम नीचोंसे सेवित उन दोषों के त्याग करनेकी इच्छानहीं करतेहो इसीकारणसे हम सब दुःखों में पड़ेहुये हैं १७ किसी प्रकारकाभी सुख तुम से हमको नहीं हुआ क्योंकि तुम पांशों के खेल में बड़े मतवाले हो हे पाण्डव तुम आप दुःखको उत्पन्न करके अब हमको कठोर बचन सुनातेहो १८ हमारे हाथसे अंगभंगमारी हुई शत्रुओंकी सेना पृथ्वी पर सोतीहुई पुकारती है तुमने ऐसा निर्दयकर्म किया जिसके दोषसे कौरवोंका मरण उत्पन्नहुआ १९ उत्तरके रहनेवाले मारे पश्चिमी लोगोंका नाशकिया और पूर्व्वी वा दक्षिणी मारेगये युद्धमें हमारे और उनके शूरबीरों ने वह अपूर्व और अद्भुत कर्म किया २० तुम द्यूतके खेलनेवाले हो तुम्हारेही कारण से राज्यका नाशहुआ हे नरेन्द्र हमारा दुःख तुझ से पैदा होनेवालाहै हे राजा हम लोगों को बचनरूपी चाबुकों से पीड़ा देनेवाले तुम दुर्भागी फिर हमको क्रोधयुक्त मत करना २१ संजय बोले कि वह स्थिरबुद्धी धर्म से भयभीत महाज्ञानी अर्ज्जुन इन कठोर अप्रतिष्ठित बचनों को सुनाकर कुछ पाप किया हुआ समझ कर उदासहोगया अर्थात् वह इन्द्रकापुत्र बारंबार श्वासलेताहुआ पीछेसे महादुखी हुआ और फिर खड्गको निकाल लिया तब श्रीकृष्णजी बोले आप इस आकाशरूप खड्ग को फिर किस निमित्त म्यान से अलग करते हो २२।२३ इसका हमको उत्तर दोगे तब मैं तुम्हारे कल्याण और प्रयोजन के सिद्ध होनेको कुछ कहूंगा पुरुषोत्तमजी के इस बचनको सुनकर अर्जुन बड़ा दुखी होकर केशवजी से बोला कि जो मैंने अप्रियरूपी पापकर्म्म किया है इससे अपने शरीर को नाश करूंगा धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी अर्जुनके इसबचनको सुनकर यह बचन बोले कि २४।२५ हे अर्जुन तुम इस राजासे ऐसे बचन कहकर घोर दुःख में क्यों प्रवृत्तहुये हे शत्रुओं के मारनेवाले अर्जुन जोतुम अपघात करना चा-

हतेहो यह कर्म सत्पुरुषों का नहीं है २६ हे नरबीर जो तुम अब इस धर्मात्मा बड़े भाईको खड्ग से मारोगे तो तुम्ह धर्म से डरने वालेकी कीर्त्ति किस प्रकारकी होगी इसका तुम क्या उत्तर दोगे २७ हे अर्जुन धर्म बड़ा सूक्ष्म होकर कठिनता से जानने के योग्यहै तुम बड़े २ बुद्धिमानों के कहेहुये धर्मको समझो तुम आप अपना अपघात करके वा भाई के मारने से महाघोर नरक में पड़ोगे २८ हे अर्जुन अब तुम यहां अपने बचनसे अपनेही गुणोंको वर्णन न करो जिससे कि तुम हतात्मा होजाओ इस बचनको इन्द्रके पुत्र अर्जुन ने पसन्द किया कि हे श्रीकृष्णजी ऐसाहीहो २९ फिर धनुष को लचाकर धर्मधारियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर से बोला कि हे राजा सुनो कि महादेवजी के सिवाय मुझसा धनुषधारी कोई नहीं है ३० मैं तुम्ह महात्माकी आज्ञासे एकक्षणभरमेंही सब स्थावर जंगमजीवों समेत संसारभरेको मारसक्ताहूं हे राजा मैंने दिग्पालों समेत सब दिशाओं को बिजय करके तेरे अधीनकर दीन्हीं ३१ वह पूर्ण दक्षिणायुक्त राजसूययज्ञ और आपकी वह दिव्यसभा मेरेही पराक्रम से हुई और मेरेहाथों में तीक्ष्णधारवाले बाणहैं और बाणों से युक्त प्रत्यंचावाला लम्बायमान धनुषहै ३२ और मेरेचरण रथ और ध्वजासमेत हैं और युद्धमें बर्त्तमान होकर मुझको कोई शूरबीर बिजय नहीं करसक्ताहै मैंने पूर्ब्बीय पश्चिमीय उत्तरीय और दक्षिणीय राजालोगों को मारा ३३ संसप्तकों का कुछ शेष बाकी है इसरीतिसे सब सेनाका आधाभाग मार डाला हे राजा देवसेना के समान यह भरतवंशियों की सेना मेरे हाथसेही मारी हुई पृथ्वीपर सोरही है ३४ जो अस्त्रोंके जाननेवालेहैं उनको मैं अस्त्रोंही से मारता हूं इसी हेतुसे यह अस्त्र लोकोंके भस्म करनेवालेहैं हे श्रीकृष्णजी भयके उत्पन्न करने वाले इस विजयी रथपर सवार होकर कर्ण के मारने को चलें ३५ अब यह राजा युधिष्ठिर सुखी होजाय मैं युद्धमें अपने बाणोंसे कर्णको मारूंगा ऐसा कहकर अर्जुन ने धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिरसे यह बचनकहा ३६ कि अब कर्णकी माता अपने पुत्रसे रहित होगी अथवा कुंती मुझ से पृथक्होगी मैं सत्य२ कहताहूं कि अब युद्धभूमि में कर्ण को बाणों से मारे बिना मैं अपने कवचको नहीं उतारूंगा ३७ संजय बोले कि अर्जुनने युधिष्ठिर से ऐसा कहकर फिरभी शस्त्रों को उतार धनुष छोड़ बड़ी शीघ्रतासे खड्ग को म्यान में रखकर ३८ बड़ी लज्जा से नीचा शिर किये हाथ जोड़कर युधिष्ठिर से कहा कि हे राजा प्रसन्न हूजिये

और मेरे कहेहुये को क्षमा करिये आप समय पाकर जानेंगे अब आपको नमस्कार है ३९ इस रीति से अप्रसन्न राजा को प्रसन्नकरके फिर यह वचन बोला कि इस कार्य्य में बिलम्ब न होगी बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक यह कार्य्य होगा मैं इस लौटते हुये के सन्मुख जाता हूं ४० अब मैं सर्वात्मभाव से भीमसेन को युद्ध से छुटाने और कर्ण को मारने को जाताहूं मेरा जीवन केवल आपके अभीष्ट केही निमित्त है हे राजा मैं आपसे सत्य २ कहताहूं आप मुझको आज्ञा दीजिये ४१ यह कहकर बड़ा तेजस्वी अर्जुन चलने के समय भाई के चरणों को पकड़कर उठा फिर पांडव धर्मराजने अपने भाई अर्जुन के इस कठोर वचन को सुनकर ४२ महादुखीहो अपने उस शयनस्थान से उठकर अर्ज्जुन से कहा हे अर्ज्जुन मैंने वह महादुष्ट कर्म किया जिसके कारण तुमको ऐसा महाघोर दुःखप्राप्तहुआ ४३ इसकारणसे मुझकुलके नाशक महापापी दुःखों से युक्त अज्ञानबुद्धी आलसी भयभीत वृद्धों के अपमान करनेवाले इस नीच पुरुषके शिरको काटडालो तेरे रूखे२ वचनोंके सुननेसे मेरा कोई प्रयोजननहींहै अब मैं महापापी बनकेही जाने के योग्यहूं मैं अवश्य बनहीकोजाऊंगा और आप मुझसे पृथक् होकर सुख से राज्यको करो ४४।४५ महात्मा भीमसेन राजाहोनेके योग्यहै मुझ नपुंसकका राज्यमें क्याकामहै और तुझक्रोधयुक्तके इनकठोरबचनोंके सहनेकोभी मैं समर्थ नहीं हूं ४६ हे बीर मुझ अपमानवाले के जीवन के कारण से फिर भीमसेन राजाकरनेके योग्य न होगा इसरीतिके बचनोंको कहकर राजा युधिष्ठिर अपने शयन स्थान को छोड़कर उछला ४७ और बनके जानेकी इच्छा करी तब तो बासुदेवजी ने बड़े नम्रहोकर युधिष्ठिरसे कहा हे राजा यह आप समझिये ४८ कि जैसे सत्यप्रतिज्ञ गांडीव धनुषधारी की प्रतिज्ञा सुनी गई अर्थात् जो कोई कि ऐसा कहै कि गांडीव धनुष दूसरेके देने के योग्यहै वह पुरुषलोक में उसके हाथ से मारने के योग्यहै और यह तुमने उससे कहा इस हेतु से अर्जुनने उस अपनी सत्य प्रतिज्ञाकी रक्षाकरी है ४९।५० हेराजा यह तेरा अपमान मेरी इच्छा से कियागया क्योंकि गुरुओं का अपमानही मारने के समान कहाजाताहै ५१ हे महाबाहो राजा युधिष्ठिर इस हेतुसे सत्यकी रक्षा के निमित्त मेरी और अर्जुन की अनम्रताको आप क्षमा करिये ५२ हे महाराज हम दोनों आपकी शरण में वर्त्तमानहैं हे राजा मुझ प्रणतरूप प्रार्थना करनेवालेका अपराध क्षमाकरिये ५३

अब यहपृथ्वी उस पापात्मा कर्णके रुधिरको पानकरेगी यह मैं तुमसे सत्यप्रतिज्ञा करताहूं कि अब तुम कर्णको मराहुआही जानो ५४ जिसका तू मरनाचाहताहै अब उसकी अवस्था जीवन की भी समाप्त हुई तब श्रीकृष्णजी के बचन को सुनकर धर्मराज युधिष्ठिरने ५५ भ्रान्तीसे युक्त झुकेहुये श्रीकृष्णजी को उठाकर हाथजोड़कर श्रीकृष्णजीसे यह बचनकहा ५६ कि हे श्रीकृष्णजी जैसा आपने कहाहै वैसाही है कि इसमें मेरी अमर्य्यादा होय हेमाधव गोविन्दजी मैं आपके समझाने से समझगयाहूं ५७ हेअबिनाशी अब हम तुम्हारे कारणसे घोर दुःख से छूटे और अपनी अज्ञानता से अचेत हम दोनों आप रूप स्वामीको पाकर इस घोररूप दुःख समुद्र से पारहुये ५८ हम सब अपने मन्त्रियों समेत आपकी बुद्धिरूपी नौकाको पाकरदुःख और शोकरूपी नदी से पारहुये हे अबिनाशी हम तुमसे सनाथहैं ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरप्रबोधनेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसकेपीछे धर्मात्मा यदुनन्दन गोविन्दजी धर्मराज के इस प्रीति युक्त बचनों को सुनकर अर्जुनसे बोले १ और अर्जुन इसरीतिसे श्रीकृष्ण जी के बचन से युधिष्ठिर को कठोर बचन कहकर उदास हुआ जैसे कि कुछ पापको करके उदास होते हैं २ तब हँसतेहुये बासुदेवजी उस पाण्डवसे बोले कि हे अर्जुन यह कैसे होसक्ताहै जो उस धर्मनिष्ठ धर्मके पुत्र को तीक्ष्णधारवाले खड्गसे मारे तुमराजासे यहकहकर एक पापमें पड़े ३।४ हेअर्जुन राजाको मार कर पीछेसे तुम क्या करते इस रीति से अल्प बुद्धियों से बड़ी कठिनता पूर्व्वक धर्मजानने के योग्यहै ५ सो आपधर्मके भयसे बड़े भाईके मारने के द्वारा बहुत बड़े घोर नरकमें अवश्य पड़े ६ सो तुम धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ धर्मकेसमूह कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरको प्रसन्नकरो यहीमेरा मतहै ७ अपनी भक्तिसे राजाको प्रसन्नकरो फिर उस युधिष्ठिरके प्रसन्नहोनेपर शीघ्रही युद्धके निमित्त कर्णके रथके समीप चलेंगे ८ हे बड़ाई देनेवाले अब तुम युद्धमें अपने तीक्ष्णधारवाले बाणों से कर्णको मारकर धर्मराजकी बड़ी प्रसन्नताको प्राप्त करो ९ हे महाबाहो यहां पर यह वार्त्तासमयके अनुसारहै यहमेरामतहै ऐसा करनेपर तेराकियाहुआ कार्य

सिद्धहोगा १० हे महाराज इसके पीछे लज्जायुक्त अर्जुन धर्मराज के दोनों चरणोंको पकड़कर शिरसे झुकगया ११ और उस भरतर्षभ से बारंबार बिनयकरने लगा कि हेराजा जो मुझसबकामों से डरेहुये ने आपके सन्मुख असभ्य बचन कहे उनको आप क्षमाकरिये १२ हे भरतर्षभ धृतराष्ट्र तब तो धर्मराज युधिष्ठिर ने उस शत्रुसंहारी रोतेहुये और गिरेहुये अर्जुन को देखकर १३ उस संसारकी लक्ष्मी के बिजय करनेवाले भाईको उठाकर बड़ी प्रीति से हृदयसे लगाकर अति रोदन किया १४ हे महाराज वह महातेजस्वी शुद्ध अंतःकरणवाले दोनों भाई बहुत बिलंबतक रोदन करके प्रसन्नहुये १५ फिर पाण्डव धर्मराज बड़ेप्रेमसे मिलकर उसके मस्तक को सूंघ के बड़ी प्रीतियुक्त मन्दमुसकान करते हुये उस बड़े धनुषधारी से बोले १६ हे महाबाहो बड़े धनुषधारी कर्ण ने युद्ध में सब सेना के देखतेहुये मुझ उपाय करनेवाले को कवच, ध्वजा, धनुष, शक्ति घोड़े और बाणों को १७ अपने बाणों से काटकर पराजयकिया हे अर्जुन सो मैं युद्धमें उसको जानके और उसके कर्मको देखकर १८ महादुःखी होताहूं और जो तू युद्धमें उस बीर शत्रुको नहीं मारेगा तो मुझको जीवन प्यारा न होगा १९ अर्थात् अपने प्राणोंको त्यागकरूंगा फिर जीने से मेरा कोई प्रयोजन नहीं है हे भरतर्षभ इस प्रकार के युधिष्ठिरके बचनों को सुनकर अर्जुनने उत्तरदिया २० हे नरोत्तम महाराज मैं आपकी सत्यता वा प्रसन्नता वा भीमसेन नकुल और सहदेवकी शपथ करताहूं २१ मैं जिसप्रकारसे अब कर्णको मारूंगा वा आप मरकर पृथ्वीपर गिरूंगा मैं सत्यतासे उस शस्त्रको प्राप्त करताहूं २२ ऐसा राजासे कहकर फिर माधवजी से बोला कि हे श्रीकृष्णजी अब मैं निस्संदेह युद्धमें कर्णको मारूंगा २३ आपका कल्याणहोय यह सब आपही के बिचारसे है उस दुरात्माका मरण होगा हे राजाओं में श्रेष्ठ यहबचन सुनकर केशवजी अर्जुन से बोले २४ हे भरतर्षभ तुम बड़े पराक्रमी होकर कर्ण के मारने को समर्थ हो हे महारथी मेरी भी सदैव से यही इच्छाहै २५ तुम युद्धमें कैसे कर्णको मारोगे यह कहकर वह श्रेष्ठ पुरुषोत्तम माधवजी फिर युधिष्ठिर से बोले २६ हे युधिष्ठिर तुम अब दुरात्मा कर्ण के मारने के निमित्त अर्जुनको बिश्वास पूर्वक आज्ञादेने को योग्यहो २७ हेपांडुनन्दन आपको कर्ण के बाणों से पीड़ामान सुनकर मैं और अर्जुन वृत्तान्त निश्चय करने को यहां आयेथे सो २८ हे राजा आप प्रारब्धसे जीवतेहुये और

उसके पकड़ने से बचेहुयेहो हे निष्पाप अब तुम इस अर्जुनको विश्वास पूर्वक विजयका आशीर्बाददो २६ युधिष्ठिर बोले हे पांडव अर्जुन आओ आओ मुझ से मिलो कहने के योग्य और चित्तके अभीष्टको प्राप्त करनेवाला बचन कहागया है जो तुमने मुझसे कहा वह मैंने सब क्षमाकिया ३० हे अर्जुन अब मैं तुझको आज्ञादेताहूं कि तुम कर्णको मारो हे अर्जुन और जो २ मैंने कठोर बचन कहे हैं उनसे क्रोधयुक्त मतहो ३१ संजय बोले हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र तब तो कमर से झुकेहुये अर्जुनने हाथों से अपने अपने बड़े भाई के दोनों चरणोंको पकड़लिया ३२ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर उसको उठाके अच्छीरीतिसे मिलकर मस्तकको सूंघ फिर उससे कहनेलगे ३३ हे महाबाहो अर्जुन मेरी तैंने बड़ी प्रतिष्ठाकरी है तुम फिर महत्त्वता और अबिनाशी बिजय को प्राप्त करोगे ३४ अर्जुन बोले कि अब मैं उसपापी और बलसे अहंकारी कर्ण को युद्ध में पाकर बाणों से उसके भाई बेटों समेत मारूंगा ३५ जिसके खिंचेहुये धनुषके बाणों से तुम महापीड़ा-मान हुये हो वह कर्ण अब बहुत शीघ्रही उसके फलको पावेगा ३६ हे राजा अब मैं कर्णको मारकरही आपको सेवन करने के निमित्त देखूंगा मैं उच्चस्वर से यह तुमसे सत्य २ कहताहूं ३७ हे पृथ्वी के स्वामी अब मैं कर्णको मारेबिना युद्धभूमि से नहीं लौटूंगा सत्यतासे आपके दोनों चरणोंको छूताहूं ३८ संजय बोले कि तबतो प्रसन्न चित्त युधिष्ठिर ने इसप्रकारकी बातें करनेवाले अर्जुन से बहुत बड़ा यह बचन कहा कि तेरी अबिनाशी कीर्त्ति वा मनोभीष्ट जीवन वा विजय वा सदैव पराक्रम वा शत्रुओंका नाश ३६ और वृद्धि को देवता लोग कृपा करकेदें और जैसा मैं चाहताहूं वैसाही तेरा अभीष्ट सिद्धहोय शीघ्रजाओ और युद्धमें कर्णको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने अपनी वृद्धिके निमित्त वृत्रासुर को माराथा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणियुधिष्ठिरवरप्रदानेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि कर्ण के मारने को उपस्थित अर्ज्जुन अत्यन्त प्रसन्न चित्त होकर धर्मराजको प्रसन्न करके गोविन्दजी से बोला १ कि मेरारथ फिर तैयार करिये और उत्तम घोड़ोंको पूजो और उसी मेरे कल्याणरूपी रथपर सब अस्त्र

शस्त्रोंकोधरो २ अश्वसवारों से शिक्षित और पृथ्वी के लोटनेसे गत परिश्रम और रथके सब सामानों से अलंकृत शीघ्रता युक्त चंचल घोड़े बहुत शीघ्र सन्मुखलायेजायँ ३ हे गोविन्दजी कर्णके मारने की इच्छा से अब शीघ्रचलो हे महाराज महात्मा अर्जुन के इस बचनको सुनकर ४ श्रीकृष्णजी दारुक सारथी से बोले कि वह सबकरो जिसप्रकार इस भरतर्षभ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन ने कहाहै ५ हे राजाओं में श्रेष्ठ इसके पीछे श्रीकृष्णजीकी आज्ञापातेही उस दारुकने शत्रुसंतापी ब्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये उत्तम रथको जोड़ा और ६ रथ को तैयार करके महात्मा पांडव अर्जुन के आगे निवेदन किया कि रथ तैयारहै तब महात्मा दारुक के तैयार किये हुये रथको देखकर ७ धर्मराज से आज्ञाले ब्राह्मणों से स्वस्ति बाचन कराके बड़े मंगल और स्वस्त्ययन के साथ रथपर सवार हुआ उस समय बड़ेज्ञानी धर्मराज राजायुधिष्ठिर ने उसको आशीर्बाद दिया इसके पीछे वह कर्ण के रथके पीछेचला ८। ९ हे भरतबंशी सब जीवों ने उस बड़े धनुषधारी अर्जुन को आता देखकर महात्मा पांडव के हाथसे कर्णको मराहुआ माना १० हे राजा सबदिशा चारोंओर से निर्मलहुई उस समय चाष शतपत्र और क्रौंचनाम पक्षियों ने ११। १२ पांडुनन्दन अर्जुनको दक्षिणकिया हे राजा मंगल वा कल्याणरूप और प्रसन्न रूप अर्जुन को युद्ध में प्रेरणा करते बहुत से नर पक्षी भी शब्द करनेलगे १३ और हे राजा भयानकरूप कंक गिद्ध बक बाज और काक यह सब मांसखाने के लिये उसके आगे २ चले उन्होंने अर्जुन के मंगलकारी शकुनों को इसरीतिसे बर्णन किया १४ कि शत्रुओं की सेना का और कर्णको नाश होगा इसके पीछे यात्रा करनेवाले अर्जुन को बड़ा खेद उत्पन्न हुआ १५ और बड़ी चिन्ता उत्पन्नहुई कि यह कैसेहोगा इसके अनन्तर मधुसूदनजी गांडीव धनुषधारी से बोले १६ हे गांडीव धनुषधारी युद्धमें जो२ तेरे धनुषसे विजयकियेगये उनका विजयकरनेवाला दूसरामनुष्य इसपृथ्वी पर नहींहै १७ इन्द्रके समान भी अनेक पराक्रमी देखे उन शूरोंने भी तुझको पाकर युद्धमें परमगतिको प्राप्तकिया १८ इन द्रोणाचार्य्य भीष्म, भगदत्त, बिन्द, अनुबिन्द, अवन्तिदेश के राजालोग, कांबोज, सुदक्षण १९ बड़ेपराक्रमी श्रुतायुश और अश्रुतायुश के सन्मुख जाकर जो तेरे पास दिब्य अस्त्र वा हस्तलाघवता वा पराक्रम वा युद्धोंमें मोहन होता वा बिज्ञानरूपी नम्रता न होती तो तेरे

सिवाय किसं दूसरे की सामर्थ्यथी जो इनके आगे कुशल रहता २० । २१ और बेधचिह्न युक्त योगभी तुझ को प्राप्त है आप गंधर्व और संसार के जड़ चैतन्यों समेत देवताओंको भी मारसक्तेहो हे अर्जुन इस पृथ्वी पर तेरे समान कोई शूर-बीर पुरुष नहीं है और जो कोई क्षत्री युद्ध में दुर्मद बड़े धनुषधारी हैं २२ । २३ उनके मध्यमें तेरे समान देवताओं तकमें किसी को नहीं देखताहूं न सुनताहूं ब्रह्माजीने सृष्टिकी उत्पत्ति करके गांडीव धनुषको उत्पन्न कियाहै २४ हे अर्जुन जो कि तुम उस धनुष के द्वारा लड़तेहो इसीकारण से तुम्हारेसमान कोई नहीं है हे पांडव मैं उस बात को अवश्य कहूंगा जिसमें तेरा कल्याण होगा २५ हे महाबाहो युद्ध के शोभा देनेवाले कर्ण को तू मत अपमानकर यह महारथी कर्ण पराक्रमी अहंकारी अस्त्रज्ञ २६ कर्मकर्त्ता वा अपूर्व युद्धकर्त्ता होकर देशकाल का जाननेवालाहै यहां अब बहुत कहनेसे क्या लाभहै हे पांडव अब इसका सं-क्षेप सुनो २७ मैं महारथी कर्णको तेरे समान वा तुझ से अधिक मानताहूं वह तुझसे बड़े उपाय पूर्वक युद्धमें स्थिर होकर मरने के योग्यहै २८ तेज में अग्नि के सदृश बेगमें बायु के समान क्रोध में यमराज की सूरत सिंह के समान दृढ़ शरीर महा पराक्रमी २९ और शरीर की लम्बाई में आठहाथ बड़ी भुजाओं से युक्त वृहद्वक्षस्स्थलवाला बड़ी कठिनता से बिजय होने वाला महा अभिमानी शूर और बड़ा वीरहै अपूर्व्व दर्शन ३० सब शूरवीरों के समूहों से युक्त मित्रों को निर्भय करनेवाला सदैव पांडवों का शत्रु दुर्य्योधन के मनोरथ सिद्ध करने में तत्पर ३१ तेरे सिवाय इन्द्र समेत सब देवताओं से भी मारने के अयोग्य है यह मेरा मत है कि तुम उस सूतपुत्र को मारो ३२ सावधान रुधिर मांस के धारण करनेवाले मनुष्यों समेत युद्धाभिलाषी सब देवताओं से भी वह महारथी कर्ण बिजय करने के योग्य नहीं है ३३ उस दुरात्मा पापसे अहंकारी निर्द्दयी सदैव पांडवों से दुष्टबुद्धि रखनेवाले और पाण्डवों से निरर्थक विरोध करनेवाले कर्ण को मारकर अब तुम अपने अभीष्ट को सिद्धकरो ३४ अर्थात् अब तुम उस रथियों में श्रेष्ठ अजेय सूतपुत्र को कालके बशमें करो और रथियों में श्रेष्ठ सूत पुत्रको मारकर धर्मराज में प्रीतिकरो ३५ हे अर्जुन देवता और असुरों से अजेय तेरे पराक्रम को मैं ठीक २ जानताहूं यह दुरात्मा सूतपुत्र अहंकारसे सदैव पां-डवों का अपमान करता चला आताहै ३६ और जिसके द्वारा पापी दुर्य्योधन

अपने को वीर मानता है हे अर्जुन अब उस पापों के मूल रूप सूतपुत्र को मारो ३७ हे अर्जुन खड्गके समान जिह्वा धनुष के समान मुख और बाणरूप डाढ़ रखने वाले उस वेगवान् अहङ्कारी पुरुषोत्तम कर्ण को मारो ३८ मैं तुझ को आज्ञादेता हूं कि युद्धमें उस शूरवीर कर्णको ऐसे मारो जिस प्रकार केसरी सिंह हाथी को मारताहै ३९ दुर्योधन जिसके पराक्रम से तेरे पराक्रम को अपमान करताहै हे अर्जुन उस कवच और कुण्डल के उखाड़ देनेवाले कर्ण को अब युद्ध में मारो ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकर्णवधार्थअर्जुनगमनेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

हे भरतबंशी इसके पीछे बड़े बुद्धिमान् केशवजी कर्ण के मारने में संकल्प करके यात्रा करनेवाले अर्जुन से फिर बोले १ हे भरतबंशी अब मनुष्य घोड़ेहाथी आदिके घोर नाशके होने को सत्रह दिन व्यतीत हुये २ हे राजा शत्रुओं के समूहों से आपके शूरबीरोंकी सेना बड़ीहोकर परस्पर युद्ध करतीहुई कुछ बाकी रहगई है ३ हे अर्जुन निश्चय करके कौरव लोग बहुत हाथी घोड़ेवाले होकर तुझ शत्रुको पाकर सेनाके मुखपर नाशवान् होगये ४ वह राजालोग और संजय इकट्ठे हैं और सब पांडव लोगभी तुझ अजेयको पाकर वर्त्तमानहैं ५ तुझ से रक्षित शत्रुओं के मारनेवाले पांचाल पांडव मत्स्य और कारुष्य देशियों ने चंदेरी देशियों समेत शत्रुओं के समूहों का नाशकिया ६ हे तात युद्धमें तुझसे रक्षित महारथी पांडवों के सिवाय कौन मनुष्य युद्धमें कौरवों के विजय करने को समर्थ होसक्ताहै ७ तुम युद्धमें देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें तत्पर होकर तीनोंलोकों के विजय करनेको समर्थहो फिर कौरवी सेनाके विजय करने को क्यों न होगे ८ हे पुरुषोत्तम तेरे बिना दूसरा कौन मनुष्य इन्द्र के समान बल पराक्रमी भी राजाभगदत्तके विजय करनेको समर्थ है ९ हे निष्पाप अर्जुन इसीप्रकार सब राजालोग भी तुझसे रक्षित इस बड़ी सेनाके देखने को भी समर्थ नहीं हैं १० हे अर्जुन इसीप्रकार युद्धमें तुझसे सदैव रक्षित धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके हाथोंसे द्रोणाचार्य्य और भीष्म मारेगये ११ हे अर्जुन कौन मनुष्य युद्ध में इन्द्रके समान पराक्रमी और भरतबंशियों के महारथी भीष्म और द्रोणाचार्य्य

को लड़ाई में विजय करने को समर्थ था १२ हे पुरुषोत्तम इसलोकमें तेरे सि-
वाय कौन पुरुष युद्ध में मुख न मोड़नेवाले महाअस्त्रज्ञ अक्षौहिणी सेनाओं के
स्वामी अतिउग्र परस्पर मिलेहुये युद्ध में दुर्मद इन भीष्म द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य
सोमदत्त अश्वत्थामा कृतबर्म्मा जयद्रथ शल्य और राजा दुर्य्योधन के बिजय
करने को समर्थ है १३।१५ बहुत से सेनाओं के समूह तो नाशहुये घोड़े रथ वा
हाथी पराजित और मारेगये हे भरतबंशी क्रोधयुक्त नानादेशों के क्षत्री और
गोपालदास,मीयान,व्रशाती पूर्व्वीय राजालोग,बाढ़धान, अभिमानी भोजबंशी
और ब्राह्मण क्षत्रियों की बड़ी सेना घोड़े हाथी और नानादेशों के बासी यह
सब महा उग्ररूप तुमको और भीमसेन को पाकर नाशहोगये १६।१८ महाउग्र
भयकारी कर्म करनेवाले तुषार, यवन, खश, दार्व, अभिसार, दरद बड़ेसमर्थ मोठर
तंगण, आंध्रक, पुलिन्द और उग्र पराक्रमी किरात म्लेच्छ, पहाड़ी, सागर और
अनूप देशके रहनेवाले १९।२० यह सब बेगवान् युद्धमें कुशल पराक्रमी हाथमें
दंड रखनेवाले कौरवों समेत दुर्य्योधन के साथ क्रोधयुक्त २१ युद्धमें तेरे सिवाय
दूसरेसे बिजय करने के योग्यनहीं हे शत्रुओंके तपानेवाले जिसके तुम रक्षक न हो
वैसा कौनसा मनुष्य दुर्य्योधनकी उस बड़ी अलंकृत सेनाको देखकर सन्मुख हो
सक्ताहै २२ हे समर्थ वह समुद्रके समान उठीहुई धूलसेयुक्त सेना २३ तुझसे रक्षित
क्रोधयुक्त पाण्डवों से चीरकर मारीगई अब सात दिन हुये कि मगधदेशियों का
राजा बड़ापराक्रमी जयत्सेन २४ युद्धमें अभिमन्युके हाथसे मारागया उसकेपीछे
भीमसेन ने भयभीत कर्म करनेवाले दश हजार हाथियों को अपनी गदासेही
मारडाला २५ और जो कुछ राजाके घोड़े आदि थे उनको भी मारडाला इसके
पीछे अपने पराक्रम सेही अन्य सैकड़ों हाथी और रथियों को मारा २६ हे पाडव
अर्जुन इसरीति से उस बड़े भयकारी युद्धके वर्त्तमान होने पर कौरव लोग भी-
मसेन और तुझको पाकर २७ घोड़े रथ और हाथियों समेत यहां से मर मरकर
यमपुरको गये हे अर्जुन इसी प्रकार वहां पांडव के हाथसे सेना मुखके मरनेपर
२८ परम अस्त्रज्ञने बाणों से ढककर सबका नाशकरदिया उसके धनुषसे निकले
हुये शत्रुओं के शरीरों के चीरनेवाले २९। ३० सुनहरी पुंखयुक्त सीधेजानेवाले
बाणों से आकाश व्याप्त होगया वह भीमसेन एक २ घूंसे से हजारों रथियोंको
मारताथा ३१ उसने बड़े पराक्रमी इकट्ठेहुये एकलाख मनुष्य और हाथियों को

मारकर दशवीं गति से उन हाथी घोड़े और रथों को पाकर मारा ३२ दोषों से पूर्ण नवगतियों को त्यागकरते उसने युद्धमें बाणोंको छोड़ा और आपकी सेना को मारते हुये भीष्मजी ने दशदिन तक ३३। ३४ रथके आसन खाली करके घोड़े वा हाथियों को मारा इसनें युद्ध में रुद्र और विष्णु के समान अपने रूप को दिखाकर और पांडवों की सेनाको आधीन करके मारा फिर चंदेरी पांचाल और कैकय देशीय राजाओं को मारतेहुये ३५ बिना नौका के नदीमें डूबनेवाले अभागे दुर्य्योधन के निकालने के इच्छावान् भीष्म ने रथ हाथी और घोड़ों से व्याकुल पांडवीसेना को भस्मकिया ३६ युद्ध में उत्तम शस्त्र रखनेवाले हजारों कोटि पदाती वा सृंजय वा अन्य राजालोग चलते हुये सूर्य्य के समान घूमने वाले युद्धमें विजय से शोभायमान जिस भीष्मजीके देखने को भी समर्थ नहीं हुये ३७। ३८ ऐसा प्रतापी भीष्म भी बड़े उपाय से पांडवों के सन्मुखगया वहां अकेले भीष्मने पांडव और सृंजियों को भगाकर ३९ सब बीरों में प्रतिष्ठाकोपाया फिर तुझसे रक्षित शिखण्डी ने उस महाव्रतनाम भीष्म को पाकर ४० गुप्तग्रन्थी वाले बाणों से मारा वह भीष्मपितामह तुझ पुरुषोत्तम को पाकर गिराहुआ शर शय्यापर ऐसे सोताहै जैसे कि इन्द्रको पाकर वृत्रासुर सोयाथा उग्ररूप भारद्वाज द्रोणाचार्य्यने पांचदिन तक शत्रुओं की सेनाको छिन्नभिन्न करके ४१। ४२ अ-भेद्यव्यूह को अलंकृत करके बड़े बड़े महारथियों को गिराते हुये युद्धमें जयद्रथ की रक्षा करके उस उग्ररूप ने यमराज के समान रूप धारण करके रात्रिके युद्ध में प्रजाका नाशकर दिया फिर शूरवीरों को बाणोंसे मारकर ४३। ४४ धृष्टद्युम्न को पाकर परमगति को पाया अब जो तुम कर्णआदि रथियों को ४५ न हटाते तो द्रोणाचार्य्य युद्धमें न मारेजाते तुमने दुर्य्योधन की सब सेना रोकी उसका-रणसे द्रोणाचार्य्य युद्धमें धृष्टद्युम्नके हाथसे मारेगये हे अर्जुन तेरे सिवाय दूसरा कौन सा क्षत्री ऐसे कर्मको करसक्ताहै ४६। ४७ जैसा कि तुमने जयद्रथके मारने में कियाथा अर्थात् बड़ीभारी सेना को रोककर बड़े बड़े शूरवीरों को मारके ४८ राजा जयद्रथ को तैंने अपने तेज और बल से मारा सब राजालोग जयद्रथ के मारने को आश्चर्य्य और अद्भुत मानते हैं ४९ हे अर्ज्जुन तुम महारथी हो इससे उसका मरना आश्चर्य्य युक्त नहीं है हे भरतबंशी मैं तुझको युद्ध में पा-कर एकही दिन में क्षत्रियों के समूहों का नाशहोना मानता हूं ५० यह मेरा

पूर्ण विश्वास है सो हे अर्ज्जुन यह दुर्य्योधन की घोर सेना युद्ध में ५१ सब शूरबीरों समेत मृतक रूपहै जब कि भीष्म और द्रोणाचार्य्य सरीखे मारेगये वह भरतबंशियोंकीसेना जिसके अत्यन्त शूरवीर मारेगये और घोड़े रथ और हाथी भी मारेगये ५२ अब ऐसी दिखाई देती है जैसे कि सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों से रहित आकाश होताहै हे भयानक पराक्रमी अर्ज्जुन यह सेना युद्ध में ऐसे नष्टहोगई ५३ जैसे कि पूर्व्व समयमें इन्द्रके पराक्रमसे असुरों की सेना नाश होगई थी इससेनामें मरनेसे बाकी बचेहुये पांचमहारथीहैं ५४ अश्वत्थामा कृत- बर्मा, कर्ण, शल्य, कृपाचार्य्य हे नरोत्तम अब तुम इनपांचों महारथियोंको मा- रकर ५५ शत्रुओं से रहित जानकर द्वीप, नगर, आकाश तल, पाताल, पर्व्वत और महाबनों समेत पृथ्वीको अपनी करके राजा को सुपुर्द करो ५६ अब अ- संख्यलक्ष्मी और पराक्रमका रखनेवाला युधिष्ठिर इसपृथ्वीको पावे जैसे कि पूर्व्व समयमें विष्णुजी ने दैत्य और दानवों को मारकर पृथ्वी को इन्द्रके अर्थ दीथी उसीप्रकार तुमभी इनसब कौरवादि क्षत्रियोंको मारकर राजाकोदो ५७ अब तेरे हाथसे शत्रुओं को मारने से पांचालदेशी ऐसे प्रसन्नहोयँ जैसे कि विष्णुजी के हाथसे दैत्योंके मरनेपर देवतालोग प्रसन्नहुये थे ५८ अथवा जो गुरूकी महत्त्व- तासे द्विपादों में श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य्य के तुझ मारनेवालेकी दया और करुणा अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य परहै ५९ वह अत्यन्त पूजित भाई माताके बांध- वोंको मानताहुआ कृतबर्माको पाकर यमलोकमें नहीं पहुँचावेगा ६० और हे कमलनयन अब जो तुम दया करके माता के भाई मद्रदेशियों के राजा शल्य को मारना नहीं चाहतेहो ६१ तो हे नरोत्तम अब पाण्डवों के ऊपर पाप बुद्धि रखनेवाले अत्यन्तनीच इस कर्णको तीक्ष्ण धारवाले बाणोंसे मारो ६२ यहतेरा श्रेष्ठ और शुभकर्महै इसमें किसीप्रकारका तुझको दोष नहीं होसक्ताहै और हम भी ठीक २ जानते हैं कि इसमें कोई दोष नहीं है ६३ हे निष्पाप रात्रिके समय पुत्रोंसमेत तेरी माताके शोककरनेमें और द्यूतके निमित्त दुर्य्योधनने तुमलोगों को जो २ कष्टदिये ६४ इनसब बातोंका मूलरूप यह दुष्टात्मा कर्णहीहै दुर्य्योधन सदैवसेही कर्ण से अपनी रक्षा मानताहै ६५ और इसी कर्णके कारणसे उसने मेरेभी पकड़नेका बिचारकिया हे बड़ाई देनेवाले इसराजा दुर्य्योधनको बुद्धिसे दृढ़विश्वासहै कि ६६ कर्णही युद्धमें निस्सन्देह सबपाण्डवोंको बिजय करेगा हे

अर्जुन तेरे पराक्रमके जाननेवाले दुर्योधनने कर्ण का आश्रय लेकर तुमलोगोंसे शत्रुता अंगीकारकरी वह कर्ण सदैव यही कहता है कि मैं सन्मुख आने वाले पाण्डवों को ६७। ६८ और महारथी यादव वासुदेवको विजयकरूंगा वह अत्यन्त दुष्टात्मा दुर्योधनको उत्साह दिलादिलाकर यहकहा करताहै ६९ वह कर्ण जो युद्धमें गर्जरहाहै हे भरतवंशी अब उसको मारो निश्चयकरके दुर्योधन ने जो २ तुम्हारे साथ पाप किये ७० उनसबमें यही दुष्टात्मा कर्णही कारणथा और जो उस दुर्योधनके रखतेहुये उसके निर्दयी इन छः महारथियों ने ७१ अधर्म युद्ध करके अभिमन्युको मारडाला द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा इनतीनों ने नरोत्तम वीरोंके पीड़ामान करनेवाले हाथियों को मनुष्यों से रहित करनेवाले और महारथियोंको रथसे बिरथ करनेवाले घोड़ों को उनके सवारों से रहित करनेवाले पतियों को शस्त्र और जीवन से रहित करनेवाले ७२ कौरव वृष्णियों के यशके बढ़ानेवाले सेनाओं के छिन्नभिन्न करनेवाले महारथियों को पीड़ामान करनेवाले ७३। ७४ मनुष्य घोड़े और हाथियों को यमलोकमें पहुँचानेवाले बाणोंसे सेनाको भस्मकरनेवाले आतेहुये अभिमन्युको जो मारा ७५ वह दुःख मेरे अंगों को भस्म कियेडालता है हे मित्र मैं तेरी सत्यता की शपथ खाताहूं हे प्रभु जो दुष्टात्मा कर्ण ने वहां भी शत्रुता करी ७६ वह कर्ण युद्ध में अभिमन्युके आगे सन्मुखता करने को असमर्थ अभिमन्यु के बाणों से छिदा हुआ अचेत रुधिरमें डूबा शरीर ७७ क्रोधसे प्रकाशित श्वास लेता मुख फिरा शायकों से पीड़ामान भागने को चाहता जीवनसे निराश ७८ अत्यन्त ब्याकुल युद्धमें प्रहारों से थकाहुआ नियतहुआ तदनन्तर समयके अनुसार युद्धमें द्रोणाचार्य्य के ७९ निर्दय बचनको सुनकर फिर कर्ण ने धनुषको काटा इसके पीछे उसके हाथसे टूटेशस्त्रवाले अभिमन्युको छली बुद्धिवाले पांचमहारथियों ने ८० युद्धमें बाणोंकी वर्षा से घायलकिया उसवीरके मरनेपर सब लोगों में दुःख प्रवृत्तहुआ अर्थात् सबको तो बड़ा खेदहुआ परन्तु वह दुष्टात्मा कर्ण और दुर्योधन बहुत हँसे कर्ण ने निर्दय मनुष्यके समान पाण्डव और कौरवों के सन्मुख सभाके मध्यमें द्रौपदी से जो यह कठोर शब्द कहे कि हे कृष्णा पाण्डव नाशमान होकर सनातन नरक को गये ८१। ८२। ८३ हे पृथुश्रोणि मृदुभाषिणी द्रौपदी तुम दूसरे पतिको वरो अथवा दासीरूप होकर दुर्योधन के महलमें ८४

प्रवेशकरो तेरे पति नहीं हैं हे भरतबंशी उससमय महादुर्बुद्धी पापात्मा कर्ण ने तेरे सुनतेहुये धर्मराजसे यहपाप बचन कहाहै अब पापी के उस बचन को सुवर्ण से जटित दश ८५। ८६ महातीच्णए मृत्युकारी तेरे चलायेहुये बाण शान्त करो उस दुष्टात्माने जो २ और पाप तुझपर किये अब उसके कियेहुये पाप और तेरे चलायेहुये बाण उसके जीवन को नाशकरो अब वह दुष्टात्मा कर्ण गांडीव से निकलेहुये घोर बाणों को अपने अंगों से स्पर्श करेगा और द्रोणाचार्य्य और भीष्मजी के बचनों को स्मरणकरते सुनहरी पुंख शत्रुओं के मारनेवाले बिजली से प्रकाशित ८७। ८८। ८६ तेरे चलायेहुये बाण उसके कवच को काटकर रुधिरको पानकरेंगे अब तेरी भुजाओं से छोड़ेहुये महाउग्र वेगवान् बाण उसके बड़े कवचको काटकर ६० कर्णको यमलोकमें पहुंचावेंगे अब हाहाकार करनेवाले महादुःखी तेरे बाणों से पीड़ित होकर राजा लोग रथसे गिरतेहुये कर्णको देखें और दुःखीहुये बांधव रुधिरमें भरे पृथ्वीपर पड़े सोतेहुये ६१। ६२ टूटे शस्त्रवाले कर्णको देखो तेरे भल्लसे घायल हाथीकी कक्षाका चिह्न रखनेवाली इसके रथकी बड़ी लंबी ध्वजा महा कंपित होकर पृथ्वीपर गिरे ६३ और भयभीत शल्य तेरे असंख्यों बाणों से टूटा सुवर्ण से जटित मृतकरथीवाले रथको छोड़कर भागो ६४ इसके पीछे तेरा शत्रु दुर्य्योधन तेरे हाथसे कर्ण को मराहुआ देखकर अपने जीवन और पृथ्वी के राज्य से निराश होजाय ६५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ कर्ण के तीच्णबाणों से घायल पांडवों की रक्षा चाहनेवाले यह पांचालदेशी जाते हैं ६६ सब पांचाल और द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखंडी धृष्टद्युम्न के पुत्र, शतानीक नकुल के पुत्र ६७ नकुल, सहदेव, दुर्मुख, जनमेजय, सुधर्मा और सात्यकी को कर्ण के स्वाधीनही वर्त्तमान जानो ६८ हे शत्रुओं के तपानेवाले युद्धमें कर्ण के हाथसे घायल तेरे बांधव पांचालों के यह घोर शब्द सुने जाते हैं ६६ बड़े धनुषधारी पांचालदेशी किसी दशामें भी भयभीत होकर पीठ नहीं मोड़ते और बड़े युद्धमें मृत्युको भी नहीं गिनते हैं १०० जिस अकेले ने बाणों के समूहों से पांडवी सेनाको ढकदिया ऐसे भीष्मजी को भी पाकर वह पांचाल देशी नहीं मुड़े १०१ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले इसीप्रकार युद्ध में सदैव अग्निके समान प्रकाशित अस्त्ररूपी अग्नि रखनेवाले सब धनुषधारियों के गुरू युद्ध में अपने तेजसेही भस्म करनेवाले अजेय द्रोणाचार्य्य को १०२ और सब

शत्रुओं के विजय करने में प्रवृत्तहुये पांचालदेशी कभी कर्ण से भयभीत और मुख मोड़नेवाले नहीं हुये हैं १०३ उन शूरवीर पांचालों के प्राणों को कर्ण ने बाणों के द्वारा ऐसे हरलिया जैसे कि पतंगों के प्राणोंको अग्नि हरलेताहै १०४ युद्धमें इसरीति से सन्मुख अपने मित्रके निमित्त जीवन का त्यागनेवाला कर्ण उन हजारों शूरवीर पांचालों को नाश कररहाहै १०५ सो तुम हे भरतबंशी नौकारूप होकर उस कर्ण रूपी नौका रहित अथाह समुद्र में डूबतेहुये बड़े धनुषधारी पांचालों की रक्षा करने के योग्यहो १०६ कर्ण ने जो महाघोर अस्त्र महात्मा भार्गव परशुरामजी से लियाहै उसका रूप वृद्धियुक्तहै १०७ वह सबसेनाओं का तपानेवाला घोररूप बड़ा भयानक बड़ी सेनाको ढककर अपने तेजसे प्रकाशमानहै १०८ कर्ण के धनुषसे निकलेहुये यह बाण युद्धमें घूमते हैं और भ्रमरों के समूहों के समान उन बाणों ने आपके पुत्रों को तपायाहै १०९ हे भरतबंशी यह पाञ्चाल युद्ध में अज्ञानी मनुष्यों से कष्ट से हटाने के योग्य कर्ण के अस्त्र को पाकर सब दिशाओंको भागते हैं ११० हे अर्ज्जुन कठिन क्रोध में भरा चारों ओरको राजा और सृञ्जियों से घिराहुआ यह भीमसेन कर्णसे युद्धकर्त्ताहुआ उसके तीक्ष्णधारवाले बाणों से पीड़ामान होता है १११ हे भरतबंशी बिचार न किया हुआ कर्ण पाण्डव सृञ्जी और पाञ्चालों को ऐसे माररहाहै जैसे कि उत्पन्नहुआ रोग शरीरको मारडालता है ११२ मैं युधिष्ठिर की सेना भरे में तेरे सिवाय किसी दूसरे शूरबीर को नहीं देखता हूं जो कर्णके सन्मुख होकर जीता हुआ अपने घरको आवे ११३ हे नरोत्तम अर्ज्जुन अब तुम अपने तीक्ष्णबाणों से उसको मारकर अपनी प्रतिज्ञा के समान कर्मको करके कीर्तिको पावो ११४ हे शूरबीरों में श्रेष्ठ तुमहीं युद्धमें कर्णसमेत कौरवोंके विजय करनेको समर्थ हो दूसरा कोई नहीं है यह तुझसे मैं सत्यसत्य कहताहूं ११५ हे नरोत्तम अर्जुन उस बड़े कर्म को करके और उस महारथी कर्णको मारकर सफलअस्त्रयुक्तहोकर प्रसन्नहो ११६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्ज्जुनउपदेशेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले हे भरतबंशी केशवजी के वचन सुनकर वह अर्ज्जुन एकक्षण मात्रमें ही शोकसे रहित होकर प्रसन्न हुआ १ इसके पीछे प्रत्यंचा को चढ़ाकर

गाण्डीव धनुष को टंकारा और कर्ण के मारने में चित्तको लगाकर केशवजी से बोला २ हे गोविन्द जी तुझ नाथके द्वारा मेरी अवश्य विजय होगी अब सब भूत भविष्य वर्त्तमान के उत्पन्न होनेवाले सबजीव मुझपर प्रसन्न होजावो हे कृष्णजी आपके संगहोकर मैं सन्मुख आनेवाले तीनों लोकोंको भी परलोक में पहुंचा सक्ता हूं फिर इस बड़े युद्धमें कर्णको क्यों नहीं यमपुर पहुंचाऊंगा ३।४ हे जनार्द्दन जी पांचालों की सेनाको भगाहुआ देखताहूं और कर्णको युद्ध में निर्भय के समान देखता हूं ५ हे वार्ष्णेय श्रीकृष्णजी कर्ण के छोड़ेहुये सब प्रकारसे प्रकाशमान भार्गवास्त्र को ऐसे देखता हूं जैसें कि इन्द्र का छोंड़ाहुआ अशनि होता है ६ निश्चय करके यह वह युद्ध है जिसमें मेरे हाथसे मारेहुये कर्ण को सब संसारके लोग तबतक कहैंगे जबतक कि यह पृथ्वी रहैगी ७ हे श्रीकृष्णजी अब गाण्डीव धनुषसे छोड़े हुये मेरे हाथसे प्रेरित नाशकारी विकर्णनाम बाण कर्णको मृत्युके समीप पहुँचावेंगे ८ अब राजा धृतराष्ट्र अपनी बुद्धिकी निन्दाकरेगा और दुर्य्योधनको राज्यके अयोग्य जानेगा हे महाबाहो अब राजाधृतराष्ट्र राज्य, सुख, लक्ष्मी, देश, पुर और पुत्रोंसे पृथक् होगा९।१० हे श्रीकृष्णजी अब कर्णके मरने पर दुर्य्योधन राज्य और जीवनसे निराशहोगा यह आपसे सत्यसत्य कहताहूं ११ अब राजा धृतराष्ट्र मेरे बाणोंसे कर्णको खंड खण्डहुआ देखकर संधि सम्बन्धी आपके बचनों को स्मरण करेगा १२ हे श्री कृष्णजी अब यह बाणों के और गाण्डीव धनुष के दांवघात से मेरे रथको मण्डलाकार जानो १३ हे गोविन्दजी अब मैं तीक्ष्ण बाणों से कर्णको मारकर राजा युधिष्ठिरके कठिन जागरणको दूरकरूंगा १४ अब मेरे हाथसे कर्णकेमरने पर राजा युधिष्ठिर प्रसन्न चित्त होकर बहुत कालतक आनन्दों को पावेगा १५ हे केशवजी अब मैं ऐसे अजेय और अनुपम बाणोंको छोडूंगा जोकि कर्णको जीवन से नष्टकरके गिरावेंगे १६ निश्चय करके जिस दुरात्माका यह व्रत मेरे मारने में है कि जबतक अर्जुनको न मारलूंगा तबतक अपने चरणोंको भी न धोऊंगा १७ हे मधुसूदनजी उस पापी के ब्रतको मिथ्या करके गुप्तग्रन्थी वाले बाणोंसे उसको रथसे गिराऊंगा १८ जो यह पृथ्वीपर अपने समान दूसरेको नहीं मानताहै इसीसे इस सूतपुत्रके रुधिरको पृथ्वी पानकरेगी १९ हे कृष्णा तू बिना पतिकी है इस प्रकारसे अपनी प्रशंसा करते हुये कर्णने जो धृतराष्ट्र के मत से

कहाहै उसको विषैले सर्पकी समान तीक्ष्णधारवाले मेरे बाण मिथ्याकरके उसके रुधिरको पियेंगे २०।२१ मुझ हस्तलाघवी से छोड़े गाण्डीवधनुषसे निकलेहुये बिजलीके समान प्रकाशमान नाराच कर्णको परमगति देंगे २२ अब वह कर्ण महादुःखी होगा जिसने पांडवोंके निन्दक कौरवोंकी सभामें कुत्सित वचनोंको कहाहै २३ निश्चय करके जो वहां मिथ्यावादी और हास्य करनेवालेथे वह सब लोगभी अब इस सूतपुत्रके मरनेपर शोक युक्त होंगे अपनी प्रशंसा करनेवाले कर्णने धृतराष्ट्रके पुत्रोंसे जो यह बचन कहाहै कि मैं तुमको पाण्डवोंसे बचाऊं-गा २४।२५ उसके उसबचनको भी मेरे तीक्ष्णधारवालेबाण मिथ्या करेंगे और जिसने यहभी कहाहै कि मैं बेटों समेत सब पांडवोंको मारूंगा २६ उस कर्णको अब मैं सब धनुषधारियोंके देखतेहुयेही मारूंगा बड़ेसाहसी दुरात्मा २७ दुर्बुद्धी दुर्य्योधन ने जिसके पराक्रमका आश्रय लेकर सदैव हमारा अपमान किया हे श्रीकृष्णजी अबकर्णके मरनेपर भयभीत धृतराष्ट्रके पुत्र राजाओं समेत दिशा-ओंको ऐसे भागो जैसे कि सिंह से भयभीत होकर मृगभागते हैं २८ अब युद्ध में मेरे हाथसे पुत्र मित्र आदि समेत कर्ण के मरनेपर राजा दुर्य्योधन अपनेको शोचो २९ हे श्रीकृष्णजी अब अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन कर्णको मृतक देख कर ३० मुझको सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ जानेगा मैं राजाधृतराष्ट्र को पुत्र पौत्र सुहृद् मंत्री और सेवकों से निराश करके राज्यपर नियतकरूंगा हे केशव जी अब अनेकप्रकारके मांसभक्षी चक्रांगनामजीव मेरे बाणोंसे टूटेहुये कर्णके ३१। ३२ अंगों को भक्षण करेंगे हे मधुसूदनजी अबमैं युद्धमें राधाके बेटे कर्णके ३३ शिरको सब धनुषधारियों के देखतेहुयेही काटूंगा और अब तीक्ष्ण बिपाट क्षुर-प्रनामबाणों से ३४ दुरात्मा राधेय के गात्रों को रणमें छेदूंगा तबराजा युधिष्ठिर बड़े दुःखको त्यागकरेगा ३५ अर्थात् बड़ाबीर युधिष्ठिर बहुत कालसे धारणकिये हुये अपने चित्तके शोकको दूरकरेगा हे केशव अब मैं बांधवोंसमेत राधाकेपुत्र को मारकर ३६ धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिरको अत्यन्त प्रसन्न करूंगा और कर्ण के दुःखी सब सहायकोंको अग्निके समान प्रकाशमान सर्पके समानबाणोंसे मार कर सुवर्ण जटित गृध्रपक्षयुक्त सीधेचलनेवाले बाणोंसे ३७। ३८ पृथ्वीको राजा-ओं समेत तरूंगा और अभिमन्युके सबशत्रुओं के ३९ अंग और शिरोंको अ-पने तीक्ष्णबाणोंसे मथन करूंगा और धृतराष्ट्रके पुत्रों से रहित इसपृथ्वी को

अपने बड़े भाईको दूंगा ४० अथवा हे केशवजी आप अर्जुनसे रहित पृथ्वीपर घूमोगे हे यदुनाथ अबमैं धनुषधारियोंका ४१ वा कौरवोंके क्रोध वा गांडीव धनुषके बाणों से अनृणहूंगा अबमैं तेरहबर्षके इकट्ठे कियेहुये दुःखों को त्यागूंगा ४२ युद्धमेंकर्णको मारकर जैसे कि इन्द्रने संबर दैत्यको माराथा उसीप्रकार हे केशवजी अब युद्धमें कर्ण के मरनेपर युद्धमें अभीष्ट चाहनेवाले मित्र सोमकोंके महारथीकारको प्राप्तहुआ मानो हे माधवजी अबमेरी और सात्यकी की कैसी प्रीति ४३।४४ होगी और कर्णके मरने वा मेरी बिजय होनेपर कैसी प्रसन्नताहोगी मैं युद्धमें उसके महारथी पुत्रसमेत कर्णको मारकर ४५ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकी को प्रसन्नकरूंगा हे माधवजी अबमैं युद्धमें कर्ण को मारकर धृष्टद्युम्न शिखण्डी और पांचालोंकी अनृणताको पाऊंगा ४६।४७ अब युद्धमें क्रोधयुक्त कौरवों से युद्धकरनेवाले और युद्धमें कर्ण के मारनेवाले अर्जुनको देखो इसके पीछे मैं अपनी प्रशंसा आपके सन्मुख करूंगा ४८ इस पृथ्वीपर धनुर्वेद विद्यामें आजमेरे समान कोई नहीं है और पराक्रम में भी मेरे समान कौन होसक्ता है न मेरे समान कोई क्षमावान्है और इसीप्रकार क्रोधमें भी मेरे समान मैंहीं हूं ४९ मैं धनुषधारी अपने भुजाओं के बलसे इकट्ठेहोनेवाले देवता असुर और मनुष्यों आदिजीवोंको पराजय करसक्ताहूं मेरे पराक्रम और पुरुषार्थको अद्वितीयजानो ५० मैं अकेलाही बाणरूप अग्नि रखनेवाले गांडीव धनुषसे सब कौरव और बाह्लीकों को बिजयकरके बड़े हठसे समूहोंसमेत इसरीति से भस्मकरसक्ताहूं जैसे कि हिम ऋतुके अन्त होनेपर सूखे बनको अग्नि भस्म करदेताहै ५१ मेरे हाथसे पृषत्कनाम बाण बर्त्तमानहैं और अब यह धनुषभी बाणों समेत मण्डलाकारहै और मेरेदोनों चरणरथ और ध्वजासे युक्तहैं ऐसीदशामें मुझ युद्धमें बर्त्तमान से युद्धकरके कौन बिजयपासक्ता है ५२ वह शत्रुओं का मारने वाला रक्तनेत्र अद्वितीयबीर अर्जुन ऐसा कहकर भीमसेनके छुटानेका अभिलाषी और कर्णके शरीरसे उसके शिरके काटनेका उत्सुक शीघ्रही युद्धभूमिमेंगया ५३॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअर्जुनयुद्धोत्सुकेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे तात इसकेपीछे युद्धके निमित्त अर्जुनके जानेपर वहां पांडव

सृंजी और मेरे शूरबीरों का महाभयकारी कर्ण के सन्मुख होनेवाला वह युद्ध कैसाहुआ १ संजय बोले कि बड़ेध्वजाधारी बहुमूल्य सामानों से अलंकृत भेरी के शब्दसे ऊंचामुख रखनेवाली सन्मुख आईहुई उनकी सेना ऐसीगर्जी कि जैसे वर्षाऋतु में बादलोंके समूह गर्जनाकरतेहैं बड़े हाथी रूप बादलों से व्याप्त अस्त्ररूपी जलसे पूर्ण बाजे वा रथ की नेमी और क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान सुवर्णजटित अस्त्ररूप बिजली रखनेवाला बाण खड्ग नाराच आदि अस्त्रों की धारों से युक्त २।३ भयानक वेगवान् रुधिर प्रवाहसे बहनेवाला खड्गोंसे व्याकुल क्षत्रियों का मारनेवाला निर्दय और ऋतुके बिनाही अप्रियबर्षा का करनेवाला प्रजानाशक बादल उत्पन्नहुआ ४ फिर बहुत से मिले हुये रथ उस अकेले रथी को घेरकर मृत्युके पास पहुंचातेथे उसी प्रकार एक उत्तमरथी एक २ अकेले रथी को और कोई २ अकेला रथीभी बहुत से रथियों को मारताथा ५ और किसी रथीने कितनेही सारथी घोड़ोंसमेत रथोंको मृत्युबशकिया और कितनेहीने एक२ हाथी के द्वारा बहुत से रथ और घोड़ों को मृत्यु के मुख में डाला ६ अर्जुन ने बाणों के समूहों से सब शत्रुओं को घोड़े रथ और सारथियों समेत यमपुर को भेजा और सवारों समेत घोड़े और पदातियों के समूहों को भी मारा ७ कृपाचार्य्य और शिखण्डी युद्धमें सन्मुख हुये सात्यकी दुर्य्योधन के सन्मुखगया श्रुत अश्वत्थामा के साथ और युधामन्यु चित्रसेन के साथमें युद्ध करनेलगा ८ फिर रथी संजय और उत्तमौजा कर्ण के पुत्र सुषेण के सन्मुख हुआ और सहदेव राजागांधार के सन्मुख ऐसे दौड़ा जैसे कि क्षुधासे पीड़ित सिंहबड़े बैलकी ओर दौड़ताहै नकुलके पुत्र शतानीकने कर्ण के पुत्रको सात्यकीने वृषसेन को बाणोंके समूहों से घायलकिया और बड़े शूरबीर कर्ण के पुत्रने बाणोंकी अतिवर्षा से पांचाल देशी को घायलकिया ९।१० रथियों में श्रेष्ठ युद्ध करनेवाले माद्रीनन्दन नकुलने कृतबर्मा को मोहितकिया और पांचाल देशियों का राजा सेनापति धृष्टद्युम्नने सब सेना समेत कर्ण को घायल किया हे भरतबंशी दुश्शासन और भरतबंशियोंकी सेना और संसप्तकोंकी वृद्धिमान् सेनाने युद्धमें शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ असह्य बेगवाले भयकारी रूपवाले भीमसेनको मोहितकिया ११।१२ वहां इस प्रकार से घायल शूरबीर उत्तमौजाने बड़े हठकरके कर्ण के पुत्रको मारा और उसका शिर पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करता पृथ्वीपर गिरपड़ा १३

तब पीड़ामानरूप कर्ण ने सुषेण के शिर को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर क्रोधयुक्त हो पृथ्वी पर उसके घोड़े रथ और ध्वजा को अपने तीक्ष्ण धारवाले बाणों से काटा १४ फिर उस उत्तमौजाने भी अपने प्रकाशित खड्ग से कर्ण को पीड़ामान किया तदनन्तर वह कृपाचार्य्य के पीछे चलनेवालों को मारकर शिखण्डी के रथपर सवारहुआ १५ फिर रथारूढ़ शिखण्डी ने रथसे रहित कृपाचार्य्य को देख कर बाणों से घायल करना नहीं चाहा फिर अश्वत्थामाने कृपाचार्य्य को चारों ओर से आड़में करके ऐसे छुटाया जैसे कि कीच में फँसीहुई गौको निकालते हैं १६ वायु के पुत्र सुवर्णमयी कवचवाले भीमसेन ने आपके पुत्रोंकी सब सेना को अपने तीक्ष्ण बाणों से ऐसे संतप्त किया जैसे कि उष्णऋतु में आकाशमें बर्त्तमान सूर्य्य सबको संतप्त करदेताहै १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिसंकुलयुद्धेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे कठिन युद्धमें बहुतसे शत्रुओंसे घिराहुआ अकेला भीमसेन उस युद्धमें अपने सारथी से यह बचन बोला कि अब तुम दुर्योधनकी सेना में चलो १ हेसारथी तुम घोड़ोंके द्वारा बड़ीशीघ्रतासेचलो मैं इन धृतराष्ट्रके पुत्रोंको यमपुर पहुंचाऊंगा उसकी आज्ञापातेही वह बड़ावेगवान् सारथी आपके पुत्रकी सेनामें भीमसेनको ले पहुँचा २ जिधरसे कि भीमसेनने उस सेनामें जाना चाहा वहां दूसरे कौरव रथ हाथी घोड़े औरपतियोंसमेत उसके सन्मुखगये ३ और चारों ओरसे भीमसेन के बड़े दृढ़रथको अपने बाणों के समूहों से घायल किया तब भीमसेन ने अपने सुनहरी पुंखवाले बाणों से उन सबके छोड़ेहुये आतेहुये बाणों को काटा ४ भीमसेन के बाणों से टूटेहुये वह सुनहरी पुंखवाले बाण दोदो चार २ खण्ड होकर गिरपड़े हे राजा इसके पीछे उत्तम २ राजाओं के मध्य में भीमसेन के हाथसे मारेहुये हाथी घोड़े रथ और शूरलोगों के ५ घोर शब्द ऐसे प्रकटहुये जैसे कि बज्रसे टूटेहुये पर्व्वतों के शब्दहोते हैं भीमसेनके उत्तम बाण जालों से घायलहुये उत्तम२ राजाओंने ६ युद्धमें भीमसेन के ऊपर चारोंओर से ऐसे चढ़ाई करी जैसे कि फूलके निमित्त पक्षीलोग वृक्षपर चढ़ाई करते हैं इसके पीछे आपकी सेनाके सन्मुख जानेपर उस अत्यन्त वेगवान् भीमसेन ने अपने

वेगको ऐसा प्रकट किया ७ जैसे कि प्रलयकालमें सबके मारनेका अभिलाषी दण्डधारी जीवोंका नाशककाल जीवोंको मारताहै तब आपके सब शूरवीर युद्ध में उस वेगवान् के वेगके सहनेको ऐसे समर्थ नहीं हुये ८ जैसे कि समय पर सबके भक्षण करनेवाले कालके वेगको सब सृष्टिके जीव नहीं सहसक्ते हैं हे भरतवंशी इसके पीछे भरतबंशियों की सेना युद्धमें उस महात्मा भीमसेनके हाथ से भस्मीभूत ९ भयभीत और महाघायल होकर चारों दिशाओं में ऐसे बिह्वल होकर भागी जैसे कि वायुसे बादलों के समूह पलायमान होते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् भीमसेन प्रसन्न होकर सारथी से फिर बोले १० हे सारथी तुम अपने और दूसरों के शूरबीरों के भिड़े और गिरते हुये रथ और ध्वजाओं को जानो मैं युद्ध करताहुआ कुछभी नहीं जानताहूं क्योंकि मैं भ्रांतिसे कहीं अपनी सेनाको ही पृषत्क नाम बाणों से नहीं छांड़ूं ११ हे विशोक सब ओरसे शत्रुओं को देख कर मेरारथ ध्वजाकी नोकको अधिक कंपायमान करताहै विदित होताहै कि राजा रोगमें ग्रसित होगयाहै जो अबतक अर्जुन नहीं आया हे सूत मैंने बड़े २ कष्टोंको पायाहै हे सारथी यहबड़ा दुःखहै जो धर्मराज मुझको शत्रुओं के मध्यमें छोड़कर चलागया अब मैं उसको वा अर्जुनको जीवतानहीं जानताहूं मुझको यही बड़ाकष्टहै १२ । १३ सो मैं प्रसन्न चित्त उस बड़ी साहसी शत्रुओं की सेनाको नाश करूंगा इससे अब मैं युद्धभूमि में सन्मुख आनेवाली सेनाको मार कर तुझ समेत प्रसन्न होऊंगा १४ हे सूत रथ में शायकों के सब तूणीरोंको देख कर और यह जानकर कहो कि शायक कितने बचे हैं और जो २ शायक बचे हैं वह किसकिस प्रकारके और संख्यामें कितने २ हैं १५ विशोक बोला हे वीर मार्गणनाम बाणोंकी संख्या तो साठ हजारहै और क्षुर वा भल्लोंकी संख्या दश हजारहै और हे वीर पाण्डव नाराचोंकी संख्या दो हजारहै और प्रवर नाम बाणों की संख्या तीन हजारहै १६ इतने शस्त्र बर्त्तमानहैं जिनको छः बैलों से युक्तछकड़ाभी न लेचले हे बुद्धिमान् शस्त्रों को छोड़ो और हजारों गदा खड्ग वा भुजारूपी धन आपके पास बर्त्तमान है १७ प्रास, मुद्गर, शक्ति और तोमर भी हैं तुम शस्त्रोंकी न्यूनता और खर्चहोने का भयमतकरो १८ फिर भीमसेनके चलाये हुये राजाओं के छेदनेवाले बड़े वेगवान् बाणोंसे गुप्त होनेवाले युद्धमें घोररूप छिपीहुई सूर्य्यवाली संसारकी मृत्युके समान इसयुद्धभूमि को देखो १९

हे सूत अब राजाओं के बालकों तककोभी यह मालूम होगा कि अकेला भीम-सेन युद्धमें डूबगया या उसने कौरवोंको विजय किया २० अब सब कौरवलोग मेरे ऊपर चढ़ाईकरो और वृद्धोंसे बालक पर्य्यन्त सब लोग मेरा यश बखानकरो मैं अकेलाही उन सबको मारूंगा अथवा वह सब मिलकर मुझ भीमसेन को पीड़ित करो २१ जो देवता कि मेरे उत्तम कर्म्म के उपदेश करनेवाले हैं वह सब केवल मेरी इतनी साधना करें कि वह शत्रुओं का मारनेवाला अर्ज्जुन मेरे ध्यानसे शीघ्र ऐसे आजाय जैसे कि यज्ञमें बुलायाहुआ इन्द्र आताहै २२ भरतबंशियों की इस सेनाको छिन्न भिन्न देखो यह राजालोग किस हेतुसे भागते हैं मुझे विदित होताहै कि वह बुद्धिमान् नरोत्तम अर्ज्जुन शीघ्रता से इस सेनाको ढकता चलाआता है २३ हे विशोक युद्धमें ध्वजाओं को और भागते हुये हाथी घोड़े और पतियों के समूहोंको देखो हे सूत बाण और शक्ती से घायल उन रथियों को और फैलेहुये रथों को देखो २४ यह कौरवी सेना भी महा घायल और वज्र के समान वेगयुक्त सुनहरी परवाले अर्जुन के बाणों से बराबर गुप्त २५ यह रथ घोड़े और हाथी पदातियों के समूहोंको मर्द्दन करतेहुये भागते हैं और सब कौरवलोग भी महा मोहितहुये ऐसे भागे जाते हैं जैसे कि बन दाह से भयभीत होकर हाथी भागते हैं २६ हे विशोक युद्ध में हाहाकार करनेवाले गजराज बड़े २ भयानक शब्दोंको करते हैं २७ विशोक बोला कि हे भीमसेन क्रोधयुद्ध अर्जुन के हाथसे खैंचेहुये गांडीव धनुषके घोर शब्दों को क्या आप नहीं सुनतेहो क्या आपके दोनों कर्णों में बधिरता तो नहीं आगई २८ हे पांडव अब आपके सब मनोरथ वृद्धियुक्तहैं यह बानर हनुमान्‌जी हाथियों की सेनामें दिखाई देते हैं और धनुष की प्रत्यंचा को ऐसे चेष्टाकरती देखो जैसे कि नीले बादलसे निकलतीहुई प्रकाशमान बिजली चमकती है २९ यह बानर अर्जुनकी ध्वजाके नोकपर चढ़ाहुआ शत्रुओं के समूहोंको भयभीत करताहुआ सब ओर से दीखताहै मैं आप उसको युद्धमें देखकर भयभीत होताहूं ३० और यह अर्जुन का बिचित्र मुकुटभी अत्यन्त शोभा दे रहाहै ३१ उसके पार्श्व में महाभयानक श्वेत बादल के रूप महाशब्दायमान देवदत्तनाम शंखको देखो और हे बीर बागडोर हाथमें लिये ३२ उन श्रीकृष्णजी के पार्श्ववर्ती सूर्य्य के समान प्रकाशमान बज्रनाभ चारोंओर छुराओं से जटित बड़े यशके बढ़ानेवाले सदैव या-

दवों से पूजित केशवजी के चक्रको देखो ३३ सीधे वृक्षों के समान बड़े२ हाथियों की यह सूंड़ें क्षुरों से कटीहुई पृथ्वीपर गिरती हैं और उस अर्जुन के हाथके बाणों से सवारों समेत हाथी ऐसे मारेगये जैसे कि वज्रों से पर्व्वत चूर्ण कियेजाते हैं ३४ इसीप्रकार श्रीकृष्णजी के उस महा उत्तम चन्द्रमा के समान वर्णवाले बड़ों के योग्य पांचजन्य शंखको देखो और हृदय में शोभायमान कौस्तुभमणि और बैजयन्तीमालाको भी देखो ३५ निश्चयकरके रथियों में श्रेष्ठ अर्जुन शत्रुओंकी सेनाको भगाता श्वेत बादलों के रंग श्रीकृष्णजी से युक्त बड़ों के योग्य घोड़ों के द्वारा सन्मुख आताहै ३६ देवराज के समान तेजस्वी आपके छोटे भाई के शायकों से फटेहुये रथ घोड़े और पतियों के समूहों को देखो कि यह ऐसे गिर रहे हैं जैसे कि गरुड़जी के परोंकी वायुसे महावन गिरते हैं ३७ युद्धमें अर्जुन के हाथसे घोड़े और सारथियों समेत मारेहुये इन चारसौ रथोंको देखो और बड़े बाणों से मरेहुये इन सातसौ हाथी पदाती अश्वसवार और अनेक रथियों को देखो ३८ यह महाबली अर्जुन कौरवों को मारताहुआ तेरे समक्षमें ऐसे आता है जैसे कि बड़ा चित्रग्रह आताहै तुम अभीष्टसिद्ध हो आपके सब शत्रु मारेगये आपका बल पराक्रम और आयुर्दा चिरकाल पर्य्यन्त वृद्धि को पावे ३९ भीमसेन बोले हे विशोक सारथी मैं अत्यन्त प्रसन्नहोकर तुझको चौदह गांव सौ दासी और बीसरथदेताहूं जो अर्जुनके विषयकी प्रसन्नतावाली बातें मुझसे कहताहै ४०॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभीमसेनविशोकसंवादेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

संजय बोले कि युद्धमें सिंहनाद और रथके शब्दको सुनकर अर्जुन गोविंद जीसे बोला कि हे गोविन्दजी शीघ्रही आप घोड़ों को हांकिये १ गोविन्दजी अर्जुनके बचनको सुनकर कहनेलगे कि अब मैं वहींपर शीघ्र पहुंचाताहूं जहां पर कि भीमसेन नियतहै २ तुषार और शंखके रंगवाले सुवर्ण मोती और मणि जटित जालों से अलंकृत घोड़ों के द्वारा जंभ के मारने के इच्छावान् वज्रधारी क्रोधयुक्त इन्द्र जैसे जाताहै उसीप्रकार जानेवाले उस अर्जुनको ३ रथ घोड़े हाथी पदातियों के समूह और बाणनेमी वा घोड़ों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओंको शब्दायमान करतेहुये क्रोधरूप नरोत्तमने सन्मुख पाया ४ हे श्रेष्ठ उन्होंका और

अर्ज्जुन का युद्ध शरीर और प्राणों के पापोंका हरनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि त्रिलोकी के निमित्त महाविजयी विष्णुजी और असुरों का हुआथा ५ अकेले अर्जुनने उन्होंके चलायेहुये सबछोटेबड़े शस्त्रोंकोकाटकर क्षुरअर्द्धचंद्र और तीक्ष्ण भल्लोंसे उनके शिर और भुजाओंको अनेक प्रकारसे काटा ६ चित्र बिचित्रवाले व्यजन ध्वजा घोड़े रथ हाथी और पतियोंके समूहोंको भी काटा इसके पीछे वह अनेक प्रकारके रूपांतर होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि वायुके वेगसे बन गिरपड़ते हैं ७ फिर सुनहरी जाल युक्त बैजयन्ती ध्वजाओं समेत शूरवीरों से अलंकृत बड़े हाथी सुनहरी पुंखबाणों से चित्रित प्रकाशमान पर्वतों के समान प्रकाशमानहुये ८ अर्जुन इन्द्रके वज्रकी समान उत्तम बाणों से हाथी घोड़े और रथों को मारकर कर्ण के मारनेकी इच्छासे इसरीति से शीघ्र चला जैसे कि पूर्व समय में राजाबलि के मारने में इन्द्र चलाथा ९ हे शत्रुसंहारी उसके पीछे वह महाबाहु पुरुषोत्तम ऐसे आपहुंचा जैसे कि समुद्र में मगर घुस आताहै १० हे राजा रथ और पतियों से संयुक्त अनेक हाथी घोड़े और सवारों समेत बड़े प्रसन्नचित्त आपके शूरवीर इसपांडवके सन्मुख गये अर्जुन की ओर दौड़नेवाले उनलोगोंके ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि अपनी उन्मत्ततामें आनेवाले समुद्रके शब्द होते हैं ११ । १२ फिर व्याघ्रों के समान वह सब महारथी युद्ध में अपने प्राणोंकी आशाको त्यागकर उसपुरुषोत्तम के सन्मुख गये वहां अर्जुनने उन बाणोंकी वर्षा करते हुये आनेवाले शूरवीरों की सेनाका ऐसा छिन्न भिन्न कर दिया जैसे कि बड़ा वायु बादलोंको तिर्र बिर्र करदेताहै १३ । १४ उनप्रहार करनेवाले बड़े धनुषधारियोंने रथ समूहों समेत उसके सन्मुख जाकर तीक्ष्णबाणों से अर्जुनको घायलकिया १५ इसके पीछे अर्जुनने बिशिखों से हजारों रथ हाथी और घोड़ोंको यमलोकमें भेजा १६ युद्धमें अर्जुनके धनुषके निकलेहुये बाणों से घायल वह महारथी भयके उत्पन्नहोनेपर जहां तहां छिपगये १७ अर्जुनने उनके मध्य में उपाय करनेवाले चार सौ बड़े २ महारथी शूरवीरों को बाणों के द्वारा यमलोकमें पहुंचाया १८ नानाप्रकारके रूपवाले युद्धमें तीक्ष्णबाणोंसे घायल होकर वह शूरवीर अर्जुनके सन्मुख जाकर दशोंदिशाओं को भागे १९ युद्धमें से भागनेवाले उनलोगों के ऐसे महाशब्दहुये जैसे कि पर्वतको पाकर फूटनेवाले बड़े नदीके प्रवाहके शब्दहोते हैं २० हे श्रेष्ठ फिर अर्जुन बाणों से उस

सेनाको खूब छेदकर और भगाकर कर्ण के सन्मुखगया २१ वहां उसशत्रुजेता अर्जुनका ऐसा महाशब्दहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें सर्पके खानेको आनेवाले गरुड़का शब्दहोताहै २२ अर्जुन के देखने का अभिलाषी महाबली भीमसेन उस अर्जुनके शब्दको सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ २३ हे महाराज उसप्रतापवान् भीमसेनने आतेहुये अर्जुनको सुनकर अपने प्राणोंकी आशा छोड़कर आप की सेनाका मर्द्दनकिया २४ पराक्रम में वायु के समान शीघ्रचलने में वायुकी तीव्रताके सदृश वायुका पुत्र प्रतापी भीमसेन वायु के समान घूमने लगा २५ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र उससे घायल और पीड़ितहोकर आपकी सेना ऐसे गिरपड़ी जैसे कि टूटीहुई नौका सागरमें गिरती हैं २६ फिर अपनी हस्तला-घवताको दिखाते सबको यमलोक में पहुंचाते हुये उसभीमसेनने बारम्बार उग्र बाणोंकी वर्षाकरके उससेनाको काटा २७ हे भरतबंशी उसयुद्धमें महाबली भी-मसेनके अद्भुत आश्चर्य्यकारी पराक्रमको देखकर सब लोग ऐसे चक्कर मारने लगे जैसे कि प्रलयकालमें कालके पराक्रमको देखकर सब भयभीतहोकर फिरते हैं २८ हे भरतबंशी इसप्रकार भीमसेन के हाथ से पीड़ामान भयानक पराक्रम वाले बड़े २ शूरवीरों को देखकर राजा दुर्य्योधन इसवचनको बोला २९ कि हे महाबली शूरवीर लोगो तुम भीमसेन को मारो ३० इसी भीमसेनके मरनेपर मैं सब पांडवोंकी सेनाकोभी मृतकरूपही मानताहूं तब तो सब राजाओंने आपके बेटेकी आज्ञाको अंगीकार किया ३१ और भीमसेन को चारोंओरसे बाणोंकी वर्षासे आच्छादित करदिया हे राजा बहुतसे हाथी घोड़े और बिजयाभिलाषी रथारूढ़ मनुष्यों ने ३२ भीमसेनको घेरलिया तब उनशूरोंसे चारोंओर को घिरा हुआ वह पराक्रमी भीमसेन ३३ महाशोभायमानहुआ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जैसे कि नक्षत्रोंमें शोभायमान चन्द्रमा पूर्णमासीके दिन अपने मण्डलसे युक्त होकर शोभितहोताहै ३४ उसीप्रकार वह दर्शनीय नरोत्तम भीमसेन भी युद्ध में शोभायमानहुआ हेमहाराज जैसा अर्जुनहै वैसाही यहभीहै इसमें भेदनहीं है ३५ क्रोधसे रक्तनेत्र भीमसेनके मारनेके उत्सुक उनसब शूरबीर राजाओंने बाणोंकीवर्षा उसके ऊपरकरी ३६ भीमसेन टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से उस बड़ी सेनाको चीरकर युद्धभूमि से ऐसे निकलगया जैसे कि जलकी मछली जलके जालमें से निकल जाती हैं ३७।३८ हे भरतबंशी भीमसेन ने मुख न मोड़नेवाले दशहजार हाथी

दोलाखदोसौ मनुष्य पांचहजार घोड़े और सौ रथियों को मारकर रुधिरके प्रवाह वाली नदीको जारीकिया ३९ जिसमें रुधिररूप जल रथरूप भ्रमर चक्र हाथीरूप ग्राहों से भयानक मनुष्य रूप मछली घोड़ेरूप नक्र और बालरूप शैवल और साइबलथे ४० और बहुतरत्नोंकीहरनेवाली सूंड़कटे हाथियोंसे व्याप्त जंघारूपग्राहों से भयानक मज्जारूपी पंक और शिररूप पत्थरों से संयुक्त थी ४१ धनुष, चावक, तूणीर, गदा, परिघ, ध्वजा, छत्ररूपी हंसों से युक्त और उष्णीष अर्थात् पगड़ी रूप झागवाली ४२ हाररूपी कमलों के बन रखनेवाली और पृथ्वी की धूली रूप तरंगों की रखनेवाली युद्धमें उत्तम पुरुषों के चलन रखनेवाले पुरुषोंसे सुगमतासे पार होनेके योग्य भयभीतोंको दुर्गम ४३ शूरवीर रूप ग्राहोंसे पूर्ण युद्ध में पितृलोक की ओरको बहनेवालीथी ऐसी उग्र अद्भुत नदीको इस पुरुषोत्तम भीमसेनने एक क्षणमात्रही में जारी करदिया ४४ जैसे कि अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों से महादुस्तर रूप बैतरणी कहाती है उसीप्रकार इसको भी महाघोर दुःख और भयकी करनेवाली कहा ४५ वह रथियोंमें श्रेष्ठ पाण्डव जिस जिस ओर होकर निकला उस २ ओरके लाखोंही शूरवीरोंको मारा ४६ हे महाराज इसरीति से युद्धमें भीमसेनके कियेहुये कर्मको देखकर दुर्य्योधन शकुनीसे यह बचन बोला ४७ कि हे मामाजी इस बड़े पराक्रमी भीमसेन को युद्धमें तुम बिजयकरो इसके बिजय होजानेपर मैं सब पाण्डवी सेनाको बिजय कियाहुआ ही मानताहूं ४८ हे महाराज इसके अनन्तर भाइयों समेत बड़ेभारी युद्ध करने को उत्सुक प्रतापवान् शकुनी चला ४९ उस वीरने युद्धमें भयानक पराक्रमी भीमसेन को पाकर उसको ऐसे रोका जैसे कि समुद्रकी मर्य्यादा समुद्रको रोक लेती है ५० तीक्ष्णबाणों से रोकाहुआ भीमसेन उसकी ओर को लौटा और शकुनीने उसके हाथ और छातीपर ५१ सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्णधार नाराचोंको चलाया फिर वह कंकपक्षसे जटित घोर बाण महात्मा पांडव भीमसेन के कवच को काटकर ५२ शरीर में घुसगये फिर युद्धमें अत्यन्त घायल उस भीमसेन ने क्रोधयुक्त होकर सुवर्ण जटित बाण को ५३ शकुनी के ऊपर चलाया हे राजा शत्रुसंतापी हस्तलाघवी महाबली शकुनी ने उस आतेहुये घोर बाण को सात खण्ड करदिया ५४ हे राजा उस बाण के पृथ्वी में गिरनेपर क्रोधयुक्त हँसतेहुये भीमसेनने भल्लसे शकुनीके धनुषको काटा फिर प्रतापवान् शकुनीने उस धनुष

को डालकर ५५।५६ वेगसे दूसरे धनुष और सोलह भल्लोंको लेकर उन टेढ़े भल्लों में से दो भल्लों से उसके सारथी को और सात भल्लों से भीमसेन को घायल किया फिर एकसे ध्वजा को और दो भल्लों से छत्रको काटकर ५७। ५८ सौबलके पुत्र शकुनी ने चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल किया इसके पीछे क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेनने युद्धमें सुनहरी दण्डवाली शक्ति को फेंका ५६ भीमसेन की भुजासे छोड़ी हुई वह सर्पकी जिह्वा के समान चंचल शक्ति युद्ध में शीघ्रही महात्मा शकुनीके ऊपर गिरी ६० इसके पीछे क्रोधरूप शकुनी ने उस सुवर्ण से अलंकृत शक्ति को लेकर ६१ भीमसेन के ऊपरफेंका तब वह महात्मा पाण्डवकी बामभुजा को छेदकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़ी ६२ जैसे कि आकाश से गिरी हुई बिजली होती है इसके पीछे धृतराष्ट्र के लड़कों ने चारों ओर से बड़ा शब्द किया ६३ फिर उन वीरों के सिंहनाद को न सहकर बड़े भारी अलंकृत धनुष को लेकर ६४ अपने जीवन की आशा को त्यागकरके युद्ध में एक मुहूर्त्त मेंही शकुनी की सेना को शायकों से ढक दिया ६५ हे राजा फिर शीघ्रता करनेवाले पराक्रमी भीमसेन ने उसको चारों घोड़ों समेत सारथी को मारकर भल्ल से उसकी ध्वजा को भी काटा ६६ फिर यह नरोत्तम भी शीघ्रताकरके मृतक घोड़ों के रथको त्यागकर धनुषको टंकार क्रोधसे लालनेत्र करके सन्मुख नियत हुआ ६७ और भीमसेन को चारोंओर से बाणों के द्वारा मोहित किया फिर अत्यन्त प्रतापवान् भीमसेन ने बड़ेवेग से उनको निष्फल करके ६८ धनुषको काटकर तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे महापीड़ितकिया पराक्रमी शत्रु से अत्यन्त घायलहुआ वह शत्रुबिजयी शकुनी ६९ कुछ प्राणशेष होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजा इसके पीछेसे आपका पुत्र उसको अचेत जानकर ७० भीमसेन के देखतेहुये युद्धभूमि से रथकी सवारीमें बैठाकर हटालेगया फिर उस नरोत्तम के रथपर सवार होने और भीमसेन को बड़ाभय उत्पन्न होनेपर और धनुषधारी भीमसेन के हाथसे शकुनी के विजय होनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र मुखमोड़ मोड़कर भयभीत होकर दशों दिशाओं को भागे ७१। ७२ बड़े भय से पूर्ण अपने मामा का चाहनेवाला आपका पुत्र दुर्य्योधन शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा हटगया। ७३ हे भरतबंशी सेनाके सबलोग राजाको मुखफेरकर हटाहुआ देख कर चारोंओर से द्वैरथियों को छोड़कर भागे ७४ तब भीमसेन उन घायल भय-

भीत मुख मोड़कर भागनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रों को देखकर सैकड़ों बाणों की वर्षा करताहुआ वेगसे उन सबके सन्मुख दौड़ा ७५ हे राजा भीमसेन के हाथ से घायल चारोंओर से मुख मोड़नेवाले वह धृतराष्ट्रकेपुत्र कर्णको पाकर युद्ध में नियत हुये ७६ वह बड़ा पराक्रमी बलवान् कर्ण उनका ऐसे रक्षकहुआ जैसे कि टूटीहुई नौका टापू को पाकर नियत होजाती है ७७ हे पुरुषोत्तम समयके लौट पौटहोनेपर जैसी दशावाली पतवार होती है वैसेही आपके शूरवीर लोगभी पुरुषोत्तम कर्णको पाकर उसी दशावाले हुये ७८ हे राजा वह परस्परमें बिश्वासयुक्त अत्यन्तप्रसन्न नियतहुये और मृत्युको हथेलीपररखकर युद्धकेनिमित्तगये ७९॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिभीमसेनयुद्धेअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८॥

उन्नासीवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय तब युद्धमें भीमसेन के हाथसे सेनाके पराजय होने पर दुर्य्योधन ने वा शकुनी ने क्या कहा १ विजय करनेवालों में श्रेष्ठ कर्ण वा मेरे शूरवीर कृपाचार्य्य कृतवर्मा अश्वत्थामा और दुश्शासन इन सबने युद्ध में क्याक्या कहा २ मैं पांडव भीमसेन के पराक्रम को अत्यन्त अद्भुत और अपूर्व्व मानता हूं कि उस अकेलेनेही युद्ध में मेरे सब शूरवीरों से युद्धकिया ३ और राधा के पुत्र शत्रुहन्ता कर्ण ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सब शूरवीरों समेत कौरवों को कल्याण रक्षास्थिरता वा जीवन की आशा को नियत किया ४ हे सञ्जय बड़े तेजस्वी भीमसेन के हाथ से छिन्नभिन्न होजानेवाली उस सेनाको देखकर ५ अधिरथी कर्ण मेरे पराजित पुत्र और बड़े महारथी राजाओं ने युद्ध में क्या२ किया यह सब मुझसे कहो क्योंकि तुम बड़े चतुर और सावधानहो ६ संजय बोले हे महाराज प्रतापवान् कर्ण ने तीसरे पाशमें भीमसेन के देखतेहुये सब सोमकों को मारा ७ और भीमसेनने भी दुर्य्योधन की बड़ी पराक्रमी सेना को सबके देखतेहुये मारा इसके पीछे कर्ण ने शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के समीप पहुँचाओ ८ अर्थात् बुद्धिमान् पराक्रमी भीमसेन के हाथसे सेनाको भागाहुआ देखकर कर्णने अपने सारथी शल्यसे कहा कि मुझको पांचालों के सन्मुख लेचलो ९ इसके पीछे बड़े बलवान् मद्रदेश के राजा शल्यने बड़े शीघ्र गामी श्वेतघोड़ों को चंदेरी पांचाल और कारुष्य देशियों के सन्मुख पहुँचा

या१० शत्रु की सेना के मर्द्दन करनेवाले शल्यने उस बड़ी सेनामें प्रवेश करके घोड़ों को वहां २ पर चलाया जहां २ उस सेनापति कर्ण ने चाहाथा ११ हे राजा पांडव और पाञ्चाल उस बादल के रूप व्याघ्रचर्म से मढ़ेहुये रथको देखकर भयभीत हुये १२ इसके अनन्तर उस बड़े युद्ध में उस रथ का शब्द बादल के गर्जने के समान ऐसा प्रकट हुआ जैसे कि फटतेहुये पर्व्वत का शब्द होता है १३ इसके पीछे कर्ण ने कानतक खैंचेहुये धनुष के छोड़े हुये बाण समूहों से पाण्डवी सेनाके हजारों मनुष्यों को मारा १४ पाण्डवों के महारथी बड़े २ धनुषधारियों ने युद्ध में ऐसे कर्म्म करनेवाले उस अजेय कर्ण को घेरलिया १५ शिखण्डी भीमसेन धृष्टद्युम्न नकुल सहदेव द्रौपदी के पुत्र और सात्विकी १६ बाणोंकी वर्षा से कर्ण के मारने के अभिलाषी इन सब शूरवीरों ने जब कर्ण को घेरलिया तब नरोत्तम शूर सात्विकी ने तीक्ष्णधारवाले बीस बाणों से कर्ण को युद्धमें जत्रुस्थान पर घायल किया १७। १८ शिखण्डी ने पच्चीस बाणोंसे धृष्टद्युम्न ने सात बाणोंसे द्रौपदी के पुत्रों ने चौंसठ बाणों से सहदेवने सात बाणों से नकुल ने सौ बाणोंसे उस कर्ण को पीड़ामान किया १६ और बड़े पराक्रमी क्रोधयुक्त भीमसेन ने युद्धमें टेढ़े पर्व्ववाले नब्बे बाणोंसे कर्णको जत्रुआदि अंगोंपर पीड़ित किया २० इसके पीछे बड़े बली कर्णने बहुत हँसकर अपने धनुष को टंकारकर बाणोंको छोड़ा २१ हे भरतर्षभ कर्णने उन सबको पांच २ बाणोंसे व्यथित किया २२ और सात्विकी के धनुष ध्वजाको काटकर नौ बाणोंसे उसको छातीपर घायल किया फिर उस क्रोधयुक्तने तीनसौ बाणों से भीमसेनको पीड़ामान किया २३ और भल्ल से सहदेव की ध्वजाको काट उस शत्रुसंतापी ने तीन बाणोंसे उसके सारथीको मारा २४ और एकपलमात्रमेंही द्रौपदी के पुत्रों को विरथ कर दिया यह बड़ा आश्चर्य्यसा हुआ २५ टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से उन सबका मुख मोड़कर पांचाल और चंदेरीदेशके बड़े २ महारथी शूरवीरों को मारा २६ हे राजा युद्धमें घायल उन चंदेरी देशियों ने अकेले कर्णके सन्मुख जाकर उसको बाणोंके समूहों से घायल किया २७ हे महाराज जो अकेले प्रतापी कर्णने युद्धमें बड़ी सामर्थ्य से उपाय करनेवाले धनुषधारी शूर युद्धकर्त्ता पाण्डवों को बाणोंसे रोका वहां महात्मा कर्ण की हस्तलाघवता से २८। २६ सिद्ध चारणों समेत सब देवता प्रसन्न हुये और बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्रके पुत्रों

ने उस महारथियों में श्रेष्ठ नरोत्तम सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ कर्णकी प्रशंसाकरी हे महाराज इसके पीछे कर्णने शत्रुओंकी सेनाका ऐसा नाशकरदिया ३०।३१ जैसे कि ऊष्म ऋतुमें बड़ा वृद्धिमान् प्रचण्डअग्नि बनको जलाता है उस प्रचण्डअग्नि के समान कर्ण से घायल हुये वह सब पाण्डव महारथी कर्ण को देखकर इधर उधर भयभीत होकर भागे ३२।३३ वहां उस बड़े युद्धमें कर्ण के उत्तम धनुषसे निकले हुये तीक्ष्ण शायकों से घायल पांचाल लोगोंके बड़ेभारी शब्दहुये उन शब्दों से पाण्डवों की बड़ी सेना अत्यन्त भयभीत हुई ३४।३५ वहां शत्रुओं के मनुष्यों ने युद्धमें अकेले कर्णकोही शूरवीर युद्धकर्त्ता माना तब शत्रुओं के पीड़ा करनेवाले कर्णने फिरभी अद्भुत कर्म्मकिया कि ३६ कोई पाण्डव उसकी ओर देखने को भी समर्थ नहीं हुआ जैसे कि जलका प्रवाह उत्तम पर्व्व को पाकर रुकजाता है ३७ उसीप्रकार वह पाण्डवी सेना कर्ण को पाकर छिन्नभिन्न होगई हे राजा युद्धमें महाबाहु कर्णभी निर्धूम अग्निकेसमान प्रकाशमान ३८ पाण्डवों की बड़ी सेनाको भस्मकरताहुआ नियत होकर उस शूरवीर ने युद्ध करनेवाले वीरों के कुण्डल धारण कियेहुये ३९ शिरोंको और भुजाओं को बड़ी तीव्रतासे अपने बाणों के द्वारा काटडाला हे राजा युद्ध ब्रतधारी कर्णने हाथीदांत के कब्जा रखनेवाले खड्ग ध्वजा और शक्तियोंको घोड़े हाथी ४० वा अनेक प्रकारके रथ पताका, ब्यजन अक्षयुग योक्त और बहुत रूपके चक्रोंको ४१ बहुत प्रकारों से काटा हे भरतबंशी वहां कर्णके हाथसे मारेहुये हाथी घोड़ों के कारण से ४२ वह पृथ्वी रुधिर मांसकी पंकवाली होकर महाअगम्य होगई मृतक घोड़े पदाती रथ और हाथियों के हेतु से पृथ्वी की समता और असमता नहीं जानीगई अपने और दूसरों के शूरवीरभी परस्पर में नहीं जानेगये ४३।४४ हे महाराज कर्णके अस्त्र और बाणोंसे घोर अन्धकार होजानेपर उसके धनुषसे छूटेहुये सुवर्ण जटित बाणों से ४५ पाण्डवों के महारथी ढकगये और वह सब कर्णसे लड़नेवाले पाण्डवों के महारथी बारम्बार कर्ण से पराजित हुये और जैसे कि बनमें मृगोंके समूहों को सिंह भगाताहै ४६।४७ उसीप्रकार पाञ्चालों के उत्तमरथी और शत्रुओं के मनुष्यों को भगाते और युद्धमें शूरवीरों को डराते बड़ेयशस्वी कर्णने ४८ उस सेनाको ऐसे भगाया जैसे कि भेड़िया पशुओं के समूहों को भगाता है फिर बड़े धनुषधारी धृतराष्ट्र के

पुत्र पांडवी सेनाको मुख मुड़ाहुआ देखकर ४६ भयानक शब्दों को करतेहुये वहां आये और अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनने ५० अनेकप्रकार के सब बाजों को बजवाया वहांपर पराजितहुये नरोत्तम पांचालदेशी भी ५१ शरीरकी आशा छोड़कर शूरों के समान लौटे हे महाराज फिर कर्ण ने उन लौटेहुये शूरवीरों को ५२ बहुतप्रकारसे पराजयकिया उस युद्धमें क्रोधयुक्त कर्ण के बाणों से पांचालों के बीस रथी ५३ और सैकड़ों चंदेरी के बासी मारेगये फिर वह शत्रुसंतापी कर्ण रथोंको रथकी बैठक और उत्तम घोड़ों से रहितकरके ५४ हाथियों के कन्धों को सवारों से रहितकर पदातियों को भगाता मध्याह्न के सूर्य्य के समान कठिनता से दर्शनके योग्य ५५ मृत्यु वा कालके समान शरीरको धारणकिये शोभायमान हुआ हे महाराज इसरीति से शत्रुओं के समूहों को मारनेवाला बड़ा धनुषधारी कर्ण मनुष्य घोड़े रथ और हाथियों को मारकर ऐसे नियतहुआ जैसे कि बड़ा पराक्रमी काल जीवों के समूहों को मारकर नियत होता है ५६ । ५७ इसीप्रकार वह अकेला महारथी सोमकोंको मारकर नियतहुआ वहांपर हमने पांचालों के अद्भुत पराक्रमको देखा ५८ कि सेना मुखपर घायल होनेवालों ने भी कर्ण से मुख न मोड़कर सन्मुखताकरी राजा दुर्य्योधन दुश्शासन वा शार्दूल कृपाचार्य ५९ अश्वत्थामा कृतवर्म्मा और महाबली शकुनी ने पांडवों के हजारों मनुष्यों को मारा ६० हे राजेन्द्र फिर सत्य पराक्रमी और क्रोधयुक्त दोनों भाई कर्ण के पुत्रों ने इधर उधरसे पांडवोंकी सेनाको मारा ६१ वहां बड़ाभारी नाशकारी घोर युद्ध हुआ इसीप्रकार शूरवीर पांडव, धृष्टद्युम्न ६२ और अत्यन्त रोषभरे द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी सेनाको मारा इसप्रकार से जहां तहां स्थानों में पांडवी सेना का बहुत नाशहुआ ६३ और युद्ध में बड़े पराक्रमी भीमसेनको पाकर आपके भी शूरोंका नाशहुआ ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे महाराज फिर अर्जुन ने चारों प्रकारकी सेनाको मारके युद्धमें महाक्रोधरूप कर्णको देखकर १ पृथ्वीको मांस रुधिर मज्जा हाड़से भ्याकर नदी के रूप बनाया जिसमें रुधिर जल वा मांस मज्जा हाड़रूप कीच और

मनुष्यों के शिररूप पत्थर और हाथी और घोड़ेरूप किनारे २ शूरवीरों के अस्थि समूहों से पूर्ण काक और गिद्धों से शब्दायमान छत्ररूप धनुष और नौका से युक्त वीररूप वृक्षों की बहानेवाली ३ धाररूप कमलनी वा हस्तघ्राणरूप उत्तम फेनोंकी रखनेवाली धनुषबाण और ध्वजा से संयुक्त मनुष्यों के घुटेहुये कपालों से व्याप्त ४ ढाल वा कवचरूप भ्रमणों से युक्त रथरूप नौकासे व्याकुल विजयाभिलाषी शूरवीर लोगोंको सुखपूर्व्वक तरने के योग्य और भयभीतों को अत्यन्त अगम्य ५ ऐसी नदीको जारीकरके फिर शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले अर्जुन ने वासुदेवजी से यह बचन कहा ६ कि हे श्रीकृष्णजी युद्धमें यह कर्णकी ध्वजा दिखाई देती है और यह भीमसेन आदि महारथी कर्ण से लड़रहे हैं ७ हे जनार्द्दनजी कर्ण से भयभीत हो होकर यह पांचाललोग भागते हैं और श्वेत छत्र धारी यह राजा दुर्य्योधन ८ कर्ण से पराजितहुये पांचालों को भगाताहुआ बड़ा शोभित होरहाहै महारथी अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, कृपाचार्य्य ९ यह सबभी कर्ण से रक्षितहोकर राजाकी रक्षाकरते हैं वह हम सबसे अबध्य सोमकों को मारेंगे १० और हे श्रीकृष्णजी रथवानों में कुशल यह शल्य रथके ऊपर बैठाहुआ कर्ण के रथको अत्यन्त शोभित कररहाहै ११ वहां मैं चाहताहूं कि आप मेरे रथको ले चलो मैं युद्धमें कर्णको मारे बिना किसीप्रकारसे नहीं लौटूंगा १२ हे जनार्द्दन जी दूसरी दशामें यह कर्ण हमारे देखतेहुये महारथी पाण्डव और सृंजियों का नाशकरेगा १३ इसके पीछे केशवजी अर्ज्जुन समेत रथ की सवारी के द्वारा शीघ्रही द्वैरथ युद्ध में बड़े धनुषधारी कर्ण और आपकी सेना के सन्मुख गये १४ महाबाहु श्रीकृष्णजी अर्ज्जुन के कहने से सब पांडवी सेनाको रथपरसेही विश्वासयुक्त करतेहुये चले १५ उस शुभकारी युद्ध में अर्ज्जुन के रथका शब्द ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि इन्द्र वज्रके समान बड़े जलके वेगका शब्द होता है १६ सत्य पराक्रमी महासाहसी पांडव अर्जुन रथके बड़े शब्द समेत आपकी सेनाको विजय करताहुआ सन्मुख गया १७ मद्रका राजा शल्य श्वेत घोड़ोंसमेत श्रीकृष्णजीके साथ आतेहुये अर्जुनको और उस महात्माकी ध्वजा को देखकर कर्णसे बोला १८ हे कर्ण श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखने वाला यह द्वै रथ जिसको कि तुम पूछतेहो युद्ध में सबको मारताहुआ आताहै १९ यह अर्जुन गांडीव धनुषको लियेहुये वर्त्तमानहै जो तू इसको मारेगा तब

हमारा कल्याण होगा २० हे राधा के पुत्र कर्ण यह अकेला भरतबंशी अर्जुन उत्तम रथियों को मारताहुआ तुमको चाहता चला आता है अब तुम इसके सन्मुख जाओ २१ देखो यह दुर्य्योधनकी सेना शीघ्रतासे शत्रुओंके मारनेवाले अर्जुनके भयसे चारोंओर अलग २ हुई जाती है २२ अर्जुन सब सेनाओं को छोड़ताहुआ तेरेही निमित्त शीघ्रता करता है मैं यह मानता और जानता हूं और उसके शरीर से भी विदित होता है २३ वह अर्जुन तेरे सिवाय किसी के साथ युद्धकरनेका अभिलाषी होकर स्थिर नहीं होताहै जो कि भीमसेनके पीड़ितहोनेसे क्रोध में भराहुआ है २४ अत्यन्त घायल और बिरथ धर्मराजको वा शिखण्डी सात्विकी धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदीके पुत्र युधामन्यु, उत्तमौजा और नकुल सहदेव इन दोनों वीर भाइयोंको घायल देखकर शत्रुओंका तपानेवाला अकेला रथी अर्जुन अकस्मात् तेरे सन्मुख आताहै वह क्रोध से रक्तनेत्र रोषमें भरा सब राजाओंके मारनेका अभिलाषी शीघ्रतासे सेनाओंको त्यागताहुआ निस्सन्देह हमारे सन्मुख आताहै २६ । २७ हे कर्ण तुम शीघ्रही उसके सन्मुख चलो तेरे सिवाय इसलोक में दूसरे ऐसे धनुषधारी को नहीं देखताहूं २८ जो कि युद्धमें क्रोधयुक्त अर्जुन को मर्य्यादा के समान रोककर धारणकरे मैं पीछे और दोनों दाहें बायें उसकी रक्षाको नहीं देखताहूं वह अकेलाही तेरे सन्मुख आताहै तुम अपने स्थानको देखो २९ । ३० हे राधा के पुत्र तुम्हीं युद्ध में श्रीकृष्ण और अर्जुन को अपने स्वाधीन करने को समर्थ हो यह तेराही भाररूप कार्य्य है तू अर्जुनके सन्मुख चल ३१ तुम भीष्म द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा और कृपाचार्य्य के समानहो इसहेतु से महायुद्ध में इस आतेहुये अर्जुनको रोको ३२ हे कर्ण सर्प की समान होठों के चाबनेवाले वृषभके समान गर्जनेवाले बनबासी व्याघ्रके समान अर्जुन को मारो ३३ यह महारथी धृतराष्ट्र के पुत्र और अन्य राजालोग युद्धमें अर्जुनके भय से बड़ी शीघ्रता से भागते हैं ३४ हे सूतनन्दन वीर कर्ण तेरे सिवाय अब दूसरा कोई ऐसा मनुष्य नहींहै जोकि उन भागेहुओं के भयको निवृत्तकरे हे पुरुषोत्तम यह सब कौरव युद्धमें तुझ रक्षकको पाकर ३५ तेरी रक्षा में आश्रित होनेकी इच्छा से नियत हैं वैदेह काम्बोज अम्बष्ट नग्नजित ३६ और युद्धमें बड़ी कठिनतासे विजयहोनेवाले गान्धारदेशी जिस तेरे धैर्य्यसे विजय कियेगये हे राधाके पुत्र उस धैर्य्यको करके फिर पाण्डवोंके सन्मुख

चल ३७ हे महाबाहो बड़ीशूरतामें नियतहोकर उन यादव बासुदेवजीके सन्मुख चलो जोकि अर्जुनके साथ अत्यन्त प्रीति रखनेवालेहैं ३८ कर्ण बोला हे शल्य तुम अपने स्वभाव में नियत होजाओ हे महाबाहो अब तुम मुझको अंगीकृत विदितहोतेहो तुम अर्जुन से भयभीत मतहो ३९ अब मेरे भुजाओं के बलको और पाईहुई शिक्षाको देखो मैं अकेलाही इस पाण्डवोंकी बड़ी सेनाको मारूंगा ४० इसके अनन्तर पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा यह तुमसे सत्यही सत्य कहताहूं कि इनदोनों वीरोंको बिना मारेहुये कभी न हटूंगा अथवा चाहै उन्हींके हाथसे मरकर शयन करूंगा क्योंकि युद्धमें सदैवही विजय नहीं हुआ करतीहै ४१ अब मैं उनको मारकर वा उनके हाथसे मरकर अपने मनोरथ को सिद्ध करूंगा शल्य बोला हे कर्ण महारथी लोग युद्ध में इसरथियों में बड़े वीर अर्जुनको सबसे अजेय कहतेहैं फिर हे कर्ण ऐसा कौनसा मनुष्य है जो इस श्रीकृष्णसे रक्षित अर्जुनको विजय करनेका उत्साहकरे ४२ कर्ण बोला कि लोकमें ऐसा उत्तम रथी जहांतक हमनेसुना कभी कोई नहीं हुआ ऐसे प्रतापी प्रसिद्ध कीर्त्तिवाले अर्जुनके सन्मुखहोकर युद्धको करूंगा उस महायुद्धमें मेरी वीरताको देखो ४३ यह रथियों में बड़ावीर कौरवराज का पुत्र युद्धभूमिमें श्वेत घोड़ों के द्वारा घूमताहै अब वह मुझको बड़ेदुःख से मिलताहै और कहताहै कि कर्णकेही विजयमें मेरीविजय और कर्णकेही नाशमें मेराभी नाशहै ४४ राजकुमारके प्रस्वेद और कंपसेरहित दोनों हाथ चिह्नों से युक्त होकर वृद्धिमान हैं वह दृढ़शस्त्र अर्ज्जुन बड़ा कर्मी और हस्त लाघवी है इस पाण्डव के समान कोई युद्धकर्त्ता नहीं है ४५ बहुत बाणों को भी लेताहै और उनसबको एकही बाण के समान धनुषपर चढ़ाकर छोड़ताहै फिर सकल बाण एक कोशपर गिरते हैं उसके समान इस पृथ्वीपर कौन शूरवीरहै ४६ श्रीकृष्णको साथ रखनेवाले जिस वेगवान् अधिरथी अर्जुनने खाण्डव बनमें अग्निको तृप्तकिया वहांही महात्मा श्रीकृष्णजी ने चक्रको और पाण्डव अर्जुन ने गांडीव धनुषको पाया ४७ अर्थात् बड़े पराक्रमी महाबाहुने अग्निसेही महा शब्दायमान श्वेतघोड़ोंसे युक्त रथको वा दो अक्षय तूणीरों को और दिव्य शस्त्रोंको पाया ४८ इसीप्रकार इन्द्र लोकमें युद्धकरके असंख्य कालकेयनाम दैत्योंको मारा और देवदत्तनाम शंख को पाया इसपृथ्वीपर उससे अधिक कौनहोसक्ताहै ४९ इस महानुभावने उत्तम

युद्धसे अस्त्रों के द्वारा साक्षात् महादेवजीको प्रसन्न किया और उनसे तीनोंलोकोंका नाश करनेवाला बड़ाघोर पाशुपतनाम महा अद्भुत अस्त्रपाया ५० सब लोकपालों ने इकट्ठे होकर युद्धमें पृथक् २ बड़े २ अस्त्रों को दिया जिन अस्त्रों के द्वारा इस नरोत्तम ने युद्धमें इकट्ठे होनेवाले कालकेय नाम असुरों को बड़ी शीघ्रतासे मारा ५१ इसीप्रकार इस अकेले अर्जुनने राजा विराटके पुरमें कौरवों समेत हम सब मिलेहुओं को एकही रथके द्वारा विजय कर युद्धभूमि में उस गोधनको हरण करके उनसब महारथियोंके वस्त्रोंको भी छीन लिया ५२ हेशल्य इस प्रकारके पराक्रमी और गुणवाले श्रीकृष्णको साथमें रखनेवाले सब लोक और राजाओं में श्रेष्ठ इस अर्जुनको अपने साहससे बुलाताहूं ५३ वह महापराक्रमी ब्रह्मा विष्णु और महेशजीके भी कंपानेवाले नारायणसे रक्षितहै सब संसार इकट्ठा होकर हजारों वर्षतक भी जिसके गुणों का बर्णन न करसके ५४ ऐसे शंखचक्र गदा पद्मधारी बसुदेवजीके पुत्र महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुनके गुणों के कहने को कोई समर्थ नहीं है एक रथपर बैठेहुये श्रीकृष्ण और अर्जुनको देखकर मुझको महाभय उत्पन्न होताहै ५५ अर्जुन युद्धमें सब धनुषधारियों से श्रेष्ठतर है और नारायणजीभी युद्धमें अद्वितीय हैं ऐसे अर्जुन और बासुदेवजी हैं हे शल्य चाहै हिमाचल अपने स्थानसे चलायमान होजाय परन्तु अर्जुन और श्रीकृष्ण चलायमान नहीं होसक्ते ५६ यह दोनों दृढ़ शस्त्रधारी शूरवीर महारथी बड़े कठोर शरीरवाले हैं हे शल्य ऐसे दोनों अर्जुन और बासुदेवजीके सन्मुख मेरे सिवाय दूसरा कौन जासक्ताहै यह अत्यन्त अद्भुत वा अद्वितीय उनका और मेरायुद्ध शीघ्रही होगा ५७।५८ मैं युद्धमें इनदोनों को गिराऊँगा वा श्रीकृष्ण समेत अर्जुनही मुझको गिरावेंगे शत्रुओंका मारनेवाला कर्ण युद्धमें शल्यसे ऐसे २ वचनोंको कहताहुआ बादल के समानगर्जा ५९ फिर आपके पुत्रके पास जाकर बड़े प्रेम से मिला उसने भी इसको अनेकप्रकार से प्रसन्नकिया फिर वहां प्रसन्न होकर कौरवों में बड़ेवीर दुर्य्योधन कृपाचार्य्य कृतवर्मा राजा गान्धार समेत उसके छोटेभाई इनसब से ६० वा अश्वत्थामा वा अपने पुत्र और उन पदाती हाथी और अश्व सवारों से बोला कि श्रीकृष्ण और अर्जुनको रोको प्रथम उनके सन्मुख जाकर शीघ्रही उनको सब प्रकारसे थकाओ ६१ जिससे कि हे राजा लोगो आपलोगों से अत्यन्त घायलहुये इनदोनों को मैं सुखपूर्व्वक मारूं वह

बड़े २ सब महावीर बहुत अच्छा ऐसा कहकर अर्जुन के मारने के अभिलाषी होकर बड़ी शीघ्रता से उनके सन्मुख गये ६२ कर्ण के आज्ञाकारी महारथियों ने बाणों से उस अर्ज्जुन को घायल किया फिर अर्ज्जुन ने युद्ध में उनको ऐसा निगला जैसे कि बड़ा जल समूह रखनेवाला समुद्र नद नदियोंको निगलजाता है ६३ वह अर्ज्जुन अपने उत्तम बाणों को चढ़ाता और छोड़ता हुआ शत्रुओं को दिखाई भी नहीं पड़ा फिर अर्ज्जुन के चलायेहुये बाणों से घायल और मृतक हुये सब मनुष्य हाथी और घोड़े पृथ्वीपर गिरपड़े ६४ सब कौरव उस बाण रूप अग्नि और गांडीव रूप सुन्दर मण्डल रखनेवाले प्रलयकालीने सूर्य्य के समान महातेजस्वी अर्ज्जुन की ओर देखने को ऐसे समर्थ नहीं हुये जैसे कि नेत्ररोगी मनुष्य सूर्य्य के दर्शन करने को असमर्थ होताहै ६५ हँसते हुये गांडीव धनुष रूप पूर्ण मंडलवाले अर्जुन ने उन महारथियों के चलायेहुये बाणजालों को ऐसे काटा जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में उग्रकिरण रखनेवाला सूर्य्य जलसमूहों को सुखपूर्वक सोखलेताहै हे महाराज फिर अर्जुन ने बाणों के समूहों को छोड़ कर आपकी सेनाको भस्म करदिया ६६ । ६७ फिर कृपाचार्य्यजी बाणोंको छो-ड़तेहुये उसके सन्मुख गये उसी प्रकार कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्य्योधन भी दौड़ा और महारथी अश्वत्थामा ने शायकों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादल पहाड़ को ढकदेताहै ६८ उस समय कुशलबुद्धी शीघ्रता करनेवाले पांडव अ-र्जुनने उस बड़े युद्धमें बड़े उपाय से मारने के इच्छावान् वीरों के चलायेहुये उत्तम बाणों को अपने बाणों से काटकर तीन २ बाणों करके उनको छातीपर घायल किया ६९ गांडीव रूप बड़े पूर्ण मंडलवाला बाणरूपी उग्र किरणों से युक्त अर्जुन रूपी सूर्य्य शत्रुओं को संतप्त करताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि ज्येष्ठ आषाढ़में पार्श्व मंडल से युक्त सूर्य्य वर्त्तमान होताहै ७० इसके पीछे अ-श्वत्थामा ने दशउत्तम बाणों से अर्जुन को तीनबाणों से श्रीकृष्णजी को चार बाणों से चारों घोड़ों को घायल करके नाराचनाम उत्तम बाणों से ध्वजास्थ हनुमान्‌जी को ढकदिया ७१ तौभी अर्जुन ने उस धनुषधारी अश्वत्थामा को तीनही बाणों से कंपायमान करके क्षुरसे सारथी के शिरको चारबाणों से घोड़ों को और तीन बाणोंसे अश्वत्थामा की ध्वजा को रथसे गिराया ७२ फिर क्रोध युक्त अश्वत्थामा ने हीरे मणि और सुवर्ण से जटित तक्षक के फणके समान प्र-

काशित बड़े मूल्यके दूसरे धनुषको ऐसे उठाया जैसे कि अत्यन्त उत्तम बड़े सर्प को पर्व्वत के किनारे से कोई उठालेवे ७३ उस बड़ेगुणी अश्वत्थामाने अपने शस्त्रको निकालकर घोड़े और सारथी से रहित पृथ्वी के समान रथपर अपने धनुषको प्रत्यंचा समेत करके समीप से आकर उनदोनों अजेय नरोत्तमों को उत्तम बाणों के द्वारा पीड़ामान किया ७४ युद्धके शिरपर नियत वह महारथी कृपाचार्य्य कृतवर्मा और आपका पुत्र दुर्य्योधन युद्धमें अनेक बाणों समेत अर्जुन के ऊपर ऐसे आनकर गिरे जैसे कि बादल सूर्य्यको घेरलेते हैं ७५ फिर सहस्राबाहु के समान पराक्रमी अर्जुन ने कृपाचार्य्य के धनुषबाण घोड़े ध्वजा और सारथीको बाणोंसे ऐसे घायल करदिया जैसे कि पूर्व समयमें राजा बलिको बज्रधारी इन्द्रने घायल कियाथा ७६ वह कृपाचार्य्य अर्जुन के बाणों से अस्त्रों से रहित होगये और उस बड़े युद्धमें ध्वजाके टूटने पर हजारों बाणों से ऐसे छेदेगये जैसे कि पूर्व्व में अर्जुन के हाथसे भीष्मजी छेदे गयेथे ७७ इसके पीछे प्रतापवान् अर्जुनने गर्जते हुये आपके पुत्रकीध्वजा और धनुषको बाणोंसे काट कर कृतवर्मा के उत्तम घोड़ों को मार ध्वजा को भी काटडाला फिर शीघ्रता करने वाले उस अर्जुन ने घोड़े हाथी रथ ध्वजा और धनुषको विध्वंसन करदिया इसके पीछे आपकी बड़ी सेना पृथक् २ होकर ऐसे छिन्नभिन्न होगई जैसे कि जलके वेगसे टूटाहुआ पुल छिन्नभिन्न होकर बहजाताहै ७८।७९ तदनन्तर केशवजी ने शीघ्रही रथके द्वारा अर्जुन के महादुखी शत्रुओं को दक्षिणकिया और जैसे इन्द्र के मारनेकी इच्छासे वृत्रासुर आदि दैत्यचलेथे उसीप्रकार दूसरे युद्धाभिलाषी ऊंची ध्वजाधारी सुन्दररत्न जटित रथोंके द्वारा शीघ्र जानेवाले अर्जुनके ऊपर दौड़े इसके पीछे महारथी शिखण्डी सात्यकी नकुल और सहदेव समीप जाके उन अर्जुन के सन्मुख आनेवाले शत्रुओं को रोककर ८०।८१ तीक्ष्ण बाणोंसे घायल करके बड़े भयानक शब्दों से गर्जे और सृञ्जियों समेत क्रोध युक्त कौरवी वीरोंने सीधे चलनेवाले सुन्दर वेतयुक्त बाणोंसे परस्परमें ऐसे मारा जैसे कि पूर्व्व समयमें असुरों ने देवताओं के गणों समेत युद्धमें परस्पर मारा था हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र वह विजयाभिलाषी स्वर्गजानेके उत्सुक हाथी घोड़े औररथ गिरतेथे ८२।८३ और ऊंचे स्वरोंसे गर्जतेथे फिर अच्छीरीति से छोड़े हुये बाणों से पृथक्२ होकर परस्पर में अत्यन्त घायल किया हे राजा उस महा

युद्धमें शूरवीरों में श्रेष्ठ महात्माओं के कर्म से परस्पर बाणों का अन्धकार उत्पन्न करनेपर ८४ चारोंदिशा विदिशा और सूर्य्य की किरणें भी अन्धकार होजाने से गुप्त होगईं ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा कौरवोंकी अत्यन्त उत्तम सेनाओं से घिरेहुये और डूबे हुये पाण्डव भीमसेनको निकालने के अभिलाषी अर्जुन ने १ शायकों से कर्ण की सेना को मर्दनकरके शत्रुओं के वीरोंको मृत्युलोक में भेजा २ इसके पीछे इसके बाण जाल क्रम २ से आकाशमें जाकर दिखाईदिये इसरीति से औरों ने भी आपकी सेनाको मारा ३ वह महाबाहु अर्जुन पक्षीगणों से सेवित आकाश को अपने बाणों से पूर्णकरता कौरवोंका नाश करनेवाला हुआ ४ फिर अर्जुन ने निर्मलभल्ल क्षुरप्र और नाराचों से अंगों को छेदछेदकर शिरोंको काटा ५ कटे हुये अंग और कवचों से रहित वह शिर चारोंओर से गिरे उन गिरनेवाले शूरवीरों से पृथ्वी आच्छादित होगई ६ अर्जुनके बाणों से मृतक अंगभंग चूर्ण २ नाशहुये अंगों से रहित हाथी घोड़े रथी और रथों से पृथ्वी व्याप्तहोगई ७ हे राजा युद्धभूमि बड़ीदुर्गम विषय महाघोर दुःख से देखने के योग्य वैतरणीनदी के समान होगई ८ शूरवीरों के घोर सारथी रखनेवाले मृतक घोड़े वा सारथी समेत रथों से और ईशा रथ चक्र अक्ष और भल्लों से पृथ्वी महाचित्रितसी होगई ९ कवचों से अलंकृत सेना के सेनाधिप सुनहरी कवच सुनहरी भूषण रखनेवाले शूरवीरों समेत नियतहुये १० कठोर प्रकृतिवाले सवारों की एँड़ी और अंगुष्ठों से प्रेरित क्रोधयुक्त चारसौहाथी अर्जुनके बाणों से ऐसे गिरपड़े ११ जैसे कि बज्रसे बड़े पर्व्वतों के शिखर गिरपड़ते हैं रत्नों से पूर्ण पृथ्वीपर अर्जुनके बाणों से नाश होकर गिरेहुये उत्तम हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई १२ अर्जुन के रथ ने बादलके रूप मद डालनेवाले हाथियों को चारोंओर से ऐसे प्रासकिया जैसे कि सूर्य्य बादलों को प्रास करताहै १३ मृतक हाथी घोड़े मनुष्य अनेक प्रकारके टूटे रथ शस्त्र सारथी वा कवचों से रहित युद्धमें मतवाले मृतक मनुष्यों से १४ और बड़े भयानक शब्दवाले गांडीव धनुषको टंकारते अर्जुनके हाथसे टूटेहुये शस्त्रों

से युद्धभूमि का मार्ग आच्छादित होगया १५ जैसे कि आकाशमें घोर वज्र से विनिष्पेष स्तनयित्नु होताहै उसी प्रकारवाला धनुष का शब्दथा उसके पीछे अर्ज्जुन के बाणों से घायल होकर सेना ऐसे पृथक्होकर छिन्नभिन्न होगई १६ जैसे कि समुद्र में बड़े वायुके वेग से चलायमान नौका होती है नानाप्रकार के रूपवाले प्राणों के हरनेवाले गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये १७ उल्का और बिजली के रूपवाले बाणों ने आपकी सेनाको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि सायंकाल के समय बड़े पर्व्वतपर प्रचण्ड अग्नि बांसों के बनको भस्म करदेताहै १८ इसी प्रकार बाणों से पीड़ित आपकी बड़ी सेना भी महा व्याकुल होकर चलायमान हुई और अर्ज्जुन के हाथसे मर्द्दित और भस्मीभूत करीहुई सेना नाशको प्राप्त हुई १९ बाणों से कटीहुई वा घायलहोकर वह सेना सब ओरको ऐसे भागी जैसे कि दावानल अग्निसे भयभीत होकर बड़े मृगों के समूह भागते हैं २० इसीप्रकार अर्जुन के हाथसे भस्महुये कौरव उस महाबाहु भीमसेन को छोड़कर चारों ओरको भागे २१ इस रीतिसे कौरवों की सब सेना व्याकुल होकर मुख मोड़ २ कर भागी इसके पीछे कौरवों के छिन्नभिन्न होनेपर वह अजेय अर्जुन भीमसेन को पाकर २२ एक मुहूर्त पर्य्यन्त समीप वर्त्तमान रहा वहां भीमसेनसे युधिष्ठिर का सब वृत्तान्त और आनन्द से होने का समाचार कहकर भीमसेन से आज्ञा लेकर अर्ज्जुन फिर चलागया २३ । २४ हे भरतबंशी वह रथके शब्दसे पृथ्वी और आकाश को शब्दायमान करताहुआ गया इसके पीछे शूरवीरों में श्रेष्ठ प्रतापी अर्जुन २५ दुश्शासनसे छोटे आपके दश पुत्रों से घेरागया उन्होंने भी उसको बाणोंसे ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओं से हाथीको पीड़ित करते हैं २६ हे भरतबंशी धनुषको मण्डलाकार करनेवाले शूरवीर नर्तकों के समान दिखाई दिये उनको मधुसूदनजी ने अपने रथके द्वारा दक्षिण किया २७ और अर्ज्जुन के हाथसे मरकर उनको यमराजके पास जानेवाला अनुमान किया उसकेपीछे अर्ज्जुनके रथके मुड़ने पर उन शूरों ने चढ़ाई करी २८ अर्ज्जुनने उन सन्मुख आनेवालों के घोड़े रथ सारथी और ध्वजा समेत धनुष और शायकों को शीघ्रही अपने नाराच और अर्द्धचन्द्र नाम बाणोंसे गिराया २९ पीछेसे दूसरे दश भल्लोंसे उनके उन शिरोंको पृथ्वीपर गिराया जोकि बहुत कालसे रक्त नेत्रकर कर ओठोंको काटते थे ३० वह बहुत से कमलरूपी मुखों समेत शिर बड़े शोभा-

यमान हुये फिर वह शत्रुओंका मारनेवाला सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाला सुनहरी पुंखवाले दशभल्लोंसे बड़े वेगवान् दशों कौरवोंको मारकर चलदिया २१॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१॥

बयासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि कौरवों के बड़े वेगवान् नब्बे रथी घोड़ों के द्वारा उस आनेवाले कपिध्वज अर्जुन के सन्मुख गये १ और नरोत्तम संसप्तकों ने परलोक सम्बन्धी घोर शपथको खाकर युद्ध में पुरुषोत्तम अर्ज्जुन को घेरलिया २ और श्रीकृष्णजी ने बड़े वेगवान् सुवर्ण भूषणों से अलंकृत मोतियों के जालोंसे ढकेहुये श्वेत घोड़ोंको कर्णके रथपर हांका ३ इसके पीछे संसप्तकों के रथ बाणों की वर्षासे प्रहार करते कर्णकी ओरको जानेवाले उस अर्ज्जुनके सन्मुखगये ४ अर्ज्जुन ने अपने तीक्ष्ण बाणों से शीघ्रता करनेवाले उन सब नब्बे वीरों को सारथी धनुष और ध्वजा समेत मारा ५ अर्ज्जुन के नानारूप के बाणोंसे घायलहोकर वह शूरवीर ऐसे गिरपड़े जैसे कि तपके क्षीण होनेपर सिद्धलोगअपने विमान समेत स्वर्गसे गिरते हैं इसके पीछे कौरवलोग बड़ी निर्भयतासे रथ हाथी और घोड़ों समेत उस वीर अर्ज्जुन के सन्मुख आये ६। ७ तीव्रता युक्त मनुष्य घोड़े और उत्तमहाथी वाली उस आपकी बड़ी सेनाने अर्ज्जुन को घेर लिया ८ वहां बड़े धनुषधारी कौरवों ने शक्ति, दुधारा खड्ग, तोमर, प्रास, गदा, खड्ग और शायकों से कौरवनन्दन अर्ज्जुन को ढकदिया ९ फिर अर्ज्जुनने चारों ओरसे अन्तरिक्ष में फैलीहुई उस बाणोंकी वर्षाको अपने बाणों से ऐसा छिन्न भिन्न करदिया जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से अँधेरे को तिर्रे बिर्रे करदेताहै १० इसकेपीछे मतवाले तेरहसौ हाथियोंसमेत नियतहुये म्लेच्छोंने आपके पुत्रोंकी आज्ञा से अर्ज्जुन को पार्श्वभागकी ओरसे घायल किया ११और कर्ण, नालीक, नाराच, तोमर, प्रास, शक्ति, मुशल और भिन्दिपालों से रथ में सवार अर्ज्जुनको पीड़ामान किया १२ अर्ज्जुन ने उन हाथीके सवारोंसे छोड़े हुये बड़े बाण जालोंको अपने तीक्ष्णधार भल्ल और अर्द्धचन्द्रबाणों से काटा १३ इसके पीछे नानारूपके उत्तम बाणोंसे उन सब हाथियोंको पताका ध्वजा और सवारों समेत ऐसे मारा जैसे कि वज्रोंसे पर्व्वतों को मारते हैं १४ वह स्वर्णमय

मालाधारी बड़े २ हाथी सुनहरी पुंखवाले बाणों से पीड़ित और मृतक होकर ऐसे गिरपड़े जैसे कि ज्वालामुखी पर्व्वत गिरपड़ते हैं १५ हे राजा इसके पीछे हाथी घोड़े समेत मनुष्योंको पुकारते और चिंघाड़तेहुये गाण्डीव धनुषका बड़ाशब्द हुआ १६ और वह घायल हाथी चारोंओर मृतक सवारों समेत भागे १७ हे महाराज रथियों और घोड़ों से रहित हजारोंरथ गन्धर्वनगरके रूप दिखाईपड़े १८ और इधर उधरसे दौड़नेवाले अश्व सवार जहां तहां अर्ज्जुनके शायकों से मृतक दिखाई दिये १९ उस युद्धमें पाण्डव अर्ज्जुनकी भुजाओंका पराक्रम देखा गया जो अकेलेनेही युद्धमें अश्वसवार हाथी और रथोंको विजय किया २० हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे भीमसेन तीन अंगरखनेवाली बड़ीसेना से घिराहुआ अर्ज्जुनको देखकर २१ मरने से शेष बचेहुये आपके थोड़े रथियोंको छोड़कर वेगसे अर्ज्जुन के रथकी ओरको दौड़ा २२ इसके पीछे बहुतमृतक और दुखीसेना भागी तब भीमसेन अपने भाईअर्ज्जुनके पासगये बड़े युद्धमें थकावट से रहित गदाको लियेहुये भीमसेनने अर्ज्जुनसे बचेहुये शेषपराक्रमी घोड़ोंको मारा २३ । २४ इसके पीछे भीमसेन ने कालरात्रिके समान बड़े उग्र हाथी घोड़े और मनुष्यों की खानेवाली नगरके कोटों की तोड़नेवाली महाभयानक गदा को २५ मनुष्य हाथी और घोड़ोंपर छोड़ा हे राजा उस गदा ने बहुतसे हाथी घोड़े और अश्वसवारों को मारकर लोहे के कवचधारी मनुष्य और घोड़ों को मारा और वह मनुष्य मृतकहोकर शब्द करतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े २६ । २७ दांतोंसे पृथ्वीको काटते रुधिरमें भरे टूटे मस्तक हाड़ और चरणहोकर मांसभक्षी जीवोंको भक्षणार्थ मृत्यु बशहुये २८ तब गदानेभी रुधिर मांस और मज्जा से तृप्तहोकर शीतलताको पाया कालरात्रिके समान दुःखसे देखनेके योग्य हाड़ों कोभी खाती हुई नियत हुई २९ अत्यन्त क्रोधयुक्त गदा हाथ में लिये भीमसेन दशहज़ार घोड़े और अनेक पत्तियों को मारकर इधर उधरको दौड़ा ३० हे भरतबंशी इसके पीछे आपके शूरवीरोंने गदाधारी भीमसेनको देखकर कालदण्ड के उठानेवाले यमराज को ही सन्मुख आयाहुआ माना ३१ मतवाले हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वह पाण्डुनन्दन हाथियों की सेना में ऐसे पहुँचा जैसे कि समुद्र में मगर पहुँचता है ३२ वहां अत्यन्त क्रोधभरे भीमसेन ने बड़ी गदाको लेकर हाथियोंकी सेनाको मझाकर वा मथकर क्षणमात्रमेंही यमलोक

में पहुँचाया ३३ घण्टोंसमेत वा ध्वजा पताकाधारी सवारोंसे युक्त मतवालेहाथियोंको ऐसे गिरताहुआ देखा जैसे कि पक्षधारी पर्व्वत गिरतेहैं ३४ बड़े पराक्रमी भीमसेन उस हाथियों की सेनाको मारकर अपने रथपर सवार होकर अर्जुन के पीछे चले ३५ हे महाराज शत्रुओंकी बहुतसी सेनामारी गई और बहुधा सेना के लोग मुखफेरेहुये निरुत्साह और बहुतेरे शस्त्रोंसे ढकेहुये शरणमें आये ३६ अर्जुनने उसशरणमें आईहुई अचेतसेनाको देखकर प्राणोंके तपानेवाले बाणों से ढकदिया ३७ उसयुद्धमें गांडीव धनुषधारी के बाणोंसे छिदेहुये मनुष्य घोड़े रथ और हाथी ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि केशरों करके कदम्ब का वृक्ष शोभित होताहै ३८ हे राजा इसके पीछे मनुष्य घोड़े और हाथियोंके प्राणोंके हरने वाले अर्जुनके बाणों से घायलहुये कौरवोंके बड़े पीड़ावान् शब्दहुये ३९ तबहाय हाय करनेवाली आपकी सेना अत्यन्त भयभीत होकर परस्पर में गुप्तहोनेवाले अलातचक्र अर्थात् बनेटी के समान भ्रमण करनेलगी ४० इसके अनन्तर वह कौरवों का युद्ध बड़े पराक्रमियों के साथहुआ जहां रथ अश्वसवार घोड़े और हाथियों में कोई भी बिना घायलहुये नहीं रहा ४१ वह सेना चारोंओरसे अग्नि रूप बाणों से विदीर्ण रुधिर और चर्म से भरे शरीर फूलेहुये अशोक वृक्षके वनके समान होगई ४२ वहां सब कौरव इस पराक्रमी अर्जुनको देखकर कर्ण के जीवन में निराशा युक्तहुये ४३ गांडीव धनुषधारी से मारेहुये कौरव युद्ध में अर्जुन के बाणोंकी वर्षा को असह्य मानकर लौटे ४४ शायकों से घायलहुये वह कौरव कर्णको त्यागकर भयभीत होकर चारोंओरको भागे और कर्ण को भी पुकारे ४५ उससमय अर्जुन हजारों बाणोंको छोड़ताहुआ और भीमसेन आदि युद्धकर्त्ता पांडवों को प्रसन्न करताहुआ उनके सन्मुख गया ४६ हे महाराज फिर आपके पुत्र कर्ण के रथके पासगये तब उन अथाह समुद्र में डूबेहुये आपके पुत्रादिकों को आश्रयरूप टापू होगया ४७ हे राजा निर्विष सर्प के समान सब कौरव अर्ज्जुन के भयसे कर्ण के पास गुप्तहोकर छिपगये ४८ जैसे कि कर्मकरता लोग मृत्युसे भयभीत होकर अपनेही धर्म में आश्रित होते हैं उसीप्रकार आपके पुत्र भी महात्मा पांडव अर्जुनके भयसे बड़े धनुषधारी कर्ण के पास शरणागत रूप हुये ४९ । ५० उन रुधिर से भरे बाणों से पीड़ामान बड़ी आपत्ति में फँसेहुये लोगोंको देखकर कर्ण ने कहा कि भय मतकरो और मेरेहीपास नियत रहो ५१

फिर अर्जुनके पराक्रम से अत्यन्त छिन्नभिन्न और व्याकुल आपकी सेना को
देखकर वह कर्ण शत्रुओं के मारनेकी इच्छासे धनुष टंकारताहुआ नियतहुआ
५२ उस शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ श्वास लेनेवाले कर्ण ने उन भागेहुये कौरवों को
देखकर चिन्तापूर्व्वक अर्जुनके मारने में चित्त किया ५३ इसके पीछे अधिरथी
कर्ण बहुत बड़ेभारी धनुषको टंकारकर अर्जुन के देखतेहुये फिर पांचालों की
ओरको दौड़ा ५४ उससमय रक्तनेत्र राजाओं ने एक क्षणभरमेंही कर्ण के ऊपर
ऐसी बाण वर्षा करी जैसे कि पर्व्वतपर बादल वर्षा करते हैं ५५ हे जीवधारियों
में श्रेष्ठ धृतराष्ट्र इसके पीछे कर्ण के छोड़ेहुये हजारों बाणों ने पांचालोंको प्राणों
से रहित करदिया ५६ हे बड़े ज्ञानी वहां मित्रको चाहनेवाले कर्ण के हाथ से
मित्रोंकेही निमित्त घायल होनेवाले पांचालों के बड़े शब्दहुये ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिसंकुलयुद्धेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजा इसके अनन्तर कवच और श्वेत घोड़ेवाले अर्जुन
के हाथसे कौरवों के भागजानेपर सूतके पुत्र कर्ण ने बड़े बाणों से राजा पांचाल
के पुत्रों को ऐसे छिन्नभिन्न करदिया जैसे कि बादलों के समूहों को वायु तिर्रे
बिर्रे करदेताहै १ अंजलिक नाम बाणों के द्वारा रथसे सारथीको गिराकर घायल
कियेहुये घोड़ों को मारा और शतानीक वा श्रुतसोम को भल्लोंसे ढककर उनके
धनुषोंको भी काटा २ इसके पीछे छःबाणों से धृष्टद्युम्न को छेदके बड़े वेगसे उ-
सके घोड़ोंको भी मारा फिर सूतपुत्रने सात्यकी के घोड़ों को मारकर कैकेय के
विशोकनाम पुत्रको मारा ३ कुमार के मरनेपर कैकेय का सेनापति जो कि महा
भयानक कर्म करनेवाला था वह अपने उग्रबाणों से सेना को छिन्नभिन्न करता
हुआ ४ इसके सन्मुख दौड़ा और कर्ण के पुत्र प्रसेनको घायल किया ४ कर्ण ने
हँसकर तीन अर्द्धचन्द्र बाणोंसे उसकी भुजा और शिरको काटा तब वह मृतक
होकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसे से काटाहुआ सालका वृक्ष
होताहै ५ कर्णका पुत्र प्रसेन मृतक घोड़ेवाले सात्यकी को अपने कानतक खैंचे
हुये पृषत्क नाम बाणोंसे ढककर नाचताहुआ सात्यकी के हाथसे घायल होकर
गिरपड़ा ६ पुत्रके मरने से क्रोधयुक्त चित्त करके सात्यकी के मरने की इच्छा

करतेहुये माराहै इस प्रकार बोलतेहुये कर्णने सात्यकी के ऊपर शत्रुघाती बाण को छोड़ा ७ उसके उस बाणको शिखण्डीने काटकर तीनबाणों से कर्णको पीड़ितकिया फिर शिखण्डी के बाण कर्णकी ध्वजा और धनुषको काटकर पृथ्वी में गिरपड़े ८ तब उग्ररूप महात्मा अधिरथी कर्णने शिखण्डी को छः बाणों से घायल करके धृष्टद्युम्न के लड़के के शिरको काटा और इसी प्रकार बड़े तीक्ष्ण बाणों से श्रुतसोम को घायल किया ९ हे राजाओं में श्रेष्ठ वहां प्रबल शूरवीरके वर्त्तमान होने और धृष्टद्युम्नके पुत्रके मरनेपर श्रीकृष्णजी ने अर्जुन से कहा कि यह कर्ण इस लोकको पांचालों से रहित किये देताहै हे अर्जुन अब से चलकर कर्णको मार १० उसके पीछे नरोंमें बड़े वीर सुन्दर भुजावाले भयके स्थानमें महारथीसे घायल इनलोगों की रक्षा करने के इच्छावान् अर्जुनने हँसकर शीघ्रही रथके द्वारा कर्णके रथको पाया ११ और महाकठोर उग्र गांडीव धनुषको चढ़ाकर हथेलीपर प्रत्यंचाका शब्द करके अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न करके ध्वजारथ घोड़े और हाथियों को मारा अन्तरिक्ष में बहुतसे शब्द घूमने लगे और पक्षीलोग पर्व्वतों की गुफाओं में गिरे जो कि जीवाके मंडल से जँभाईलेता अर्जुन रुद्र मुहूर्त्त में सन्मुखगया १२। १३ और एक वीर भीमसेन रथके द्वारा अर्जुन को पीछेकी ओरसे रक्षाकरता हुआ चला शत्रुओं से घिरेहुये वह दोनों राजकुमार रथोंके द्वारा शीघ्रही कर्ण के सन्मुखगये १४ वहांपर अन्तरिक्षमें कर्णके सोमकलोगों को घेरकर उस महायुद्धके नियत रथ घोड़े और हाथियों के समूहों को मारा और बाणों से सब दिशाओं को ढकदिया १५ उत्तमौजा, जनमेजय, क्रोधयुक्त युधामन्यु, शिखंडी और धृष्टद्युम्न इन सबने अपने २ पृषत्कों से कर्णको छेदा वह पांचाल देशी रथियों में बड़े वीर पांचों कर्ण के सन्मुख दौड़े धैर्य्य से बड़े सावधान कर्णको यह सबलोग रथसे गिरानेको ऐसे समर्थ नहींहुये जैसे कि शान्त और जितेन्द्री पुरुष को इन्द्रियों के विषय नहीं गिरासक्के १६। १७ कर्ण ने बाणों से उन्होंके धनुष ध्वजा घोड़े सारथी और पताकाओं को शीघ्रतासे काटकर पांच पृषत्कों से उनको घायलकरके सिंहनादकिया १८ उन बाणोंको छोड़ते और चारोंओरसे मारते उस प्रत्यंचा और बाण रखनेवाले कर्ण के धनुषके घोरशब्द से पर्व्वत वा वृक्षादिसमेत पृथ्वी कंपायमानहोगी ऐसाजानकर मनुष्योंके समूहपीड़ामानहुये १९ वह कर्ण इन्द्रधनुषके समान अपने बड़े धनुषसे बाणों को छोड़ता

युद्ध में ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि प्रकाशित ज्योतियों का मण्डल और किरणों के समूहोंका रखनेवाला पार्ष मण्डलसे घिराहुआ सूर्य्य होताहै २० शिखंडीको तीक्ष्णबारह बाणों से उत्तमौजसको छः बाणोंसे युधामन्युको शीघ्रगामी तीनबाणों से और सोमकधृष्टद्युम्नके पुत्रोंको तीन२ बाणोंसे छेदा २१ हे श्रेष्ठ फिर युद्धमें कर्णके हाथसे पराजित शत्रुओं के प्रसन्न करनेवाले पांचों महारथी कर्म रहित होकर ऐसे नियतहुये जैसे कि ज्ञानी से जीतेहुये इन्द्रियों के बिषय होते हैं २२ जैसे कि नौकासे रहित व्यापारी लोग समुद्रमें डूबतेहैं इसीप्रकार कर्णरूपी समुद्रमें डूबनेवाले उन अपने मामाओं को द्रौपदीके पुत्रोंने अच्छे अलंकृत रथरूप नौकाओं के द्वारा उस समुद्रसे निकाला २३ उसकेपीछे सात्यकी ने कर्ण के चलायेहुये बहुत बाणों को अपने तीक्ष्णबाणों से काटकर और तीक्ष्णलोहे के बाणों से कर्ण को घायल करके आठ बाणों से आपके बड़े बेटे को छेदा २४ इसकेपीछे कृपाचार्य कृतवर्मा दुर्य्योधन और आप कर्णने तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया वह श्रेष्ठ यादव इनचारों के साथ ऐसे युद्ध करनेलगा जैसे कि दैत्योंका स्वामी दिग्पालोंके साथ लड़ताहै २५ बड़े उच्चशब्दवाले बहुत लम्बे असंख्यबाण वर्षानेवाले बड़े धनुषसे वह सात्यकी उनपर ऐसा प्रबलहुआ जैसे कि शरदृऋतु में आकाशमें वर्त्तमान सूर्य प्रबल होताहै २६ शत्रुसंतापी बड़े अलंकृत शस्त्रधारी पांचाल देशी महारथियोंने फिर रथोंपर सवारहोके सात्यकीको ऐसे रक्षितकिया जैसे कि शत्रुओं के मारने में मरुद्गणलोग इन्द्रको रक्षित करतेहैं २७ इसकेपीछे आपकी सेनाओंके साथ शत्रुओंका वहयुद्ध महाभयकारी हुआ जो कि उनरथ घोड़े और हाथियोंका विनाशकारीथा जैसे कि पूर्वसमयमें देवताओंका युद्ध दैत्योंके साथहुआ २८ उसीप्रकार रथ हाथी घोड़े और पदातियों समेत सब सेना शस्त्रोंसे ढकगई और परस्पर शब्दों को करतेहुये मृतकहोकर गिरपड़े २९ उस दशामें राजा दुर्य्योधनसे छोटा आपका पुत्र दुश्शासन बाणोंसे भीमसेनको ढकता सन्मुखगया भीमसेनभी बड़ीशीघ्रतासे उसके सन्मुखगया और उसको ऐसे सन्मुखपाया जैसे कि सिंह बड़े रुरुको सन्मुख पाताहै ३० इसकेपीछे प्राणोंका द्यूतखेलनेवाले परस्पर क्रोधभरेहुये उन दोनोंका ऐसा महाभारी युद्धहुआ जैसे कि बड़े साहसी संवरदैत्य और इन्द्रकाहुआथा ३१ उनदोनोंने शरीरको पीड़ित करनेवाले सुन्दर बेतवाले बाणों से परस्परमें ऐसाकठिन घायल किया जैसे कि

हथिनियोंके मध्यमें कामदेवसे प्रवृत्तचित्त बारंबार घायलहुये दो बड़े हाथी लड़ते हैं ३२ इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाले भीमसेन ने आपके पुत्रके ध्वजा और धनुष को दो क्षुरप्रों से काटा और उसके ललाटको बाणसे छेदकर सारथी के शिरको शरीरसे पृथक् करदिया ३३ उस राजकुमारने दूसरे धनुषको लेकर भीमसेनको बारहबाणसे छेदा और आपही घोड़ोंको चलाताहुआ भीमसेनपर बाणोंकीवर्षा करनेलगा ३४ इसकेपीछे सूर्य्यकी किरणकेसमान प्रकाशमान सुवर्ण हीरेआदि उत्तम रत्नोंसे अलंकृत महाइन्द्रके वज्ररूप बिजली के गिरने के समान कठिनतासे सहनेके योग्य भीमसेनके अंगोंके चीरनेवाले बाणकोछोड़ा ३५ उसबाणसे घायल शरीर व्यथितरूप भीमसेन निर्जीवके समान गिरा और दोनों भुजाओंको फैलाकर उत्तम रथपर आश्रितहुआ और थोड़ेही कालमें सचेतहोकर गर्जा ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनभीमसेनयुद्धेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३॥

चौरासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि उसयुद्धमें कठिन युद्धकरनेवाले राजकुमार दुश्शासनने ऐसा कठिन कर्मकिया कि एकबाणसे तो भीमसेनके धनुषको काटा और सातबाणोंसे सारथीको छेदा १ उस वेगवान् राजकुमारने उसकर्म को करके भीमसेनको नब्बे पृषत्कोंसे पीड़ितकिया इसके पीछे बड़ीशीघ्रता करके उत्तम बाणोंसे फिर भीमसेनको छेदा २ फिर महाक्रोधरूप भीमसेनने आपके पुत्रपर उग्रशक्तिको चलाया तब आपके पुत्रने उसजलतीहुई उग्र शक्तिको अकस्मात् आते हुये देखकर ३ कानतक खैंचेहुये दश पृषत्क बाणोंसेकाटा उससमय सब शूरवीरोंने प्रसन्न चित्त होकर उसकी प्रशंसाकरी ४ इसके अनन्तर शीघ्रही आपके पुत्रने भीमसेन को फिर कठिन पीड़ितकिया तब भीमसेन उसपर अत्यन्त क्रोधितहुआ और उसको देखकर क्रोधसे अत्यन्त कोपयुक्त होकर ५ कहनेलगा कि हे वीर मैं तेरे बाणसे घायलहूं अब तुम मेरी गदाको सहो तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़े शब्दसे यह कहकर उस भयानक रूप गदाको मारनेके निमित्त लिया ६ और कहाकि अरे दुरात्मा अब मैं इस युद्धभूमिमेंही तेरे रुधिर को पानकरूंगा यह वचन सुनकर आपके पुत्रने मृत्युरूप उग्रशक्ति को अकस्मात् फेंका तब क्रोधमें पूर्ण भीमसेन नेभी बड़ी उग्ररूपगदाको घुमाकर फेंका उसगदाने उसकी शक्तिको अकस्मात्

तोड़कर आपके पुत्रको मस्तकपर घायलकिया ७। ८ मदझाड़नेवाले हाथी के समान रुधिरको गिरातेहुये उस दुश्शासनपर फिर भीमसेन ने उस कठिनगदा को चलाया उस गदाके द्वारा भीमसेन ने बड़े हठपूर्व्वक दुश्शासन को दश धनुष की दूरीपरडाला ९ अर्थात् उस वेगवान् गदासे घायल और कंपितहोकर दुश्शासन गिरपड़ा हे महाराज गिरतीहुई गदासे सारथी समेत घोड़े मारेगये और उसका रथभी चूर्ण २ होगया १० टूटे कवच भूषण और पोशाकवाला फड़-कताहुआ दुश्शासन कठिन पीड़ासे दुःखीहुआ और सब पाण्डव और पांचा-लोंने दुश्शासन को देखकर बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक सिंहनादों को किया इसके पीछे भीमसेन इसको गिराकर बड़ी खुशीसे दिशाओं को शब्दायमान करता हुआ गर्जा हे अजमीढ़वंशी सब पार्श्ववर्त्ती नियत मनुष्य भी उस शब्दसे मू-र्च्छितहोकर गिरपड़े वेगवान् भीमसेनभी बड़े वेगपूर्व्वक रथसे उतरकर दुश्शा-सन की ओर दौड़ा और वह शत्रुता जो ११। १२। १३ आपके पुत्रोंकी ओर से कीगईथी उसको स्मरण करके हे राजा चारों ओरसे उत्तम पुरुषों समेत उस घोर और कठिन युद्धके वर्त्तमान होनेपर वहांबुद्धिसे बाहर कर्मवाला महाबाहु भीमसेन दुश्शासन को देखकर १४ देवी द्रौपदी के केशका पकड़ना और उ-सी रजस्वलाके वस्त्रोंका पृथक् करना इनदोनों बातोंको स्मरण करताहुआ उस निरपराधिनी पतियों से जुदीहुईको दुःखोंके देनेको शोचकर १५ फिर भीमसेन क्रोधसे ऐसा अग्निरूप होगया जैसे कि घृत सींचाहुआ अग्नि प्रज्वलित हो-ताहै ऐसा होकर उसने उस स्थानपर खड़ाहोकर कर्ण दुर्य्योधन, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मासे कहा १६ कि अब मैं इसपापी दुश्शासनको मारता हूं अब सब युद्ध करनेवाले शूरवीर इसकी रक्षाकरनेको आवो ऐसाकहकर मा-रनेको उत्सुक महापराक्रमी और वेगवान् भीमसेन सन्मुख दौड़ा १७ इसरीति से भीमसेन ने युद्ध में पराक्रम करके जैसे कि केशरी सिंह हाथी को पकड़ना चाहताहै उसीप्रकार वह अकेला भीमसेन वीर दुर्य्योधन और कर्णके समक्ष में दुश्शासनको पड़नेकी इच्छाकरके १८ बड़े उपायसे उसमें दृष्टीको लगा रथसे कूद पृथ्वीपर गया और सुन्दर धारवाले उत्तम खड्गको उठाकर उस कँपते हुये पृथ्वीपर पड़ेहुये कंठको दबाय छातीको और जंघाको काटकर थोड़ासा गरम २ रुधिर पिया उसके पीछे गिराकर उसके शिरको भी काटने की इच्छासे अपनी

प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये उस बुद्धिमान् भीमसेन ने फिर थोड़ासा गरमलोहू पिया और उस रुधिरके स्वादुको लेकर महा क्रोधित होकर सबके सन्मुख यह वचन कहा १६। २०। २१ कि माता के स्तन्य मधु घृत अच्छी बनीहुई दिव्य माध्वी मदिरा अथवा दुग्ध दधि व दुग्ध दधिको मथकर जो तक्रहोता है इनके सिवाय जो इस संसारमें सुधा और अमृतके स्वादुयुक्त पानकरनेवाले रसहैं उन सब पदार्थों से अब इस शत्रुके रुधिरमें मुझको अधिक स्वाद आताहै २२।२३ तदनन्तर उसको कुछेक सचेतदेखकर भीमसेनने कहा कि हे दुष्ट सभाके मध्यमें जो हमने तेरे रुधिर पीनेकी प्रतिज्ञाकरीथी उसको हमने सत्यकिया अब तुमको कौनसा शूरवीर बचासक्ताहै हे राजा भीमसेन के इस वचनको सुनकर आपके पुत्र दुश्शासन ने उत्तर दिया कि ॥

चौ० येममकर करि कुंभबिदारन। देनहार गो बाजि हजारन ॥
इनके बल तुम सर्वस हारे। वर्षत्रयोदश विपिन विहारे ॥
शरपंजर विरचन बलभारे। पीन पयोधर मर्दनहारे ॥
अति सुकुमार सुगन्धन मीजे। राजसूयके जलसों भीजे ॥
केश द्रौपदीको त्यहि कर्षण। करणहारमम भुजअरिधर्षण ॥
तुमसबलखत रहे त्यहि क्षनमें। तबनरह्यो कछु विक्रमतनमें ॥
अबहम परे समर में ऐसे। मन में रुचै करो सो तैसे ॥
शोणित पानाकियो ममसोऊ। यामें ममनहिं अमरष कोऊ ॥
क्षात्रधर्म पालनकरि रण में। हमइमि परे मरे भटगणमें ॥
काकशृगाल पियेंमम शोणित। कैतुमपियो करनिकर द्रोणित ॥
यहसुनि भीमक्रोधअतिगाहिकै। फिरवहि भांति भटनसों कहिकै ॥
गाहितो सुतकी भुजा उपारी। सोई तासु गात में मारी ॥
लागो पियन रुधिर पुनितातो। वीर विभित्स रौद्र रसरातो ॥
पिये वारिग्रीषम को प्यासो। तिमिसो रुधिर पियततहँ भासो ॥
दो० भरिअंजलि पीवत रुधिर उमँगि गात पै जात।
गिराधार धर शिलासम लसौ भीमको गात ॥
कुंभकरण सम गरजिकै फिर सब भटन प्रचारि।
कंठकाटि पीवनलगो शोणित कर्म विचारि ॥

कहि कहि कहि ताके किये कर्म आदि ते सर्व ।
डकरि डकरि पीवत भयो शोणित भीमसगर्व ॥

इसके पीछे महाघोर कर्मी क्रोधमें भराहुआ भीमसेन बड़े शब्दसे हँसा और दुश्शासन को निर्जीव देखकर यह वचन बोला कि मैं क्या करूं तू मृत्युसे रक्षितहै २४ उससमय जिन जिन लोगोंने इसप्रकार से बोलनेवाले वा दौड़नेवाले स्वादुलेनेवाले अत्यंत प्रसन्न होनेवाले उस भीमसेनको देखा वह सब महाभयभीत होकरभागे २५ और जो लोग कि दृढ़तासे नहीं भागे उनके हाथों से शस्त्र गिरपड़े और बहुतेरे आंखोंको बन्द करके भयके कारण धीरेसे पुकारे और चारों ओरको देखकर २६। २७ कहनेलगे कि यह मनुष्य नहीं है कोई उग्रराक्षसहै इसप्रकार कहकर भयभीत होकरभागे २८ और राजपुत्र युधामन्यु अपनी सेना समेत उस भागेहुये चित्रसेन के सन्मुखगया और बड़ी निर्भयतासे तीक्ष्ण धारवाले साठ पृषत्कों से उसको पीड़ामान किया २९ ऊंचाफल करनेवाले जिह्वा के चाटनेवाले क्रोधरूप विषके छोड़ने को अभिलाषी बड़े सर्पके समान चित्रसेनने लौटकर उस युधामन्युको तीन बाणोंसे और उसके सारथी को छःबाणों से छेदा ३० इसके पीछे शूरवीर युधामन्युने सुन्दर पुंख और नोकवाले अच्छे प्रकार धनुषपर चढ़ायेहुये कानतक खैंचेहुये बाणसे उसके शिरको काटा ३१ उसभाई चित्रसेन के मरनेपर बड़े तेजस्वी शूरताको दिखलाते क्रोधयुक्त कर्णने पाण्डवीसेना को भगाया और नकुलके सन्मुखगया ३२ वहां पर भीमसेन भी दुश्शासनको मारकर बड़ा क्रोधयुक्त कठोर शब्द करता अपनी रुधिरकी अंजलीको पूजकर ३३ सब लोकोंके वीरोंको सुनाकर यह वचन बोला कि हे नीच पुरुष मैं इस तेरे रुधिरको कण्ठसे पीताहूं ३४ अब तुम अत्यन्त प्रसन्नहोकर फिर कहो कि हे गौ हे गौ उससमय जो जो लोग हमको देखकर नाचतेथे वह हे गौ हे गौ इस शब्दको फिर कहें ३५ हम उनके सन्मुख नाचते हैं वह फिर कहें कि हे गौ हे गौ प्रमाणकोटीनाम स्थानमें सोना कालकूटनाम विषका भोजन काले सर्पोंसे काटना लाक्षागृहमें भस्महोना द्यूतविद्या से राज्यका हरना वनमें निवास ३६। ३७ द्रौपदीके केशोंका भयानक पकड़ना और युद्धमें बाण अस्त्र और स्थानपर अत्यन्त दुःख ३८ विराट भवनमें नवीन प्रकारके दुःख जो हमकोहुये और जो दुःख कि शकुनि दुर्योधन और कर्णके मतसेहुये ३९ उन सब कारणों

का हेतुरूप तुही है हमने इन दुःखों के सिवाय कभी सुख को नहीं पाया ४०
पुत्रसमेत धृतराष्ट्रकी दुर्बुद्धी से हमलोग सदैव दुःखीहुये हे महाराज राजाधृत-
राष्ट्र यह कहकर विजयको पाकर ४१ फिर मन्द मुसक्यान करता वेगवान् रुधिर
में भरा लालमुख और क्रोधमें भराहुआ भीमसेन अर्ज्जुन और केशवजी से
बोला कि हे वीरो युद्धमें दुश्शासन के साथ जो प्रतिज्ञाकरी थी वह यहां अब
मैं सत्य२ करके पूरीकरी इस स्थानपर यज्ञ पशुरूप दुर्य्योधन को मारकर मैं अपनी
दूसरी प्रतिज्ञाको भी पूरीकरूंगा ४२। ४३ जब कौरवों के समक्षमें इसके शिरको
काटूंगा तभी मैं शान्तीको पाऊंगा फिर वह रुधिर में डूबाहुआ अत्यन्त प्रसन्न
चित्त भीमसेन इस वचनको कहकर बड़े शब्दसे ऐसा गर्जा जैसे कि सहस्राक्ष
इन्द्र वृत्रासुर को मारकर प्रसन्नतासे गर्जाथा ४४। ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिदुश्शासनवधेचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा फिर दुश्शासन के मरनेपर क्रोधरूपी बड़े विष के
रखनेवाले युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले महापराक्रमी आपके शूरवीर दश पुत्रों ने
बाणों से भीमसेन को ढकदिया उनके नाम यहहैं निषंगी कवची, पाशी, दण्ड-
धार, धनुर्द्धर १। २ अलोलुप, सहखण्ड, वातवेग सुवर्चस भाई के दुःखसे पीड़ा-
मान इन दशों ने मिलकर ३ महाबाहु भीमसेनको रोका फिर चारोंओरसे उन
महारथियों के बाणों से रोकाहुआ ४ क्रोधअग्नि से रक्तनेत्र वह भीमसेन क्रोध
भराहुआ कालके समान शोभायमानहुआ उस समय पाण्डव भीमसेन ने सु-
नहरी पुंखवाले दशभल्लों से उन सुनहरी बाजूबन्द रखनेवाले दशों भाई भरत-
वंशियों को यमलोक में पहुँचाया उन वीरोंके मरनेपर ५। ६ भीमसेनके भयसे
पीड़ित आपकी सेना कर्णके देखतेहुये भागी हे महाराज इसके अनन्तर कर्ण ७
प्रजाओंपर पराक्रम करनेवाले काल मृत्युके समान भीमसेनके पराक्रमको देख-
कर बड़ा भयभीत हुआ उसके रूपान्तर सूरतसे वृत्तान्त के जाननेवाले युद्ध में
शोभायमान राजा शल्य ने ८ उस शत्रुविजयी कर्ण से समय के अनुसार यह
वचन कहा कि हे राधाके पुत्र पीड़ा मतकर तुझको ऐसी पीड़ा करना उचित
नहीं है ९ भीमसेन के भय से पीड़ामान होकर यह राजालोग भागते हैं और

भाईके दुःखसे पीड़ामान दुर्य्योधन अचेत होरहाहै १० बड़े साहसीसे दुश्शासन
का रुधिर पीनेपर अचेत और शोकसे घायल चित्त ११ कृपाचार्य्य आदि यह
मरनेसे बाकी बचेहुये सगे भाई चारों ओरसे दुर्य्योधन के पास बैठे नियतहैं १२
और लक्षभेदी शूरवीर पाण्डव जिनमें अग्रगामी अर्ज्जुनहै वह युद्धके लिये तेरे
सन्मुख वर्त्तमानहै १३ हे पुरुषोत्तम इससे अब तुम शूरवीरतासे नियत होकर क्षत्री
धर्म को आगे करके अर्ज्जुन के सन्मुख जावो १४ राजा दुर्य्योधनने सब युद्धका
भार तुम्हीपर नियत कियाहै हे महाबाहो उस भारको तुम अपने बल और परा-
क्रमसे उठावो १५ विजय करनेमें तो अतुल्य कीर्त्ति होगी और पराजयमें निश्चय
स्वर्ग है हे राधाके पुत्र अत्यन्त क्रोधयुक्त तेरा पुत्र १६ तेरे मोहित होनेपर पांडवों
के सन्मुख दौड़ताहै बड़े तेजस्वी शल्य के इस वचनको सुनकर १७ कर्णने युद्ध
करनेका दृढ़ विचार अपने हृदयमें नियत किया उसके पीछे क्रोधयुक्त वृषसेन
उस सन्मुख वर्त्तमान भीमसेन के सन्मुख दौड़ा १८ जोकि दण्डधारी काल के
समान गदा धारण करनेवाला आपके शूरों से युद्धकर रहाथा और बड़ा भारी
नकुल पृषत्कोंसे शत्रुओंको पीड़ामान करता दौड़ा १९ युद्धमें प्रसन्नचित्त उस
कर्ण के पुत्र वृषसेनके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि पूर्व्वसमय में जम्भ के मारनेकी
इच्छा से इन्द्र उसके सन्मुख गयाथा वहां पहुँचकर वीर नकुलने क्षुरप्रसे उसकी
उस ध्वजाको काटा जोकि श्वेतरंगके अपूर्व्व कवचवालीथी २० और सुनहरी
चित्रोंसे चित्रित अत्यन्त अद्भुत वृषसेनके धनुषको काटा तब तो कर्णके पुत्र ने
शीघ्रही दूसरे धनुषको लेकर नकुलको छेदा २१ दुश्शासन का बदला लेने के
अभिलाषी कर्णके पुत्र वृषसेनने दिव्य महा अस्त्रोंसे नकुलको घायल किया उस
के पीछे क्रोधयुक्त महात्मा नकुलने बड़ी उल्काके समान बाणोंसे उसको छेदा २२
फिर अस्त्रज्ञ कर्णका पुत्र दिव्य अस्त्रों से नकुलपर वर्षा करनेलगा हे राजा वह
कर्णका पुत्र बाणोंके प्रहार वा क्रोध वा अपने तेज अथवा अस्त्रोंके चलानेसे ऐसा
अत्यन्त क्रोधरूप हुआ जैसे कि घृतकी आहुतियों से बढ़ीहुई अग्निहोती है हे
राजा कर्ण के पुत्रने अपने उत्तम अस्त्रोंसे नकुलके उन सब घोड़ोंकोमारा २३।२४
जो कि श्वेतरूप बड़े ऊंचे सुनहरी जालों से अलंकृत वनायुज नाम प्रकार के
थे उसके पीछे मृतक घोड़ेवाले रथसे उतरकर सुवर्णमयी चन्द्रमावाली निर्म्मल
ढालको लेकर २५ आकाशरूप खड्गको पकड़कर चलायमान पक्षीके समान

घूमा उस समय अपूर्व्व युद्ध करनेवाले नकुलने शीघ्रतासे अन्तरिक्षमें रथ घोड़े और हाथियों को मारा २६ खड्गसे कटकर वह सब पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि अश्वमेध यज्ञ में मारनेवाले के हाथसे यज्ञपशु गिरपड़ताहै नानादेशों में उत्पन्न होनेवाले अच्छी जीविका पानेवाले सत्यसंकल्पी दोहज़ार शूरवीर गिर पड़े २७ युद्ध में विजयाभिलाषी चन्दनसे युक्तशरीर उत्तम शूरवीरलोग अकेले नकुलके हाथसे मारेगये फिर उसने सन्मुख जाकर उस आतेहुये नकुलको शायकों के द्वारा चारोंओरसे घायलकिया २८ पृषत्कों से पीड़ामान उस नकुलने भी उस वीर को व्यथितकिया फिर वहभी व्यथित होकर महा क्रोधयुक्तहुआ बड़े भारी घोरभयमेंभी भाई भीमसेन से रक्षित नकुलने यहांभयको नहींकिया २६ फिर क्रोधयुक्त कर्णके पुत्रने बहुतसे मनुष्य घोड़े हाथी और रथों के मर्द्दन करने वाले पीड़ामान अकेले वीर नकुलको अठारह पृषत्कोंसे पीड़ामानकिया ३० हे राजा उस महायुद्धमें वृषसेनसे महाघायल वह बड़ावेगवान् नरवीर नकुल कर्ण के पुत्रको मारनेको युद्धमें दौड़ा ३१ जैसे कि मांसका चाहनेवाला पक्षोंको फैलाकर आनेवाले बाज पक्षी को घायलकरताहै उसीप्रकार उसक्रोधयुक्त बड़ेपराक्रमी आनेवाले नकुल को अपने तीक्ष्णबाणों से वृषसेनने ढकदिया ३२ वह नकुल उसके बाणों को निष्फल करताहुआ अपूर्व्व रूपके मार्गों में घूमा हे महाराज इसके पीछे कर्णके पुत्रने खड्गसमेत उस घूमनेवाले नकुलकी उसहजारों नक्षत्रों से चित्रित अपने बड़े बाणों से टुकड़े २ करके उस खड्गको भी काटा जो कि लोहे से निर्मित तीक्ष्णधारवाला मियानसे जुदा महाभयानक बड़ेभार का सहनेवाला ३३ । ३४ शत्रुओं के शरीरों का नाशकरनेवाला महाघोर सर्प के समान उग्ररूपथा उसको उस कर्णके पुत्रने तीक्ष्णधारवाले उत्तम छः बाणों से शीघ्रही काटडाला और नकुलको छातीपर बड़ेतीव्र पृषत्कोंसे छेदा हे राजा युद्धमें अन्यमनुष्यसे कठिनतासे करनेके योग्य श्रेष्ठ मनुष्यों से सेवितकर्म को करके फिर बाणों से दुःखित महात्मा ३५ । ३६ शीघ्रताकरनेवाला नकुल भीमसेनके रथके पासगया वह मृतकघोड़ेवाला कर्ण पुत्रके बाणों से व्यथित माद्रीनन्दन नकुल अर्जुनके देखते भीमसेनके रथपर ऐसेगया जैसे कि सिंह पर्व्वत की नोकपर चढ़जाताहै उसके पीछे बड़ासाहसी क्रोधयुक्त वृषसेन अपने बाणों को दोनों के ऊपर बरसानेलगा ३७ । ३८ तब एकरथपर मिलेहुये दोनों महारथी

पाण्डवों ने उसको भी बाणों से छेदा फिर शीघ्रही विशिखों से रथ और खड्गके खण्डित होनेपर ३६ बड़े वीर मिलेहुये कौरवोंने सन्मुख आकर पूजीहुई अग्नि के समान उन दोनों पाण्डवों को चारोंओरसे बाणों के द्वारा घायलकिया फिर क्रोधयुक्त भीमसेन और अर्जुनने बड़े घोर बाणोंकी वर्षा वृषसेनपर करी इसके अनन्तर भीमसेन अर्जुनसे बोले कि इस पीड़ामान नकुलकोदेखो ४०।४१ और यह कर्णका पुत्र हमको पीड़ा देताहै इससे अवतुम उस कर्णके पुत्रके सन्मुख जावो इसवचनको सुनकर वह अर्ज्जुन भीमसेनके रथकोपाकर नियतहुआ४२ इसकेपीछे नकुल उस वीरको देखकर बोला कि शीघ्रही इस सन्मुख आनेवाले को मारो इसप्रकार भाईके वचनको सुनकर अर्जुन ४३ कपिध्वजवाले केशव जी को सारथी रखनेवाले अपने रथको वृषसेनके घोड़ोंके समीपलाया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनयुद्धेनकुलपराजयोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

इसके पीछे नकुलको टूटा धनुष खड्ग वाला रथसेरहित शत्रुओं के बाणोंसे घायल कर्णके पुत्रके अस्त्र से पराजित जानकर वह वीर जिनकी पताका वायु से कंपित और घोड़े शब्दों को करते अच्छे शीघ्रगामीथे अपने सेनापति की आज्ञासे रथोंकी सवारीसे शीघ्रचले आये १ अर्थात् उनके नाम वरिष्ठद्रुपदके पांचोपुत्र जिनमें छठा सात्यकी है और पांचों द्रौपदीके पुत्र यह सब शस्त्रधारी सर्पराज के समान बाणों से आपके हाथी रथ मनुष्य और घोड़ोंको मारते चढ़ आये २ इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले कृपाचार्य्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा और दुर्य्योधन यह सब आपके उत्तम रथी उनके सन्मुख गये ३ हे राजा शकुनि, सुतवृष, क्राथ, देवावृद्ध यह आपके वीर रथी हाथी और बादलके समान शब्दायमान रथ और धनुषों समेत उन ग्यारह वीरों के रोकनेवाले हुये अत्यन्त उत्तम बाणों से घायल करते ४ कलिन्ददेशी बादल और पर्व्वतके शिखरों के समान भयानक वेगवाले हाथियों समेत उनके सन्मुख गये और अच्छे प्रकारसे अलंकृत मदसे मतवाले युद्धाभिलाषी कर्मकर्त्ता पुरुषों से युक्त ५ सुनहरी जालों से अलंकृत हाथी ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि आकाश में बिजली रखनेवाले बादल होतेहैं वहां कलिन्दके पुत्रने दशलोहे के बाणों से कृपाचार्य्यको सारथी

और घोड़ों समेत अत्यन्त घायल किया ६ इसके पीछे कृपाचार्य्य के बाणों से वह माराहुआ कलिन्दका पुत्र हाथी समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा तब उसका छोटा भाई सूर्य्यकी किरणके समान प्रकाशित लोहेके तोमरोंसे ७ रथको कंपायमान करके गर्जा इसके पीछे राजा गान्धार ने इस गर्जनेवाले के शिरको काटा तदनन्तर उन कलिंग देशियों के मरने पर अत्यन्त प्रसन्न रूप आपके उन महारथियों ने ८ शंखोंको बड़ी ध्वनियों से बजाया और धनुषको हाथमें रखनेवाले होके शत्रुओं के सन्मुखगये इसके पीछे सृञ्जियों समेत पाण्डव और कौरवों का महाघोर भयकारी वह युद्ध फिर हुआ ६ जोकि बाण खड्ग शक्ति दुधारे खड्ग गदा और फरसों से मनुष्य हाथी और घोड़ों के प्राणोंका हरनेवाला था इसके अनन्तर हजारों रथ घोड़े और हाथी पदातियोंसे परस्पर में घायल होकर पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े १० जैसे कि बिजली और गर्जना रखनेवाले धुवेंसेयुक्त बादल दिशाओं से गिरे उसके पीछे सैकड़ों सेना रखनेवाले हाथी रथी और पतियोंके समूहों को ११ और घोड़ोंको भोजवंशी कृतवर्मा ने मारा वह सब उसके बाणों से मृतक होकर एक क्षणमेंही गिरपड़े उसके पीछे अश्वत्थामा के बाणसे सब शस्त्र और ध्वजाओं समेत घायल शूरवीर १२ और निर्जीव अन्य बड़े २ हाथी ऐसे पृथ्वी पर गिरपड़े जैसे कि वज्रसे ताड़ित बड़े २ पर्व्वत गिरते हैं १३ राजा कलिन्द के छोटे भाईने उत्तम बाणों से आपके पुत्रको छातीपर घायल किया फिर आपके पुत्रोंनेभी अपने तीक्ष्ण बाणोंसे उसके शरीरसमेत हाथीको मारा १४ तब वह गजराज उस राजकुमार समेत सब ओरको रुधिर को गेरता ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बादलों के आनेमें इन्द्रके वज्रसे टूटा धातुवान पर्व्वत जलको गिराता गिरपड़े १५ फिर कलिन्द के पुत्रके भेजेहुये दूसरे हाथीने किरात को सारथी घोड़े और रथके समेत मारा तदनन्तर बाणोंसे घायल हाथी अपने स्वामी समेत ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रका माराहुआ पर्व्वत होताहै १६ वह रथमें सवार कठिनतासे विजय होनेवाला राजा किरात हाथी सारथी धनुष और ध्वजा समेत उस हाथीपर सवार पर्व्वतीके बाणोंसे घायल ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ी वायुसे ताड़ित और कम्पित होकर बड़ा वृक्षहोताहै १७ वृकने गिरिराजके रहने वाले हाथी के सवार को बारह बाणों से अत्यन्त घायलकिया उसके पीछे उस बड़े हाथी ने बड़ी शीघ्रतासे चारों पैरों से घोड़े और रथ समेत वृकको मारा १८

फिर उस बभ्रु के पुत्रके बाणों से कठिन घायल वह गजभी अपने हाथी सवार समेत गिरपड़ा सहदेवके पुत्रके हाथसे घायल और पीड़ामान वह देववृद्ध का पुत्रभी गिरपड़ा १६ उत्तम युद्धकर्त्ताओं के ऊपर गिरनेवाले हाथीकी सवारी से राजा कलिन्दका विषाणगात्र नाम पुत्रभी बड़े वेगसे शकुनि को बहुत कठिन पीड़ित करताहुआ उसके मारने को गया उसके पीछे गांधारके राजा शकुनी ने उसके शिरको काटा २० उससमय उन कलिन्द देशियों के मरनेपर अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति आपके अन्य महारथियों ने शंखों को अच्छीरीति से बजाया और धनुष हाथों में लिये शत्रुओं के सन्मुख गये २१ इसके पीछे कौरवों का युद्ध पाण्डव और सृञ्जियों के साथ ऐसा हुआ जो अत्यन्त भयकारी बाण खड्ग शक्ति दुधारे खड्ग गदा और फरसों से रथ हाथी और घोड़ों के प्राणों का हरने वाला घोर रूप था २२ फिर परस्पर में घायल रथ घोड़े हाथी और पदाती पृथ्वी पर ऐसे गिरपड़े जैसे कि प्रचण्ड वायु से ताड़ित बिजली और गर्जना रखने वाले बादल दिशाओं से गिरते हैं २३ इसके पीछे आपके बड़े हाथी घोड़े रथ और पतियों के समूह शतानीक के हाथ से मारेगये और अचेततासे चूर्णचूर्ण होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े जैसे कि गरुड़जी के पंखों की वायु से घायल सर्प्प गिरते हैं २४ उसके पीछे मन्दमुसकान करतेहुये कलिन्दके पुत्रने बड़े तीक्ष्ण बाणों से नकुल के बेटों को छेदा फिर नकुल के पुत्रने भी क्षुरप्र से कमलरूपी मुख रखनेवाले उसके शिरको शरीरसे काटा २५ तब कर्ण के पुत्रने तीन लोहे के बाणोंसे शतानीक को और तीनबाणों से अर्जुन को तीनसे भीमसेन को सात से नकुल को और बारहसे श्रीकृष्णजी को घायलकिया २६ तदनन्तर प्रसन्न चित्त कौरवों ने बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले कर्ण के पुत्रके उस कर्म को देखकर बड़ी प्रशंसाकरी परन्तु जो अर्जुनके पराक्रम के जाननेवाले थे उन्होंने यहमाना कि अब यह अग्निमें होमागया २७ इसके पीछे नरों में बड़ा शूरवीर शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला अर्जुन माद्री के पुत्र नकुल को मृतक घोड़ेवाला देखकर और लोक में श्रीकृष्णजी को अत्यन्त घायल विचारकर २८ युद्धमें वृषसेन के सन्मुख दौड़ा तब कर्ण का पुत्र उस आनेवाले नरवीर गुरुरूप महा युद्ध में हज़ारों बाणधारण करनेवाले महारथी अर्जुन के सन्मुख ऐसेगया जैसे कि पूर्व्व समयमें नमुचि महाइन्द्र के सन्मुख गयाथा उसके पीछे कर्ण का पुत्र शीघ्रता

पूर्व्वक बड़ेतीव्र और स्वच्छ बाणोंसे अर्जुन को छेदकर युद्ध में ऐसे महाशब्द से गर्जा जैसे कि वह महानुभाव वीर नमुचि इन्द्रको छेदकर गर्जाथा फिर उस वृषसेन ने उग्रबाणों से अर्जुन की वाम भुजा की जड़ में छेदा २९ । ३० । ३१ और इसीप्रकार नौबाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ामान किया इसके पीछे फिर भी अर्जुन को दशबाणों से घायल किया जैसे कि वृषसेन के पहले बाणों से अर्जुन घायलहुआ ३२ और कुछ क्रोधयुक्त हुआ फिर दूसरी बारके बाणों से उसके मारने का मनमें विचार किया फिर अर्जुन ने युद्धमुखपर अपने क्रोधसे ललाटपर भृकुटी को तीनरेखावाली करके ३३ शीघ्रही विशिखों को छोड़ा तब युद्धमें कर्ण के पुत्रके मारने में चित्तको प्रवृत्त करके बड़ासाहसी नेत्रों के कोणों को लाल करके अर्ज्जुन बहुत हँसकर कर्ण दुर्य्योधन और अश्वत्थामा आदि शूरवीरों से बोला ३४ हे कर्ण अब मैं तेरे देखतेहुये तीक्ष्णधारवाले पृषत्कों से इस उग्ररूप वृषसेन को परलोकमें पहुँचाताहूं ३५ निश्चय करके तबतक मनुष्य कहैंगे जो मुझसे पृथक् अकेला यह मेरा रथी वेगवान् पुत्र आप सबके हाथसे मारागया इसी से मैं आप सब लोगों के समक्षमें इसको मारूंगा ३६ रथों में सवार तुम सब मिलकर इसकी अच्छी रीतिसे रक्षाकरो यह उग्ररूप आपका वृषसेन पुत्रहै इसको मैं मारूंगा इसके पीछे इसी युद्धभूमिमें जो मेरा नाम अर्जुन जो तुझ महा अज्ञानी को भी इसीप्रकार से न मारूं ३७ अब मैं युद्धमें तुझ उपद्रव के मूल दुर्य्योधन की आश्रयता से अहंकारी होनेवाले को बड़ी हठता से मारूंगा और इसनीच दुर्य्योधन का मारनेवाला भीमसेनहै ३८ जिसके कि अन्यायसे यह बड़ाभारी वीरों का नाशहुआ ऐसा कहकर उसने अपने धनुष को तैयार करके और युद्धभूमिमें वृषसेन को लक्षबनाकर ३९ उस बड़े साहसीने कर्ण के पुत्रके मारने के लिये विशिखनाम बाणों को छोड़ा हे राजा हँसतेहुये अर्जुन ने दश पृषत्कों से वृषसेन को मर्म्मस्थलों में वेधा ४० और क्षुरप्रनाम तीक्ष्ण चार बाणों से धनुष समेत उसकी दोनों भुजाओं समेत शिरको काटा अर्जुन के बाणों से घायल और बेशिर होकर वह कर्ण का पुत्र रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा ४१ जैसे कि बहुत लम्बा और फूलाहुआ शालका वृक्ष वायुके वेगसे पर्व्वत के शिखरसे गिरपड़े फिर शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने बाणों से मरे हुये रथसे गिरतेहुये पुत्रको देखकर ४२ शीघ्रही पुत्रके मारने से अर्जुनपर क्रो-

धयुक्त होकर अपने रथको उसके सन्मुख किया अर्थात् युद्ध में अपने नेत्रों के सन्मुख पुत्रको मराहुआ देखकर ४३ वह महासाहसी अत्यन्त क्रोध में मूर्च्छित होकर अकस्मात् श्रीकृष्ण और अर्जुन के सन्मुख दौड़ा ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिवृषसेनवधोनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि मर्य्यादाके उल्लंघन करनेवाले समुद्र के समान डीलडौल युक्त उस गर्जनेवाले आयेहुये कर्णको देखकर १ पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी हँसकर अर्जुनसे बोले कि यह श्वेत घोड़ेवाला शल्यको सारथी बनानेवाला अधिरथी आताहै २ इसकेसाथ तुमको लड़ना चाहिये हे अर्जुन अब दृढ़ होकर नियतहो हे पाण्डव इसरथको देखो जोकि अच्छे प्रकारसे बनाहुआ ३ श्वेत घोड़ों से युक्त राधाके बेटे की सवारी से शोभित नानाप्रकार की ध्वजा पताका और क्षुद्र घण्टिकाओं के जालोंका रखनेवाला ४ और श्वेत घोड़ेरूप आकाशमें चलने वाला चित्रविचित्ररूप आकाशके विमानके समानहै और महात्मा कर्णके नाग की कक्षाका चिह्न रखनेवाली ध्वजाको देखो ५ और इन्द्र धनुष के समान धनुष से मानो आकाशमें लिखनेवाले दुर्य्योधनका अभीष्ट चाहनेवाले बाणोंकी वर्षा से युक्त आतेहुये कर्ण को ऐसे देखो जैसे कि जलकी धाराओं के छोड़नेवाले बादलको देखते हैं रथके आगे नियत यह मद्रदेशकाराजा ६ । ७ उस बड़े तेजस्वी कर्ण के घोड़ों को हांकताहै दुंदुभियों और शंखों के भयानक शब्द ८ और नानाप्रकार के सिंहनादों का सबओरसे सुनो हे पाण्डव बड़े तेजस्वी कर्ण के द्वारा बड़े २ शब्दों को गुप्तकरके ९ कठोर कंपायमान धनुष के शब्दको सुनो यह पांचालों के महारथी अपने सेना समूहों समेत छिन्नभिन्न होकर ऐसे पृथक् होते हैं जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त केशरी सिंहको देखकर छिन्नभिन्न होकर मृग पृथक् होते हैं हे अर्जुन तुम सब उपायों से कर्ण के मारने के योग्यहो १० । ११ तुम्हारे सिवाय दूसरा मनुष्य कर्ण के बाण सहनेकी सामर्थ्य नहीं रखताहै देवता असुरगंधर्व और जड़ चैतन्य जीवों समेत तीनोंलोक के १२ विजय करने को तुम्हीं समर्थहो यह मैं निश्चय जानताहूं कि उस भीम उग्ररूप महात्मा त्रिनेत्र धारी कपर्दी प्रभु शिवजी के १३ देखने को भी कोई समर्थ नहीं होसक्ता है फिर

युद्ध करनेकी किसको सामर्थ्य होसक्ती है तुमने सब जीवमात्रके कल्याण रूप साक्षात् महादेवजीकी युद्धकेही द्वारा आराधनाकरी १४ और देवता भी तुझ को वर देनेवाले हैं हे महाबाहो अर्ज्जुन उस देवताओं के भी देवता शूलधारी शिवजीकी कृपासे १५ तुम कर्ण को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको मारा था हे अर्जुन सदैव तेरा कल्याण होय तू युद्धमें विजयको पावेगा १६ अर्जुन ने कहा हे कृष्णजी जो सब लोकके गुरु और स्वामी आप मेरेऊपर प्रसन्नहैं तो निश्चय करके मेरी अवश्य विजयहै इसमें किसीप्रकार का सन्देह नहीं है १७ हे महारथी श्रीकृष्णजी मेरे रथ और घोड़ों को चलायमान करो अब अर्ज्जुन कर्ण को बिना मारेहुये युद्धसे नहीं लौटेगा १८ हे गोविन्दजी अब मेरे बाणों से कर्ण को मृतक और खंड २ देखोगे अथवा कर्ण के बाणों से मुझको मृतक और खंड खंड देखोगे १९ यह तीनोंलोकों का मोहनेवाला घोर युद्ध अब वर्त्त-मानहुआ जिसको पृथ्वी जबतक रहैगी तबतक मनुष्य वर्णनकरेंगे २० तब सु-गमकर्मी श्रीकृष्णजी से ऐसा कहताहुआ अर्ज्जुन रथकी सवारी के द्वारा ऐसी शीघ्रतासे सन्मुखगया जैसे कि हाथी हाथी के सन्मुख जाताहै २१ तेजस्वी अ-र्ज्जुन फिर भी शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी से बोला कि हे हृषीकेशजी आप शीघ्र घोड़ों को तीव्रकरो यह समय व्यतीत हुआ जाताहै २२ उस महात्मा अर्ज्जुन के इसवचनके कहतेही श्रीकृष्णजी ने उसको विजयका आशीर्वाद देकर चित्त के समान शीघ्रगामी घोड़ों को तीक्ष्ण किया २३ चित्त के समान शीघ्रगामी वह अर्जुनका रथ क्षणमात्रमेंही कर्ण के रथसे आगे होगया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधायअर्जुनप्रस्थानेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वृषसेनको मृतक देखकर शोक संतापसे युक्त कर्ण ने पुत्रके शोकसे उत्पन्न होनेवाले जलको नेत्रों से छोड़ा १ फिर क्रोधसे रक्तनेत्र तेजस्वी कर्ण युद्धके निमित्त अर्जुन को बुलाता रथकी सवारी के द्वारा शत्रु के सन्मुख गया २ सूर्य्य के समान प्रकाशमान व्याघ्रचर्मसे मढ़ेहुये वह दोनों और दोनोंके रथ मिलेहुये ऐसे दिखाईदिये जैसे कि आकाशमें वर्त्तमान दो सूर्य्य होयँ ३ वह शत्रुओं के मर्द्दन करनेवाले दिव्यपुरुष श्वेत घोड़ेवाले दोनों महात्मा युद्धभूमि

में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग में चन्द्रमा और सूर्य्य शोभा देते हैं ४ हे श्रेष्ठ तीनोंलोक के विजय करने में उपाय करनेवाले इन्द्र और वैरोचन असुरके समान उनदोनोंको देखकर सबसेनाके मनुष्यों को बड़ा आश्चर्य साहुआ ५ रथ कवच प्रत्यंचा और बाणों के शब्द और इसी प्रकार सिंहनादों समेत सन्मुख दौड़नेवाले उन रथियों को देखकर ६ और मिलीहुई ध्वजाओंको भी देखकर राजाओं को आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ गजकी कक्षाके चिह्न वाली कर्णकी ध्वजा और हनुमान्‌जी के रूपकी धारण करनेवाली अर्जुन की ध्वजा थी ७ हे भरतवंशी फिर सब राजाओं ने उन मिलेहुये रथियों को देखकर सिंहनाद पूर्व्वक बड़ी प्रशंसाकरी ८ वहांपर हजारों शूरवीरों ने उन दोनों के साथ में द्वैरथ युद्धको देखकर भुजाके शब्द अर्थात् खम्भोंको फटकार कर दुपट्टों को घुमाया ९ और कर्णके प्रसन्न करने को कौरव लोगों ने चारोंओर से बाजों को बजाकर सबने शंखों को बजाया १० इसी प्रकार अर्ज्जुन की प्रसन्नता के लिये सब पाण्डवों ने तूरी और शङ्ख के शब्दों से सब दिशाओं को शब्दायमान किया ११ सिंहनाद तालोंका ठोकना शूरोंका पुकारना और शूरोंकी भुजाओंके महाकठोर शब्द अर्जुन और कर्णकी सन्मुखता में सब ओरको हुये १२ हे राजा उन रथपर नियत रथियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी बाण शक्ति ध्वजा से युक्त १३ कवच खड्गधारी श्वेत घोड़ों समेत मुखोंसे शोभायमान उत्तम तूणीर बांधे सुन्दर दर्शन १४ लालचन्दन से अलंकृत सुन्दर शरीर उत्तम मतवाले बैलों के समान धनुष और ध्वजारूपी बिजुली से युक्त घनरूपी शस्त्रोंसे युद्धकरनेवाले १५ चमर और व्यजनों से युक्त श्वेत छत्रोंसे शोभित श्रीकृष्ण और शल्यको सारथी रखनेवाले एकसे रूप महारथी १६ सिंहके समान स्कन्ध लम्बी भुजा रक्तनेत्र सुवर्ण की मालाओं से भूषित सिंहके समान शरीर बड़ेहृदय और पराक्रमवालेपरस्पर एक दूसरे का मरण चाहनेवाला दोनों परस्पर विजयाभिलाषी, गोशाला में उत्तमबली बर्धों के तुल्य परस्पर सन्मुख दौड़नेवाले मतवाले हाथियों के और पर्व्वतों के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त १७।१८ विषैले सर्प के बच्चोंके समान यमराज काल और मृत्युके समान इन्द्रवज्रके समान क्रोधी सूर्य्य चन्द्रमाके समान तेजस्वी १९ प्रलयकालके लिये उठेहुये महाग्रहोंके समान क्रोधमेंभरे देवकुमार देवताके समान पराक्रमी रूपमें भी देवरूप दैवकी इच्छासे सूर्य्य चन्द्रमाके स-

मान सन्मुख आनेवाले पराक्रमी युद्ध में अभिमानी लड़ने में नानाप्रकार के शस्त्रोंके रखनेवाले २० । २१ शार्दूलों के समान नियत उनदोनों पुरुषोत्तमों को देखकर आपके शूरवीरों को बड़ा आनन्दहुआ २२ भिड़े हुये पुरुषोत्तम कर्ण और अर्जुनको देखकर पूरी विजय में सब जीवोंको सन्देह वर्त्तमान हुआ २३ दोनों उत्तम शस्त्रधारी और युद्धमें परिश्रम करनेवालों ने भुजाओं के शब्दोंसे आकाश मण्डलको शब्दायमान किया २४ दोनों वीरता और पराक्रमसे प्रसिद्धकर्मी और समरमें देवराज और सम्बरके समान थे २५ फिर दोनों सहस्राबाहु के समान वा श्रीरामचन्द्रजीके तुल्य पराक्रमी और उसीप्रकार युद्धमें शिवजी के समान पराक्रमी थे २६ हे राजा दोनों श्वेत घोड़ेवाले उत्तम रथोंकी सवारी रखनेवाले थे और उस बड़े युद्धमें दोनोंके श्रेष्ठतर सारथी थे २७ हे महाराजइस के अनन्तर उन शोभायमान महारथियों को देखकर सिद्ध चारण लोगों के समूहों को भी आश्चर्य्य उत्पन्न हुआ २८ हे भरतर्षभ इसके पीछे सेना समेत आपके पुत्रोंने युद्धको शोभा देनेवाले महात्मा कर्णको शीघ्रही चारों ओरसे घेरकर रक्षित किया २९ इसी प्रकार प्रसन्न रूप पाण्डवोंने भी जिनके अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा उस युद्धमें अनुपम महात्मा अर्ज्जुन को चारोंओर से रक्षित किया ३० हे राजा तब युद्ध में आपके पुत्रोंका रक्षक कर्ण हुआ और पाण्डवों का रक्षक अर्ज्जुन हुआ ३१ वहांपर वही सब वर्त्तमान शूर सभासद हुये और वही देखनेवाले हुये वहां इनरक्षा करनेवालों की विजय और पराजय निश्चय हुई युद्धके अग्रभाग में वर्त्तमान पाण्डव और हमलोगों का विजय और पराजयवाला द्यूत उन दोनों शूरवीरों के द्वारा जारी हुआ ३२ । ३३ हे महाराज वह युद्धभूमि में युद्ध में प्रशंसनीय परस्पर क्रोधभरे परस्पर के मारनेकी इच्छा से नियतहुये ३४ हे प्रभु वह दोनों क्रोधरूप इन्द्र और वृत्रासुर के समान प्रहार करने के उत्सुक हुये और बड़े धूम्रकेतु उपग्रहों के समान भयानक रूपधारी हुये ३५ हे भरतर्षभ इसके पीछे कर्ण और अर्ज्जुन के विषय में अन्तरिक्ष में जीवों के परस्पर में निन्दा स्तुतिकरने के शास्त्रार्थरूप वादहुये ३६ पिशाच सर्प और राक्षस दोनों ओरको परस्परमें सुनेगये ३७ उनसबों ने कर्ण और अर्जुन केपक्षपातोंमें चित्तको प्रवृत्तकिया स्वर्ग उसकर्णकी ओरके पक्षमें नियतहुआ ३८ और पृथ्वी माताके समान अर्जुनकी विजय चाहनेवालीहुई इसीप्रकार पर्व्वत

समुद्र नदीभी जलों समेत अर्जुनके पक्षपातीहुये वृक्ष और औषधियांभी अर्जुन केही पक्षमेंहुये यहसब परस्पर दोनों ओरों को सुनेगये हे शत्रुसंतापी धृतराष्ट्र असुर, यातुधान और गुह्यक ३९। ४० इन स्वरूपवानों ने चारोंओरसे कर्णको प्राप्तकिया मुनि, चारण, सिद्ध, गरुड़, पक्षी ४१ रत्न सब खाने, चारों वेद जिनमें पांचवां इतिहासहै उपवेद, उपनिषद, रहस्य और संग्रहसमेत वासुकी, चित्रसेन, तक्षक, पन्नग, सब कद्रूके पुत्र सर्प ४२। ४३ और विषैले सर्प यहसब अर्जुनकी ओरहुये ऐरावतवंशी, सुरभीवंशी, वैशाली, भोगीनाम, सर्प ४४ यहसब अर्जुन की ओरहुये और नीच सर्प कर्ण की ओरहुये ईहामृग, व्यालमृग और मंगली पशुपक्षी यहसब ४५ अर्जुनकी विजयमें प्रवृत्त चित्तहुये आठोंवसु, ग्यारहोंरुद्र, साध्यगण, मरुद्गण, विश्वेदेवा, दोनों अश्विनीकुमार ४६ अग्नि, इन्द्र, चन्द्रमा, दशोंदिशा, वायु यहसब अर्जुनकी ओरहुये और बारहसूर्य्य कर्णकीओरहुये ४७ हे महाराज तब वैश्य शूद्र सूत और जोजो कि संकर जातिवाले हैं इन सबने कर्णको सेवनकिया ४८ पीछे चलनेवाले समूहों समेत पितरों से युक्त देवता यमराज और कुबेर अर्जुनकीओरहुये ४९ ब्राह्मण क्षत्री यज्ञ दक्षिणा अर्जुनकी ओरहुये प्रेत पिशाच मांसभक्षी राक्षस आदि पशुपक्षी ५० और जलके जीव, श्वान शृगाल कर्णकी ओरहुये देवर्षि ब्रह्मर्षि और राजऋषियोंके समूह पांडवोंकी ओरहुये ५१ हे राजा और तुम्बुरु आदि गन्धर्व भी अर्जुन की ओरहुये मनुके पुत्र गन्धर्व और अप्सराओं के समूह कर्णकी ओरहुये ५२ भेड़ियेआदि पशु और पक्षियों के समूह हाथी घोड़े रथ और पति इसीप्रकार मेघ वायुपर आरूढ़ ऋषिलोग ५३ कर्ण और अर्जुनके युद्धके देखनेकी इच्छासे आये देवता दानव गन्धर्व नाग यक्ष गरुड़ आदि ५४ और वेदज्ञ महर्षी लोग स्वधाके भोजन करनेवाले पितर और अनेक प्रकारके रूप पराक्रमों से युक्त तप विद्या औषधी ५५ हे महाराज यह सब शब्दों को करतेहुये आकाश में नियतहुये ब्रह्मर्षि और प्रजापतियोंसमेत ब्रह्माजी ५६ और विमानपर विराजमान शिवजी उस दिव्य देशको आये तब उन भिड़ेहुये महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर ५७ इन्द्र देवता बोले कि अर्जुन कर्णको मारकर विजयकरो और सूर्य्य देवताने कहा कि कर्ण अर्जुनको विजयकरो ५८ मेरा पुत्र कर्ण युद्धमें अर्जुनको मारकर विजयकरे और इन्द्रने कहा कि मेरा पुत्र अर्जुन कर्ण को मारकर विजय

करे ५९ वहां देवताओं में श्रेष्ठ पक्षपातमें युक्त इनदोनों सूर्य्य और इन्द्रका परस्पर वादहुआ ६० हे भरतवंशी देवता और असुरोंके दो पक्ष हुये भिड़हुये उन दोनों महात्मा कर्ण और अर्जुनको देखकर देवता सिद्ध चारण आदिक समेत तीनोंलोक कंपायमानहुये ६१ सब देवताओं के गण और जीवमात्र जितने हैं उनमें देवता अर्जुनकी ओरहुये और असुर कर्ण की ओर हुये ६२ देवताओंने कौरव और पाण्डवों के वीर महारथियों के दोनों पक्षों को देखकर स्वयंभू ब्रह्मा जी से कहा कि हे ब्रह्माजी महाराज इन कौरव और पाण्डवों के दोनों युद्ध कर्त्ताओंमें किसकी विजय होगी हे देव इनदोनों नरोत्तमों की बारंबार विजय होय ६३।६४ हे प्रभू ब्रह्माजी कर्ण और अर्जुनके विवाद युद्ध से सबजगत् संदेह युक्तहै इनदोनोंकी विजयको सत्यसत्य हमसे कहिये हे ब्रह्माजी आप इसीवचन को कहिये जिस में इनदोनों की विजय समानहो इनवचनों को सुनकर पितामहजीको प्रणामकरके ६५।६६ बड़े ज्ञानी इन्द्रने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को यह जतलाया कि प्रथम आप भगवान् ने श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पूर्ण विजय वर्णन करी वह जैसा आपने कहाहै वैसेही होय मैं आपको नमस्कार करताहूं आप मुझपर प्रसन्न हूजिये इसके पीछे ब्रह्माजी और शिवजी इन्द्र से यह वचन बोले ६७। ६८ कि इस महात्मा अर्जुनकीही निश्चय विजय होगी जिस अर्जुन ने कि खाण्डव वनमें अग्निको प्रसन्न किया और हे इन्द्र उसने स्वर्ग में आकर तेरी सहायताकरी और कर्ण दानवों के पक्ष में है इस हेतुसे वह पराजय होनेके योग्यहै ६९।७० ऐसा करने से देवताओं का कार्य्य निश्चय होताहै हे देवराज सबका निजकार्य्य बड़ाहै ७१ महात्मा अर्जुन भी सदैव सच्चे धर्म्म में प्रीति रखनेवालाहै इसी की अवश्य विजयहोगी इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहींहै ७२ और जिसने भगवान् महात्मा शिवजी को प्रसन्न किया हे इन्द्र उसकी विजय कैसे न होगी अर्थात् अवश्य होगी ७३ जगत् के प्रभु विष्णु भगवान् ने जिसकी आप रथवानी करी और जो साहसी पराक्रमी अस्त्रज्ञ तपोधन ७४ बड़ा तेजस्वी सब गुणोंसे युक्त अर्जुन सम्पूर्ण धनुर्वेद को धारण करताहै इसीसे यह देवताओं का कामहोगा ७५ पांडव सदैवसे वनवास आदि से दुःखपातेहैं तपसे युक्त वह योग्य पुरुष अर्जुन ७६ अपनी प्रतिष्ठा से वांछित मनोरथों की अमर्य्यादाओं को उल्लंघन करे उसके उल्लंघन करने पर

लोकोंका अवश्य नाश होजाय ७७ क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और अर्जुनकी पराजय कहीं नहीं वर्त्तमानहै यह दोनों पुरुषोत्तम सदैव से संसार के स्वामीहैं अर्थात् इन दोनों परमात्मा और आत्माके तेजसे सब जगत् प्रकट होताहै ७८ यह दोनों नरनारायण पुराण पुरुष ऋषियों में श्रेष्ठ अजय सबके ऊपर मुख्यहैं इसी हेतु से यह दोनों शत्रुओं के संतप्त करनेवाले हैं ७९ स्वर्ग मर्त्य पाताल इन तीनों लोकोंमें इन दोनोंके समान कोई नहीं है ८० सब देवगण और जीवों के गण जितने हैं इन सब समेत सब संसार इन दोनों से मिलकर उन्हीं के प्रभावसे प्रकट होताहै ८१ यह पुरुषोत्तम कर्ण उत्तम लोकों को पावे क्योंकि यह सूर्य्यका पुत्र और बड़ा शूरवीरहै परन्तु श्रीकृष्ण और अर्जुन की विजय होय ८२ यह कर्ण वसुओं की सालोक्यता को और मरुद्गणों के स्थानों को पावे और द्रोण वा भीष्मपितामह के साथ स्वर्गलोक को पावे ८३ देवताओं के देवता ब्रह्माजी और शिवजी के इस वचनको सुनकर इन्द्रने सब जीवमात्रों को समझाकर ब्रह्माजी और शिवजी के आज्ञारूप इस वचनको कहा ८४ कि हे सब जीवमात्रो आप सब लोगों ने सुना जो जगत् के हितकारी भगवान् ब्रह्माजी और शिवजी ने कहाहै वह वैसाही होगा इसमें अन्यथा कभी न होगा तुम निस्संदेहरहो ८५ हे श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र सब जीव इन्द्रके इस वचनको सुनकर आश्चर्य्य युक्त हुये और इन्द्रका पूजन किया और देवताओं ने प्रसन्न चित्त होकर सुगन्धित पुष्पों की वर्षाकरी और नानारूपके देवताओं के बाजों को बजाया ८६। ८७ इन दोनों नरोत्तमों को अनूपम द्वैरथ युद्धके देखने की इच्छा से देवता दानव और गन्धर्व सब नियतहुये ८८ उन दोनों महात्माओं के वह दोनों दिव्य रथ श्वेतघोड़ों से युक्तथे जिनपर यह दोनों महात्मा सवारथे ८९ सन्मुखआये हुये लोकों के वीरों ने अपने २ शंखोंको पृथक् २ बजाया हे भरतवंशी फिर वासुदेवजी अर्जुन कर्ण और शल्यने भी शंखों को बजाया ९० तब परस्पर ईर्षा करनेवाले दोनों वीरों का युद्ध भयानकों का भी भयकारी ऐसा कठिन हुआ जैसे कि इन्द्र और संबर दैत्यका युद्ध हुआथा ९१ उन दोनोंकी निर्मल भुजा रथपर नियत होकर ऐसी शोभायमान हुईं जैसे कि संसारकी प्रलय होने के समय में आकाश में उदय होनेवाले राहु और केतु होते हैं ९२ विषवाले सर्पकी समान रत्नसार से जटित बड़ी दृढ़ इन्द्रधनुष के समान हाथी की कक्षा के चिह्नवाली कर्ण की ध्वजा

शोभा देरही थी ९३ और खुले मुखवाले यमराज के समान विकराल दंष्ट्रावाले हनुमान्‌जी से शोभित अर्जुनकी ध्वजा ऐसी भयकारी देखने में आतीथी जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से दुःख से देखनेके योग्य होताहै ९४ गांडीव धनुषधारी की ध्वजा में से युद्धाभिलाषी हनुमान् जी अपने स्थान से उछलकर कर्ण की ध्वजापर नियतहुये ९५ बड़ेवेगवान् हनुमान्‌जीने उछलकर कर्णके ध्वजाकी नाग-कक्षाको अपने दांत और नखोंसे ऐसे घायल किया जैसे कि सर्प को गरुड़ कर-ताहै ९६ इस के पीछे क्षुद्रघंटिका और भूषण रखनेवाली कालपाश के समान अत्यन्त क्रोधरूप वह नागकी कक्षा हनुमान् जी की ओर दौड़ी ९७ तब उन दोनों का अत्यन्त घोररूप द्वैरथ युद्ध होनेपर उन दोनों ध्वजाओं ने प्रथम वा उत्तम युद्धके ९८ परस्पर ईर्षा करनेवाले घोड़ों से घोड़ों को हिंसन किया और कमललोचन श्रीकृष्णजी ने नेत्ररूप बाणों से शल्य को छेदा ९९ इसी प्रकार शल्यने भी, श्रीकृष्णजी को देखा वहां वासुदेवजी ने नेत्ररूपी बाणों से शल्य को विजय किया १०० और कुंती के पुत्र अर्जुनने भी कर्ण को देखकर विजय किया इसके पीछे सूतपुत्र कर्ण ने शल्य से समक्ष होकर मन्दमुसकान समेत यह वचनकहा १०१ कि अब युद्ध में किसी समयपर जो कदाचित् अर्जुन मुझ को मारडाले तब हे शल्य तुम क्या करोगे यह सत्य सत्य हमसे कहो १०२ शल्यने कहा कि जो श्वेतघोड़े वाला अर्जुन तुझ को युद्ध में मारडालेगा तो मैं एकही रथके द्वारा उनदोनों श्रीकृष्ण और अर्जुनको मारूंगा १०३ संजय बोले कि इसी प्रकार अर्जुनने गोविन्दजी से कहा तब श्री कृष्ण जीने भी हँसकर उस अर्जुनसे यह सत्य २ वचनकहा १०४ कि हे अर्जुन चाहे सूर्य्य अपने स्थानसे गिरपड़े और समुद्र भी सूखजाय और अग्नि शीत-लताको पावे परन्तु कर्ण तुझको नहीं मारसक्ता है १०५ जो यह किसी प्रकार से होजाय और इन लोगोंका निवास होय तो मैं कर्ण और शल्यको युद्ध में अपनी भुजाओंसे ही मारडालूंगा १०६ श्रीकृष्ण जी के इसवचन को सुनकर हँसते हुये कपिध्वज अर्जुन ने उन सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी को यह उत्तरदिया कि १०७ हे जनार्दन जी जब आपकी मेरेऊपर ऐसी कृपाहै तो कर्ण और श-ल्य मुझको युद्धमें विजय करनेको असमर्थहैं हेश्रीकृष्ण जी अब युद्धमें मेरे हाथ के बाणोंसे पताका ध्वजा शल्य रथ घोड़े छत्र कवच शक्ति बाण और धनुष

सहित बहुत प्रकार से घायल हुये कर्णको देखोगे १०८ । १०९ अबहीं रथ घोड़े शक्ति कवच और शस्त्रों समेत ऐसे अच्छीरीति से चूर्ण होगा जैसे कि वनमें हाथी से वृक्षोंका चूर्ण होता है ११० अब कर्ण की स्त्रियों को वैधव्यता अर्थात् विधवापना प्राप्त हुआ हे माधव जी निश्चय करके उन स्त्रियों ने सोते हुये अशुभ स्वप्नोंको देखाहोगा १११ अभी आप कर्ण की स्त्रियों को विधवा देखेंगे क्योंकि वह मेरा क्रोध शान्त नहीं होताहै जो इस प्रकार से हमको हँसकर और बारम्बार हमारी निन्दा करके इस अज्ञानी अदीर्घदर्शी ने पूर्व समयमें सभा में वर्त्तमान द्रौपदीको देखकर कर्म कियाथा ११२ । ११३ हे गोविन्द जी अब मेरे हाथसे मथनकिये हुये कर्ण को ऐसे देखोगे जैसे कि मतवाले हाथी से मर्द्दन कियाहुआ पुष्पित वृक्ष होताहै हे मधुसूदन जी अब कर्ण के पछाड़ने पर उन मधुर वचनों को आप सुनेंगे कि हे श्रीकृष्ण जी आप प्रारब्धसे विजय करते हो ११४ । ११५ हे जनार्द्दन जी अब आप अत्यन्त प्रसन्न होकर अभिमन्यु की माता को और अपनी फूफी कुन्तीको विश्वास युक्तकरोगे ११६ हे माधव जी अब तुम अमृत के समान वचनोंसे अश्रुओंसे पूरित मुखवाली द्रौपदीको और धर्मराज युधिष्ठिर को विश्वास युक्त करके शान्तकरोगे ११७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकृष्णअर्जुनसम्बादेद्वैरथयुद्धेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

संजय बोले कि आकाश देवता, नाग, असुर, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व और अप्सराओंके समूहोंसे और राजऋषि ब्रह्मऋषि और गरुड़से सेवितहोकर अपूर्व शोभितहुआ १ और सब मनुष्य और पक्षियोंने नानाप्रकार के बाजे गान प्रशंसा नृत्य हास और अनेक चित्तरोचक शब्दोंसे अन्तरिक्ष को अपूर्वरूपको शब्दायमान देखा २ तदनन्तर बाजेशंख और सिंहनादों के शब्दों से पृथ्वी और दिशाओं को शब्दायमान करते अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरवी और पाण्डवी सेना के शूरवीरोंने सब शत्रुओंको मारा ३ तब युद्धभूमि मनुष्य घोड़े हाथी और रथों से व्याप्त बाण खड्ग शक्ति और दुधारे खड्गोंके प्रहारों से महाअसह्य और निर्भय शूरवीरों से सेवित वा मृतक योद्धाओंसे पूरित होकर रक्तवर्ण को धारण किये अत्यन्त शोभायमानहुई ४ इसरीति से कौरव और पाण्डवोंका ऐसा युद्धहुआ जैसे कि असुरों का और देवताओं का हुआथा इसप्रकार महा भयकारी घोर

युद्धके जारी होनेपर अर्ज्जुन और कर्ण के महातीक्ष्ण सीधे चलनेवाले अच्छे अलंकृत उत्तम शायकों से दिशाओं समेत सम्पूर्ण सेना ढकगई तदनन्तर अंधकार होजानेपर आपके और पांडवोंके युद्धकर्त्ताओं ने कुछभी नहीं देखा ५।६ रथियों में श्रेष्ठ वह दोनों कर्ण और अर्जुन भयसे दुःखी होकर सन्मुखहुये फिर सबओरसे अपूर्व्व युद्धहुआ अर्थात् पूर्वीय पश्चिमीय वायुके समान परस्पर में अस्त्रों से अस्त्रोंको हटाकर ७ ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बादलों से अंधकार होजानेपर उदय होनेवाले सूर्य्य और चन्द्रमा हटना नहीं चाहते इस नियम से प्रेरित आपके और पांडवों के शूरवीर लोग सन्मुख नियतहुये ८ वह दोनों महारथी नरोत्तम सबओरसे घेरकर मृदंग भेरी पणव और आनकनाम बाजों के और सिंहनादों के शब्दों के द्वारा ऐसे शब्दवालेहुये जैसे कि देवता असुर संबर और इन्द्रहुयेथे ९ तब वह दोनों पुरुषोत्तम बड़े धनुष मण्डलमें वर्त्तमान बड़े तेजस्वी बाणरूप हजारों किरणों के रखनेवाले होकर ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बादलों के शब्दों से चन्द्रमा और सूर्य्य होते हैं १० वह दोनों प्रलयकालके सूर्य्य के समान युद्धमें कठिनता पूर्व्वक सहने के योग्य जड़ चैतन्यों समेत संसार के भस्म करने के इच्छावान् महा अजेय शत्रुओं का नाश करनेवाले परस्पर में मारनेके अभिलाषी ११ कर्ण और अर्जुन निर्भयता पूर्व्वक उस बड़े युद्धमें ऐसे सन्मुखहुये जैसे कि महाइन्द्र और जंभ सन्मुखहुयेथे उसकेपीछे बड़े धनुषधारी भयके उत्पन्न करनेवाले बाणों के द्वारा बड़े अस्त्रोंको छोड़तेहुये १२ दोनों महारथियों ने बहुत से मनुष्य घोड़े और हाथियों समेत परस्पर में एकने दूसरे को घायलकिया हे राजन् इसकेपीछे उनदोनों नरोत्तमों से पीड़ामान कौरवीय और पांडवीय मनुष्य हाथी पति घोड़े और रथों से युक्त ऐसे दशोंदिशाओं में भागे जैसे कि सिंहसे घायलहुये वनवासी जीव भागते हैं इसके पीछे दुर्य्योधन, कृतवर्मा, शकुनि, कृपाचार्य्य और शारद्वतका पुत्र इन पांचों महारथियों ने शरीर के छेदनेवाले बाणों से अर्जुन और श्रीकृष्णजी को पीड़ितकिया तब अर्जुनने उनके धनुष, तूणीर, ध्वजा, घोड़े, रथ और सारथियों समेत १३।१४।१५ चारों ओरसे इन शत्रुओंको मथनकरके शीघ्रही उत्तम बारहबाणों से कर्णको घायल किया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले मारने के अभिलाषी लोग सन्मुख दौड़े और अर्ज्जुन के मारने के उत्सुक सौ रथ सौ हाथी १६ और अश्व सवार शक,

तुषार, यवन, कांबोजदेशियों समेत इन सबों ने हाथों में क्षुरप्र लेकर सब शस्त्रों को काटकर शिरोंको भी काटा उससमय वहां अनेक शिर पृथ्वीपर गिरपड़े १७ तब उस युद्ध करनेवाले अर्जुन ने घोड़े हाथी और रथों समेत उन शत्रुओं के समूहोंको काटा इसके पीछे अन्तरिक्ष में देवताओं ने इन दोनोंकी कीर्त्तिसमेत बाजों से स्तुति करी १८ और आकाशसे सुगन्धित पुष्पोंकी वर्षा होनेलगी तब उस आश्चर्य्य को देखकर देवता और मनुष्यों के समक्षमें सब जीवमात्र अचंभासा करनेलगे फिर उत्तम निश्चय रखनेवाले आपके पुत्र और कर्णने न पीड़ाकरी न आश्चर्य्य को पाया इसके पीछे मधुरभाषी अश्वत्थामाजी हाथसे हाथ को मलकर आपके पुत्रसे बोले १९।२० हे दुर्य्योधन अब तू प्रसन्नहोकर पांडवों से सन्धिकर लड़नात्यागो और युद्धको धिक्कार हो बड़े अस्त्रज्ञ ब्रह्माजी के समान गुरूजी और वैसेही भीष्म सरीखे प्रतापी वीर मारेगये २१ मैं और मेरा मामा चिरंजीवी हैं पाण्डवों समेत तुम बहुतकाल तक राज्यकरो मुझसे निषेध कियाहुआ अर्जुन सन्धिको करता है और श्रीकृष्णजी भी शत्रुताको नहीं चाहते हैं २२ युधिष्ठिर सदैव जीवधारियों के मनोरथों में प्रवृत्त है और इसी प्रकार भीमसेन समेत नकुल और सहदेव भी मेरे स्वाधीन हैं तेरी इच्छा से पाण्डवों से और तुझसे सन्धि होनेपर प्रजालोगों का कल्याण होगा और सुखको पावेंगे बाकी बचेहुये बांधवलोग अपने २ पुरोंको जायँ और सेनाके मनुष्यभी युद्ध करना छोड़ें हे राजन् जो मेरे वचन को नहीं सुनोगे तो निश्चय जानो कि अवश्य तुम शत्रुओं से घायल और पीड़ित होकर दुःखोंको पावोगे २३।२४ तेरे साथ सब जगत् ने देखा जो अकेले अर्ज्जुन ने किया ऐसा कर्म न यमराज न इन्द्र न भगवान् ब्रह्मा और यक्षोंका राजा कुबेरभी नहीं करसक्ताहै २५ अर्जुन अपने गुणोंसे इन सबसेभी अधिकहै परन्तु वह मेरे किसी वचनको भी उल्लंघन नहीं करेगा अर्थात् मेरे कहनेको अवश्य करेगा और सदैव तेरे पीछे चलेगा हे राजेन्द्र तुम प्रसन्नहोकर शांतता में युक्तहोजावो तुझमें मेरा सदैव बड़ामनहै इसी हेतुसे मैं बड़ी शुभचिन्तकता से अर्थात तेरे भलेके लिये तुझसे कहताहूं जब आप मृदु होगे तब मैं कर्ण को भी निषेधकरूंगा २६।२७ पण्डित लोग साथ उत्पन्न होनेवाले को मित्र कहते हैं इसीप्रकार प्रीति और धनके द्वारा प्राप्त होने वाला और अपने प्रताप से नम्रीभूत होनेवाले को मित्र कहते हैं यह चार प्र-

कारकी मित्रता है वह तेरी चारोंप्रकारकी मित्रता पाण्डवों में है २८ हे प्रभु तेरी उत्पत्ति से तो तेरे बांधव हैं प्रीति समेत उनको प्राप्तकरो और तेरी प्रसन्नता से अर्थात् आधाराज्य देने से जो मित्रहोजायँ उस दशामें तेरे कारणसे जगत्का बड़ाहित होगा उस शुभचिन्तकके ऐसे हितकारी वचनों को सुनकर वह दुःखी चित्त दुर्य्योधन बहुत शोचसे श्वासों को लेकरबोला हे मित्र जैसा आपनेकहा वहसब इसीप्रकारहै परन्तु मुझजतानेवाले के भी वचनों को सुनो कि २९। ३० इस दुर्बुद्धी भीमसेन ने शार्दूलके समान अपना हठकरके दुश्शासनको मारकर जो वचनकहा है वह मेरे हृदयमें नियतहै यह सब आपके समक्षमें ही हुआहै कैसे शान्ती होसक्तीहै ३१ अर्जुनभी युद्धमें कर्णको ऐसे नहीं सहसकेगा जैसे कि कठोर पवन मेरुनाम पर्व्वत को नहीं सहसक्ताहै कुन्तीकेपुत्र हठकरके और बहुधा शत्रुताको शोचकर मेरा विश्वासनहीं करेंगे हे गुरूजीके पुत्र तुम अजेय होकर इसबातको कर्णसे कभी न कहिये कि तुम युद्धको त्यागदो अब अर्जुन बहुत थकावटसे युक्तहै इसीसे यह कर्ण बड़े हठसे उसको मारेगा ३२। ३३ आपके पुत्रने उससे ऐसाकहकर और बारंबार समझाकर अपने सेनाके लोगोंको आज्ञादी कि तुम हाथों में बाणों को लेलेकर मेरे शत्रुओं के सन्मुख जावो क्या मौन होकर नियतहो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिअश्वत्थामाहितवर्णनेनवाशीतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

संजय बोले कि हे राजन् आपके पुत्रके दुर्मन्त्रित होनेवा शंख और भेरीके शब्दोंकी अधिक्यतासे श्वेत घोड़े रखनेवाला नरोत्तम अर्जुन और सूर्य्यका पुत्र कर्ण दोनों ऐसे सन्मुखहुये जैसे कि मदझाड़नेवाले दीर्घदन्ती हिमालय पर्व्वतके उत्पन्न बड़े दोहाथी हथिनीके निमित्त भिड़तेहैं १। २ अथवा जैसे कि दैवइच्छासे महाबलाहक नाम बादल बलाहक बादलसे और पर्व्वत पर्व्वतसे भिड़जायँ उसीप्रकार बाणरूपी वर्षाके करनेवाले धनुषरोदा और प्रत्यंचाके शब्दों समेत सन्मुखहुये ३ और परस्परमें ऐसेघायलहुये जैसे कि बड़े वृक्ष औषधी और शिखरवाले नाना झिरनों से युक्त बड़े पराक्रमी दोपर्व्वत आपसमें घायलहोते हैं उसीप्रकार वह दोनों महाअस्त्रोंसे परस्परमें घायलहुये ४ फिर बाणों से घायल

शरीर सारथी और घोड़े वाले उनदोनोंकी वहचढ़ाई बहुत बड़ीहुई जो अन्यसे दुःखपूर्वक सहनेके योग्य कठोर रुधिर रूप जलकी ऐसी रखनेवालीथी जैसे कि पूर्व्व समय में देव इन्द्र और विरोचनके पुत्र बलिकी चढ़ाई हुई थी जैसे कि बहुतसे पद्म वा उत्पल कमल मछली कछुये रखनेवाले पक्षियों के समूहों से वेष्टित अत्यन्त समीप वायु के वेगसे दोह्रद परस्परमें भिड़जायँ उसीप्रकार वह दोनों ध्वजाधारी रथ आपसमें सन्मुख हुये ५। ६ महेन्द्रके समान पराक्रमी और रूप वाले उनदोनों महारथियों ने उसी महेंद्रके वज्रके समान शायकों से परस्पर में ऐसे घायलकिया जैसे कि महेन्द्र और वृत्रासुरने परस्पर घायलकियाथा ७ हाथी पति घोड़े रथ और चित्रविचित्र कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रोंकी धारण करने वाली वह अपूर्व रूपवाली दोनों विस्मित सेना कंपायमानहुई उस अर्जुन और कर्णके युद्धमें वस्त्र और अँगुलियों से युक्त ऊंची २ भुजा आकाशमें वर्त्तमानहुईं मतवाले हाथीके समान प्रसन्नचित्त अर्जुन तमाशा देखने वालों के सिंहनादों समेत मारनेकी इच्छासे कर्णके सन्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सन्मुख जाताहै ८ । ९ वहां आगे चलनेवाले सोमक लोग अर्जुन को पुकारे कि हे अर्जुन कर्ण को छेदकर इसके मस्तक को काटो और धृतराष्ट्र के पुत्रकी श्रद्धाको राज्यसे पृथक्करो इसमें बिलम्ब मतकरो १० इसीप्रकार हमारे भी बहुत से शूरवीरों ने कर्ण को प्रेरणाकरी कि चलो चलो हे कर्ण अत्यंत तीक्ष्ण बाणों से अर्जुन को मारो और पांडव फिर बहुत कालके लिये वनको जायँ ११ इसके पीछे प्रथम तो कर्णने उत्तम दशबाणों से अर्जुन को छेदा और अर्जुनने हँसकर तीक्ष्ण दशबाणोंसे कर्णको कुक्षमें वेधा १२ फिर उन दोनों कर्ण और अर्जुन ने सुन्दर पुंखवाले बाणों से परस्पर घायल किया और बड़ी प्रसन्नता से एकने दूसरे को छेदा और भयकारी रूपों से सन्मुखगये १३ इसके पीछे उग्र धनुषधारी अर्जुन ने दोनों भुजाओं से गांडीव धनुषको ठीक करके नाराच, नालीक, वाराहकर्ण, क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र इन बाणों को छोड़ा १४ हे राजन् वह अर्जुन के छोड़े हुये बाणके रथमें प्रवेशकर गये और सब ओरसे ऐसे फैलगये जैसे कि सायंकालके समीप नीचा शिर करनेवाले पक्षियों के समूह निवासके लिये शीघ्र वृक्षपर प्रवेशकरतेहैं १५ शत्रुओं के विजय करनेवाले अर्जुन ने जिन बाणों को भृकुटी के कटाक्षसे युक्त कर्ण के निमित्त

छोड़ाथा उन बाणोंको कर्ण ने अपने शायकों से दूरकिया १६ इसके पीछे इन्द्र के पुत्र अर्जुन ने शत्रुके वशीभूत करनेवाले अग्न्यास्त्रको कर्ण के ऊपर छोड़ा तब पृथ्वी अन्तरिक्ष और दिशाओं के मार्गों को ढककर उसका शरीर प्रकाशमानहुआ १७ और अग्नि से जलतीहुई पोशाकवाले वा पोशाकों से अत्यन्त रहित होजानेवाले शूरवीर बड़े व्याकुल होकर भागे और ऐसा बड़ा घोर शब्द हुआ जैसे कि बांसों के वनमें जलते हुये बांसों के शब्द होते हैं १८ फिर उस प्रतापवान् कर्णने युद्धमें उठे हुये उस अग्न्यास्त्र को देखकर उसके शांतहोने के निमित्त वारुणास्त्र को छोड़ा और उसी से वह अग्नि शान्तहुई १९ फिर उस वेगवान्ने बादलोंके समूहों से सब दिशाओं में अन्धकार करदिया तब पर्व्वत के समान किनारा रखनेवाले कर्ण ने चारोंओर को जलकी परिधि करके २० उस अत्यन्त भयानक अग्निको शांतकरदिया परन्तु दिशाओं के सब स्थान जो कि बादलों से युक्तथे २१ इससे कुछ दिखाई नहीं दिया तदनन्तर अर्जुन ने वायुअस्त्र से कर्ण के उन अस्त्रों के समूहों को दूरकिया २२ फिर शत्रुओं से अजेय अर्जुन ने गांडीव धनुष प्रत्यंचा और विशिखों पर मंत्रों को पढ़कर बड़े प्रभाववाले देवेन्द्रके प्यारे वज्रास्त्रको भी प्रकट किया २३ इसके पीछे क्षुरप्र, आंजुलिक, अर्द्धचन्द्र, नालीक, नाराच, वराह कर्ण नाम अत्यन्त तीक्ष्ण वज्रके समान वेगवान् हजारों बाण गांडीव धनुषसे प्रकटहुये २४ वह बड़े प्रभाव युक्त सुन्दर वेत गृध्रपक्षों से जटित अच्छे वेगवान् बाण कर्ण को पाकर उसके सब अंग घोड़े, धनुष, जुयेचक्र से होकर पृथ्वी में प्रवेश करगये तब बाणों से युक्त रुधिरसे लिप्तअंग क्रोधसे खुले नेत्रवाले महात्मा कर्ण ने २५ । २६ दृढ़प्रत्यंचा वाले समुद्रके समान शब्दायमान धनुष को दबाकर भार्गवअस्त्र को प्रकटकिया और महेन्द्रास्त्र के सन्मुख छोड़ेहुये अर्जुन के बाणों के समूहों को काट २७ अपने अस्त्रसे उसके अस्त्रको हटाके युद्ध में रथ हाथी और पतियों को मारा महेन्द्र के समान कर्मकरनेवाले कर्ण ने भार्गवअस्त्रके प्रतापसे ऐसा कर्मकिया २८ इसको करके फिर क्रोधयुक्त सूतके पुत्र कर्ण ने युद्धमें पांचालों के अत्यन्त उत्तम शूरवीरों को रोककर अच्छी रीतिसे छोड़ेहुये तीक्ष्णधार सुनहरी पुंखवाले बाणों से पीड़ामान किया २९ हे राजन् युद्धभूमि में कर्णके बाण समूहों से पीड़ित पांचाल और सोमकों ने भी हठ करके प्रसन्नता से कर्णको बाणों से छेदकर पीड़ामान

किया ३० फिर कर्णने बाणों से पांचालों के उन रथ हाथी और घोड़ों के समूहों
को मारा और मारे बाणों के सबको पीड़ित करडाला ३१ वह कर्ण के बाणों से
निर्जीव होकर शब्दों को करतेहुये ऐसे गिरपड़े जैसे कि महावन में क्रोधयुक्त
भयानक सिंह से हाथियों के समूह गिरपड़तेहैं ३२ हे राजन् इसके पीछे वह
बड़ा साहसी और बड़े उत्साहका करनेवाला कर्ण अत्यन्त उत्तम २ शूरवीरों को
मार कर ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें तीक्ष्ण किरणों का रखने
वाला सूर्य्य होताहै ३३ हे कौरवेन्द्र फिर आपके शूरवीरों ने कर्ण की विजय
को मानकर बड़ी प्रसन्नता मनाकर सिंहनादों को किया और सबने कर्णके हाथ
से श्रीकृष्ण और अर्जुन को निहायत घायल माना ३४ फिर वह महारथी कर्ण
अपने उस पराक्रम को दूसरोंसे असह्यवाला जानकर और इसरीति से अर्जुनके
उस अस्त्रको अपने से निष्फल हुआ देखकर ३५ क्रोधसे रक्तनेत्र असह्य क्रोधयुक्त
वायु के पुत्र भीमसेन श्वासों को लेताहुआ हाथसे हाथको मलकर सत्यसंकल्प
अर्जुनसे बोला ३६ अब युद्धमें तेरे और विष्णुजी के सन्मुख किस प्रकारसे उस
पापी अधर्मी सूतके पुत्र कर्णने प्रबल होकर पांचालोंके उत्तम शूरवीरोंको मारा
३७ हे अर्जुन साक्षात् शिवजीकी भुजा के स्पर्श को पाकर कालकेय नाम अ-
सुरों से अजेय रूप तुझको इस कर्ण ने प्रथम दशबाणों से कैसे छेदा ३८ और
तेरे चलायेहुये बाणसमूहों को सहगया इससे यह कर्ण मुझको अपूर्व्व दिखाई
देताहै तुम द्रौपदी के उन दुःखोंको स्मरणकरो कि इसने कैसे २ वचन कहेथे ३९
हे अर्जुन इस पाप बुद्धी दुर्मति दुष्टहृदय सूतपुत्र ने रूखे २ अत्यन्त तीव्रवचन
कहे अब तुम उन सब वचनों को स्मरण करके उस पापी कर्ण को युद्धमें शी-
घ्रमारो ४० हे अर्जुन उसको कैसे छोड़ रक्खाहै अब यहां यह समय तेरे त्याग
करने का नहीं है खांडव वनमें जिस धैर्य्यतासे तैंने सबजीवों को विजय किया
उसी धैर्य्यतासे इस दुर्मति सूतपुत्रको मारो मैं उसको गदासे मारूंगा उसके पीछे
वासुदेवजी भी बाणों से व्यथित देखकर अर्जुन से बोले ४१ । ४२ कि अब इस
कर्ण ने तेरे अस्त्रको अपने अस्त्रों से सबप्रकार मर्दन कियाहै हे अर्जुन यह क्या
बातहै हे वीर तुम क्यों मोहित होरहेहो क्यों नहीं सचेत होतेहो देखो यह कौरव
लोग अत्यन्त प्रसन्न होकर गर्जते हैं ४३ सबने कर्णको आगे करके तेरे अस्त्र
को अस्त्रों से गिरायाहुआ जानाहै जिस धैर्य्यतासे तैंने तामस अस्त्रको दूरकिया

और युग २ में भी ४४ दंभोद्भवनाम घोर राक्षसों को युद्धों में मारा उसी धैर्य्य से अब तुम कर्ण को मारो अब हठकरके मेरे दियेहुये नेमियोंपर छूरेवाले सुदर्शन चक्रसे इसशत्रुके शिरको ऐसेकाटो जैसे कि इन्द्रने अपने शत्रु नमुचि के शिरको काटा था किरातरूपी भगवान् शिवजी भी तेरे धैर्य्य से प्रसन्नहुये ४५। ४६ हे वीर तुम फिर उसी धैर्य्य को धारण करके कर्ण को उसके सब साथियों समेत मारो इसके पीछे तुम सागर रूप मेखला रखनेवाली नगर ग्रामों से युक्त और धन रत्नों से पूर्ण उस पृथ्वी को ४७ जिसमें कि शत्रुओं के समूह मारेगये हैं अपने राजा युधिष्ठिरके सुपुर्दकरो यहवचन सुनकर उस बड़े बुद्धिमान् महा पराक्रमी महात्मा अर्ज्जुन ने कर्ण के मारने के निमित्त बुद्धिकरी ४८ भीमसेन और श्रीकृष्णजी से प्रेरणा कियेहुये उस अर्जुन ने आपको ध्यान करके और सब बातों को विचारकर इसलोकके इन्द्र अपने आने में प्रयोजन को जानकर केशवजी से यह वचन कहा ४९ कि हे केशवजी मैं लोकके आनन्द और कर्ण के मारने के निमित्त इस उग्र महाअस्त्रको प्रकट करताहूं सो आप ब्रह्माजी शिवजी देवता और वेदों के सब जाननेवाले ऋषिलोग मुझको आज्ञादो ५० उस महासाहसी अर्जुन ने इसप्रकारसे कहके और ब्राह्मणों को नमस्कारकरके उस उग्र महाअस्त्रको प्रकटकिया जो कि असह्य और चित्त से प्रकट करने के योग्य था ५१ जैसे कि बादल शीघ्र जलधाराओं को छोड़ताहै उसीप्रकार कर्ण बाणों से इसके उस अस्त्रको दूरकरके शोभायमान हुआ तब क्रोधयुक्त पराक्रमी भीमसेनने इस रीतिसे युद्धभूमि में कर्ण के हाथसे अर्जुनके उस अस्त्रको दूरकिया हुआ देखकर सत्यसंकल्प अर्जुन से कहा कि निश्चयकरके मनुष्यों ने तुमको बड़ा उत्तम और ब्रह्मास्त्रनाम बड़े अस्त्रका जाननेवाला कहाहै ५२। ५३ हे अर्ज्जुन इस हेतुसे अब तुम दूसरे अस्त्रको चलाओ ऐसे कहेहुये अर्ज्जुनने अस्त्र का प्रयोगकिया तदनन्तर बड़े तेजस्वी अर्ज्जुन ने गांडीवधनुष और भुजाओं से छोड़ेहुये भयकारी सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित बाणों से सबदिशा और विदिशाओं को ढक दिया उस भरतर्षभ अर्ज्जुन के छोड़ेहुये सुवर्ण पुंख वाले हजारों बाणों ने ५४। ५५ क्षणभरही में कर्ण के रथ को ढकदिया वह बाण प्रलयकालके सूर्य्यकी किरणों के समान थे इसके पीछे सैकड़ों शूल फरसे चक्र और नाराच ५६ भी महा भयकारी निकले उससे बहुत से शूरवीर चारों

ओर से मारेगये युद्धभूमि में किसी का शिर धड़ से कटकर गिरा ५७ और कितनेही उन गिरेहुओं को देखकर भयभीत होकर जल्दी से पृथ्वीपर गिरपड़े और किसी शूरवीर की हाथीकी सूंड़के समान भुजा टूटकर खड्ग समेत पृथ्वी पर गिरपड़ी ५८ किसीकी बाईंभुजा क्षुरप्रसे कटकर ढालसमेत गिरी अर्ज्जुनने इसरीति के शरीरों के नाश करनेवाले भयकारी बाणों से उन सबउत्तम २ शूरवीरों समेत दुर्य्योधन की सम्पूर्ण सेनाको मारा और घायल किया इसी प्रकार कर्णने भी युद्धभूमि में अपने धनुष से हजारों बाणों को छोड़ा ५९।६० वह शब्दायमान बाण अर्जुन के सन्मुख ऐसे गये जैसे कि पर्ज्जन्य मेघसे छोड़ीहुई जलकी धारा होती है इसके पीछे वह अनुपम प्रभाव और भयानकरूपवाला कर्ण श्रीकृष्ण अर्जुन और भीमसेन को ६१ तीन २ बाणोंसे घायल करके बड़े स्वरसे घोर शब्दको गर्जा फिर अर्जुन ने उस असह्य कर्णके बाणोंसे व्यथित भीमसेन और श्रीकृष्णको देखकर ६२ अठारह बाणोंको उठाया एकबाणसे तो उसकी ध्वजाको चारबाण से शल्यको और तीनबाणों से कर्णको घायलकिया ६३ फिर अच्छीरीति से छोड़हुये दश बाणोंसे सुवर्णकवचसे अलंकृत सभापति को मारा वह राजकुमार शिर भुजा घोड़े सारथी धनुष और ध्वजासे रहित ६४ मृतकहोकर रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि फरसोंका काटाहुआ और उखड़ाहुआ शालका वृक्ष गिरताहै फिर कर्णको तीन आठ बारह चार और दशबाणों से छेद ६५ चारसौ घोड़ोंको मारकर आठसौ शस्त्रधारी रथियोंकोभी मारा तब सवारों समेत हजारों घोड़ोंको वा आठहज़ार वीर पतियों को ६६ मारकर सारथी घोड़े रथ और ध्वजा समेत कर्णको सीधेचलनेवाले बाणवृष्टिसे अलक्षकरदिया इसके पीछे अर्जुनके हाथसे घायल होकर कौरव चारोंओरसे कर्णको पुकारे ६७ हे कर्ण तुम शीघ्रही अर्जुनको छेदकर हमको छुड़ावो वह समीपसे बाणोंकेही द्वारा सब कौरवों को मारताहै उनके वचनोंको सुनकर कर्णने भी बहुत उपायों से बहुतसे बाणोंको बारम्बार छोड़ा ६८ उन मर्मभेदी रुधिर धूलसे लिप्त बाणोंने पाण्डव और पाञ्चालों के समूहों को व्यथित किया सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े पराक्रमी सब शत्रुओं के पराजय करनेवाले महा अस्त्रज्ञ उन दोनों ने ६९ महा अस्त्रोंसे शत्रुकी उग्रसेनाको और एकने दूसरेको घायलकिया इसके पीछे शीघ्रता करनेवाला युद्धके देखनेका अभिलाषी वह युधिष्ठिर पासगया जो कि

अत्रिकुल में उत्पन्न होनेवाले अष्टांगविद्या के आसनपर बैठनेवाले अश्विनी कुमार सुरवैद्यों के मन्त्र औषधियों के द्वारा पीड़ासेरहित भालों से पृथक् शुभ-चिन्तक चिकित्सा करनेवाले उत्तम पुरुषों से मर्हम पट्टी बांधाहुआ सुवर्ण के कवचको पहिरेहुयेथा इसीसे वह सावधान ऐसा न था जैसे कि दैत्यों के हाथसे घायल शरीर देवराज इन्द्रथा इस प्रकार के रूपवाले धर्मराजको युद्धमें समीप आयाहुआ देखकर सब जीवमात्र बड़े प्रसन्नहुये ७०। ७१। ७२ जिस प्रकार राहुसे छूटेहुये निर्मल और पूर्णचन्द्रमाको देखते हैं उसी प्रकार उदय होनेवाले उन युद्धकर्त्ता उत्तम श्रेष्ठ शत्रुओं के मारनेवाले दोनों पुरुषोत्तमों को देखकर देखने के इच्छावान् ७३ आकाश के देवता और पृथ्वी के मनुष्य कर्ण और अर्जुनको देखतेहुये नियतहुये वहां बाणोंके जालोंसे परस्पर मारनेवाले अर्जुन और कर्णकेछोड़ेहुये बाणोंसे उस धनुष रोदा और प्रत्यंचाका गिरना कठिनहुआ इसकेपीछे अच्छी खिंचीहुई अर्जुनके धनुषकी जीवा अकस्मात् शब्द करकेटूटी ७४। ७५ उसीसमय सूतके पुत्रने सौ क्षुद्रक बाणों से अर्जुनको छेदा और सर्प रूप तैलसेसाफ गृध्रपक्षसे जटित बराबर छोड़ेहुये ७६ साठबाणोंसे शीघ्रताकरके वासुदेवजी को छेदा इसके पीछे फिर आठ बाणों से अर्जुनको छेदा तदनन्तर सूतपुत्र कर्णने हजार बाणोंसे भीमसेनको मर्मस्थलोंपर छेदा ७७ और सोमकों को गिरातेहुये उन शूरवीरोंने विशिख वा पृषत्कनाम बाणोंसे श्रीकृष्ण अर्जुन की ध्वजा और उनके छोटे भाइयोंको बाणों से ऐसे ढकदिया जैसे कि बादलों के समूह सूर्य्यको ढकदेतेहैं ७८ फिर उस अस्त्रज्ञ कर्णने उन सबको विशिखनाम बाणोंसेरोककर अपने अस्त्रोंसे सबअस्त्रोंको हटाकर उनके रथ घोड़े और हाथियों कोभी मारा ७९ हे राजा इसी रीतिसे सूतपुत्रने बाणोंसे सेनाके उत्तम२शूरवीरों को पीड़ितकिया फिर कर्णके बाणों से घायल और मृतकहोकर शब्दोंको करते हुये पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़े ८० जैसे कि बड़ेपराक्रमी कुत्तोंके समूह क्रोधभरे बड़े पराक्रमी सिंहसे गिरते हैं फिर पांचालदेशियों के उत्तम २ लोग और अन्य २ शूरवीर इसस्थानपर कर्ण और अर्जुन के लिये ८१ चेष्टाकरनेवाले उसपराक्रमी कर्णके अच्छीरीति के छोड़ेहुये बाणों से मारेगये और आपके शूरोंने बड़ी विजयको मानकर तालियां बजाईं और बारंबार सिंहनादको किया उनसबोंने युद्धमें श्रीकृष्ण और अर्जुन को कर्णकी स्वाधीनतामें माना फिर तो कर्ण के

बाणों से अत्यन्त घायल शरीरवाले क्रोधयुक्त अर्जुन ने धनुषकी प्रत्यञ्चाको नवाकर शीघ्रतासे कर्णके उनबाणों को हटाके कौरवोंको रोका ८२।८३ प्रत्यंचा को ठीककरके तलको तरमें दबाया और अकस्मात् बाणोंका अन्धकार उत्पन्न किया उससमय बड़े हठसे अर्जुनने बाणों के द्वारा कर्ण शल्य और सबकौरवों को छेदा ८४ तब महाअस्त्रसे अन्धकार उत्पन्न होजानेपर अन्तरिक्षमें पक्षीभी नहीं घूमे और आकाशवर्ती जीवों के समूहों से प्रेरितवायुने दिव्य सुगन्धियों को फैलाया ८५ फिर हँसतेहुये अर्जुनने दशपृषत्कोंसे शल्यके कवचको छेदा इसकेपीछे अच्छेप्रकारसे छोड़ेहुये ८६ बारह बाणोंसे कर्णको छेदकर दुवारीभी सात बाणों से छेदा अर्जुनके धनुषसे छूटेहुये महावेगवाले बाणों से अत्यन्त घायल ८७ विदीर्ण और रुधिरसे भराअंग वह कर्ण जिसके कि बाण फैलरहेथे रुद्रजीके समान शोभायमानहुआ इसकेपीछे श्मशान भूमिमें रुद्रमुहूर्त्तमें क्रीड़ा करनेवाले रुधिरसे लिप्तशरीर अधिरथी कर्णने उस देवराजके समान रूपवाले अर्जुनको तीनबाणों से छेदा ८८। ८९ फिर मारनेकी इच्छासे सर्पों के समान अग्निरूप पांचबाणोंको श्रीकृष्णजीके शरीरमें प्रविष्टकिया ९० वह सुवर्णजटित अच्छीरीतिसे छोड़ेहुये बाण पुरुषोत्तमजी के कवचको छेदकर गिरपड़े ९१ और बड़े वेगसे पृथ्वीमें प्रवेश करगये और पातालगंगा में स्नान करके फिर कर्णसे मुखफेरकर चलेगये इसके पीछे अर्जुन ने उनबाणोंको अच्छीरीति से छोड़ेहुये पन्द्रह भल्लोंसे तीन२ खंडकरदिया ९२ उनबाणोंसे घायल तक्षकके पुत्रके साथी बड़े सर्प पृथ्वीपर आये फिर तो अर्जुन ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि सूखे बन को जलाताहुआ अग्नि होताहै ९३ उस अर्ज्जुन ने कर्णकी भुजा से छोड़ेहुये बाणोंसे इसप्रकार घायल शरीर श्रीकृष्णजीको देखकर कानतक खैंचकरशरीर के नाश करनेवाले अग्निरूप बाणों से कर्ण को ९४ मर्म्मस्थलों में छेदा वह दुःख से तो कम्पितहुआ परन्तु बड़ी बुद्धिसे धैर्य्य युक्तहोकर दैवयोगसे नियत रहा हे राजा इसकेपीछे अर्जुनके क्रोधरूप होनेपर ९५ ॥

दो० तजि कर्णहिं तेहि क्षण भगे तो सुत भट समुदाय ।
जिमि व्याधहि लखि सुतरुतजि भगत बिहग भयपाय ॥
पार्थ अधिरथी के वधन को प्रण पूरण धारि ।
पार्थ लसौ जिमि त्रिपुरदल मध्य लसौ त्रिपुरारि ॥

सो० तिमि सूतज रणधीर प्रलयभरूयो परसेन मधि ।
दोऊ तुल बलवीर कीन्हें अद्भुत युद्ध तहँ ॥
भुजंगप्रयातछन्द ॥
महाबीर दोऊ धनुर्वेद चारी । दुहूंओर कै बाणकी वृष्टिभारी ॥
किये घोर संग्राम ता ठौर दोऊ । नहीं सामुहे भे दुहूंओर कोऊ ॥
गये दूरिजिते भये मौन ऐसे । गये सामने सिंहपशुभीत जैसे ॥
दुहूं ओरके यों कहैं जाचिबेको । नहीं आजुतो योगहै बाचिबे को ॥
दो० कर्णहि वधिदल कौरवी वधिहि पार्थ बल ऐन ।
कै पार्थहि वधिकै करण वधत पाण्डवी सैन ॥
दोऊ गगन शरनभरि दीन्हे । अन्धकार आरोपित कीन्हे ॥
दोउन के अति विक्रम देखी । विस्मित भे सुरगण अवरेखी ॥
दोऊ क्षात्रधर्म अवतंसे । इमि कहि कहिकै दुहुनप्रशंसे ॥
दोउनकेकर करिकर भारी । रहे जात लखि काननबारी ॥
कबहुँ पार्थबढ़ि विक्रमकीन्हों । कबहुँ सूतसुत गुरुतालीन्हों ॥
रह्यो न थिरि घटिबढ़ि पदकोऊ । अतिशय प्रबलधनुर्द्धर दोऊ ॥
भूपहुई तहँ तुमुललराई । पृथक पृथक सबकही न जाई ॥
९६ । ९७ । ९८ । ९९ । १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिद्वैरथकर्णार्जुनयुद्धेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानबे का अध्याय ॥

संजय बोले इसके पीछे पृथक् २ सेनावाले एकवीरके अन्तर पर जाननेवाले कौरव नियतहुये और अर्जुन के प्रकट कियेहुये अस्त्रको चारोंओर से बिजली के समान प्रकाशमान देखा १ तब कर्ण ने उस अर्जुन के आकाशमें वर्त्तमान महाअस्त्र को बड़े घोर बाणों से दूरकिया जो कि बड़े युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुन ने कर्ण के मारने को छोड़ाथा २ उस कौरवों के भस्म करनेवाले उदय रूप अस्त्रको सुनहरी पुंखवाले विशिखों से मर्द्दनकिया फिर दृढ़ प्रत्यंचायुक्त सफल धनुष को उठाकर बाणों के समूहों को छोड़तेहुये कर्ण ने ३ परशुरामजी से पायेहुये शत्रुओंके नाश करनेवाले अथर्ववेदसम्बन्धी मन्त्रसे अभिमंत्रित किये

हुये तीक्ष्णधारवाले बाणसे उस भस्म करनेवाले अर्जुनके अस्त्रको दूरकरदिया४ हे राजा इसके पीछे वहां पृषत्कों से परस्पर युद्ध करनेवाले कर्ण और अर्जुन का ऐसा घोर युद्धहुआ जैसे कि दांतों के कठिन प्रहारों से दो हाथी युद्ध करते होयँ ५ उस समय वहां सब ओरसे अस्त्रों के प्रहारों से बड़ा कठिन युद्धहुआ और दोनोंने अपने अपने बाण समूहों से आकाशको पूर्णकर दिया ६ इसके पीछे सब कौरव और सोमकों ने बड़े बाणजालों को देखा और बाणों से अन्धकार होनेपर अन्तरिक्ष में किसी जीवमात्र को भी नहीं देखा हे राजा तब उन अनेक बाणों के छोड़ने और चढ़ानेवाले दोनों धनुषधारियों ने अनेक प्रकारकी अपनी अस्त्रज्ञताओं के साथ युद्धमें विचित्रमार्गों को दिखलाया ७।८ इस रीति से कभी अर्जुन कभी कर्ण प्रबलहोते हुये देखके ९ अन्य सब शूरवीरों ने युद्धभूमि में परस्पर घात ढूंढ़नेवाले उन दोनों के असह्य और घोरयुद्ध को देखकर बड़ाही आश्चर्य्य किया हे नरेन्द्र इसके पीछे अन्तरिक्षवर्त्ती जीवों ने उन कर्ण और अर्जुन दोनों की प्रशंसाकरी कि हे कर्ण धन्यहै हे अर्जुन धन्यहै धन्य है यह शब्द सब ओरसे सुनेजातेथे १०।११ तब उस युद्धमें रथ घोड़े और हाथियों के प्रहारोंसे पृथ्वीके धसकने पर पातालतल में विश्राम करनेवाला अर्जुनका शत्रु अश्वसेनसर्प १२ जो कि खाण्डवबनकी अग्निसे निकलकर क्रोधयुक्त होकर पृथ्वी में घुसगयाथा वह फिर ऊर्द्ध्वगामी होकर कर्ण और अर्जुनका युद्ध देख कर ऊपरको आया १३ हे राजा उसने शोचा कि इस दुष्ट अर्जुनसे अपना बदला लेनेका यही समय है इसीहेतु से बाणरूप बनकर कर्णके तूणीर में आया इसकेपीछे अस्त्रों के प्रहारों से संयुक्त फैलेहुये बाणों के समूह रूपी किरणों से पूर्णहुआ तबउन दोनों कर्ण और अर्जुनने बाणों के समूहों की वर्षा से आकाशके अन्तर को निरन्तर कर दिया उससमय वह आकाश बड़ी दूरतक बाणसमूहों से एकसेही रूपकाथा उसको देखकर सब कौरव और सोमक भयभीत हुये १४।१५।१६ उसबाणों के बड़े अन्धकार में दूसराकोई जीव आताहुआ नहीं देखा तदनन्तर सब लोकके धनुषधारी महावीर वह दोनों पुरुषोत्तम युद्ध में प्राणों के त्यागनेवाले युद्धके परिश्रम में प्रवृत्त १७ निन्दित वचनों को परस्पर कहनेवालेहुये फिर वह देखनेवालों से व्याप्त जल चन्दनसे सींचेहुये दिव्य बाल व्यजनोंकी रखनेवाली स्वर्गबासिनी अप्सराओं के समूहोंसमेत इन्द्र और

सूर्य के करकमलों से स्वच्छ मुखवाले हुये १८ जब अर्जुनके बाणों से अत्यन्त पीड़ामान कर्ण अर्जुन को न मारसका तब बाणों से अत्यन्त घायल शरीर वाले उसवीरने उसअकेले तरकसमें रहनेवाले सर्परूप बाणके चलानेको चित्त किया १६ और बड़े क्रोधपूर्व्वक उस अच्छीरीतिसे प्राप्तहोनेवाले बहुतकालसे गुप्तरूप सर्प मुखबाणको अर्जुनके वास्ते धनुषपर चढ़ाया अर्थात् बड़े तेजस्वी कर्णने उस सदैव से पूजित चन्दनचूरे में रहनेवाले सुवर्णके तूणीर में नियत बड़ेप्रकाशित बाणको कानतक खैंच अर्जुनके मुखकीओर धनुषपरचढ़ाया २०।२१ अर्जुनके शिरकाटनेको अभिलाषी उसऐरावतकेवंश में उत्पन्नहोनेवाले अत्यंत प्रकाशमान बाणकोचढ़ातेही सबदिशा और आकाशमें अग्निज्वलितहुई और आकाश से सैकड़ों घोररूप उल्कापातहुये २२ धनुषमें उस सर्परूपबाणके चढ़ाने पर इन्द्रसमेत सब लोकपाल हाहाकार करनेलगे और सूतपुत्र कर्णने योगबलसे उस बाणमें प्रवेश करनेवाले सर्पको न जाना परन्तु सहस्राक्ष इन्द्र उस कर्णके तूणीर में प्रवेश करनेवाले सर्पको देखकर अपने पुत्रके मारेजाने के सन्देह और शोचमें शिथिल अंग हुआ उसको शोच ग्रस्त देखकर बड़ेमहात्मा कमलयोनि ब्रह्माजी इन्द्रसे बोले कि शोचमत करो अर्जुनही में लक्ष्मी और विजय दोनों हैं २३ । २४ इसके पीछे मद्रके राजा महात्मा शल्यने उस उग्रबाण के चलाने वाले कर्णसे कहा कि हे कर्ण यहबाण अर्जुनको नहीं पावेगा इस शिरकाटने वाले बाणको तुम अच्छीरीति से देखकर चढ़ाओ २५इसके पीछे क्रोधसे रक्तनेत्र बड़ावेगवान् कर्ण राजामद्रसे बोला कि हे शल्य कर्ण दूसरी बार बाणको नहीं चढ़ाता है मुझसे मनुष्य छलसे युद्धनहीं करते हैं २६ हे राजा उस शीघ्रताक-रनेवाले उद्युक्त कर्णने यह कहकर विजय के निमित्त बड़े उपायसे उस बाणको छोड़ा और कहने लगा कि हे अर्जुन अब तुझको माराहै २७ कर्णकी भुजासे धनुषके द्वारा छूटा हुआ वह घोर बाण प्रत्यंचासे पृथक् हो उग्र सूर्य्य के समान आकाशमें जाके अग्नि के समान होगया २८ तबतो बड़ी शीघ्रता पूर्व्वक मा-धवजीने उस अग्निरूप बाणको देखकर बड़ी शीघ्रतासे अपने चरणोंसे रथको दबाकर थोड़ासा पृथ्वी में घुसाया तब वह सुवर्ण भूषणों से अलंकृत वह घोड़े भी घुटनोंसे पृथ्वीपर बैठगये २६ महा पराक्रमी माधवजी ने कर्णके हाथसेधनुष पर चढ़ाये हुये सर्पको देखकर पहियों पर बलकरके उस उत्तम रथको पृथ्वी में

गड़ादिया ३० तभी वह घोड़े पृथ्वीपर बैठगये इसके पीछे मधुसूदनके पूजनके निमित्त अन्तरिक्ष में बड़ाभारी शब्दहोकर अकस्मात् आकाशबाणी हुई और दिव्य पुष्पोंकी वर्षा होकर सिंहनाद हुये ३१ उस समय मधुसूदनजी के बड़े उपाय से पृथ्वी में रथके घुसनेपर उस बाणने उस बुद्धिमान् अर्जुनके बड़े दृढ़ रूप इन्द्रके दियेहुये किरीटको घायलकिया। इसके पीछे सूत पुत्रने सर्प अस्त्रके छोड़ने और क्रोधयुक्त उत्तम उपाय पूर्वक बाणके द्वारासे अर्जुनके शिरसे मुकुट को हरणकिया वह मुकुट आकाश स्वर्ग और जलोंमें प्रसिद्ध सूर्य्य चन्द्र और अग्निके समान प्रकाशित सुवर्ण मोती हीरे मणियों से जटित था जिसको कि आप समर्थ ब्रह्माजी ने तपके द्वारा बड़े उपाय से इन्द्रके लिये उत्पन्न कियाथा और बड़ा सुन्दर रूप शत्रुओं को भयकारी शिरपर धारण करनेवाले को महा आनन्ददायक होकर श्रेष्ठ गंधियोंसे युक्तथा ३२।३३ उसीको प्रसन्न चित्त होकर आप इन्द्रने असुरों के मारनेके अभिलाषी अर्जुन को दियाथा वह मुकुट ऐसे प्रभाववाला था कि इन्द्र वरुण कुवेर बज्र पाश और उत्तम बाणोंसे अथवा शिव जीके पिनाक धनुषसे भी ३४ मर्दनके योग्य न था ऐसे मुकुटको कर्णने अपनी हठसे सर्परूप बाणके द्वारा हरणकरलिया अर्थात् दुरात्मा दुष्टभाव असत्यप्रतिज्ञावाले ३५ वेगवान् सर्पने अर्जुनके उस किरीटको शिरपरसे हरलिया वहकिरीट अत्यन्त अद्भुत बड़ोंकियोग्य सुवर्णके जालोंसे मण्डित प्रकाशित शब्दायमान होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ३६ अर्थात् उत्तम बाणसे मथित विषकी अग्नि से प्रकाशित वह अर्जुन का मुकुट पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डल वालासूर्य्य अस्ताचलसे गिरताहै ३७ उस सर्पने बलकेद्वारा रत्नोंसे जटित और अलंकृत मुकुटको अर्जुन के शिरसे ऐसे जुदा किया जैसे कि पर्वत के अंकुर और पुष्पित वृक्षों से जटित श्रेष्ठ शिखर को इन्द्रकाबज्र गिरादेता है ३८। ३९ अथवा जैसे कि वायु से पृथ्वी आकाश स्वर्ग और जलों के समुद्र उत्पातयुक्त होकर कम्पित होते हैं उसीप्रकार वह उग्रमुकुट हटकरके अत्यन्त चूर्ण हुआ उस समय तीनोंलोकोंके बड़ेशब्दोंको मनुष्योंने सुना और सुनकर सब पीड़ितहोके गिरपड़े ४० बिना किरीटके भी वहपार्थ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि श्याम रंगवाला नवीन उत्पन्नहुआ पर्व्वतका ऊंचा शिखर होताहै इसके अनन्तर पीड़ा से रहित अर्जुन अपने शिरके बालोंको श्वेतबस्त्रसे बांधकर ऐसा प्रकाशमानहुआ

जैसे कि शिरपर वर्त्तमान सूर्य्यकी किरणवाला उदयाचल पर्व्वतहोताहै सूर्य्यके पुत्र कर्णके भेजेहुये नेत्र रूप कान रखनेवाले दुःखसेरक्षा करनेवाले सर्प के पुत्र अश्वसेन सर्पने प्रत्यक्षमें बड़ेतेजस्वी बागडोरोंके समीप शिर रखनेवाले अर्जुन को देखकरभी बड़ीतीव्रता से नीचेको झुकने से असामर्थ होकर उस इन्द्रके पुत्र अर्जुनके मुकुटको जो कि अच्छीरीतिसे अलंकृत सूर्य्यकेसमान प्रकाशमानथा हरणकिया और बाणकेछोड़नेसे सर्पको मर्दनकरनेवाला अर्जुन सर्पको न पाकर मृत्युके आधीन नहीं हुआ ४१ । ४२ । ४३ कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ अग्नि सूर्य्यरूप बड़े शूरवीर के योग्य वह शायक और उसमें प्रवेश करनेवाला अर्जुन का शत्रु मुकुट को घायल करके चलागया तब अर्ज्जुन के उस सुवर्ण जटित मुकुटको खैंचकर भस्म करके उसने फिर तूणीरमें जानाचाहा और कर्ण से बोला कि हे कर्ण मैं विना विचार कियेहुये तेरे हाथसे छोड़ागया था इसीसे अर्जुनके शिरको न काटसका अब तू युद्धमें अर्जुनको अच्छेप्रकारसे लक्षकरके शीघ्रता से मुझको छोड़ मैं अपने और तेरे शत्रु अर्जुन को अभी मारूंगा यह वचन सुनतेही कर्ण उससे बोला हे श्रेष्ठ तुम कौनहो ४४ । ४५ सर्पने कहा माता के मारने से मुझ शत्रुता करनेवाले को अर्जुन का शत्रु जानो चाहै उसका रक्षक यमराज भी होजाय तौ भी मैं उसको यमलोकमें पहुंचाऊंगा ४६ कर्ण बोला हे सर्प अब कर्ण युद्धमें दूसरे के बलसे अपनी विजयको नहीं चाहताहै और एक बार बाणको चढ़ाकर उसको फिर दूसरी बार नहीं चढ़ाऊंगा मैं अकेलाही एक अर्जुन नहीं जो ऐसे २ सौ अर्जुन भी होयँ उनको भी मारसक्ताहूं यहकहकर ४७ सूर्य्य के पुत्रों में श्रेष्ठ कर्ण युद्धभूमि में फिर भी उस सर्प से बोला कि हे सर्प मैं अस्त्रके वा क्रोधयुक्त किसीउत्तम उपाय के द्वारा अर्जुनको मारूंगा तुम खुशी से चलेजाओ कर्ण के इस वचनको उस सर्प ने क्रोधयुक्त होकर नहीं सुना और अर्जुन के मारने की इच्छा से वह सर्पराज अपने निज स्वरूपको धारणकरके आपही अर्जुनके मारनेकोचला ४८।४९ तदनन्तर श्रीकृष्णजी उस युद्धभूमि में अर्जुन से बोले कि तुम इस शत्रुता करनेवाले बड़े सर्पको मारो श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनतेही शत्रुके बलका न सहनेवाला वह गांडीवधनुषधारी अर्जुन यह वचन बोला कि यह सर्प मेरा कौनहै जो आपने आप गरुड़के मुखमें आया है श्रीकृष्णजी ने कहा कि खांडववनमें अग्निके तृप्तकरनेवाले तुझ धनुषधारी

ने ५०। ५१ इस आकाशमें वर्त्तमान अपनी मातासे गुप्त शरीरवालेको एकरूप जानकर इसकी माताको मारा था उसी के कारणसे उस शत्रुताको स्मरणकरता निश्चयकरके अपने मरने के लिये तुझको चाहताहै ५२ हे शत्रुके हँसनेवाले तुम आकाशसे प्रज्वलित उल्कापातके समान उस आनेवाले सर्पको देखो संजय बोले कि इसके पीछे उस अर्जुनने महा क्रोधयुक्त होकर बड़े तीक्ष्ण उत्तम छःबाणों से उस सर्पको जो आकाशसे तिरछा होकर आ रहाथा काटडाला ५३ फिर वह अंगों से कटाहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा अर्जुन के हाथसे उस सर्प के मरनेपर आप समर्थरूप पुरुषोत्तमजी ने ५४ उस गिरे और घुसेहुये रथको शीघ्रही अपनी दोनों भुजाओं से ऊपरको उठाया उसी मुहूर्त्त में अर्जुनको तिरछा देखनेवाले पुरुषों में बड़ेवीर कर्ण ने उग्रपक्षधारी दशपृषत्कों से फिर अर्जुन को व्यथितकिया तब अर्जुन ने भी अच्छेप्रकार से छोड़ेहुये वराह कर्णनाम बारह तीक्ष्णबाणों से कर्ण को घायलकरके ५५ विषवाले सर्प की समान शीघ्रगामी कानतक खैंचेहुये नाराचनाम बाणको छोड़ा वह अच्छीरीतिसे छोड़ाहुआ उत्तम बाण कर्ण के जड़ाऊ कवचको चीरकर मानो प्राणोंको घायलकरताहुआ ५६ कर्ण के रुधिर को पीकर रुधिर में लिप्तहोके पृथ्वी में समागया इसके पीछे बाणके आघातसे कर्ण ऐसा क्रोधयुक्तहुआ जैसे कि दण्डसे प्रेरित होकर महा सर्प क्रोधरूप होताहै ५७ तबतो शीघ्रता करनेवाले कर्ण ने उत्तम बाणोंको ऐसे छोड़ा जैसे कि बड़ा विषधर सर्प अपने विषको छोड़ताहै उससमय कर्ण ने बारह बाणसे तो श्रीकृष्णजी को और निन्नानबे बाणों से अर्जुन को छेदा ५८ फिर कर्ण घोर बाणों से अर्जुन को घायलकरके गर्जना पूर्व्वक हँसा तब उसके उस हास्यको न सहकर उस मर्मज्ञ अर्जुन ने उसके मर्मों को छेदा ५६ इस इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने सैकड़ों बाणों से ऐसे वेगसे छेदा जैसे कि इन्द्र ने राजा बलिको छेदाथा इसके अनन्तर अर्जुन ने यमराजके दण्डकी समान नब्बेबाणों को कर्ण के ऊपर छोड़ा ६० इन अर्जुन के बाणों से विदीर्ण शरीर वह कर्ण ऐसा पीड़ामानहुआ जैसे कि वज्रसे कटाहुआ पर्व्वत पीड़ित होता है और अर्जुन के बाणों से टूटाहुआ इसका सुवर्ण हीरों से जटित प्रकाशमान मुकुट ६१ वा दोनों कुण्डल और बड़े मूल्यवाला बड़े उपायों से अच्छे कारीगरों का बनाया हुआ कवच यह तीनों कटकर पृथ्वी पर गिरे इसके पीछे फिर

क्रोधभरे अर्जुन ने उस कवच रहित खाली शरीरवाले कर्णको चार तीक्ष्णबाणों से छेदा ६२। ६३ फिर शत्रु के हाथसे अत्यन्त घायल वह कर्ण ऐसा अत्यन्त पीड़ामान हुआ जैसे कि वात पित्त कफसे ग्रसित रोगीपीड़ित होताहै उस समय शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने बड़े धनुष मंडलसे निकलेहुये और बड़ेउपाय पूर्व्वक कर्मसे चलाये हुये ६४ बहुतसे उत्तम बाणों से घायल करके मर्मस्थलों को भी छेदा अर्जुन के बड़े वेगवान तीक्ष्ण नोकवाले नानाप्रकार के बाणों से अत्यन्त घायल कर्ण ६५ ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पहाड़ी धातुओं से लालवर्ण का पर्व्वत वज्रों के प्रहारों से रक्तजलों को छोड़ताहुआ शोभित होता है इसके पीछे अर्जुनने सीधे चलनेवाले बड़े दृढ़रूप सुन्दररीतिसे छोड़ेहुये लोहे के यमराज और अग्निके दण्डके समान नौबाणोंसे कर्णको ऐसे छातीपर छेदा जैसे कि अग्नि के पुत्र स्वामिकार्त्तिजी ने क्रौंचपर्व्वत को छेदा था उस समय सूतपुत्र तूणीर को और इन्द्रधनुष के समान उस धनुषको त्यागकर ६६। ६७ रथ के ऊपर अचेत होकर गिरताहुआ नियतहुआ हे प्रभु जिसकी मुट्ठी फैलगईथी और अत्यन्त घायल था तब उत्तम पुरुषों के व्रतमें नियत अर्जुन ने उस आपत्ति में पड़ेहुये कर्ण के मारने को इच्छानहीं की ६८ इसके पीछे इन्द्रके छोटे भाई विष्णुरूप श्रीकृष्णजी भ्रान्तीसे आश्चर्य्य पूर्व्वक उससे बोले कि हे अर्जुन क्या भूलकरताहै पंडितलोग अपने से कमपराक्रमी शत्रुको भी कभी नहीं त्याग करतेहैं मुख्यकर पण्डित लोग भी आपत्तियोंमें शत्रुको मारकर धर्म और यश को पातेहैं सो तुम बिनाविचार कियेही इस अपने प्राचीन शत्रु वीर कर्ण के मारने का उपाय करो ६९। ७० यह समर्थ कर्ण जो आगे आताहै इसको तुम ऐसे छेदो जैसे कि इन्द्रने नमुचि को छेदाथा इसके पीछे सब कौरवों में श्रेष्ठ शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने शीघ्रही श्रीकृष्णजी को मिलकर और पूजन करके कर्ण को ७१ उत्तम बाणों से ऐसा छेदा जैसे कि पूर्व्व समय में सम्बर के मारनेवाले इन्द्रने राजाबलि को छेदाथा हे भरतवंशी फिर अर्जुन ने दन्तवक्रनाम बाणों से कर्ण को घोड़े और रथके समेत ढकदिया ७२ सब उपायों से सुनहरी पुंखवाले बाणों के द्वारा दिशाओं को भी ढकदिया फिर वह बड़े दीर्घ और उन्नत वक्षस्स्थलवाला कर्ण वत्सदन्त नाम बाणों से छिदाहुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि अच्छे २ पुष्पवाले अशोक पलाश शाल्मलि और रक्तचन्दन के वनसे युक्त

पर्व्वत शोभायमान होताहै हे राजा वह कर्ण शरीर में लगेहुये बहुत बाणों से ऐसा शोभायमान हुआ ७३ । ७४ जैसे कि वृक्षोंसे पूर्ण वन अथवा कन्दरा और प्रफुल्लित कर्णिकार के वृक्षोंसे युक्त गिरिराज शोभित होताहै वह बाण जालरूप किरणों का रखनेवाला कर्ण बाणों के समूहों को छोड़ताहुआ ऐसा प्रकाशमान था ७५ जैसे कि अस्ताचल के सन्मुख रक्तमंडलवाला सूर्य्य होताहै अर्जुन की भुजाओंसे छोड़ेहुये तीक्ष्ण नोकवाले बाणोंने दिशाओंको पाकर कर्ण की भुजाओं से छुटेहुये सर्परूप प्रकाशित बाणों को पराजय किया इसके पीछे क्रोध युक्त सर्पों के समान बाणों को छोड़तेहुये उस कर्णने धैर्य्यको पाकर ७६ । ७७ क्रोधयुक्त सर्पकी समान दशबाणों से अर्जुन को और छः बाणों से श्रीकृष्णजी को पीड़ित किया इसके पीछे बड़ा बुद्धिमान अर्जुन कठोर शब्द युक्त सर्प विष और अग्नि के समान लोहे के भयंकर बाणों के फेंकने में प्रवृत्तहुआ हे राजा फिर तो अदृष्टगुप्तरूपकाल ब्राह्मण के क्रोधसे कर्णके मरने को कहनेवाला हुआ ७८ । ७६ कर्णके मरने का समय आनेपर यह वचन बोला कि पृथ्वी रथकेपहिये को निगलती है इसकेपीछे वह महात्मा परशुरामजी के उस दियेहुये अस्त्रकोभी चित्तसे भूलगया ८० हे वीर धृतराष्ट्र उसके मरणका समय आनेपर उसके रथके पहियेको पृथ्वीने पकड़ा तब उस उत्तम ब्राह्मणके शापसे उसका रथ घूमगया ८१ और रथका पहिया पृथ्वीपर गिरपड़ा तब तो वह कर्ण युद्धमें ऐसा व्याकुल चित्त हुआ जैसे कि अच्छेपुष्पवाला वेदिकासमेत चैत्यनाम वृक्ष भूमिमें डूबजाताहै ८२ ब्राह्मणके शापसे रथके घूमने और परशुरामजी से पायेहुये अस्त्रके विस्मरण होनेपर ८३ और अर्जुन के हाथसे सर्प मुख प्रकाशित घोर बाण के गिरने पर उन दुःखों को न सहनेवाला कर्ण दोनों हाथों को कंपायमान करके इसबातकी निन्दा करनेलगा कि धर्मज्ञ लोग सदैव इसबातको कहाकरते हैं कि धर्मकरने वाले का धर्म उस धार्मिक पुरुषकी सदैव रक्षाकरताहै और हम पराक्रमी लोग उनके कहनेके अनुसार विश्वास पूर्व्वक धर्मकरनेमें उपायोंको करते हैं ८४ । ८५ सो मेरी बुद्धिसे वह कियाहुआ धर्म रक्षानहीं करता है किन्तु अवश्यमारताहै भक्तोंकी रक्षा कभी नहींकरताहै यह मैं मानताहूं कि धर्म सदैव रक्षा नहीं करता है इसरीतिसे घोड़े और सारथी से पृथक् और अर्जुनके बाणोंसे अत्यन्त चेष्टावान ८६ और मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल होने से कर्मकरने में शिथिलहो-

कर बारम्बार धर्मकी निन्दाकरी इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी तीनबाणोंसे युद्ध में श्रीकृष्ण जी को हाथपर छेदा और अर्जुनको भी सातबाणों से ८७ इसके पीछे अर्जुनने कठिन वेगयुक्त सीधे चलनेवाले इन्द्र वज्रके समान घोर अग्निके समान सत्तर बाणोंको छोड़ा वह भयानक वेगवाले बाण उसको छेदकर पृथ्वी पर गिरपड़े ८८ तदनन्तर अपने शरीरको कम्पायमान करतेहुये कर्णने अपनी सामर्थ्यसे चेष्टाको दिखाया फिर बलसे अपनेको साधकर ब्रह्मास्त्रको प्रकटकिया फिर अर्जुनने भी उस अस्त्रको देखकर ऐन्द्रास्त्रके मन्त्रको पढ़ा ८९ फिर उस शत्रुके तपानेवाले ने गांडीवधनुष प्रत्यंचा और बाणपर मन्त्रको पढ़कर बाणों की ऐसी वर्षाकरी जैसे कि इन्द्र जलकी वृष्टिको करताहै ९० इसकेपीछे अर्जुन के रथसे निकले हुये तेजरूपी पराक्रमी बाण कर्णके रथके समीपजाकर प्रकट हुये ९१ फिर महारथी कर्णने अपने छोड़े हुये बाणों से उन बाणों को निष्फ-ल करदिया इस पीछे उस अस्त्रके दूरहोनेपर वह वृष्णी वीर श्रीकृष्णजी बोले ९२ हे अर्जुन तू परमअस्त्र को छोड़ क्योंकि कर्ण बाणोंको निष्फल करदेता है इस केपीछे ब्रह्मास्त्रके उग्रमन्त्रकोपढ़कर बाणको धनुषपर चढ़ाया ९३ और कर्णको बाणों से ढककर उसपर फिर बाणों को फेंका तबकर्णने सुन्दर वेतवाले तीक्ष्ण बाणों से उसकी प्रत्यञ्चाको काटकर पहली दूसरी तीसरी चौथी पांचवीं छठी सातवीं आठवीं नौमी दशवीं ग्यारहवीं प्रत्यंचाको काटा परन्तु वह कर्ण उसह-जारों प्रत्यंचा चढ़ानेवाले को नहीं जानताथा ९४। ९५ तदनन्तर अर्जुन ने दूसरी प्रत्यंचाको धनुषपर चढ़ाकर मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर सर्पों की समान प्रकाशित बाणों से कर्णको ढकदिया ९६ कर्णने उसकी प्रत्यंचाके टूटने और चढ़ाने को हस्तलाघवता के कारण नहीं जाना यहभी आश्चर्य्य सा हुआ ९७ फिर कर्णने अपने अस्त्रोंसे अर्जुनके अस्त्रोंको रोककर घायलकिया और अप-ने पराक्रमको अच्छा दिखाकर उसने अर्जुनसेभी अधिककर्मकिया ९८ इसके पीछे श्रीकृष्णजी कर्णके अस्त्रसे अर्जुन को पीड़ामान देखकर बोले कि चलो अन्यबाणों को प्रेरित करके चलाओ ९९ इसकेपीछे शत्रुसन्तापी अर्जुन अ-ग्नि की समान घोर सर्पके विषके समान लोहेके दिव्य बाणोंको अभिमन्त्रित करके १०० रुद्रअस्त्रको चढ़ाकर छोड़ने को उपस्थित हुआ हे राजा उसीसमय पृथ्वी ने कर्णके रथ चक्रको निगला १०१ इसकेपीछे उस सावधानकर्णने शीघ्र

रथसे उतरकर दोनों भुजाओंसे चक्रको पकड़कर पृथ्वीसे निकालनाचाहा १०२ वह सप्तद्वीपा वसुन्धरा रथचक्रको निगलने वाली पृथ्वी पर्व्वत वन नदी और समुद्रों समेत कर्णके हाथसे चार अंगुल ऊंचीउठआई परन्तु पहिया न छूटा तब तो कर्णने क्रोधकर के अश्रुपातों को डाला और अर्जुन को क्रोधयुक्त देखकर यह वचन बोला १०३।१०४ हे बड़े धनुषधारी अर्जुन मैं जबतक इस पृथ्वी में गड़ेहुये चक्रको न निकाललूं तबतक क्षणभरके लिये शस्त्रफेंकनेको रोको १०५ हे अर्जुन दैवयोगसे इसमेरे वामरथके चक्रको पृथ्वी में गड़ाहुआ देखकर नपुंसकों के युद्ध को त्यागकरो १०६ हे कुन्तीनन्दन तुम नपुंसकों के समान अथवा नपुंसकों के मतपर चलनेके योग्य नहीं हो क्योंकि युद्धकर्म में बड़ेनामी प्रसिद्धहो १०७ हे पाण्डव तुम गुणोंसे भरेहुये कर्म करनेकेयोग्य हो जो शूरवीर लोग कि साधुओं के व्रतमें नियतहैं वह केशों के फैलानेवाले १०८ शरणागत होनेवाले अस्त्रों के त्यागनेवाले अथवा प्रार्थना करनेवाले वा बाण न रखनेवाले कवच से रहित और टूटे शस्त्रवाले पर १०९ अपने शस्त्रों को नहीं छोड़ते हैं हे पांडव तुम लोकमें बड़े शूरवीर साधुव्रतवाले ११० युद्धके धर्म्मोंको उत्तम रीतिसे जाननेवाले यज्ञान्तमें अमृत स्नान करनेवाले दिव्यअस्त्रों के ज्ञाता महासाहसी युद्ध में सहस्राबाहुके समान हो १११ हे महाबाहो जबतक मैं इस गड़ेहुये पाये को न निकाललूं तबतक तुम रथपर सवार होकर पृथ्वीपर नियत मुझ व्याकुल चित्त के मारनेको योग्य नहीं हो ११२ हे अर्ज्जुन मैं तुझसे और वासुदेवजी से नहीं डरताहूं और तुम क्षत्री के पुत्र और बड़े वंशके बढ़ानेवाले हो ११३ इस हेतु से तुमसे मैं कहताहूं हे पांडव एकमुहूर्त्त तक ठहरजाओ ११४॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णरथचक्रग्रसनंनामएकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

बानबेका अध्याय॥

चौ० समय देखि ह्वै व्याकुल मनमें। रथ बिनुचले कर्ण तेहि क्षनमें॥
धनुरथ पै धरि वीर उतरिकै। चारु चक्रयुत करसों धरिकै॥
लगो उठावन सुनु महिसाईं। अचरज कियो कर्ण तेहिठाईं॥
गिरि सागर कानन सह धरनी। रथ के संग उठाई अवनी॥
अंगुलचारि प्रमाण उठायो। सुरगणके मन विस्मय छायो॥

छुटो न रथ तब कर्ण विलखिकै। सजलनयनभोइत उतलखिकै॥
करि शरवृष्टि पार्थ तेहि क्षनमें। बहु शर हने कर्ण के तनमें॥
तिनसों कर्ण महा दुखपायो। पारथ को इमि टेरि सुनायो॥
हे हे पार्थ कहा अघ धारो। बाण वृष्टि क्षण एक निवारो॥
ग्रसित चक्र धरणी ते जबलौं। मैं काढ़ौं तू थिर रहु तबलौं॥
बिना शस्त्र पहँ तजिबो शायक। उचितनतुम्हैंविदितभटनायक॥

दो० नहिं कृष्णहिं नहिं तुमहिं हम भीति कहत ये वैन।
तुमसे क्षत्रिहि धर्म को तजिबो सोहत हैन॥
जौलगि चक्र छुड़ाइ हम नहिं पकरैं धनुबान।
पारथ तौ लगि करिक्षमा बहुरि करौ मनमान॥

जयकरीछन्द॥

तहां कर्ण के सुनि यह वैन। कहत भये केशव मतिऐन॥
तुम दुर्य्योधन शकुनि कराल। कबकीन्हे सुधरम प्रतिपाल॥
भीमसेन कहँ जहर खवाय। सांपनसों दीन्हों कटवाय॥
करिकै मंत्र नाश अभिलाखि। इन कहँ लाक्षागृहमें राखि॥
निशिमें दाह करायो पूर्व्व। तब कित रह्यो धर्मव्रत गूर्व्व॥
किये सभामें कुकरम जौन। अबनहिंकहतबनतसबतौन॥
तेरहें वर्ष बांटि महि लेन। किये करार न चाहे देन॥
तब कितगयो धरमको काम। अबलखिपरा धरम अभिराम॥
विरथ विधनुष अकेलो बार। पार्थसुतहि वधि षट्धनुधार॥
अति अनन्द लहिभये अभर्म। अब चाहत करवावो धर्म॥
अब तो वध करिबो यहियाम। है पारथको धर्म ललाम॥
केशवके यह वचन अनूप। सुनि सूतज ह्वै लज्जित रूप॥
फिरि रथपरचढ़ि गहि कोदण्ड। वर्षन लागो बाण उदण्ड॥
भरो क्रोध लाघव दरशाय। दये पार्थ पहँ शायक छाय॥
सो लखिकै केशव अनुमानि। कहे पार्थ सों अवसर जानि॥
दिव्य शरन सों बेधि सठौर। अबयहि शीघ्रवधौ करिगौर॥

दो० केशव के यह वचन सुनि पारथ धनुटंकारि।

वर्षन लागो कर्ण पहँ दिव्य अस्त्र पण धारि ॥
करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहि क्षण कर्ण प्रयोग ।
पारथतजिब्रह्मास्त्र तेहि शमितकियो करियोग ॥
ताहि क्षमित करि तजतभो दइत अस्त्रसो वीर ।
वारुणास्त्रसों तेहि शमित कियो कर्ण रणधीर ॥
घनतमसों छादित दिशा देखि पार्थ करिकोप ।
कियो अस्त्र वायव्य सों वारुणास्त्रको लोप ॥
सो० सो लखिकर्ण अमान परम दिव्य शरगहतभो ।
करि अद्भुत संधान तज्यो देखि डरपे सुमन ॥
वज्र सरिससो बान तासुभुजा तर मधि लगो ।
भिदितासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट ॥
चौ० महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । रथ ते उतरि कर्ण गुनिमनमें ॥
हर्ष विषाद क्रोधसों पागो । बलकरि सुरथ उठावन लागो ॥
कृष्णचन्द्र सो समय निरेषी । पारथ सों बोले अवरेषी ॥
रथचढ़ि गहै धनुष शर जौलौं । कर्णहिं पार्थवधौ तुम तौलौं ॥
कृष्णचन्द्र की वाणी सुनिकै । पारथ मन्त्र यथारथ गुनिकै ॥
तीक्षण शर क्षुरप्र करलीन्हो । तासों केतु काटि द्वै कीन्हो ॥
फिरिअमोघआञ्जलिकसुशायक । गह्योपार्थ भटधनुधरनायक ॥
चक्र त्रिशूल वज्र सम घोरा । कालदण्ड सम कठिन कठोरा ॥
प्रलयकाल के भानु समाना । वायुअग्निसम दुसहअमाना ॥
भरि आंगिरस मंत्रकी पुरता। करिअतिअगणितगौरवगुरता॥
सबदिशि हेरि क्रोधसों राता । बोलो पार्थ वीर रस माता ॥
अब हनि यह शर गौरवभखो । कर्णहिं वधि डारत शर देखो ॥
इमिकहि पारथ तेहि शर वर सों। काट्यो शीश कर्ण के धरसों ॥
मार्त्तण्ड सम परम प्रभाको । महिपर गिरो शीश कटिताको ॥
तदनु गिरो धरतजि बल गारो । सरस सुखोचित सुखमाभारो ॥
मणिमय भूरि भूषणनि छाजित। महिपर भयो कर्ण भट राजित ॥
दो० सबके देखत तहँभयो अद्भुत अति अमलीन ।

तेज कर्णकी देहसों कढ़िभो रवि में लीन ॥
इहिविधि कर्णको वध निरखि केशव पाण्डव सर्व।
लगे बजावन शङ्ख अति आनँद भरे सगर्व ॥
गरजि गरजि सोमक सकल अरु पांचाल समस्त।
सानँद बजवावन लगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥
नृप तहँ ममदल मधिबढ़ो हाहा धुनि गम्भीर।
भागिचले भट विकल ह्वै तजिबल गौरव धीर ॥

इन पद्योंके गद्य आशय में ॥

संजय बोले कि रथ पर चढ़ेहुये वासुदेवजी उससे बोले हे कर्ण अब यहां तू धर्मको याद करताहै आपत्तिमें डूबेहुये नीचलोग बहुधा ईश्वरकी निन्दाकिया करतेहैं परन्तु अपने दुष्ट कर्म को नहीं कहते १ हे कर्ण जब दुश्शासन शकुनि दुर्य्योधन और तुमने एक वस्त्र रखनेवाली द्रौपदी को सभामें बुलाया तब वहां तुमको धर्म नहीं दिखाई दिया २ जब शकुनी ने विद्याके द्वारा द्यूतकर्म न जाननेवाले राजा युधिष्ठिर को अधर्मसे सभामें विजयकिया तब तेरा धर्मकहां गया था ३ हे कर्ण वनवास के व्यतीत होनेपर तेरहवें बर्षको भी पाकर आधा राज्य नहीं दिया तब तेरा धर्म कहांगयाथा ४ जब राजा दुर्य्योधन ने तेरे मतसे भीमसेन को सर्पों से और विषमिले अन्नखवाने से मारना चाहा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ५ जब कि वारणावत नगर में लाक्षागृह में सोतेहुये पाण्डवों को अग्निसे जलाया तब तेराधर्म कहांगयाथा हेकर्ण जब सभामें बैठकर दुश्शासनके आधीन हुई द्रौपदी को हँसा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ६। ७ हेकर्ण जबपूर्व्व कालमें नीचों से दुखित निरपराधिनी द्रौपदी को त्याग करताथा तब तेरा धर्म कहां गयाथा ८ जब द्रौपदीसे तैंने यह कुत्सित अभद्र वचनकहे थे कि हे कृष्णा पाण्डवोंका नाश होगया और सनातन नरकमेंगये तुम दूसरे पतिको वरो उस हाथीके समान चलनेवाली को ऐसे दुर्वाक्य कह २ कर त्यागताथा ६ तबतेरा धर्म कहां गयाथा हेकर्ण फिर जब तैंने शकुनी से मिलकर राज्यका लोभीहोकर पाण्डवों को बुलाते बालक अभिमन्यु को मारा तब तेराधर्म कहांगयाथा १०।११ जो यह धर्म तैंने धारण नहीं किया था तो अब गालबजाने से क्या लाभ है हे सूत अब चाहे जितना तू धर्म वर्णनकर परन्तु जीते नहीं बचसक्ता जैसे कि द्यूतमें

अपने भाई पुष्करसे हारेहुये पराक्रमी नलने भाईको विजय करके फिर राज्यको पाया १२ । १३ उसीप्रकार निर्लोभ होकर सबको जीतकर पाण्डवोंने भी अपनी भुजाओं के बलसे राज्यको पाया इन पाण्डवों ने युद्धमें बड़े बड़े वृद्धियुक्त शत्रुओंको सोमकों समेत अनेक पराक्रमोंसे मारकर राज्यको पाया और धर्मधारी नरोत्तमों समेत दुष्टात्मा धृतराष्ट्र के पुत्रोंने पराजयको पाया १४ संजय बोले कि हे भरतवंशी वासुदेवजी के ऐसे ऐसे वचनों को सुनकर कर्ण ने १५ लज्जा से नीचा शिर करके कुछ उत्तर नहीं दिया और क्रोधसे होठोंको चाट हाथमें धनुष लेकर १६ उस पराक्रमी वेगवान ने फिर अर्जुन से युद्धकिया इसके पीछे वासुदेव जी पुरुषोत्तम अर्जुन से बोले १७ कि हे महाबली अब इसको दिव्य अस्त्र से छेदकर गिराओ श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनतेही अर्जुन क्रोधयुक्त हुआ अर्थात् अर्ज्जुन उन पूर्व्व बातों को स्मरण करके महाक्रोधित हुआ हे राजा तब तो उस क्रोधभरे अर्जुनके सब शरीरके छिद्रों से तेजकी अग्नियां प्रकटहुईं १८ । १६ यह बड़ा आश्चर्य्य सा हुआ इसके पीछे कर्ण उसको देखकर २० ब्रह्मास्त्र से बाणों की वर्षा करनेलगा फिर रथको पृथ्वी से निकालने का उपाय किया तब अर्जुन भी ब्रह्मास्त्र से उसपर बाणों की वर्षा करनेलगा २१ फिर पाण्डवने कर्ण के अस्त्र को अपने अस्त्रसे रोककर दूरकिया तब कुन्तीनन्दनने अग्निके अति प्रिय दूसरे अस्त्रको २२ कर्ण को लक्ष बनाकर छोड़ा वह अस्त्र तेज से देदीप्य हुआ फिर कर्ण ने वारुणास्त्र से उसकी अग्नि को शान्त किया २३ और बादलों से सब दिशाओं को अंधकार युक्त करके दिन को अशुभरूप करदिया फिर बड़ी सावधानीसे अर्ज्जुनने वायव्यास्त्रसे २४ बादलों को कर्णके देखतेहुये दूर करदिया इसके पीछे सूतके पुत्रने पाण्डवके मारनेकी इच्छासे अग्नि के समान महा प्रज्वलित उग्रबाणको अपने हाथमें लिया तदनन्तर अपने पूजित धनुषमें उसबाणके योजितकरने पर २५ । २६ पर्वत वन समुद्रोंसमेत पृथ्वी कम्पायमानहुई और कंकड़ पत्थरोंसे मिलेहुये पवन बड़े वेगसेचले सब दिशा विदिशा धूलीसे मंडित होगईं २७ और हे भरतवंशी स्वर्गमें देवताओं का हाहाकार उत्पन्नहुआ हे श्रेष्ठ कर्णके हाथ में चढ़ायेहुये उस बाणको देखकर २८ अर्ज्जुन ने चित्तमें दुखपाकर बड़ी व्याकुलता को पाया कर्णकी भुजासे छोड़ाहुआ वह इन्द्रवज्रकी समान तीक्ष्ण नोकवाला बाण अर्ज्जुन की भुजा में आकर ऐसे

प्रवेशित होगया जैसे कि सर्प अपनी उत्तमबामी में प्रवेशकरजाताहै २९ युद्धमें वह शत्रुओंका मारनेवाला अर्ज्जुन अत्यन्त घायलहोकर बड़ा सुस्तहोकर ऐसे कम्पायमानहुआ जैसे कि बड़े भूकम्प होनेसे उत्तम पर्व्वत कम्पायमान होताहै उस अवकाश को पाकर पृथ्वी में गड़ेहुये अपने रथके पहियेको निकालने की इच्छासे महारथी कर्णने ३०। ३१ रथसे कूदकर अपने दोनों हाथों से पहियेको पकड़कर खैंचा परन्तु वह महा पराक्रमी भी उसके निकालने को समर्थ नहीं हुआ उसके पीछे अर्जुन ने सचेत होकर यमराजके दंडकी समान बाणको हाथ में लिया ३२ अर्थात् महात्मा अर्जुन ने आञ्जुलिकनाम बाणको हाथमेंलिया इसके पीछे वासुदेवजी अर्जुनसे बोले कि जबतक यह कर्ण रथपर सवार न होने पावे तबतक तुम इस अपने बाणसे अपने शत्रुके शिरको काटो ३३ इसके पीछे अर्जुन ने अपने प्रभुकी आज्ञापाकर महातीव्र प्रज्वलित उग्रक्षुरप्रको लेकर प्रथम तो सूर्य के समान निर्मल अत्यन्त उत्तम हाथीकी कक्षा रखनेवाली सुवर्ण हीरे मोतियों से जटित अच्छे कारीगरोंकी बनाईहुई सुन्दररूप स्वर्णमयी ३४। ३५ सदैव आप की सेना के विजय का स्थान शत्रुओं को भयभीत करनेवाली स्तुतिमान लोक में सूर्य्य के समान प्रसिद्ध और क्रान्ति में सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निके समान ३६ लक्ष्मी से ज्वालामान महारथी कर्णकी ध्वजाको अर्ज्जुन ने अत्यन्त तीक्ष्ण सुनहरी पुंखवाले अग्निके समान प्रकाशमान क्षुरप्रसेकाटा३७ और उस ध्वजाके कटने से कौरवों के यश अभिमान और सब मनके मनोरथों सहित हृदय टूटगये और महा हाहाकार शब्दहुआ ३८ हे भरतवंशी उससमय जो २ आपके युद्धकर्त्ता शूरवीरथे उनसबोंने और कौरवोंके बड़े २ वीरोंने अर्जुन के हाथ से काटी और गिराई ध्वजाको देखकर कर्ण के विजयी होने की आशा छोड़दी ३९ फिर कर्णके मारने में शीघ्रता करनेवाले पाण्डव अर्ज्जुन ने महा इन्द्रके वज्र वा अग्निके दण्ड की समान हजार किरण रखनेवाले सूर्य्यकी उत्तम किरणके समान आञ्जुलिक नाम बाणको अपने तूणीर से निकाला ४० वह मर्मभेदी रुधिर मांससे लिप्त अग्नि सूर्य्य के रूप बड़ोंके योग्य मनुष्य घोड़े और हाथियों के प्राणों का हरनेवाला तीन अर्त्तिनी लम्बा (अर्त्तिनी किसी नपाने की संज्ञाहै) छःपक्ष रखनेवाला सीधा चलनेवाला महा वेगयुक्त ४१ इन्द्रवज्र के समान पराक्रमी कालकाभी काल अग्नि की समान बड़ा घोर पिनाक धनुष

और नारायणजी के सुदर्शन चक्र की समान भयकारी और जीवमात्र का नाश करनेवाला था ४२ जो देवगणों से भी हटाने के अयोग्य महात्माओं से सदैव पूजित देवासुरों का भी विजय करनेवाला था उसको अर्जुन ने अपने हाथमें लिया ४३ युद्धमें उस अर्जुनसे पकड़ेहुये उस बाणको देखकर सब जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवों समेत सब जगत् कंपायमान हुआ अर्जुन को उस बाण को उठाये हुये देखकर ऋषि लोग पुकारे कि संसारका कल्याण हो ४४ इसके पीछे उस गांडीव धनुषधारी ने उस अचिन्त्य प्रभाववाले बाणको धनुष में लगाया और उत्तम महाअस्त्रसे संयुक्त कर गांडीव धनुष को खैंचकर शीघ्रतासे बोला ४५ यह महाअस्त्र से संयुक्त बड़ाबाण शत्रुके शरीर और प्राणोंका हरनेवालाहो जो मैंने तपस्या करी है वा गुरुओंको प्रसन्न करके यज्ञोंको किया है और शुभचिन्तक मित्रों की आज्ञा को मानाहै ४६ इससत्यता से सेवित यह कठिन और उग्र बाण मेरे बड़े शत्रु कर्ण के शिरको काटो यह कहकर अर्जुनने उसघोर उग्रबाणको कर्णके मारने को छोड़ा ४७ और अत्यन्त प्रसन्न मन अर्जुन यह कहता हुआ कि यह अथर्व नगरसे कृत्याके समान उग्रप्रकाशित और युद्धमें मृत्युसे भी असह्यरूप बाण मेरी विजय का करनेवाला हो ४८ कर्ण के मारने का अभिलाषी सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रभाववाला अर्जुन यह बोला कि मेरा चलायाहुआ बाण कर्णकोमारकर यमपुरको भेजे यहकहकर मारनेके इच्छावान शस्त्रधारी अत्यन्त प्रसन्नचित्त अर्जुन ने उस उत्तम विजय करनेवाले ४९ सूर्य्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित बाणसे चक्रके उठाने में प्रवृत्त शत्रुको मारना चाहा तब उस छोड़ेहुये सूर्य्यकी समान प्रकाशमान बाणने आकाश और दिशाओंको अग्निरूपकिया ५० फिर इन्द्रके पुत्र अर्जुनने दिनके समाप्त होनेपर उसबाण से उसके शिरको ऐसे काटा जैसे कि महाइन्द्रने अपने वज्रसे वृत्रासुर के शिरको काटाथा ५१ इसके पीछे आञ्जुलिकसे कटाहुआ उसका शिर गिरपड़ा तदनन्तर उसका धड़ भी गिरपड़ा वह उदयमान सूर्य्य के समान तेजस्वी आकाशस्थ ऐसे सूर्य्यके समानथा ५२ उसका शिरकटकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि रक्त मण्डलवाला सूर्य्य अस्ताचल से गिरताहै तदनन्तर इसमहाकर्मी के सदैव सुखके योग्य सुन्दर शिरने अपने शरीर के रूपको बड़े कष्टसे ऐसे त्याग किया जैसे कि बड़ा धनवान अपने धन से पूर्ण घर को बड़े दुःखों से

त्यागता है उस बड़े तेजस्वी कर्ण का उन्नतशरीर बाणों से भिदाहुआ निर्जीव होकर बाणों के घावोंसे रुधिर गिराताहुआ ऐसे गिरपड़ा ५३ । ५४ जैसे कि वज्र से घायलहोकर पर्व्वतका बड़ाशिर रक्तधातु से युक्तजल को छोड़ता गिरताहै उसगिरेहुये कर्णके शरीरसे निकलाहुआ तेज आकाशको व्याप्तकरके सूर्य्यमें प्रवेशकरगया ५५ कर्णके मरनेपर सब शूरवीर युद्धकर्त्ता मनुष्यों ने इस आश्चर्य्यको देखा इसकेपीछे अर्जुनके हाथसे गिरायेहुये कर्णको देखकर पाण्डवों ने ऊंचेस्वरों से शंखों को बजाया ५६ इसीप्रकार प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुन नकुल और सहदेवने भी शंखों को बजाया फिर सोमकोंने उस मरेहुये कर्णको पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखकर सेनाओं समेत शंखोंके नादकिये ५७ और अत्यन्त प्रसन्नहोकर तूरीआदि अनेक बाजों को भी बजवाया और वस्त्रों को हला २ कर अपनी भुजाओं को ठोका और अत्यन्त प्रसन्न आशीर्वादों को देतेहुये अर्जुनके पासगये ५८ और अन्य२ शूरवीर लोग भी अर्जुन के हाथसे मराहुआ रथसे पृथ्वीमें पड़ा हुआ कर्णको देखकर ५९ नृत्य करनेलगे और परस्पर में गर्जना पूर्व्वक ऐसी वार्त्तालापें करनेलगे जैसे कि कठिन वायुके वेग से घायल पर्व्वत होतेहैं उस समय वह कर्णका पृथ्वीपर पड़ाहुआ शिर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि यज्ञके अन्तमें शान्तहुई अग्नि अथवा जैसे कि अस्ताचलपर पहुँचाहुआ सूर्य्यका विम्बहोताहै ६० वह सूर्य्यके समान तेजस्वी युद्धमें पाण्डवों की सेनाको अपनी बाणरूपी किरणोंसे अच्छी रीति से तपाकर अन्तको अर्जुनरूपी कालके द्वारा अस्त होगया ६१ सब अंगों में बाणों से छिदा रुधिर में भराहुआ कर्ण का शरीर ऐसा प्रकाशित था जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणों से शोभित होताहै ६२ वह कर्णरूपी सूर्य्य किरणों से शत्रुओं की सेनाको संतप्त करके महा पराक्रमी अर्ज्जुनरूपी कालके वशीभूत होगया ६३ जैसे कि सूर्य्य अस्त होताहुआ प्रकाश को लेकर जाताहै इसीप्रकार वह बाण कर्ण के जीवन को लेकरगया ६४ हे श्रेष्ठ दिवस के अन्तभागमें कर्ण के मरने के दिन कर्ण का शिर शरीर समेत आञ्जुलिक बाण से जब युद्धभूमिमें गिरा तब उस बाणने भी सेनाओं से पृथक् अर्जुन के शत्रु का वह शिर शरीर समेत शीघ्रता पूर्व्वक अपने वेगसे हरलिया ६५ फिर उस शूर वा बाणों से छिदेहुये रुधिरसेलिप्त पृथ्वीपर गिरकर शयन करनेवाले कर्ण को देखकर राजा

युधिष्ठिर ध्वजावाले रथकी सवारी से चला ६६ और कर्ण के मरनेपर भयसे पीड़ित युद्धमें अत्यन्त घायलहुये कौरव बारम्बार अर्जुन के क्रोधरूपी मुख को देखतेहुये अचेत हो होकर भागे ६७ इन्द्रके समान कर्म करनेवाले कर्णका शिर जो कि इन्द्रकेही शुभ मुखके समानथा वह ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ा जैसे कि दिन के अन्तमें सहस्रांशु सूर्य्य अस्त होजाताहै ६८ ॥

सो० कर्ण अग्निकी शान्ति युद्धयज्ञके अन्तलखि ।
आवत भयो अकान्ति सरथशल्य अध्वजविकल ॥
दुर्य्योधन क्षितिपाल कर्ण सखा को वध निरखि ।
तजत नयन जलधार महाराज अति विकल भो ॥
पूरित मोद महान करिकरि धनु टंकार अति ।
भीमसेन बलवान गरजिगरजि निरतत भयो ॥
शल्य नृपति पहँ आय सकल व्यवस्था कहत भो ।
सुनि तो सुत क्षितिराय रुदन कियो अति दीनह्वै ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि अर्जुन के हाथसे कर्ण के मरनेपर राजा शल्य सेनाको भयभीत और पीड़ामानरूप देखकर अपने साथी अधिरथी कर्ण के मरनेपर टूटे सामानवाले रथकी सवारी के द्वारा चलदिया १ अर्थात् राजाशल्य कर्ण और अर्जुनके युद्धमें बाणोंसे घायल और म्लानचित्त सेनाओंको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर टूटे सामानवाले रथकी सवारी से चला २ जिसके रथ घोड़े और हाथी गिराये गये वह सेनापति कर्ण भी मारागया उस सेनाको देखकर अश्रुपातों से पूर्ण महादुखित पीड़ामानरूप दुर्य्योधन ने बराबर श्वासों को लिया ३ फिर पृथ्वीपर गिरे बाणों से छिदेहुये रुधिरमें भरे दैवइच्छासे सूर्य्य के समान प्रतापी पृथ्वीपर नियत कर्ण के देखने के अभिलाषी मनुष्य कर्ण को चारोंओर से घेरे हुये ४ अत्यन्त भयभीत व्याकुल चित्त आश्चर्य्य युक्त होकर शोकसे पीड़ामान हुये इनके सिवाय आपके और सब शूरवीर भी परस्पर में वैसीही दशाको प्राप्तहुये जैसे प्रकार का कि उनका स्वभावथा ५ कौरवलोग बड़े तेजस्वी

कर्ण को अर्जुन के हाथसे टूटे कवच भूषण वस्त्र और शस्त्रों से रहित देखकर और मृतक सुनकर ऐसे भागे जैसे कि निर्जनवनमें मृतक बैलवाली गौवें भागती हैं ६ तब भीमसेन भयानक शब्दों से गर्जना करके पृथ्वी और आकाश को कम्पायमान करता भुजाओंको ठोकताहुआ गर्ज २ कर उछला और कर्ण के मरनेपर धृतराष्ट्रके पुत्रोंको भयभीत करता नृत्य करनेलगा ७ हे राजा इसी प्रकार सब सोमक और सृञ्जियों ने शंखोंको बजाकर एक एकसे प्रीतिपूर्व्वक मेल न किया और अन्य क्षत्रीलोग भी कर्ण के मरनेपर परस्परमें प्रसन्नरूप हुये ८ सूतपुत्र कर्ण अर्जुनसे महाघोर युद्ध करके ऐसे मारागया जैसे कि केसरी सिंहके हाथसे हाथी माराजाताहै पुरुषोत्तम अर्जुनने अपनी प्रतिज्ञाको पूर्णकरके शत्रुता के अन्तको पाया ९ हे राजा फिर व्याकुलचित्त मद्रदेशके राजाशल्यनेभी शीघ्र ही ध्वजारहित रथकी सवारी के द्वारा दुर्य्योधन के पास जाकर अश्रुपात डालकर यह वचन कहा १० कि आपकी सेना परस्परमें सन्मुख होकर गिरेहुये हाथी रथ घोड़े वा बड़े २ शूरवीरोंवाली यमराज के देशकी समान और बड़े २ मनुष्य और घोड़े पर्व्वत के शिखरके समान हाथियों से मारेगये ११ हे भरतवंशी यह सबतो लड़े और मरे परन्तु ऐसायुद्ध कोई नहीं हुआ जैसा कि कर्ण और अर्जुनका हुआहै कर्णने सन्मुख होकर श्रीकृष्ण अर्जुन को और अन्य बड़े बड़े तेरे शत्रुओंको अपने स्वाधीन किया १२ निश्चय करके पाण्डवों की रक्षाकरने वाला दैवही अर्जुन के आधीन होकर कर्मकर्त्ता है जो पाण्डवों को बचा २ कर हमलोगों को मारताहै तेरे मनोरथ सिद्ध करनेवाले सब शूरवीर युद्धकरके शत्रुओं के हाथसे मारेगये १३ हे राजा वह उत्तमवीर कुबेर यमराज और इन्द्रके समान प्रभाववाले और पराक्रम बल और तेजमें भी इन्हीं देवताओं के समान नानाप्रकारों के गुणोंसे युक्त होकर अवध्यों के समान तेरे अभीष्टों के चाहनेवाले राजालोग युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारेगये १४ हे भरतवंशी सो तुम अब शोच मतकरो यह होनहारहै निश्चय समझो कि सदैव किसीकी विजय नहीं होती राजा शल्यके इस वचनको सुनके और अपने अन्यायको विचार १५ महा दुखीचित अचेत और पीड़ितरूप दुर्य्योधनने बारम्बार श्वासाओंको लिया १६ ॥

इति ॥

१. चौ० नृप धृतराष्ट्र वचनयहसुनिकै । संजय सों बूझै शिर धुनिकै ॥

संजय कहौ दशालहि ऐसी। ममसुत भूपगही गति कैसी॥
संजय कह्यो सुनो नरनायक। तेहिपल तो भटभयेअचायक॥
पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि वधिकै। अबहमसबकहँ वधववरधिकै॥
भीमसेन बिनु वधे न छांड़िहि।कोअससुभटताहिजोआड़िहि॥
यह विचार अतिशय भय पागे। साहस छोड़ि भूरि भटभागे॥
नृप तेहिक्षण मम भटभे तैसे। बूड़े नाव बणिक जन जैसे॥
लखि यह दशा भूप दुर्य्योधन।निजचखजलकोकरिअवरोधन॥
गुणि दुखगहे हारि यहि क्षनमें। तो सुत भूप धीर धरि मनमें॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधेत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३॥

चौरानबेका अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले कि रुद्ररूप कर्णऔर अर्जुन के युद्धमें दग्धरूप बाणों से मथित और भागेहुये कौरव और सृंजियों की सेनाके लोगोंका रूप कैसा हो गया १ संजय बोले कि हे राजा सावधान होकर सुनों जैसे कि युद्धभूमि में मनुष्योंके शरीरोंका अत्यन्त घोर नाश वा राजाओंकी हानि होजाने और कर्ण के मरनेपर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ाभारीभय उत्पन्न हुआ २। ३ कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी भी सेनाओं की चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम करनेके साहस की बुद्धि नहीं हुई ४ जैसे कि नौका रहित अथाह जल में नौकाके टूटनेपर व्यापारीलोग अपार जलके पारहोनेकीइच्छा रखनेवाले होते हैं उसीप्रकार अर्जुनके हाथसे सेनापति कर्णके मरनेपर आपके लोग रक्षाके चाहनेवाले हुये ५ हे राजा सूतपुत्र के मरनेपर भयभीत शस्त्रों से घायल आपके अनाथ लोग नाथके ऐसे चाहनेवाले हुये जैसे कि सिंहों से पीड़ामान मृग टूटी शाखावाली बेल औरटूटी डाढ़वाला सर्प रक्षाको चाहतेहैं६ सायङ्काल के समय अर्जुन से पराजित मृतकवीरवाले तीक्ष्ण बाणोंसे घायल होकर लोग हटआये ७ हे राजा कर्ण के मरतेही यंत्र वा कवचों से रहित अचेत भयभीत ८ और परस्पर में मर्द्दन करनेवाले और भयसे व्याकुल होकर देखने वाले आपके पुत्र महाभयातुर होकर भागे और यह निश्चय जानकर कि अर्जुन हमारे ही सन्मुख आताहै वा भीमसेन हमारेही मारने को सूलाहै ९ यह

मानते हुये महा व्याकुलतासे गिरकर मृतक प्रायहोगये किसीमहारथी ने घोड़ों पर किसीने हाथियोंपर किसीने रथोंपर १० चढ़कर बड़े वेग से भयभीत होकर अपने २ पदातियोंको त्यागकिया हाथियोंसे रथ महारथियोंसे अश्व सवार ११ और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारेगये जैसे कि सर्प और चोरोंसे भरेहुये वनमें अपने संगके लोगों से पृथक्होकर मनुष्यों की जो दशा होती है १२ हेराजा उसीप्रकार कर्णके मरनेपर आपके शूरवीरोंकी भी वही दशाहुई अथवा जैसे कि मृतक सवारवाले हाथी और टूटे हाथवाले मनुष्य होते हैं १३ इसी प्रकार आपके सब मनुष्य संसार भरेकोही अर्जुन रूप देखतेहुये भयसे पीड़ामान हुये भीमसेन के भयसे पीड़ित होकर भागताहुआ सबको देखकर १४ और उन हजारों शूरोंको भी भागते देखकर दुर्योधनने बड़ा हाहाकारकरके फिर अपने सारथी से यह वचनकहा १५ कि अर्जुन सबसेनाके मारने को मुझ धनुषधारी के होतेहुये नहीं आसक्ताहै इससे तुमलोग अपने २ घोड़ोंको रोको १६ मैं निस्सन्देह उस युद्धकरनेवाले अर्जुनको अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लंघन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्याद नहीं उल्लंघन करसक्ता है १७ अब मैं श्रीकृष्ण जी समेत अर्जुन को वा बड़े अहङ्कारी भीमसेनको और इसी प्रकार सब बाकी बचेहुये शत्रुओं को मारकर कर्ण के ऋण से उद्धार हूंगा १८ सारथी ने कौरवों के राजा दुर्य्योधन के उस वचनको जो कि शूर और श्रेष्ठ लोगोंके कहने के समानथा सुनकर सुवर्ण के सामानों से आच्छादित घोड़ोंको बड़े धीरेपने से चलायमान किया १९ हे श्रेष्ठ फिर रथघोड़े और हाथियोंसे रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धकेनिमित्त नियतहुये २० फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नने चतुरङ्गिणीसेना समेत उन पदातियों को घेरकर मारा २१ वह सब भीमसेन और धृष्टद्युम्नके सन्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी २ ने पाण्डव और धृष्टद्युम्नके नामोंको लेकर पुकारा २२ तब उन सन्मुखआये हुये पदातियोंसे युद्धमें भीमसेन क्रोधरूप हुये और बड़ी शीघ्रतासे अपने रथसे उतर हाथमें गदा लेकर युद्ध करने लगा २३ अपने भुजबलमें दृढ़रूप धर्मको चाहनेवाले रथमें सवार कुन्तीकेपुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया २४ हाथमें दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदाको हाथमें

लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जीवनको त्यागकरके २५ युद्धमें भीमसेनके सन्मुख ऐसेगये जैसेकि अग्नि में पतङ्ग जाते हैं वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन को पाकर २६ अकस्मात ऐसे नाशहोगये जैसे कि जीवोंके समूह मृत्युको देखकर नाशहोजाते हैं फिर बाजकी समान गदा हाथमेंलिये घूमनेवाले भीमसेनने २७ आपके पचीस हजार पदातियों को मारा फिर वह महापराक्रमी अतुलबलभीमसेन उस पदातियों की सेनाको मारकर २८ धृष्टद्युम्नको आगे करके वहांपर नियत हुआ २९ और महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनीके सन्मुख हुये और बड़े प्रसन्न चित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रता से सन्मुख दौड़े ३० अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारों को मारकर शीघ्रता से उसके सन्मुख दौड़े और बड़ा युद्धहुआ ३१ हेप्रभु फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेनाके सन्मुख जाकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध अपने गाण्डीव धनुष को टंकारा आप के युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को जिस में कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले अर्जुनकोभी देखकर भागे ३२।३३ रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पचीस हजार पदातियों ने कालको पाया ३४ पांचालों का महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर ३५ थोड़ेही काल में भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया ३६ तब आपके शूरवीर उस कपोत वर्ण घोड़े और कोविदार रूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे ३७ और यशस्वी नकुल और सहदेव उस शीघ्र अस्त्रोंके चलानेवाले गान्धारपतिको स्मरण करके सात्यकी समेत थोड़ीही देर में दृष्टिपड़े ३८ हे श्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकर बड़े शंखोंको बजाया ३९ फिर वह आपके शूरवीरोंको मुख मोड़कर भागतेहुये देखकर ऐसे सन्मुख आकर वर्त्तमानहुये जैसे कि बैलोंको विजयकरके क्रोधयुक्त बैल वर्त्तमान होते हैं ४० हे राजा इसके पीछे महा पराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बचीहुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ ४१ और आपकी रथकी सेना के सन्मुख वर्त्तमान हुआ और अपने विख्यात गांडीव धनुषको सन्नद्ध किया ४२ बाणों की वर्षा करके उससेना को ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछ

खाई नहींदिया ४३ हे महाराज लोकके हत तेज होने और पृथ्वीको धूलयुक्त होनेपर आपके सब शूरवीर भयभीत होकरभागे ४४ हे राजा सेनाके छिन्नभिन्न होनेपर आपका पुत्र दुर्य्योधन सन्मुख आनेवाले शत्रुओंकी ओरको दौड़ा ४५ इसके पीछे दुर्य्योधन ने सब पाण्डवों को युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ पूर्व्व समय में राजा बलिने देवताओं को बुलाया था ४६ नानाप्रकार के शस्त्रों से युक्त क्रोधयुक्त बारम्बार घुड़की देते और गर्जना करतेहुये एकसाथही उसके सन्मुखगये ४७ इसके पीछे वहां भयसे अव्याकुल चित्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधन ने युद्धमें अपने तीक्ष्ण बाणों से हजारों सेनाके लोगों को मारा ४८ और सब ओरको पाण्डवोंकी सेनासे युद्धकरने लगा उस स्थानपर हमने आप के पुत्र की अपूर्व्व वीरताको देखा ४९ कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवोंसे युद्धकरने लगा इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेनाको अत्यन्त दुखीदेखा ५० हे राजा उससमय आपका बुद्धिमान पुत्र उन दुखी शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला ५१ कि मैं उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीड़ित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथसे बचने पाओ तुमको भागने से क्यालाभहै ५२ उनकी सेना बहुत कम रहगई है और श्रीकृष्ण अर्ज्जुन अत्यन्त घायलहैं इस्से मैं उन सबको निश्चय मारूंगा अब मेरी पूरीविजयहै ५३ जो तुम भागोगे या पृथक्होगे तो पांडवलोग अपराधी जानकर तुमलोगों को पीछाकरके मारेंगे इस्से हमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरना श्रेष्ठहै ५४ क्षत्री धर्म से युद्धमें लड़नेवालों की मृत्युका होना सुखरूपहै क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगता है शीघ्रही मरकर अविनाशी गति को पाताहै ५५ तुमजितने क्षत्री अब इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनों कि जब नाश करनेवाला महाबली यमराजही भयभीत लोगों को मारता है ५६ तो फिर मेरे समान क्षत्री व्रतका रखनेवाला कौन अज्ञानी युद्धको नहीं करेगा देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारेशत्रु भीमसेनके आधीनहोगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्तिपाकर स्वर्गवासी न होगे इसहेतुसे तुमलोगों को अपने पूर्वजों के कियेहुये धर्मका त्यागना उचित नहीं है भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रीका धर्म नहीं है ५७।५८ हे कौरव लोगो युद्धसे बढ़कर क्षत्रियों का कोई उत्तम धर्म नहींहै हे शूरवीरो जो मरभी जाओगे तो थोड़ेही दिनोंमें

शीघ्रलोकों को भोगोगे ५६ आपके पुत्रके इसरीति के वचनों को सुनकर भी सेनाके लोग उसवचनका विचार न करसके सब दिशाओंको भागे ६० ॥

चौ० बिचले भटन टेरि अनखायो । क्षात्रि धर्म बहुभाँति सुनायो ॥
सो सुनिते सब फिरे न कैसे । रुकै न बहुत सरित जल जैसे ॥
सो लखितोसुत सुभटअतोलो । सुहित सारथी सों इमि बोलो ॥
संशय त्यागि चपल करि घोरे । सादर चलो पार्थ के धोरे ॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकौरवसेनपलायिनेचतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके पीछे आपके पुत्रसे युद्धहुआ और सेनाको देखकर अज्ञानचित्त रूपान्तर चेष्टाकिये मद्रदेश के राजा शल्यने दुर्य्योधन से यह वचन कहा १ कि मनुष्य हाथी घोड़े और हजारों पर्व्वताकार शूरवीर बारम्बार बाणों से घायलहोकर पराजित टूटेअंग पृथ्वीपर गिरेहुओं से और मरेहुये हाथियोंसे व्याप्त इस घोर उग्ररूप युद्धभूमि को देखो २ इन व्याकुल निर्जीव टूटे कवच शस्त्र ढाल खड्ग वाले शूरवीरों से व्याप्त पृथ्वी ऐसी दिखाई देती है जैसे कि अत्यन्त टूटे पत्थर बड़े बड़े वृक्ष और औषधीवाले बज्र से ताड़ित पहाड़ों से व्याप्त होकर दीखती है ३ टूटे घण्टे अंकुश तोमर ध्वजा और सुवर्ण के जालों से अलंकृत रुधिर से लिप्तबाणों से टूटे अंग श्वासा लेनेवाले रुधिर को बमन करनेवाले पीड़ामान पड़ेहुये घोड़ों सेभी भरीहुई पृथ्वी को देखो कष्टित शब्दों को करते भग्न नेत्र पृथ्वी को काटनेवाले महादुखी गर्ज्जते हुये हाथी घोड़े शूरवीर मनुष्य और सेनाही से घायल वीरों के समूहों से युक्त इस युद्धभूमि को देखो ४।५ निश्चय करके इस घोर युद्ध में यह पृथ्वी मन्द प्राणवाले युद्धा-कर्त्ताओं से बैतरनीनदी के समान शोभायमान होरहीहै ६ कटेहुये हाथी कम्पा-यमान और टूटेहुये दांत रुधिर के बमन करनेवाले फड़कते पीड़ित शब्दों से दुखभोगते पृथ्वीपर पड़ेहुये मनुष्य वा हाथियों के शरीरों से पृथ्वी पूर्ण होरही है ७ टूटे पहिये, बान, जुये, योक्त्र, वा छिदेहुये तूणीर पताका ध्वजा अथवा सुवर्ण के जालों से युक्त अत्यन्त टूटेहुये बड़े २ रथों के समूहों से ऐसी भरीहुई है जैसे कि बादलों से भरीहुई होतीहै ८ जिनके कवच स्वर्ण भूषण और शस्त्र ट

कर गिरपड़े उन सन्मुख होकर शत्रुओं को हाथसे मरे उत्तमनामी हाथी घोड़े और शूरवीर लड़नेवालों से पृथ्वी ऐसी व्याप्तहै जैसे कि शान्तरूप अग्नियों से व्याप्तहोती है ९ बाणों के प्रहारों से घायल देखनेवाले और गिरेहुये हजारों पराक्रमियों से ऐसी संयुक्तहै जैसे कि रात्रिके समय स्वर्ग से गिरेहुये अत्यन्त प्रकाशित स्वच्छ और देदीप्यमान ग्रहोंसेसंयुक्त पृथ्वी और आकाश होते हैं १० कर्ण और अर्जुन के बाणों से टूटे अंग अचेतरूप बारम्बार श्वासें लेनेवाले मृतक हुये कौरव और सृञ्जयी वीरों से पृथ्वी उस प्रकारकी होगई जैसे कि समीपवर्त्ती प्रज्वलित अग्नियों के समूहों से व्याप्त होतीहै ११ कर्ण और अर्जुन की भुजाओं से छोड़ेहुये बाण हाथी घोड़े और मनुष्यों के शरीरों को चीर प्राणों को निकालकर शीघ्रता से ऐसे पृथ्वीपर गये जैसे कि झुकेहुये बड़े २ सर्प बिलों में घुसते हैं १२ हे नरेन्द्र अर्जुन और कर्ण के बाणों से युद्धमें घायल और मरेहुये मनुष्य और हाथियों से पृथ्वी अगम्य होगई १३ शूरवीर वा उत्तम धनुष आदि शस्त्रों से भुजबल करके अच्छे मथेहुये सुन्दर अलंकृत रथ और पड़े हुये योक्र टूटे बंधन चूर्णित रथ चक्र अंकुश त्रिवेणु और जिनसे शस्त्र निषंग बंधन जुदेहोगये वा अनुकर्ष टूटे उन मणि सुवर्ण से अलंकृत खंडित नीड़वाले रथोंसे ऐसी आच्छादित होगई जैसे कि शरदऋतु के बादलों से आकाश व्याप्त होताहै १४।१५ जिनके स्वामी मारे गये और शीघ्रगामी घोड़े जिनको खैंचते थे उन सुन्दर अलंकृत राजरथ हाथी घोड़े और मनुष्यों के समूहों से शीघ्र चलनेवाले लोग अनेक प्रकारसे चूर्ण होगये १६ स्वर्ण निर्मित बस्त्रधारी परिघ फरसे तीक्ष्णशूल मुद्गर मियान से निकलेहुये सुन्दर खड्ग और स्वर्णमयी वस्त्रों से मढ़ीहुई गदा गिरपड़ीं १७ सुवर्ण के बाजूबंदों से अलंकृत धनुष स्वर्णपुखी बाण पीतरंग के निर्मल मियान से जुदे दुधारा खड्ग उत्तम दण्डवाले प्रास १८ छत्र बाल व्यजन शंख टूटी और बिखरीहुई माला कुथा पताका वस्त्र आभूषण किरीट माला और उत्तम मुकुट १९ हे राजा बहुतसे गिरे और बिनागिरे हुये मूंगे मोतीवाले हार आपीड़ केयूर उत्तम बाजूबन्द और स्वर्ण सूत्रों से पुहेहुये गुलूबन्द और निष्कनाम आभूषण थे २० उत्तम मणि हीरा सुवर्ण मोती छोटे बड़े रत्न और मंगलीक वस्तु बड़सुख भोगने के योग्य शरीर चन्द्रमाके समान मुख रखनेवाले शिर २१ शरीर के भोगनेवाले सामान और यथेप्सित सुखों-

को त्याग करके अपने धर्मकी बड़ी निष्ठाको पाकर लोकों को कीर्तिसे व्याप्त करके वह सब युद्धकर्ता शूरवीर चलेगये २२ हे बड़ाई देनेवाले राजा दुर्य्योधन लौटजाओ सेना के मनुष्य भी अपने २ डेरों में जायँ हे प्रभु अब सूर्य्य भी अस्त होता है अब चलनाही योग्य है हे नरेन्द्र दुर्य्योधन इस स्थान में तुम्हीं कारणरूपहो २३ शोक से दुखीमन राजाशल्य हायकर्ण हायकर्ण इस रीति से कहनेवाले पीड़ामान अत्यन्त अचेत अश्रुपात युक्त दुर्य्योधन से यह वचन कहकर मौन होगया २४ फिर अश्वत्थामा आदिक वह सब राजा लोग अर्जुन की यश कीर्तिवाली प्रज्वलित ध्वजा को बारम्बार देखते और दुर्य्योधन को आश्वसन करतेहुये चले २५ हेराजा इसीप्रकार मनुष्य घोड़े हाथी और मनुष्यों के शरीरों से उत्पन्न हुये रुधिर से सींचीहुई लाल पोशाक माला आदि स्वर्ण भूषणधारी निर्लज्ज वेश्याओं के समान रुधिर से आच्छादित भूमिको देखकर देवलोक के निमित्त सन्यास धारण करनेवाले सब कौरव उस अत्यन्त शोभायमान रुद्र मुहूर्त्त में नियत नहीं हुये २६। २७ हे राजा वह मारने से दुःखी हाय कर्ण हायकर्ण यही उच्चारण करतेहुये शीघ्रही अपने डेरोंमें गये २८ और युद्ध में गाण्डीव धनुषसे छोड़े सुनहरी पुंखवाले तीक्ष्ण धारवाले रुधिर भरे पैनेबाणों से युक्त शरीरवाला मृतक कर्णभी किरण मण्डल रखनेवाले सूर्य्य के समान प्रकाशमान था २९ भक्तोंपर दया करनेवाले रक्तवर्ण भगवान् सूर्य्य कर्णकेरुधिर भरे शरीर को अपनी किरणों से स्पर्शकरके स्नान करने के निमित्त पश्चिमीय समुद्रको जाते हैं ३० और देवता ऋषियों के समूहभी इसका शोचकरते हुये यात्रायुक्त होकर अपने २ स्थानों को जाते हैं जीवोंके समूह भी विचार करते सुख पूर्व्वक आकाश और पृथ्वी को गये ३१ तब कौरवीय वीरों में श्रेष्ठ अर्जुन और कर्ण के सबजीवों के महा भयकारी घोरयुद्धको देखकर बड़े आश्चर्य्य युक्त होकर उनकी प्रशंसाओं को करते हुये मनुष्य भी चले ३२ बाणों से टूटे कवच रुधिरसे सींचेहुये वस्त्रोंसेयुक्त निर्जीव कर्ण को भी शोभा नहीं छोड़ती है संतप्त सुवर्ण अग्नि और सूर्य्य के समान प्रकाशमान ३३ उस शूरवीर को सब जीवों ने जीवतेहुये के समानही माना हे महाराज युद्धमें उस मरेहुये कर्ण से भी ३४ युद्धकर्त्ता लोग सब ओरसे ऐसे भयभीत हुये जैसे कि दूसरे मृग सिंहसे भयभीत होते हैं क्योंकि वह मृतकहुआ भी पुरुषोत्तम जीवते के समान

दिखाई देताथा ३५ इसनिमित्त कि मरने परभी उसमहात्माके रूपमें अन्तर नहीं हुआ इसीसे उस सुन्दर पोशाक मुकुट और ग्रीवा धारण करनेवाले वीर पुरुष को जीवतेकेही समान माना ३६ कर्ण का वह मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान प्रकाशमान नाना भूषण तप्तकांचनमयी बाजूबन्द धारण किये महा प्रकाशित होकर शोभासे युक्त ३७। ३८ वह सूर्य्यका पुत्र ऐसे मृतक होकर सोता है जैसे कि अंकुर रखनेवाला वृक्ष उत्तम सूर्य्य के समान प्रकाशमानहो ३९ वह पुरुषोत्तम कर्ण अर्ज्जुन के शायकरूपी जलसे ऐसे शान्त होगया जैसे कि प्रकाशमान देदीप्य अग्नि जलको पाकर शान्त होजाता है ४० इसीप्रकार कर्ण रूप अग्नि युद्धमें अर्जुन रूप बादलसे शान्त कीहुई पृथ्वीपर उत्तम युद्धमें अपने प्रकाशित यशको प्राप्त करके ४१ बाणों की वर्षा को छोड़ दशों दिशाओं को तपाती हुई अर्जुन के तेजसे शान्तहुई ४२ वह सूर्य्य का पुत्र कर्ण अस्त्रों के तेजसे सब पाण्डव और पांचालोंको तपाकर बाणोंकी वर्षासे शत्रुओं की सेना को व्यथितकर ४३ श्रीमान् सूर्य्य के समान सब संसार को तपाताहुआ पुत्र और सवारी समेत मारागया ४४ यह कर्ण आकांक्षा करनेवाले मनुष्य और पक्षियों का कल्पवृक्ष था जो कि आकांक्षा करनेवाले सत्पुरुषों को सदैव यथेप्सित दानदिया करताथा कभी किसीप्रकारकेभी याचना करनेवाले से यह वस्तु नहीं है इस वचनको नहींकहा ४५ ऐसासत्पुरुष कर्ण द्वैरथ युद्धमें मारागया जिस महात्माका सबधन ब्राह्मणों केही देनेके योग्य हुआ जिसका सबजीवन ब्राह्मणों को किसी वस्तुका अदेयरूप नहींहुआ ४६ सदैव स्त्रियोंके प्यारे दानी अर्जुनके अस्त्रसे मरेहुये उस महारथीने परमगतिको पाया जिसके आश्रयमें होकर आपके पुत्रने शत्रुताकरीथी ४७ वह आपके पुत्रोंकी विजयकी आशा प्रसन्नता और रक्षाको साथ लेकर स्वर्ग कोगया कर्णके मरनेपर नदियों ने चलना बन्द किया और सब संसार का प्रकाशक सूर्य्य भी अस्त होगया ४८ तिर्य्यग ग्रह और अग्नि सूर्य्यके वर्ण समानहुये और चन्द्रमाका पुत्र बुध उदयहोने के निमित्त तिरछा होगया आकाश चलायमान हुआ पृथ्वी शब्दायमान हुई सूक्ष्म महाभयकारी वायु चली दिशा ज्वलित रूपहुई और महा समुद्र धूम और शब्द से युक्त होकर चलायमानहुआ ४९ काननों समेत सब पर्व्वतों के समूह कंपायमानहुये और सबजीवों के समूह पीड़ामानहुये और हे राजा बृहस्पतिजी

रोहिणीको घेरकर चन्द्रमा और सूर्य्य के समानहुये ५० कर्णके मरनेपर विदिशा भी प्रज्वलितहोगईं आकाश अन्धकारसेयुक्त हुआ अग्निकेसमान प्रकाशमान उल्कापातहुये राक्षसभी अत्यन्त प्रसन्नहुये ५१ जब अर्जुनने चन्द्रमुखवाले प्रकाशमान कर्ण के शिर को अपने क्षुरसे काटा तब आकाशमें देवतालोग अकस्मात् हाय हाय ऐसाशब्द करनेलगे ५२ वह अर्जुन देव गन्धर्व और मनुष्यों से पूजित अपने शत्रु कर्णको युद्ध में मारकर बड़े तेजसे ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें वृत्रासुर को मारकर इन्द्र शोभायमान हुआथा ५३ इसके पीछे महाइन्द्रके समान पराक्रम करनेवाले वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन बादलों के समूह के समान शब्दायमान आकाशस्थ मध्याह्न के सूर्य्यके समान प्रकाशित पताका और भयानक शब्दवाली ध्वजा रखनेवाले हिमचन्द्रमा और शङ्खके समान श्वेत उज्ज्वल महाइन्द्र रथके तुल्य अनुपम सवारी में बैठेहुये युद्ध में विष्णु और इन्द्रके समान शोभायमानहुये अर्थात् सुवर्ण मणि हीरे मोती और मूंगोंसे अलंकृत अग्नि और सूर्य्यके समान तेजस्वी दोनों नरोत्तम केशवजी और पाण्डव अर्जुनथे इसकेपीछे उन गरुड़ध्वज और बानरध्वज श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन ने हठ करके धनुष प्रत्यंचा और बाणों के शब्दों से शत्रुओं को प्रभा रहित करके ५४ । ५५ । ५६ । ५७ कौरवोंको उत्तम बाणोंसे ढककर उन प्रसन्नचित्त अतुल प्रभाववाले शत्रुओंके मनको संदेह करनेवाले नरोत्तमोंने ५८ सुवर्ण जालसे युक्त बड़े शब्दवाले उत्तम शङ्खोंको हाथ में लेकर मुखसे चुम्बन कर ५९ अकस्मात् अपने मुखों से बजाया उन पांचजन्य और देवदत्तनाम दोनों शंखोंके शब्दोंने ६० पृथ्वी दिशा विदिशाओं समेत आकाशको शब्दायमान किया हे राजाओं में श्रेष्ठ अर्ज्जुन और माधवजी के उन शंखोंके शब्दों से सब कौरव लोग भयभीतहुये ६१ शंखोंके शब्दों से वन पर्व्वत नदी और पर्व्वतोंकी कन्दराओं को शब्दायमान करनेवाले उन दोनों पुरुषोत्तमों ने आपके बेटेकी सेनाको भयभीत करके राजा युधिष्ठिर को प्रसन्नकिया ६२ हे भरतवंशी इसके अनन्तर उनके शंखोंके शब्दों को सुनकर सब कौरवलोग भरतवंशियों के राजा दुर्य्योधन को और राजामद्रको छोड़कर बड़े वेगसे भागे ६३ तब जीवों के भागनेवाले बड़े समूहोंने उस बड़े युद्धमें बड़ेतेजस्वी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन को ऐसे प्रसन्न किया जैसे कि उदय होनेवाले दो सूर्य्यको सब प्रसन्न करते

हैं ६४ उस युद्धमें कर्णके बाणों से चितेहुये शत्रुओं के संतप्त करनेवाले दोनों श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन ऐसे प्रकाशमानहुये जैसे कि किरण समूहों के रखने-वाले निर्मल चन्द्रमा और सूर्य्य उदयहोकर अंधकार को दूर करके प्रकाशमान होते हैं वह अनुपम पराक्रमी दोनों ईश्वर उन बाण समूहों को छोड़कर मित्रों को साथमें लियेहुये सुख पूर्व्वक अपने डेरों में ऐसे पहुँचे जैसे कि सदस्यों के बुलायेहुये विष्णु और इन्द्रजाते हैं ६५। ६६ तब कर्णके मरनेपर उस बड़े युद्ध में वह दोनों श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन देवता गन्धर्व मनुष्य चारण महर्षि यक्ष राक्षस और महासर्पोंके भी अपूर्व्व उत्तम विजयके आशीर्वादों से पूजितहुये ६७ फिर वह योग्य आशीर्वादों स युक्त दोनों अपने गुणोंसे स्तुतिमान होकर अपने मित्रोंसमेत ऐसे प्रसन्नहुये जैसे कि राजा बलिको विजय करके देवगणों समेत इन्द्र और विष्णु प्रसन्नहुये थे ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्व्वणिकर्णवधानन्तरसर्वैस्तूयमानश्रीकृष्णार्जुनपंचनवतितमोऽध्यायः ९५॥

छानबेका अध्याय॥

सञ्जय बोले कि हे राजा कर्ण के मरनेपर भय से पीड़ितहो सब दिशाओं को देखतेहुये कौरवलोग भागे १ अर्थात् घोर युद्धमें अर्ज्जुनके हाथसे कर्ण को मराहुआ देखकर आपके सब शूरवीर घायल और भयभीत होकर दिशाओं में छिन्नभिन्न हुये २ इसके पीछे चारोंओर से रोकेहुये व्याकुल और महादुःखी होकर आपके उन सब शूरोंने विश्राम किया हे राजा इसके पीछे आप के पुत्र दुर्य्योधनने उन सबके उसमतको जानकर शल्यके मत से विश्रामकिया ३। ४ हे भरतवंशी आपके शीघ्रगामी रथ और शेषबचीहुई नारायणी सेना से युक्त कृतवर्मा डेरेकी ओरकोचला ५ और हजारों गांधार देशियोंसे व्याप्तशकुनि भी कर्ण को मृतक देखकर डेरेकी ओरचला ६ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र शार्द्वत कृपाचार्य्यजी भी बड़े २ बादलों के समान हाथियों की सेनाको साथलिये डेरे की ओरको चले ७ फिर बड़े शूरवीर अश्वत्थामा बारम्बार श्वासलेले पाण्डवों की विजय को देखकर डेरेकी ओरको चले ८ हे राजा शेष बचीहुई संसप्तकों की सेना को साथ लियेहुये सुशर्मा भी भय से पीड़ित चारोंओर को देखता हुआ चलदिया ९ फिर जिस के सब बांधव मारे गये वह शोक में डूबाहुआ

अप्रसन्नचित्त राजा दुर्य्योधन भी बड़ी२ चिन्ताओंको करताहुआ चलदिया १० रथियोंमें श्रेष्ठशल्य भी दशों दिशाओं को देखता टूटी ध्वजावाले रथकी सवारी से डेरे की ओर को चला ११ इसके पीछे भरतवंशियों के बहुत से अन्य महारथी भी भयसे पीड़ित लज्जा से युक्त उदास चित्त होकर भागे १२ इसीप्रकार रुधिर पटकते व्याकुल कंपित महादुःखी सब कौरव कर्णको गिराहुआ देखकरभागे १३ हे कौरव्य कोई कौरव तो महारथी अर्जुनकी और कोई कर्णकी प्रशंसा करतेहुये दिशाओं को भागे १४ फिर वहां बड़े युद्धमें आपके हजारों शूरवीरों के मध्यमें कोई ऐसा मनुष्य नहीं रहा जिसने कि फिर युद्धके निमित्त चित्त किया हो १५ हे महाराज कर्ण के मरने से कौरवलोग जीवन राज्य और स्त्रीकी आशा से भी निराश होगये १६ दुःख शोक से युक्त आपके समर्थ पुत्रने बड़े२ उपायों से उन को इकट्ठाकरके निवास के लिये चित्तकिया फिर वह रूपांतर दशावाले महारथी शूरवीर उसकी आज्ञाको शिर से अंगीकार करके ठहरे १७।१८॥

इतिश्रीमहाभारतेकर्णपर्वणिकौरवपलायिनेषण्णवतितमोऽध्यायः ९६॥

सत्तानबेका अध्याय॥

संजय बोले कि इसप्रकार से कर्ण के गिराने और शत्रुओं की सेनाके भागने पर श्रीकृष्णजी अर्जुन से प्रीति पूर्व्वक मिलकर बड़े आनन्द से इस वचन को बोले १ हे अर्जुन जैसे इन्द्रके हाथ से वृत्रासुर मारागया वैसेही तेरे हाथसे कर्ण मारागया सब मनुष्य कर्ण और वृत्रासुर के घोर मरण को सदैव कहैंगे २ युद्ध में बड़ा तेजस्वी वृत्रासुर जैसे वज्रसे मारागया उसीप्रकार तुम्हारे धनुष से छूटेहुये तीक्ष्णबाणों से कर्ण मारागया ३ हे कुन्ती के पुत्र लोक में विख्यात यश करनेवाले अर्जुन तेरे इस पराक्रम को उस बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें ४ युद्धमें कर्ण के मारने को बहुत दिन से कहनेवाले धर्मराज राजायुधिष्ठिर से यह वचन कहकर तुम उसके ऋणसे अऋण होगे ५ तेरे और कर्ण के बड़े घोर और अपूर्व्व युद्ध होनेपर धर्मनन्दन राजायुधिष्ठिर पूर्व्वही युद्धभूमि देखने को आये ६ फिर अत्यन्त घायल होने से युद्धमें नियत होनेको समर्थ न होकर वह पुरुषोत्तम अपने डेरे में पहुँचकर नियतहुये ७ अर्जुन से बहुत अच्छा कहे हुये बड़े सावधान यादवेन्द्र केशवजी ने उस उत्तम रथीके श्रेष्ठ रथको लौटायाः

श्रीकृष्णजी अर्जुन से इसप्रकार की बात कहकर सेना के मनुष्यों से बोले कि हे उत्तम शूरवीर लोगो तुम सावधान होकर शत्रुओं के सन्मुख होकर लड़ो तुम्हारा कल्याण होगा ९ गोविन्दजी, धृष्टद्युम्न, युधामन्युं, नकुल, सहदेव, भीमसेन और युयुधानसे यह वचन बोले कि हम जबतक अर्जुनके हाथसे कर्ण का बध राजा युधिष्ठिर से वर्णन करें १०। ११ तबतक आप सब लोगों को राजाओं समेत निवास करना योग्यहै तब उन शूरों की आज्ञा पाकर गोविन्द जी अर्जुन को साथलेकर डेरे को गये १२ और राजेन्द्र राजा युधिष्ठिर को सुवर्ण रचित अच्छे शयन स्थानमें सोताहुआ देखा १३ तब उन दोनों श्रीकृष्ण और अर्जुन ने राजा के दोनों चरणों को स्पर्शकिया उस समय युधिष्ठिर ने उन दोनों को प्रसन्न देखकर बड़ी प्रसन्नता के अश्रुपातों को डाला १४ और कर्ण को मृतक मानकर महाबाहु शत्रुंजय राजा युधिष्ठिर उठकर बारम्बार १५ दोनों अर्जुन और वासुदेवजी को अत्यन्त प्रेमसे मिले फिर यादवों में श्रेष्ठ वासुदेव जीने जैसे कि अर्जुन ने युद्ध करके उस कर्णका बध किया वह सब वृत्तांत उस से वर्णनकिया फिर मन्द मुसकान करते अविनाशी श्रीकृष्णजी हाथ जोड़कर अजात शत्रु राजायुधिष्ठिर से यह वचन बोले हे राजा प्रारब्ध से गांडीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन १६। १७ नकुल सहदेव और तुम कुशल पूर्वक हो अब तुम इन वीरों के नाश करनेवाले और रोमांच खड़े करनेवाले महा घोर युद्धसे निवृत्तहुये १८। १९ हे पाण्डव अब तू बड़ी शीघ्रता से आगे करनेवाले कर्मों को करो हे राजा सूतका पुत्र महारथी कर्ण मारागया २० हे राजेन्द्र तुम अपने प्रारब्धसे विजय करतेहो और भाग्यसेही वृद्धि पातेहो और जो नीच पापात्मा पुरुषद्यूत में हारीहुई द्रौपदी को हँसाथा २१ उस सूतके पुत्र के रुधिरको अब पृथ्वीपान कररही है हे कौरवों में श्रेष्ठ यह तेरा शत्रु बाणों से भरेहुये शरीर से पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै २२ हे पुरुषोत्तम उस बहुत बाणों से टूटे अंगवाले कर्णको देखो हे मृतक शत्रुवाले महाबाहो तुम इस पृथ्वीपर राज्यकरो और हम समेत सावधान होकर उत्तम भोगों को भोगो २३ संजय बोले कि तब अत्यन्त प्रसन्न चित्त धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर ने इन वचनोंको सुनकर उन महात्मा केशवजी से कहा २४ हे महाबाहु आपने जो प्रारब्धसे हुआ यह वचन कहा सो हे महाबाहो देवकीनन्दन यह बात आपमें कुछ अपूर्व नहीं है आपकी यह

योग्यता सदैव से चली आई है २५ उपाय करनेवाले अर्जुनने तुम सारथीके साथहोकर उसको मारा हे महाबाहो तुम्हारी स्वच्छ बुद्धिसे उत्पन्नहुई वह बात आश्चर्य्यकी नहीं है यहकहकर वह धर्मधारी कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर बाजूबन्द रखनेवाली दक्षिणभुजाको पकड़कर २६।२७ उनदोनों अर्जुन और केशवजी से बोले कि नारदजीने तुमदोनोंको धर्मात्मा महात्मा और प्राचीन ऋषियोंमें श्रेष्ठ नरनारायणरूप देवता मुझसे वर्णन कियाहै और बुद्धिमान् सिद्धान्तोंके ज्ञाता व्यासदेवजी ने भी इसमहाभाग कथाको बारंबार मुझसे कहाहै हे कृष्णजी इस पाण्डव अर्जुनने आपकी कृपासे २८।२९ सन्मुख होकर शत्रुओं को विजय किया और किसी स्थानपर मुख नहीं फेरा निश्चय हमारीही विजयहै हमारीपराजय नहींहोगी ३० जबआपने अर्जुनकी रथवानी अंगीकार करी हे गोविन्दजी आपकी बुद्धि से कर्ण,के मरनेपर भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण, महात्मा गौतम, कृपाचार्य्य, ३१ और अन्य२ बड़े२ शूरवीर जो उनके साथमें आगे पीछे थे वह सब हर प्रकारसे मारेगये ३२ तब पुरुषोत्तम महाराज धर्मराज यह कहकर श्वेत वर्ण काले बाल चित्तके अनुसार शीघ्रगामी घोड़ों से युक्त सुवर्ण सूत्रसे निर्मित रथपर ३३ सवारहो अपनी सेना को साथलेकर युद्धभूमि के देखने को प्रवृत्त हुये ३४ वीर श्रीकृष्ण और अर्जुन से पूछकर और दोनों से प्यारे २ मिष्ट वचनों को कहते हुये चलदिये ३५ वहांजाकर उस राजा युधिष्ठिरने युद्धभूमि में शयन करतेहुये कर्णको ऐसा देखा जैसे कि सब ओरसे केसरों से युक्त कदम्बका फूलहोताहै ३६ उस धर्मराजने हजारों बाणों से चितेहुये कर्ण वा सुगन्धित तेलों से सिंचेहुये और हजारों सुनहरी मशालों से ३७ प्रकाशमान जेसका कवच टूट २ कर चूर्ण होगया वा बाणों से छिदाहुआ था उसकर्ण को देखा ३८ पुत्र समेत मरेहुये कर्णको बारंबार देखकर निश्चय करनेवाले राजा युधिष्ठिरने ३९ उनदोनों नरोत्तम पाण्डव अर्जुन और माधवजीकी प्रशंसाकरी कि हे गोविन्दजी अब तुझनाथ शूरवीर और महाज्ञानीसे पोषण कियाहुआ मैं बड़े अहंकारी कर्णको मृतक देखकर भाइयों समेत पृथ्वीपर राजाहूं ४०।४१ राजा धृतराष्ट्र राधाकेपुत्र कर्णके मरनेपर अपने जीवन और राज्यसे निराशहोंगे ४२ हे पुरुषोत्तम हम आपकी कृपाओं से अभीष्ट मनोरथों के सिद्ध करनेवाले हैं हे गोविन्दजी आपने प्रारब्धसे शत्रुओंको विजयकिया और भागही से यह महा

शत्रु भी मारागया ४३ और पाण्डुनन्दन अर्जुन प्रारब्धसे विजय करनेवाला
है हम लोगों ने बड़े दुःखदायी तेरह वर्ष जाग २ कर वनों में व्यतीत किये ४४
हे महाबाहो अब आपकी कृपासे रात्रिमें नींद भरके बेखटके होकर सोवेंगे इस
रीतिसे उस धर्मराज राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्णजी और कौरव्य अर्जुनकी प्र-
शंसा करी संजय बोले कि अर्जुन के शायकों से पुत्र समेत कर्णको मृतक दे-
खकर ४५।४६ उस राजा युधिष्ठिर ने अपना पुनर्जन्ममाना हे महाराज फिर
बड़ी प्रसन्नता भरेहुये महारथियों ने कुन्ती के पुत्र राजा युधिष्ठिरको मिलकर
बड़ा प्रसन्नकिया और पाण्डव नकुल सहदेव भीमसेन और वृष्णियोंमें बड़े श्रेष्ठरथी
सात्यकी, धृष्टद्युम्न,शिखण्डी पांचाल और सृञ्जियोंने ४७।४८।४९ कर्णके मरने
पर युधिष्ठिरकी स्तुतिकी फिरवह सब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरकी स्तुतिकरके ५०
महा विजयसे शोभायमान लक्षभेदी युद्धमें कुशल सावधानी से युद्ध करनेवाले
प्रशंसायुक्त उन श्रीकृष्ण और अर्ज्जुन की कीर्त्तिगानेवाले ५१ प्रसन्नता में
डूबेहुये सब महारथी अपने २ डेरोंको गये हे राजा आपके दुर्विचारोंसे यह बड़ा
भारी घोर रोमहर्षण करनेवाला विनाशकाल जारीहुआ ५२ अब तुम किस नि-
मित्त शोचकरतेहो वैशम्पायन बोले कि अम्बिकाके पुत्र राजा धृतराष्ट्र इसशोक
और दुःखदायी वृत्तान्तको सुनकर ५३ अचेत और निश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर ऐसे
गिरपड़ा जैसे कि जड़समेत टूटाहुआ वृक्ष गिरपड़ताहै उसीप्रकार वह दूरदर्शि-
नीदेवी गांधारी भी गिरपड़ी ५४ और युद्धमें कर्णके मरने को बहुत विलाप
करकरके शोचा तब विदुरजी और संजयने उस राजाको पकड़लिया ५५ और
दोनों ने राजाको विश्वासयुक्त किया और इसीप्रकार कौरवीय स्त्रियोंने गांधा-
रीको भी उठाया फिर वह बड़ातपस्वी राजा धृतराष्ट्र ईश्वर और होतव्यताको
मुख्य मानकर ५६ महा पीड़ितहोकर अचेतहोगया चिन्ता शोकसे पूर्णचित्त
मोहसे पीड़ित राजाने कुछ नहीं जाना और विश्वास देनेपर भी अचेत होकर
मौनहोगया ५७ हे भरतवंशी जो पुरुष महात्मा कर्ण और अर्ज्जुनके इस महा
घोर युद्धरूपी यज्ञको पढ़ेगा वह उस फलको पावेगा जो अच्छे प्रकारसे किये
हुये यज्ञकाफल होताहै और सुननेवालोंको भी यही फलहोगा ५८ अग्नि वायु
और चन्द्रमाके उत्पन्न करनेवाले सनातन भगवान् विष्णुहैं उन्हींको यज्ञ कहते
हैं इसकारण जो पुरुष दूसरे के गुणोंमें दोष न लगाकर पढ़ेगा वा सुनेगा वह

सुखीहोगा ५६ भक्तलोग सदैव धर्मकी वृद्धिके हेतुसे इस उत्तम संहिता को पढ़ते हैं वह मनुष्य उसके पढ़नेसे धन धान्य और कीर्त्तिमान् होकर आनन्द करते हैं ६० इस हेतुसे जो दूसरेके गुणों में दोष न लगानेवाला मनुष्य सदैवही सुनेगा वह सब सुखोंको पावेगा और भगवान् ब्रह्माजी विष्णुजी और शिवजी भी उस नरोत्तम के ऊपर प्रसन्न होतेहैं ६१ इस संहितामें ब्राह्मण को वेदों की प्राप्ति और युद्धमें क्षत्रियों को पराक्रम वा विजयकीप्राप्ति वैश्यों को धनकीप्राप्ति और शूद्रों को नीरोगताकी प्राप्ति होतीहै ६२ जो कि इसमें भगवान् सनातन देवता विष्णुजी का वर्णनहै इस हेतुसे वह मनुष्य सुखी होकर मनोभीष्टों को पातेहैं यह उस महामुनिने वचन कहाहै कि जो इसकर्णपर्व्वको सुनताहै वह एक वर्ष तक सवत्सा कपिला गौ के प्रतिदिन दान करनेके समान फलको पाताहै ॥

महिखरीछंद ॥

सुनि प्रबल अरि भट करणको बध धरम अति आनँदभरे। बहुभांति हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपा की वर्णन करे ॥ फिर कृष्ण पारथ भटनसह चढ़ि सुरथ पै मोदित महा। गेधर्म भूपति कर्ण भटमणि परोहो जेहि थल तहा ॥ तहँ सहित सुत मरिपरो कर्णहिं देखि आनँद को गहे। तुव कृपा सों मम सुजय सब थर इबिधि केशव सों कहे ॥ बहु जरत चारु मशाल संग उमंग सों सब देखि कै। नृप धर्म डेरन गये फिरिनिज सुजय ध्रुव अवरेखि कै ॥

दो० करत प्रशंसा कृष्ण अरु पारथ की सब वीर ।
गे निजनिज डेरन लहत आनँद सिंधुगँभीर ॥
भूपति कियो कुमंत्र तुम करता इतो अनर्थ।
प्रलयकाल आरोपि अब शोचकरत हो व्यर्थ ॥

वैशंपायन उवाच ॥

दो० इविधि कर्णको मरण सुनि दम्पति वृद्ध नरेश।
मोहित है गिरिपरत भे त्यागि चेत को लेश ॥
भूपति गहि संजय विदुर गंधारिहि कुरुनारि।